बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना—कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन

Bal Sahityakar Deendayal Sharma ka Rachana-Karm : Ek Samalochanatmak Adhyayan

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध—प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

कृष्णा कुमारी

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. अनिता वर्मा

सह—आचार्य

हिन्दी विभाग

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

वर्ष 2019

प्रमाण–पत्र

मुझे यह प्रमाणित करते हुए प्रसन्नता है कि शोध–प्रबंध **"बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन"** शोधार्थी कृष्णा कुमारी ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की पीएच.डी. के नियमों के अनुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ पूर्ण किया है–

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क किया है।
2. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के 200 दिन के आवासीय आवश्यकता नियम को पूर्ण किया है।
3. शोधार्थी ने नियमित रूप से अपना कार्य प्रगति प्रतिवेदन दिया है।
4. शोधार्थी ने विभाग एवं संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी को बताई गई शोध पत्रिका में शोध–पत्र का प्रकाशन हुआ है।

मैं इस शोध प्रबंध को कोटा विश्वविद्यालय कोटा की पीएच.डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति देती हूँ।

दिनांक : **हस्ताक्षर शोध पर्यवेक्षक**

डॉ. अनिता वर्मा
सह–आचार्य
हिन्दी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D Thesis **"बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन"** by **Krishna Kumari** has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment of processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e. The thesis has been checked using Plagiarism checker plagiarismchecker.com, and found within limits as per HEC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

(Name & Signature of Research Scholar)
Krishna Kumari

Place :
Date :

(Name & Signature of Supervisor)
Dr. Anita Verma
Research Supervisor

Place :
Date :

शोध सार

साहित्य समाज का दर्पण होता है और बाल साहित्य बालकों के अन्तर्मन का प्रतिबिम्ब। बाल साहित्य बच्चे के सहज, सरल मन का दर्पण होता है, वहीं बाल–गोपाल की अठखेलियाँ, बाल सुलभ चेष्टायें, नटखटपन, कल्पनाशीलता, क्रीड़ायें आदि बाल साहित्य की जान होती हैं। बाल रचनायें पढ़कर बालकों का तदनुरूप भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, मानसिक, आत्मिक, संवेदनात्मक उत्कर्ष होता है। सार स्वरूप कहा जा सकता है कि श्रेष्ठ बाल साहित्य की नींव पर ही उत्तम, समुन्नत, सम्यक स्वस्थ, समाज रूपी भवन खड़ा किया जा सकता है। यशस्वी बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्य सुन्दर एवं स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में महती भूमिका का निर्वहन करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं। बालकों के प्रिय दीनदयाल शर्मा के रचनाकर्म पर यह प्रथम शोध कार्य है, यही इसकी प्रासंगिकता है। 'बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन' शोध प्रबन्ध को मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय – 'बाल साहित्य का उद्भव और विकास' के अन्तर्गत बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा, बाल साहित्य का उदभव बाल साहित्य का स्वरूप, बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एवं विशिष्टता तथा हिन्दी बाल साहित्य की परम्परा एवं विकास पर प्रकाश डाला गया है। बाल साहित्य की परम्परा को दर्शाते हुये बाल साहित्य में चटमल की 'गौरा बादल की कथा' से लेकर अद्यतन बाल विकास का काल क्रमानुसार ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है। अंत में संदर्भ सूची प्रस्तुत की गई है।

द्वितीय अध्याय – 'दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व' के अन्दर इनके जन्म, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, व्यवसाय, परिवेश, कवि कर्म का प्रारम्भ, अभिरूचियाँ, लेखन की प्रेरणा, उद्देश्य, सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियाँ, प्रेरणा स्त्रोत आदि के आधार पर व्यक्तित्व के भिन्न–भिन्न पन्नों को परत दर परत खोलने का प्रयास किया है। इसके लिए कई चिंतकों, सम्पादकों, बाल साहित्यकारों, मित्रों आदि के द्वारा इनके व्यक्तित्व को लेकर लिखी गई टिप्पणियों को भी संदर्भित किया है। कृतित्व में रचनाकार की अनेक विधाओं – बाल काव्य, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल पहेलियाँ, बाल नाटक, एंकाकी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं योगदान को रेखांकित किया है। अंत में संदर्भ सूची दी गई है।

तृतीय अध्याय – 'दीनदयाल शर्मा का पद्य' अध्याय में बाल साहित्य की प्रमुख प्रवृतियों, मनोरंजन, बाल मनोविज्ञान, पर्यावरण चेतना, प्रेरणातत्व, पारम्परिकता और आधुनिकता, बाल साहित्य और राष्ट्र प्रेम, समसामयिक संदर्भ को अभिव्यक्त किया गया है। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में इन

सभी तत्वों के समावेश को लेकर विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः इनके बाल काव्य में सभी बालसुलभ उपादानों का विस्तार से निरूपण दृष्टव्य है। साथ ही दीनदयाल शर्मा की बाल पहेलियों का विधागत परिचय, विषय वस्तु, परिवेश, प्रश्नोत्तरी एवं मानसिक विकास के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय – 'दीनदयाल शर्मा का गद्य' के अन्तर्गत दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियों का बाल कहानी के प्रतिमानों, बाल सुलभ जिज्ञासा, रोचकता, आधुनिकता और पुरातनता का समन्वय, बाल कहानी और मूल्य, समसामयिक संदर्भ एवं शिक्षा की कसौटी पर पड़ताल की गई है। नाटकों एवं एकांकियों की पारम्परिक नाटकीय तत्वों, कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल, भाषा शैली, उद्देश्य, अभिनय के आधार पर मीमांसा की गई है, साथ ही रोचकता, मनोरंजन, आनंद, रस, शिक्षा को लेकर नाटककार शर्मा के नाट्य काव्य की समालोचना की गई है। इनके नाटक सभी उपादानों पर खरे उतरते हैं।

पंचम अध्याय – 'दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं' हैं, प्रत्येक रचनाकार की भांति दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की अपनी विशिष्टतायें हैं, जो इनकी नई पहचान तथा मौलिकता को रेखांकित करती हैं। बाल संवेदना, वस्तु चित्रण, कल्पनाशीलता, नई तकनीक, पशु–पक्षी एवं वन्य जीव, सामाजिक चेतना के आधार पर रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य की परख की गई है, इन्होंने अपने बाल साहित्य में बाल संवेदना का बहुत सूक्ष्म चित्रण किया है, जिन पर ये खरे उतरते हैं।

षष्ठ अध्याय – 'शिल्प सौष्ठव' में दीनदयाल शर्मा की भाषा एवं शिल्प विधान को भिन्न–भिन्न परिभाषाओं, कोशगत अर्थ एवं उदाहरण सहित व्याख्यायित किया गया है। बाल साहित्य की भाषा और शिल्प के प्रमुख कारकों के आधार पर तात्विक समीक्षा की गई है। रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य में भाषा एवं शिल्प के सभी तत्वों का समुचित संयोजन व विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है।

सप्तम अध्याय – 'उपसंहार' निष्कर्ष और उपलब्धियाँ के अन्तर्गत दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता, योगदान, निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। 'शोध सारांश' में शोध प्रबन्ध का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट में रचनाकार का साक्षात्कार, संदर्भ ग्रन्थ सूची के अन्तर्गत आधार ग्रन्थ, संदर्भ ग्रन्थ, शब्द कोश, पत्र–पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत की गई है।

♦♦♦♦

CANDIDATE DECLARATION

I hereby certify that the work, which is being presented in this thesis, entitled ″बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन″ in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of philosophy, carried under the supervision of Dr. Anita Verma and submitted to the research center University of Kota, University of Kota, Kota represents my ideas in my own words and whenever other ideas or words have been included I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted else where for the award any other degree or diploma from any institution. I also declare that I have adhered to all principles of academics honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/date/fact/source in my submission. I understand that violation of the above will be a cause for disciplinary action by the university and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :

Krishna Kumari

This is to certify that the above statement made by (Smt.) Krishna Kumari (Registration No. RS/1433/16) is correct to the best of my knowledge.

Dr. Anita Verma
Associate Professor
Supervisor

प्राक्कथन

बाल साहित्य मानव–मन की सुन्दरतम व श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। मानव–मन की संवेदनायें जब मर्म को स्पर्श करती हैं तो उसका प्रभाव गहराई लिए हुए होता है। साहित्य और समाज का प्रारम्भ से ही अटूट सम्बन्ध रहा है। मानव–मन जब उमंगित हुआ होगा, इस खुशी के क्षणों में जब उसका मन मयूर नृत्य करने को आतुर हुआ होगा तब उसे आसपास के परिवेश में श्रोताओं, दृष्टाओं, सहचरों की आवश्यकता महसूस हुई होगी। फुर्सत के क्षणों में जब उसका मन किसी से संवाद करने को व्याकुल हुआ होगा, तो उसने चौपाल लगाई होगी। यहीं से कहानी का जन्म हुआ जो कि लोक कथाओं, नाना–नानी व दादा–दादी की कहानियों से गुजरते हुए, पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा सरित्सागर, शेखचिल्ली की कहानियाँ, अलीबाबा चालीस चोर की कथायें आदि में उल्लेखित है। इन कथाओं में मानसिक स्तर को देखते हुए संवाद कायम किये होंगे, गीत सुनाये गये होंगे, काव्य सृजन हुआ होगा। इस समस्त सृजन में सर्वोतम बाल साहित्य रहा है क्योंकि इसमें शिक्षा के साथ–साथ निश्छल, निस्पृह भाव भी समाहित रहता है। बच्चों की अपनी दुनिया होती है, जिनमें लय, ताल, सुर के साथ औत्सुक्य का भाव, प्रश्नाकुलता, विस्मय, रहस्य, रोमांच आदि भाव समाहित रहते हैं और इन सबके साथ–साथ शिक्षा, मनोंरजन, कल्पना, जिज्ञासा, समसामयिक परिवेश, बाल समस्यायें, उनके बाल सुलभ उतर प्रस्तुत भी होते हैं। ऐसा बाल साहित्य ही सर्वश्रेष्ठ और प्रभावशाली होता है। बाल साहित्य सृजन की इस यात्रा में बाल साहित्य में अनेक पड़ाव आते रहे और तत्कालीन परिस्थिति और परिवेश के अनुसार बाल साहित्य रचा जाता रहा है। तब से आज तक अनेक बाल साहित्यकार सृजनरत हैं, इसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी दीनदयाल शर्मा है। मैंने दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य का अध्ययन करते हुये उनके साहित्य के महत्वपूर्ण पक्ष को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। अपनी दृष्टि से में जितना समझ सकी वह शोध में प्रस्तुत है।

प्रथम अध्याय– 'बाल साहित्य का उद्‌भव और विकास' के अन्तर्गत बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा, बाल साहित्य का उद्‌भव, बाल साहित्य का स्वरूप, बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एवं विशिष्टता तथा हिन्दी बाल साहित्य की परम्परा एवं विकास पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय–'दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व' के अन्दर इनके जन्म, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, व्यवसाय, परिवेश, कवि कर्म का प्रारम्भ, अभिरूचियाँ, लेखन की प्रेरणा, उद्देश्य, सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियाँ, प्रेरणा स्त्रोत आदि के आधार पर व्यक्तित्व के भिन्न–भिन्न पन्नों को परत दर परत खोलने का प्रयास किया है। तृतीय अध्याय–'दीनदयाल शर्मा का पद्य', अध्याय में बाल साहित्य की प्रमुख प्रवृतियों, मनोरंजन, बाल मनोविज्ञान, पर्यावरण चेतना, प्रेरणा–तत्व, पारम्परिकता और आधुनिकता, बाल साहित्य और राष्ट्र प्रेम, समसामयिक संदर्भ को

अभिव्यक्त किया गया है। चतुर्थ अध्याय–'दीनदयाल शर्मा का गद्य' के अन्तर्गत दीनदयाल शर्मा के गद्य का आकलन किया गया है। बाल कहानियों का बाल कहानी के प्रतिमानों – बाल सुलभ जिज्ञासा, रोचकता, आधुनिकता और पुरातनता का समन्वय, बाल कहानी और मूल्य, समसामयिक संदर्भ एवं शिक्षा की कसौटी पर पड़ताल की गईहै।पंचम अध्याय–'दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं' के अन्तर्गत बाल संवेदना, वस्तु चित्रण, कल्पनाशीलता, नई तकनीक, पशु–पक्षी एवं वन्य जीव, सामाजिक चेतना के आधार पर रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य की परख की गई, इन्होंने अपने बाल साहित्य में बाल संवेदना का बहुत सूक्ष्म चित्रण कियाहै।षष्ठ अध्याय–'शिल्प सौष्ठव'में दीनदयाल शर्मा की भाषा एवं शिल्प सौष्ठव के अन्तर्गत इनके बाल साहित्य की भाषा और शिल्प के प्रमुख कारकों–भाषागत भंगिमायें, छंद–अलंकार, शब्द विधान, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लयात्मकता, गीतात्मकता, शैली के आधार पर तात्विक समीक्षा की गई है। सप्तम अध्याय–उपसंहार के अन्तर्गत दीनदयाल शर्मा के रूप में है जिसके बाल साहित्य की वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता, योगदान, निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

निखिल ब्रह्माण्ड के स्वामी परम पिता परमेश्वर के चरण कमलों में वंदन, अर्चन करते हुए ज्ञान और विद्या की प्रदाता, अधिष्ठात्री देवी माँ शारदे के श्री चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूँ। मेरे शोध प्रबन्ध को अथ से इति तक अर्थात् शोध की रूपरेखा से शोध के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने तक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को स्वरूप देने के लिए मैं अपनी प्रथम परम वंदनीया गुरूश्री, विदुषी, विविध आयामी व्यक्तित्व के सुसम्पन्न, वात्सल्यमयी, स्नेहिला, शोध निर्देशिका डॉ. अनिता वर्मा, सह आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा के प्रति नतमस्तक होकर अन्तस्थल से अनंत आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके उत्साहवर्द्धन ने मुझे अतुलित आत्मबल प्रदान किया और नित नवीन उर्जा से उर्जस्वित भी किया। मेरे शोध कार्य को आद्योपांत पढ़कर, मेरी शंकाओं का समाधान ही नहीं किया अपितु अमूल्य सुझाव देते हुए परिमार्जित करके, सुनियोजित आकार प्रदान किया। अपनी अतिव्यस्तता में भी समय निकाल कर मेरे कार्य को प्राथमिकता प्रदान की। उनके उचित निर्देशन से ही यह शोध कार्य नियत समयावधि में सम्पन्न हो सका है। यहाँ तक कि विपरीत परिस्थितियों में भी मेरा हौसला बढ़ाते रहे, मुझे आत्मविश्वास दिलाते रहे। मैं ऐसी सरल हृदया, विनम्र गुरूश्री को पाकर गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। सच तो ये है कि उनकी सहृदयता और सदाशयता के प्रति कोई उद्‌गार प्रकट करना मेरे शब्द सामर्थ्य से परे है।

मैं अपने शोध कार्य को सुव्यवस्थित, सुनियोजित स्वरूप देने के लिए उद्‌भट विद्वान प्राचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा के प्रति उनके सफल निर्देशन, अमूल्य सुझावों, अतुलनीय सहयोग, आर्शीवचन, स्नेहिल व्यवहार पाकर विनयशीलता के साथ कृतकृत्य हूँ। साथ ही महाविद्यालय के सभी सुधिजन प्राध्यापकों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने हर अवसर पर मेरा

उत्साह, मनोबल बढ़ाया, प्रेरित किया, मेरे कार्य को सराहा। संसार के सभी रिश्तों में मित्रता ही एक ऐसा रिश्ता है, जिसे कोई नाम नहीं दिया जा सकने के उपरान्त भी यह सबसे खूबसूरत, समधुर, आत्मीय, प्रगाढ़ सम्बन्ध है। इसमें आभार के लिए कोई स्थान नहीं होता, फिर भी मेरे इस शोध प्रबंध को सुचारू रूप से, नियत समय में परिपूर्ण करने के लिए अपने शोधार्थी मित्रों सुश्री प्रीति दुबे, श्रीमती ऋचा भार्गव, श्रीमती मधु मीना, श्री अशोक गुप्ता, श्री अवधेश जौहरी सहित अन्य शोधार्थियों के आत्मीय सहयोग, स्नेह और सद्भावनाओं की जितनी सराहना की जाये कम होगी। ऋचा भार्गव, मधु मीना और प्रीति दुबे से अविराम संवाद बने रहे, हम सेमिनारों, संगोष्ठियों में भी मिलते रहे और शोध के संदर्भ में चिन्तन–मनन एवं चर्चा करते रहने से नई–नई जानकारियों के वातायन खुलते रहे, ज्ञानवर्द्धन होता रहा, शोध सम्बन्धी होने वाले नवीन प्रयोगों और नियमों से अवगत होते रहे। इन सभी मित्रों के साथ प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से मुझे शोध कार्य में सहयोग करने वाले सभी मित्रों का मैं धन्यवाद देती हूँ कृतज्ञता, ज्ञापित करती हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को निरंतर सक्रिय बनाने के लिए मैं अपने जीवन सहचर श्रीमान कृष्ण प्रकाश जी के अथक सहयोग को शब्धबद्व तो नहीं कर सकती, बस इतना ही कि मैं सदैव ऋिणी रहूंगी। शोध कार्य में प्रारंभ से अद्यतन कदम से कदम मिलकर मेरे साथ चलते रहे, हर समय मेरे साथ खड़े रहे, मुझे सतत आगे बढ़ने को प्रेरित करने के साथ–साथ आत्म संबल भी प्रदान करते रहे एवं शोध कार्य की परिणति की सारी व्यवस्थाओ में मेरा पूर्ण समर्पण भाव से सहयोग प्रदान किया, जिससे यह शोध प्रबंध पूर्ण हो सका।

प्रस्तुत शोध कार्य का सारा श्रेय जाता है मेरे पुत्रवत विवेक कोठारी, मैनेजर आरर्केडिया एकेडमी को, जिन्होंने ही मुझे पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षा की जानकारी देकर फार्म भरवाने से लेकर टंकण की व्यवस्था करने तक अर्थात् सम्पूर्ण कार्य में मेरे साथ रहे, हर समय मेरा हौसला बढ़ाया, हर मुश्किल आसान की। इनके लिए सदैव मेरे अन्तस् से अनंत आशीर्वादों की अविरल धारा प्रवाहित होती है। मैं अपने बच्चों डॉ. नवनीत कुमार, इंजीनियर एवं वोईस आर्टिस्ट, बिटिया स्वप्निल कुमारी एवं इंजीनियर मनीष नामदेव (दामाद)हमेशा से ही मेरी उपलब्धियों पर खुश होते हैं, मेरा मनोबल बढ़ाते रहे हैं, हर सम्भव सहयोग देते हैं। इनकी बाल्यावस्था की चंचल शरारतों, किलकारियों, मनमोहक क्रीड़ाओं, मासूम सवालों, बाल सुलभ चेष्टाओं, तुतलाती बोली ने ही बच्चों के प्रति मेरे मन में अपरिमित, सहज वात्सल्य भाव उत्पन्न किया, जिसकी परिणिति यह शोध प्रबन्ध है। आधुनिक तकनीक सम्बन्धी कई कार्य इन्होंने ही सम्पन्न करवाये। इनके लिए हमेशा–हमेशा के लिए आर्शीवचन, अनिर्वचनीय वात्सल्य भाव मेरे अन्तस्थल में सदैव रहेगा।

अपने शोध प्रबन्ध सम्बन्धी सामग्री एकत्र करने, अध्ययन करने एवं स्वस्थ वातावरण देने के लिए समस्त पुस्तकालयों के अध्यक्षों सहित विशेष रूप से राजकीय सार्वजनिक मण्डल दीनदयाल उपाध्याय पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री दीपक श्रीवास्तव, सह पुस्तकालय अध्यक्षा श्रीमती

शशि सक्सेना एवं समस्त कर्मचारियों के प्रति विनय भाव से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ क्योंकि संदर्भ ग्रंथों के बिना शोध कार्य की परिकल्पना निराधार है। इसके उन सभी विद्वान लेखकों के प्रति भी नतमस्तक होकर आभारी हूँ, जिनके ग्रंथों के अध्ययन ने मेरे शोध कार्य को प्रमाणिकता प्रदान की।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सुगढ़ परिणति के लिए प्रकाण्ड विद्वान, बाल साहित्य के महत हस्ताक्षर डॉ. परशुराम शुक्ल के प्रति मैं बारम्बार आभार ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे फोन के माध्यम से शोध सम्बन्धी अनमोल सुझाव दिए एवं अपनी बाल साहित्य की कृतियाँ और समीक्षात्मक किताबें भिजवा कर मेरे शोध प्रबन्ध को गत्यात्मकता प्रदान की। ऐसे महान विचारक का स्नेह और आत्मभाव पाकर मैं कृतार्थ हूँ। इसी क्रम में सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्रीमान् नागेश पाण्डेय 'संजय' की भी मैं बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने शोध कार्य में मेरा उत्साह बढ़ाया, अपनी पुस्तकें प्रेषित की। साथ ही अपने साहित्य गुरू, अभिन्न मित्र देश के जाने–माने गजलकार डॉ. पुरूषोत्तम 'यकीन' ने मुझे शोध कार्य की बारीकियाँ और प्रक्रिया से अवगत करवाया, शोध को समय पर पूर्ण करने को प्रेरित किया। मैं इनका विनम्रता के साथ आभार व्यक्त करती हूँ। मैं उन सभी प्रकाशकों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्त्तव्य समझती हूँ जिन्होंने शोध सम्बन्धी पुस्तकें, संदर्भ ग्रन्थ उपलब्ध करवाये। लखनऊ के प्रकाशक श्रीमान् शैलेन्द्र दीक्षित, 'बुनियादी प्रकाशन' ने तो निशुल्क संदर्भ ग्रन्थ भेजकर मुझे चकित कर दिया, उनके इस आत्मीय और चिर स्मरणीय योगदान एवं शोध कार्य का इतना सम्मान रखने के लिए क्या कहूँ, उनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

शोध प्रबन्ध को उत्तम गुणवता प्रदान करने के लिए टंकण कार्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस कार्य को पूर्ण कुशलता के साथ अंजाम देने के लिए श्री रामचन्द्र शर्मा,श्री राकेश दाधीच, शबनम खान और श्री कृष्ण बिहारी सक्सेना के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने अपने विशिष्ट अनुभव, सद्व्यवहार, अथक परिश्रम द्वारा प्रस्तुत शोध को विशेष रूप से सज–धज के साथ सुन्दर रूप प्रदान किया जो शोध प्रबन्ध की सफलता का अनुपम श्लाघनीय पहलू होता है। अंत में उन सभी गुणीजनों का भी धन्यवाद जिनका परोक्ष और अपरोक्ष रूप से किसी भी प्रकार से मेरा सहयोग किया।

शोधार्थी

कृष्णा कुमारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
	शोध सार	I-II
	प्राक्कथन	III-VI
	प्रथम अध्याय–बाल साहित्य का उद्भव और विकास	1–57
1.1	बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा	
1.2	बाल साहित्य का उद्भव	
1.3	बाल साहित्य का स्वरूप	
1.3.1	शिशु साहित्य	
1.3.2	बाल साहित्य	
1.3.3	किशोर साहित्य	
1.3.4	बाल काव्य	
1.3.5	बाल कहानी	
1.3.6	बाल नाटक व बाल एकांकी	
1.3.7	बाल उपन्यास	
1.3.8	बाल निबंध	
1.4	बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एव ंविशिष्टता	
1.4.1	बाल साहित्य की आवश्यकता	
1.4.2	बाल साहित्य की उपयोगिता	
1.4.3	बाल साहित्य की विशिष्टता	
1.5	हिन्दी बाल साहित्य : परम्परा एवं विकास क्रम	
1.5.1	आदि युग (प्रारम्भ से 1850 तक)	
1.5.2	भारतेन्दु युग (1851–1900 तक)	
1.5.3	पूर्व स्वाधीनता युग (1901–1947)	
1.5.4	स्वातंत्र्योतर युग (1948 से अनवरत)	
	द्वितीय अध्याय –दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व	58–94
2.1	व्यक्तित्व–जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठ भूमि, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, व्यवसाय	
2.1.2	कवि कर्म	
2.1.3	अभिरूचियाँ	
2.1.4	दीनदयाल शर्मा के व्यक्तित्व की विशेषताएं	

क्र.सं	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
2.1.5	सम्मान और पुरस्कार	
2.1.6	स्माजसेवी	
2.1.7	प्रसारण	
2.1.8	विशेष उपलब्धियाँ	
2.2	कृतित्व (समग्र लेखन, बहुआयामी लेखन)	
2.2.1	बाल कविता संग्रह	
2.2.2	बाल कहानी संग्रह	
2.2.3	बाल नाटक एवं एकांकी संग्रह	
2.2.4	संपादन और पत्रकारिता	
	तृतीय अध्याय :	95—138
	बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का पद्य	
3.1	**बाल काव्य**	
3.1.1	सौदर्य चेतना और बालकाव्य	
3.1.2	मनोरंजन	
3.1.3	मनोविज्ञान	
3.1.4	पर्यावरण चेतना	
3.1.5	प्रेरणा तत्त्व	
3.1.6	पारस्परिकता और आधुनिकता	
	पारम्परिकता	
	आधुनिकता	
3.1.7	मूल्य	
3.1.8	राष्ट्र—प्रेम	
3.1.9	समसामयिकता	
3.2	**बाल पहेलियां**	
3.2.1	विषय वस्तु	
3.2.2	परिवेश	
3.2.3	प्रश्नोत्तरी	
3.2.4	मानसिक विकास	
	चतुर्थ अध्याय —दीनदयाल शर्मा का गद्य	139—178
	(क) बाल कहानी संग्रह	
4.1	बाल सुलभ जिज्ञासा	

क्र.सं	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
4.2	मनोरंजन	
4.3	आधुनिकता और परम्परा का समन्वय	
4.4	बाल कहानी और मूल्य	
4.5	समसामयिक संदर्भ	
4.6	शिक्षा	
	(ख) नाटक और एकांकी	
4.7	नाटक के पारम्परिक तत्वः कथा वस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा शैली, अभिनय,	
4.8	मनोरंजन	
4.9	रसानुभूति	
4.10	शिक्षा	
	पंचम अध्याय : दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं	179—212
5.1	बाल संवेदना	
5.2	वस्तु चित्रण	
5.3	कल्पनाशीलता	
5.4	नवीन तकनीक के प्रयोग	
5.5	पशु—पक्षी और वन्य जीव	
5.6	समाजिकता	
	षष्ठ अध्याय : शिल्प सौष्ठव	213—258
6.1	शिल्प—परिभाषा व स्वरूप	
6.2	भाषा की विविध भंगिमाऐंः सहजता और सरलता, ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता,	
6.3	मुहावरें और लोकोक्तियां	
6.3.1	मुहावरे	
6.3.2	लोकोक्तियां	
6.4	अलंकार और छंद	
6.5	गीतात्मकता	
6.6	शब्द संयोजन	
	तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज, विदेशी (अंग्रेजी, उर्दू, फारसी मिश्रित)	

क्र.सं	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
6.7	शैली काव्यात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, संवादात्मक शैली	
	सप्तम अध्यायः उपसंहार–निष्कर्ष और उपलब्धियां	259–266
	शोध–सारांश	267–285
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	286–293
	प्रकाशित शोध–पत्र	
	परिशिष्ट–साक्षात्कार	294–303

प्रथम अध्याय

बाल साहित्य का उद्‌भव और विकास

प्रथम अध्याय

बाल साहित्य का उद्‌भव और विकास

मानव ईश्वर की सुन्दरतम सृष्टि है। मानव मन के भीतर संवेदनाओं का अजब स्रोत सदैव प्रवाहित होता रहा है। ये अनुभूत संवेदनाएं विविध रूपों में सभ्यता व संस्कृति के विकास क्रम में अभिव्यक्त होती रही हैं। साहित्य मानव संस्कृति की जीवन यात्रा का अद्‌भुत दस्तावेज रहा है, वहीं मानव संस्कृति की युगीन यात्रा का सहचर भी रहा है। सामाजिक सरोकार से पूरित साहित्य सदैव ही मानव के लिए प्रेरणाप्रद रहा है। साहित्य सृजन भी मानव के मानसिक स्तर के अनुरूप सृजित होता है, तभी वह अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हो पाता है। आज सभी वर्गों के लिए साहित्य रचा जा रहा है। निश्चलता, मासूमियत, कोमलता व निःस्पृह भाव की बात की जाये तो बच्चे ईश्वर की अत्यंत अलौकिक एवं अद्‌भुत रचना कहे जाते हैं जिनमें चंचलता, सरलता, सरसता, की निर्झरिणी प्रवाहित रहती है। बालक उस कच्ची मिट्‌टी के समान होते हैं, जिन्हें जिस रूप में ढाला जाये वे उस सांचे में ढल जाते हैं। इस दृष्टि से बाल साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण कहा जा सकता है, जिसमें बालमन और उससे जुड़े समस्त भाव या नवरस जीवंत हो उठते हैं। बाल साहित्य सृजन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन रही है। बाल साहित्य में पंचतंत्र की कहानियाँ, हितोपदेश, कथा सारितनागर, अकबर—बीरबल के किस्से, बेताल पच्चीसी आदि प्रमुख हैं। पंचतंत्र की कथाओं में पशु—पक्षियों, वन्य जानवरों को प्रमुख पात्र बनाकर उनके माध्यम से बच्चों को शिक्षाप्रद प्रेरणा दी गई है। बाल साहित्य अर्थात्‌ वह साहित्य जो बालकों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए लिखा गया हो। चंपक, नंदन, चंदामामा जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य की दृष्टि से बालकों को मनोरंजन के साथ सार्थक प्रेरणा व सीख भी प्रदान की है। ये पत्रिकाएँ बच्चों के बीच लोकप्रिय रही हैं। आज वैश्विक परिदृश्य पर अनेक परिवर्तन हुए हैं। प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी है। बचपन विकास की अंधी होड़ में समाप्त हो रहा है। बाल गीत, बाल कथा का स्थान इलेक्ट्रोनिक माध्यमों ने ले लिया है। बालकों पर बस्तों का बोझ बढ़ रहा है। ट्‌यूशन का दबाव बना हुआ है। ऐसे समय में जहाँ विपरीत परिस्थितियों में बाल श्रमिकों द्वारा बच्चों का बचपन लुप्त हो रहा है, हम सबका दायित्व बनता है कि बाल्यावस्था रूपी कलियों को खिलने दें, परिपक्व होने दें। बाल साहित्य में रोचक, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, बाल गीत, बाल पहेलियाँ, बाल कवितायें प्रमुख हैं। हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य की परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही हैं। भक्ति काल में महाकवि सूर के वात्सल्य वर्णन में बाल मनोविज्ञान के विविध चित्र दिखाई देते हैं। **तभी तो आचार्य शुक्ल ने कहा है कि 'सूर वात्सल्य का कोना—कोना झांक आये हैं।'** आज भी पंचतंत्र

के आधार पर उनके प्रमुख पात्र पशु–पक्षी को लेकर रची गई बाल रचनाएँ बच्चों का स्वास्थ मनोरंजन करते हुए उन्हें आकर्षित भी करती हैं। एक से एक उत्तम बाल पत्रिकाएं प्रकाशित की जा रही हैं। अनेक प्रमुख बाल साहित्यकार बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से बाल साहित्य रच रहे हैं।

मनुष्य की सभी अवस्थाओं में बाल्यावस्था श्रेष्ठतम मानी गई है, जिसे प्रत्येक प्राणी जी भर कर जी लेना चाहता है। बालक की नटखट अठखेलियाँ बाल मनोवृत्तियाँ, तरंगिनी की लोल लहरों जैसी चंचल शरारतें, मनोहारी क्रीड़ायें, सद्यः खिले हुए सुमनों सी कोमल मुस्कान, प्रातः कालीन समीर की मानिंद आनन्ददायक चेष्टायें, कुम्हड़बतियाँ से भी अधिक संवेदनशील भाव, निर्झर सी खिलखिलाहट, तितली जैसी चंचलता, जल सी सरलता व निर्मलता, बरबस ही सहृदय का मन मोह लेती हैं। ये अनिर्वचनीय अभिराम, अतुलनीय, अद्वितीय, अलौकिक, अद्‌भुत बाल–क्रीड़ायें, संवेदनाएँ किसी कवि हृदय के अन्तस्थल का स्पर्श करते हुए अभिव्यक्त होकर बाल साहित्य में रूपांतरित हो जाती हैं। आज का बालक ही भावी कर्णधार होगा, इसके लिए जरूरी है कि बाल्यावस्था रूपी कच्ची किन्तु उर्वर मिट्‌टी में ही सुसंस्कार के बीज डाले जायें, तभी वे अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित होकर कल के सुसभ्य, अनुशासित, संवेदनशील और सुसंस्कारित नागरिक के स्वरूप में फलित होंगे, जिससे समाज रूपी वाटिका सुवासित हो सकेगी। यह समूची प्रक्रिया बाल साहित्य के द्वारा ही सम्भव हो सकती है क्योंकि बाल साहित्य बाल–गोपाल के लिए मित्रवत होता है, जो उन्हें हंसाता हैं, गुदगुदाता है, दुलराता है, लोरी की थपकी से सुलाता है। प्रभाती से पुचकार कर जगाता है और काल्पनिक अन्तरिक्ष में उड़ता है तो यथार्थ की जमीन के सैर भी करवाता है, समय आने पर अंगुली थामकर चलता है, तथा भावी जीवन के लिए सावचेत भी करता है। वर्तमान में बाजारवादी संस्कृति भौतिक चकाचौंध, अर्थोपार्जन की उत्कृष्ट पिपासा, प्रतिस्पर्द्धा माता–पिता, परिवेश और समाज की अंतहीन महत्वाकांक्षाओं और अपेक्षाओं के चलते बच्चों की स्वप्निल दुनिया खिलने से पूर्व ही मुरझा जाती हैं। वर्तमान में बाल–शोषण चरम पर है, बच्चों की मासूमियत खो सी गई है, केवल होमवर्क करना, स्कूल व ट्यूशन जाना ही बालक की दैनन्दिनी बन चुकी है। बाल साहित्य बाजार में उपलब्ध होने पर भी बालक को मुहैया नहीं करवाया जाता। ग्रामीण क्षेत्रों व ढाणियों में तो पूरी तरह शिक्षा तक नहीं पहुँच पाई है, वहाँ बाल साहित्य का तो प्रश्न ही नहीं उठता। बाल साहित्य के साथ प्रायः यह भ्रान्ति या विडम्बना रही है कि इसे सदैव से ही दूसरे दर्जे का साहित्य मान कर नज़र अन्दाज़ किया जाता रहा है जो कदाचित उचित नहीं है, जब कि समकालीन दौर में सब से अधिक आवश्यकता ही बालकों पर ध्यान केन्द्रित करने की है। आए दिन बालकों के साथ जो क्रूर व्यवहार किया जाता है, उनकी ख़रीद–फ़रोख़्त की जाती है, उन्हें मानसिक प्रताड़ना से लेकर शारीरिक रूप से भी उत्पीड़ित किया जाता है, यह हृदय विदारक घटनाएँ किसी से छिपी

हुई नहीं है। ऐसे तमस से घिरे परिवेश में बाल साहित्य एक उम्मीद की रश्मि है, जिसके प्रकाश से बचपन आलोकित हो सकता है, क्योंकि बालक अनुगामी होता है। उसे जैसा दिखाया, सुनाया या पढ़ाया जाता है, वह वैसे ही सांचे में ढल जाता है। कैलाश सत्यार्थी और मलाला यूसुफजई को नोबल पुरस्कार 'बचपन बचाओ' और 'कन्या शिक्षा' के लिए प्रदान किया जा चुका हैं, इन महान विभूतियों के जीवन का ध्येय ही 'बचपन बचाओ' है, जो इस बात का प्रमाण है कि आज बालकों की सुरक्षा करना, उनका बचपन बचाना कितना वांछनीय है क्योंकि समूची मानवता को सुरक्षित रखने के लिए बच्चों की कुशलता सर्वोपरि है। इसीलिए एक बालक को खुश कर देना ईश्वर की इबादत के बराबर माना गया है। निदा फाजली ने कह भी दिया–

"घर से मस्जिद बहुत दूर चलो यूँ कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाये।"

अन्य विधाओं की भांति बाल साहित्य का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है, जिसमें सैंकड़ों प्रतिष्ठित बाल साहित्यकारों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। प्रमुख रूप से–विष्णु प्रभाकर, श्रीधर पाठक, डॉ. श्री प्रसाद हरिऔध गुणाकर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, राजेश जोशी, प्रकाश मनु, राष्ट्रबंधु सीताराम गुप्त आदि हैं। इसी परम्परा रूपी माला के एक मनके के रूप में बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का नाम प्रासंगिक है। समकालीन बाल साहित्य में शीर्ष स्थान रखने वाले बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा की साहित्य साधना और बालकों के लिए किया गया उल्लेखनीय सृजन और अभूतपूर्व योगदान हिन्दी साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीय स्तर पर जब बाल साहित्य सृजन के सन्दर्भ में दृष्टिपात करते हैं, तो राजस्थान के मूर्धन्य बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का नाम अपनी विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पहचान के साथ सामने आता है। बचपन को सुरक्षित रखने के लिए इनकी रचनाएँ मील के पत्थर का काम करती हैं। दीनदयाल शर्मा साहित्य क्षितिज से उदित ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिसके प्रखर प्रभामंडल के आलोक से बाल साहित्य समुज्ज्वल हो उठता है। लेखक शर्मा और बाल साहित्य सरिता एवं तरंगों की भांति एकमेक हैं। रचनाकार शर्मा विगत चालीस वर्षों से सम्पूर्ण निष्ठा भाव के साथ केवल और केवल बच्चों के लिए ही सृजनरत हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से बालकों और किशारों की वर्तमान संदर्भों से जुड़ी अनेक समस्याओं को उजागर किया है, यथा – बाल मन का अन्तर्द्वन्द्व, स्कूल में शिक्षकों द्वारा बालकों की पिटाई करना व सजा देना, हीनता की भावना, आत्मबल की कमी, माता–पिता के पास समयाभाव, दिन–प्रतिदिन बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा, गरीबी, चोरी की आदत, एकल परिवार, अंधी दौड़, बस्ते का बोझ व गृहकार्य का मानसिक दबाव, खेलने–कूदने पर पाबंदी, शाला में सहगामी क्रियाओं का संचालन अत्यल्प होना, माता–पिता की महत्वाकांक्षाओं को ढोना, सही मार्गदर्शन की कमी, जैसे अनेक यक्ष प्रश्न लेखक शर्मा ने अपने रचनाकर्म के माध्यम से उठाये हैं और समाज को सावचेत भी किया है

और कदाचित समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। हिन्दी और राजस्थानी भाषा में रचित बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में यथा– बाल–गीत, बाल–कविता, बाल–कहानी, बाल–नाटक, बाल–पहेलियाँ, बाल–एकांकी, बाल–संस्मरण, बाल हास्य–व्यंग्य की नाना कृतियों का प्रणयन कर चुके हैं और आज भी अविराम सृजनरत हैं। इनके बाल साहित्य में उन समग्र प्रवृतियों, तत्वों, विशेषताओं, पद्धतियों का समाहार है, जो बालकों के सर्वांगीण उत्कर्ष में अपेक्षित है। ये कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि सृजनकर्मी शर्मा एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था के रूप में कार्यरत हैं। बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी दीनदयाल शर्मा बाल साहित्य लिखते भर नहीं है, अपितु उसे जीते हैं, ओढ़ते–बिछाते हैं। अपना कीमती समय बालकों के साथ व्यतीत करते हैं। प्रति रविवार 'टॉफी डे' के रूप में अनवरत मानते आ रहे हैं, उस दिन बच्चों को टॉफियाँ खिलाते हैं, उनसे बतियाते हैं, उनके साथ मौज–मस्ती करते हैं, प्रेरणादायक रचनाएँ सुनाते हैं। यही नहीं, छोटे बालकों से लेकर बड़ों तक को उपहार स्वरूप सदैव पुस्तकें ही भेंट करते आ रहे हैं। गाँव–गाँव जाकर बाल साहित्य वितरित करना इनके जीवन का प्रमुख आयाम हैं। रचनाकार शर्मा अपने सृजन के प्रति पूर्णरूपेण प्रतिबद्ध है, जिसमें बाल–मन के प्रत्येक कोने का स्पर्श किया है, जिसमें उनकी अठखेलियाँ, बाल प्रवृत्तियों, सोच, चिंतन, जिज्ञासा, मनोरंजन एवं बच्चों की अद्‌भुत और कल्पना से परिपूर्ण दुनिया का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

1.1 बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा

बाल साहित्य का सरल सा अर्थ है, बालकों के लिए, बालकों के नजरिये से, उन्ही की भाषा में, लिखा गया साहित्य, जो कभी–कभी बालकों द्वारा भी लिखा हो सकता है। 'बाल साहित्य' एक शब्द सामासिक पद है जो 'बाल' और 'साहित्य' शब्द से मिलकर बना है। बाल अर्थात् बच्चा, टाबर, नन्हा–मुन्ना बालक। **शब्द कोश के अनुसार–**

शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, बाल – सं. (पु.) बच्चा, बालक, जैसे बाल–गोपाल, 16 वर्ष के कम आयु वाले बालक, नेत्र वाला, नवोदित बाल इंदु, बाल रवि, सुगंध वाला।[1]

संस्कृत हिन्दी शब्द कोश, बालक (वि.) बच्चे जैसा, अनजान, बच्चा, बाल कंकण[2]

अशोक मानक हिन्दी शब्द कोश, बालक–पुं. (सं.) भाव, बालकता, मनुष्य, कम उम्र का बच्चा, लड़का[3]

हिन्दी–उर्दू शब्दकोश, तिल्फ (अ) बच्चा, शिशु, लड़का, बालक[4]

Kamal"s Oxford Dictionary, अंग्रेजी में बालक के लिए **"Child"** शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका कोशगत आशय–Child – n. a new born human being, childhood. बालक, संतति, बाल्यावस्था, शैशवावस्था।[5]

Child- चाइल्ड (सं.) शिशु, बच्चा।[6]

'साहित्य' का कोषगत अर्थ–

राधाकृष्ण अंग्रेजी–हिन्दी व्यावहारिक कोश, साहित्य– सं. (पु.) लिपिबद्ध रचना, ग्रन्थों का समूह, वाङ्मय, काव्यशास्त्र, गद्यात्मक – पद्यात्मक रचना।[7]

शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, साहित्य (संज्ञा पुं. सं.)–सहित या साथ होने का भाव एक साथ रहना, वाग्ङमय, लिटरेचर[8]

अंग्रेजी में साहित्य का रूपांतरित शब्द Literature है।

Kamal"s Oxford Dictionary, Literature– n. learning, literary, production wirting of a country. ज्ञान, साहित्य, शास्त्र समूह[9]

उपरोक्त कोश सम्मत तात्पर्य के अनुसार, 'बाल' अर्थात् बच्चा, बाल–गोपाल, बालक, नन्हा–मुन्ना, नवोदित। साहित्य के आशय के गद्य–पद्य में रचना, लिपिबद्ध सृजन, ग्रंथों के समूह। वस्तुतः साहित्य अपने–आप में बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए है। विद्वानों, इतिहासकारों तथा समीक्षकों ने साहित्य के भिन्न–भिन्न अर्थ प्रस्तुत किये हैं। किसी ने साहित्य को समाज के दर्पण, तो किसी ने प्रतिबिम्ब कहा है। पाश्चात्य विचारक साहित्य को जीवन की व्याख्या मानते हैं, वहीं कुछ विद्वान साहित्य को जीवन की आलोचना भी कहते हैं। संत तुलसीदास जी ने कल्याणकारी रचना को साहित्य कहा है, **कविवर पन्त के अनुसार– 'मानव को आदर्श चाहिये, संस्कृति को आत्मोत्कर्ष चाहिए'।** पाश्चात्य विद्वान मेथ्यू आर्नोल्ड ने लिखा है कि **वस्तुतः साहित्य सत्य, सुन्दर और शुभ का अद्भुत समन्वय है।** 'साहित्य' शब्द में 'सहित' और 'हित' का भाव अंतर्निहित है। अतः लोक का कल्याण करने वाला सृजन ही साहित्य कहलाता है। साहित्य का सबसे प्राचीन प्रयोग भृर्तहरि ने (सातवीं शताब्दी में) नीति शतक में किया है और साहित्य, संगीत, कला विहीन व्यक्ति को बिना सींग–पूंछ का पशु बताया है "साहित्य संगीत कला विहीन : साक्षात्पशुः पुच्छविषाणा हीन।" विद्वानों ने 'साहित्य' को विविध प्रकार से परिभाषित किया है।

डॉ. श्याम सुन्दर दास मानते हैं–'साहित्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे।'[10]

डॉ. मनोहर सर्राफ– 'व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'साहित्य' शब्द का अर्थ 'साहित्यस्य भावः साहित्यम'। विद्वानों ने इस उक्ति में प्रयुक्त 'सहित' शब्द के दो अर्थ माने हैं। (1) 'साथ होना' (2) 'हितेन सह साहित्यम' अर्थात् हित में साथ होना। 'साथ होना' से यह भाव निकलता है कि जहाँ शब्द और अर्थ, भाव और विचार का सहभाव हो, समन्वय हो। साहित्य तभी सार्थक है जब उसके शब्द किसी अर्थ का बोध करते हों। साहित्य शब्द के दूसरे अर्थ में– 'हित के साथ होना' का भाव है–

जिससे हित सम्पादन हो। साहित्य की सार्थकता केवल शब्द और अर्थ के उचित समन्वय में नहीं है, उसके द्वारा व्यक्ति और समाज का हित होना चाहिए। यही साहित्य का शिव पक्ष है।'[11]

डॉ. नगेन्द्र– 'आत्माभिव्यक्ति ही वह मूल तत्व है जिसके कारण कोई व्यक्ति साहित्यकार और उसकी कृति साहित्य बन पाती है।'[12]

आचार्य कुंतक– 'जिसमें शब्द और अर्थ दोनों की अन्यूनानतिरिक्त, परस्पर स्पर्द्धापूर्वक मनोहारिणी, श्लाघनीय, स्थिति हो वह साहित्य है।'[13]

हेनरी हडसन के शब्दों में– 'Literature is fundamentally an expression of life through the medium of language.'[14]

उपरांकित परिभाषाओं के सार स्वरूप स्पष्ट है कि साहित्य शब्द में मानव हित–साधना का भाव स्वतः ही अन्तर्हित है, साथ ही वह सोद्देश्य होती है। मानव इस सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। मानव ने सतत् प्रयास और अपनी साधना से जो कुछ भी प्राप्त किया है, उन सब में कला और साहित्य को अत्युत्तम उपलब्धि माना गया है। यही कारण है कि साहित्य का मूल उत्स या स्रोत जीवन और मानव समाज को ही स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि साहित्य का मूल उद्देश्य कुरीतियों, सभी प्रकार की बुराइयों से हटाकर स्वस्थ, सुन्दर और आनन्दमय जीवन की ओर अग्रसर करना है। साहित्य को मनोवेगों की सृष्टि माना जा सकता है। उसमें साहित्य का समावेश है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने साहित्य को जनता की संचित चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब माना है। जनता के मनोवेग चाहे वे किसी भी रूप में क्यों न हों, साहित्यकारों को प्रभावित करते हैं। परिणामतः साहित्य का रूप स्वतः ही परिवर्तित होता चला जाता है। महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि भाव का भाषा से, पुरुष का प्रकृति से, अतीत का वर्तमान से, दूर का निकट से और मस्तिष्क का हृदय से जो अन्तरंग मिलन है, वही साहित्य है।

मूलतः साहित्य और समाज अन्योन्याश्रित है। साथ ही साहित्य कालजयी, शाश्वत, होने के अतिरिक्त जीवन में अतीन्द्रित रस का उद्रेक भी करता है। साहित्य मानव जीवन की कलात्मक, रागात्मक, अलौकिक, दिव्य अभिव्यक्ति है। साहित्य परजनहिताय होता है, लोक–कल्याण करना साहित्य का ध्येय है। सभी प्रकार की बुराइयों, विसंतियों, अंध विश्वासों से मानव समाज का रक्षण करके स्वस्थ, सुन्दर, सुसभ्य, सुसंस्कृत जीवन शैली की संरचना करते हुए, उदात्त जीवन की स्थापना करना साहित्य का प्रमुख ध्येय है। शब्द ब्रह्म स्वरूप होते हैं और इन्हीं शब्दों से लोकमंगल की रचना करना ही साहित्य है। कतिपय विद्वानों ने लोक कल्याण के साथ लोकरंजन को भी साहित्य का अहम् पक्ष माना है। वहीं भारतीय मनीषियों ने आनन्द को जीवन का सर्वोपरि ध्येय के रूप में स्वीकार किया है और ये भी कहा है कि जीवन के चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की संप्राप्ति भी साहित्य के द्वारा ही सम्भव है। अंततः, अपनी

सुरिभ, कोमलता, सुरम्यता, आध्यात्मिकता के माध्यम से समस्त विश्व को स्पंदित, पुलकित, प्रमुदित, प्रस्फुटित करना ही सद्साहित्य या शाश्वत साहित्य का युग धर्म है।

सारांशतः साहित्य समाज का प्रतिरूप है। जिस देश का साहित्य उन्नत होता है वह देश स्वतः विकसित होता है और जिस देश का साहित्य पतित हो जाता है उस देश का पतन सुनिश्चित है। इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने साहित्य को जनता की संचित चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब माना है। जैसे–जैसे जनता की चित्तवृत्ति में अन्तर उत्पन्न होता जाता है, वैसे ही साहित्य में भी अन्तर उत्पन्न होता जाता है और ये तर्कसंगत भी है क्योंकि समाज के मनोभावों से साहित्यकार अप्रभावित नहीं रह सकता। साहित्य वह प्रकाशपुंज है जो समाज को आलोक की ओर अग्रसर करता है। 'रसो वै ब्रह्म' अर्थात् रस ही ब्रह्म स्वरूप है, यह निर्विवाद सत्य है। मानव जीवन का प्रमुख ध्येय अनिर्वचनीय, अद्भुत, अलौकिक रस के परमानन्द में अवगाहन करना ही माना गया है। साहित्य के रसास्वादन के द्वारा ही साधक में रसोद्रेक होता है और वह ब्रह्मानन्द सहोदर अर्थात् अलौकिक आनन्द को आत्मसात करते हुए 'मधुमती भूमिका' में लीन हो जाता है। यह साहित्य का सर्वोपरि लक्ष्य है।

संस्कृत के आचार्यों ने कहा है कि 'हितेन सह साहित्यम साहित्यस्य भाव साहित्यम, या 'धीयते इति हितम–हितेन सह वर्तमानम'। इस प्रकार हितकारक रचना ही साहित्य है। साहित्य वह धुरी है, जिस पर सम्पूर्ण जीवन, समाज, दर्शन, आनन्द, सम्प्राप्तियाँ, सार्थकता, सत्य, शिव, सुन्दर रूपी ग्रह परिभ्रमण करते हैं। प्रौढ़ साहित्य और बाल साहित्य में किंचित भिन्नता होती है। एक वाक्य में कहें तो सम्पूर्ण वाङ्मय का आधार बाल साहित्य ही माना गया है। 'बाल साहित्य' अर्थात् बच्चों का साहित्य, जो बालक के लिए रचा जाता है, बालक को आनन्द चाहिए, मनोरंजन चाहिए, इस प्रकार बाल साहित्य–'गद्य–पद्य' में लिखी गई ऐसी रचनाएँ, जिन्हें पढ़कर बालक आनंदित हो उठे, उल्लसित हो जाये, उमंगित होकर नृत्य करने लगे, उनकी स्वप्निल कल्पनाओं को पंख लग जायें। इसी के साथ बालक के सम्यक उन्नयन, उत्कर्ष, अभ्युदय और सर्वांगीण विकास में सहायक हो, उसे सुसभ्य, सुसंस्कृत, चरित्रवान, ईमानदार, योग्य नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये, उस में विश्वबंधुत्व, मानवीय संवेदना का भाव जाग्रत करे तथा उस के भावी जीवन के लिए पाथेय सिद्ध हो। बाल साहित्य बच्चों की जिज्ञासाओं और कल्पनाओं को शांत करके उनके स्तर के अनुसार, उनके मनोविज्ञान को समझ कर उनकी भाषा में लिखा गया हो। विभिन्न विद्वानों ने बाल साहित्य को अपने–अपने तरीके से परिभाषित किया है।

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'– 'ऐसा बाल साहित्य जिसे पढ़कर बच्चे आनंदित हों, उनका सम्यक विकास हो और वे आत्म सुधार तथा जीवन के संघर्षों से जूझने की दिशा में क्रियाशील हो सकें, सही मायने में यही बाल साहित्य है। भले ही उसकी रचना बाल साहित्य के रूप में नहीं हुई हो। वस्तुतः बाल साहित्य का प्रणयन अत्यंत कठिन कार्य है। बच्चों द्वारा स्वयं अपने लिए लिखा जाना

कठिन है और बड़े कभी बाल मानसिकता से ऊपर उठ चुके होते हैं। बाल साहित्य लेखन को इसलिए 'परकाया प्रवेश' की संज्ञा दी गई है। बाल अनुभूतियों को आत्मसात कर उसे उन्हीं की भाषा में प्रस्तुत करने वाला ही वास्तविक बाल साहित्यकार है।[15]

डॉ. राष्ट्र बन्धु– 'बाल साहित्य रोचक और प्रेरक दोनों होना चाहिए क्योंकि बाल साहित्य रोचक नहीं होगा तो बालकों को अपनी ओर आकर्षित नहीं करेगा। उसे प्रेरक भी होना चाहिए, अन्यथा वह निरुद्देश्य होने से गुणकारी नहीं हो सकता।'[16]

महान कवियित्री महादेवी वर्मा– 'बालक तो स्वयं एक काव्य है, स्वयं ही साहित्य है।'[17]

डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे– 'बच्चों की दुनिया सर्वथा पृथक होती है। उनका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता हैं। वे संस्कृति, साहित्य तथा समाज के लिए नए होते हैं। स्कूली साहित्य बाल साहित्य नहीं है। अपितु बच्चों के जीवन तथा मनोभावों को जीवन के सत्य एवं मूल्यों के पहचानने की स्थिति से जोड़कर जो साहित्य उनको सरल एवं उनकी अपनी भाषा में लिखा जाता है और जो बच्चों के मन को भाता है वही बाल साहित्य है।'[18]

बालकों की प्रिय पत्रिका के चंदामामा के सम्पादक श्री बाल शौरि रेड्डी–'बाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो। उस में बुनियादी तत्वों का चित्रण हो। बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो। कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल, सहज और समझ में आने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।[19]

'बाल सखा' के सम्पादक लल्ली प्रसाद पाण्डेय के अनुसार– "बाल साहित्य का उद्देश्य है बालक, बालिकाओं में रूचि लाना, उनमें उच्च भावनाओं को भरना और दुर्गुणों को निकाल कर बाहर करना, उनका जीवन सुखमय बनाना और उनमें हर तरह का सुधार करना।"[20]

निरंकार देव सेवक–'बाल साहित्य बच्चों के मनोभावों, जिज्ञासाओं और कल्पनाओं के अनुरूप हो, जो बच्चों का मनोरंजन कर सके और मनोरंजन भी वह जो स्वस्थ और स्वाभाविक हो, जो बच्चों को बड़ों जैसा बनाने के लिए नहीं, अपने अनुसार बनाने में सहायक होने के लिए रचा गया हो।'[21]

हार्वे डार्टन (पाश्चात्य समीक्षक)–'बाल साहित्य से मेरा अभिप्राय इन प्रकाशनों से है, जिन का उद्देश्य बच्चों को सहज रीति से आनन्द देना है, न कि उन्हें मुख्य रूप से शिक्षा देना अथवा उन्हें सुधारना अथवा उन्हें उपयोगी रीति से शांत करना।'[22]

उक्त कथनों को पढ़कर कहा जा सकता है कि बाल साहित्य बालकों को ध्यान में रखकर लिखा गया हो, जो उन्हें आनन्दातिरेक से भर दे, इसके लिए रचनाकार को चाहिए की

बालकों के नजरिये से, उनकी अनुभूतियों, उमंगों, जिज्ञासाओं को उन्हीं की वाणी में कागज पर उतारे। सोहनलाल द्विवेदी का मानना है कि जिस रचना को बालक सरलता से समझ सके, वो बाल साहित्य है, इसी क्रम में बाल शौरि रेड्डी कहते हैं कि बाल साहित्य पठनीय, रोचक, सारगर्भित और संक्षिप्त होना चाहिए बाल साहित्य बालकों को ध्यान में रखकर रचा गया साहित्य है, जो बालकों का मनोरंजन भी करे, उन्हें प्रेरित करे, आकर्षित करे और उनके समग्र व्यक्तित्व के अभ्युदय में सहायक बन सके। हार्वे डार्टन कहते हैं कि बाल साहित्य के द्वारा बच्चों को सहज आनन्द मिलना चाहिए, रामवीर के दृष्टि से बाल साहित्य ऐसा हो, जिसे बालक हँसते, खेलते, सहर्ष स्वीकार कर लें। बालक अपने आप में स्वयं सुन्दर रचना है, अतः बालकों को उनके जैसा बनाने में मदद करें। यथार्थ में जो साहित्य बालकों के मन को भा जाये वही बाल साहित्य है। बाल साहित्य लिखना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। वास्तव में बालकों के लिए लिखना बच्चों का खेल नहीं है– 'कविता लिखना खेल नहीं है, बच्चों का, किन्तु, लिखी तो जा सकती है, इक मासूम, रुपहली कविता, फ़क़त, खेलते हुए देख कर, बच्चों को। बाल साहित्य लिखना बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध बालको के साथ–साथ श्रेष्ठ समाज की संरचना से जुड़ा हुआ है अर्थात् बाल साहित्य मनुष्य के अन्दर से उस के पशु भाव को निकाल कर उसे मनुष्य बनाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया का नाम है। बाल साहित्य का पाठक एक नन्हा–मुन्ना बच्चा होता है, जो स्वभाव से ही बहुत चंचल, शरारती, मासूम, कौतुहलप्रिय, नटखट होता है और उसकी दुनिया बड़ों से एकदम भिन्न होती है, अद्भुत होती है, विचित्र होती है, जहाँ वह कभी सारी सीमाओं से परे जाकर, कल्पनाओं के पंख लगाकर आकाश विचरण मे करने लगता है जिसमें सम्पूर्ण प्रकृति के सारे रंग समाहित हो जाते हैं, तो कभी यथार्थ के धरातल पर आकर उन सपनों को साकार करने के सपने बुनने लगता है। अतः ऐसी कोमलकान्त, मृदुल बाल्यावस्था के लिए बाल साहित्य को भी इतना ही मासूम, सरल, सहज, चंचल, नटखट, सुरुचिपूर्ण, निश्चल, अभिराम, पारदर्शी होना चाहिए जो बालक को मित्रवत हँसाए, गुदगुदाये, बतियाये, खिलखिलाये, किलकारियाँ भरे, उसके साथ खेले–कूदे और उसकी बाल सुलभ चेष्टाओं को मूर्त रूप दे।

जहाँ तक पाठ्य पुस्तकों का प्रश्न है, उन्हें बाल साहित्य कदापि नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये सिद्धान्तों पर आधारित होती है। बालकों में जिज्ञासा बहुत प्रबल होती है जो केवल पाठ्य–पुस्तकों के पढ़ने से परिशमित नहीं हो पाती और न ही केवल उनके द्वारा बाल–गोपाल का सम्पूर्ण विकास सम्भव है। पाठ्य पुस्तकें केवल मार्ग हैं। दोनों पूरक होते हुए भी स्वरूप की दृष्टि से भिन्न है। इसके लिये उन्हें इतर किताबों की जरूरत भी होती हैं। जिनसे उनकी मानसिक क्षुधा शांत हो सके। इसके लिए टाबरों को ऐसा साहित्य चाहिए जो उनकी अभिरुचि के सर्वथा अनुकूल हो और वो एक मात्र साहित्य, बाल साहित्य ही है।

1.2 बाल साहित्य का उद्भव

'उद्भव' शब्द से आशय जन्म, आविर्भाव, उत्पन्न होना, अभी–अभी अस्तित्व में आना, प्रादुर्भाव, पहली बार प्रकट होना, पैदा होना के अर्थ में लिया जाता है। 'शिक्षार्थी शब्द कोष' के अनुरूप–

उद्भव – सं. (पु.) 1. जन्म, 2. उद्धम[23]

इंग्लिश में उद्भव का समानार्थक शब्द Born है।

Born – (p.p. of bear) brought, forth-जन्मा हुआ, पैदा हुआ।[24]

हिन्दी साहित्य की भांति बाल साहित्य के उद्भव को लेकर विचारक, समीक्षक एक मत नहीं है। बच्चों की प्रिय पत्रिका 'नंन्दन' के पूर्व सम्पादक जय प्रकाश भारती का मानना है कि 1623 में चटमल द्वारा रचित 'गौरा बादल की कथा' हिन्दी बाल साहित्य की प्रथम कृति है। अन्य विद्वान भी मिश्र बंधुओं के सन्दर्भ से इस पुस्तक को बाल साहित्य की प्रथम कृति मानते हैं। इस पुस्तक से बाल साहित्य का शुभारम्भ स्वीकार करते हैं। इस बात के विरोधी रचनाकारों ने इस बात को खारिज कर दिया है, उनका कहना है कि सूरदास ने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का लालित्यपूर्ण वर्णन किया है लेकिन इसे बाल साहित्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

बाल साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन और समृद्ध रहा है भारत में ही सबसे पहले बाल साहित्य उपलब्ध हुआ है। सुनिश्चित, बाल साहित्य का उद्भव इस पृथ्वी पर बालक के अवतरण के साथ हुआ है। माता अपने बालक को दुलारते समय, सुलाते समय, झूलाते समय, जगाते वक्त माता ने कुछ गुनगुनाया होगा, तब स्वतः ही कुछ ध्वनियाँ तुकबन्दी के रूप में निःसृत होकर लोरी, प्रभाती रूप में विकसित हुई होंगी। बच्चों को खुश करने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए घर के, समाज के बड़े लोगों ने कुछ किस्से, कहानियाँ गढ़ना शुरू किया होगा। इसी के साथ–साथ परियों की परिकल्पनाएँ करके कहानियाँ बनने लगी होंगी। किसी ने राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारियों के किस्से सुने होंगे और इस पर हजारों किस्से कहानियाँ बनती गई जो आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। इस प्रकार श्रुति एवं वाचिक परम्परा के द्वारा बाल साहित्य की विकास यात्रा का शुभारम्भ होता गया। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक स्थान से दूसरे स्थान एवं एक कालखंड से दूसरे कालखंड तक की यात्रा करता रहा। इसी के समानांतर लोक कथाऐं, लोक विश्वास, लोक परम्पराऐं, दन्त कथायें, लोक–गीत, लोक अनुभव आदि बाल साहित्य की सर्जना में सहायक बनते गए और पीढ़ी–दर पीढ़ी बाल साहित्य रहा और हस्तांतरित होता गया।

'नाना–नानी, दादा–दादी की कहानियों माध्यम से बाल साहित्य आदि काल से ही मौखिक रूप से प्रचलन में रहा है। ये कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से हस्तांतरित होती रही हैं। देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार इन कहानियों में समय–समय पर कुछ न कुछ जुड़ता रहा होगा। इन कहानियों का उद्देश्य बालकों का स्वस्थ्य मनोरंजन एवं उन्हें नैतिकता और मानवता का पाठ पढ़ाया जाना रहा।'[25]

श्रीनाथ सहाय की मान्यता है– 'प्राचीन भारत के साहित्यकारों का बाल साहित्य की ओर विशेष ध्यान था। उस समय यह साहित्य समृद्ध रहा है, जिसमें कुछ प्रमुख हैं, 'कथा सरित्सागर', 'जातक कथाएँ', 'पंचतंत्र', 'पौराणिक कथाएँ' तथा 'हितोपदेश' आदि। महाकवि सूरदास का 'कान्ह कहा चलत सो डोलत', 'मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो', 'मैया कबहुँ बढ़ेगी चोटी' नामक रचनाओं में बाल चरित्र का मनोरम वर्णन किया गया हैं। भारतेंदु की 'अंधेर नगरी' प्रसिद्ध है। 'चंद्रकांता संतति' तथा 'भूतनाथ' रुचिकर रचनाएँ हैं। कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर बालकों हेतु रचना में स्वयं बालक बन जाते थे। अतः इन की रचनाएँ कृतिमता से दूर, कौतुहल और चंचलता से भरपूर होती थी। 'मेघ की तरंग', 'चम्पा के फूल' तथा 'कागज की नाव' आदि इन की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।[26]

कुछ समीक्षक अमीर खुसरो की कह–मुकरनियों और पहेलियों को बाल साहित्य की प्रारम्भिक रचनाएँ मानते हैं, जो उचित प्रतीत होता है। इन सब के बाद आधुनिक रचनाकार हिन्दी साहित्य की भांति बाल साहित्य का विधिवत् शुभारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ही मानते हैं। इसी युग से बाल साहित्य के स्वरूप का अलग से निर्धारण हुआ और प्रकाशन में आया। विद्वानो ने 'अंधेर नगरी चौपट राजा' और 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' को प्रथम मौलिक नाटक की श्रेणी में रखा है। 1 जनवरी 1874 में प्रकाशित 'बाल प्रबोधिनी' पत्रिका से बाल साहित्य का सूत्रपात हुआ। जबकि कुछ विचारकों ने इसे यह कहकर नकार भी दिया कि इसे बच्चों की पत्रिका नहीं मानी जा सकती। आधुनिक विचारक प्राचीन बाल साहित्य को बाल साहित्य मानते ही नहीं।

डॉ. नागेश पाण्डेय ने माना है कि–'हिन्दी बाल साहित्य' के आरम्भ को लेकर समीक्षक एक मत नहीं हैं। कुछ विद्वान बाल साहित्य की शुरूआत राजा शिवप्रसाद सितारे सिंह के समय पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता के प्रतिफल के रूप में मानते हैं। कुछ विद्वान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी बाल साहित्य का जन्मदाता मानते हैं। कुछ विद्वान बहुत आगे जाकर द्विवेदी युग में हरिऔध और श्रीधर पाठक में पहला बाल साहित्यकार खोजने का उपक्रम करते हैं। इस खोजबीन में नाथूराम शर्मा शंकर का नाम भी उभरता है। यहाँ पर इन सब से अलग आदिकाल के कवि अमीर खुसरो की रचनाओं को याद करना होगा।

एक थाल मोती भरा, सब के सर पर औंधा धरा

चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उस के एक न गिरे (आकाश)

हरा था मन भरा था, हजार मोती जड़ा था।

राजाजी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ा था। (भुट्‌टा)

क्या उपरोक्त रचनाऐं आधुनिक युग की बाल साहित्य की संकल्पना से कहीं भी अलग हैं? तो फिर पहले बाल साहित्यकार अमीर खुसरो क्यों नहीं? आधुनिक काल के राजा शिव प्रसाद सितारे सिंह के समय पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता को देखते हुए कुछ रचनाऐं बाल साहित्य के रूप में सामने आईं। इन में प्रमुख थी 'सिंहासन बत्तीसी' (लल्लू लाल), 'आलसियों को कोड़ा', 'राजा भोज का सपना', 'बालबोध', 'बच्चों का इनाम', 'लड़कों की कहानी', (राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द), हितोपदेश (बद्रीलाल), शिशुलोरी (बनवारी लाल), सेंडफोर्ड और मार्टिन की कहानी (बंशीधर)। "हिन्दी गद्य के प्रवर्तक कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पदार्पण से तो हिन्दी बाल साहित्य की आधार भूमि और अधिक परिपुष्ट और उर्वरक हुई।"[27]

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने भारतेन्दु जी को जन्मदाता के रूप में चाहे स्वीकार नहीं किया हो लेकिन प्रेरक अवश्य माना है। जो सच प्रतीत होता है क्योंकि भारतेन्दु जी ने स्वयं तो बालकों के लिए लिखा है, साथ में अपने समय के रचनाकारों में, श्रीधर पाठक, प्रताप नारायण मिश्र, श्री निवास दास बच्चों के लिए लिखने हेतु प्रेरित भी किया है। इस युग में अन्य कई रचनाकारों ने बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन में कुछ उल्लेखनीय नाम और उन की कृतियाँ–लाला श्री निवास दास–प्रहलाद चरित, अम्बिकादास व्यास की कथा कुसुम, कलिका। राधाकृष्ण दास का महाराणा प्रताप, देवीप्रसाद मुंसिफ का विद्यार्थी विनोद, लक्ष्मीनारायण शर्मा का शिशु मनोरंजन आदि।

निःसंदेह बाल साहित्य का आविर्भाव मानव जन्म के साथ ही हुआ है। माता की लोरी के रूप में बाल साहित्य का सहज स्वरूप सामने आया। शनैः शनैः बाल साहित्य में राजा–रानी की कहानियाँ, परी कथाऐं, राजकुमार–राजकुमारियों की कथाऐं जुड़ती गई। प्रारम्भ में बाल साहित्य श्रुति व वाचक परम्परा के रूप में विकसित होता रहा। लोक कथाओं, जातक कथाओं, दन्त कथाओं, लोक विश्वासों, परम्पराओं से सुदृढ़ और परिपुष्ट होता हुआ दादा–दादी, नाना–नानी की कहानियों के साथ अग्रसर होता रहा। इस समग्र साहित्य का एक मात्र उद्देश्य बालकों का मनोरंजन करना था। प्राचीन बाल साहित्य को सर्वाधिक पोषित किया–कथा सरित्सागर, जातक कथाओं, देवी–देवताओं की कहानियाँ, पंचतंत्र, पौराणिक कथाओं, जादू–टोना, चमत्कार, भूत–प्रेत, धर्म व अवतार की कथाओं एवं हितोपदेश की रचनाओं ने। इन्हीं के समानान्तर शेख चिल्ली की कहानियाँ, मुल्ला नसरुद्दीन की कहानियाँ, तेनालीराम के किस्से, सिंहासन बत्तीसी, बेताल पच्चीसी

आदि रचनाओं ने भी बालकों का जी भर कर मन बहलाया। जहाँ तक प्रथम बाल साहित्यकार का प्रश्न है कुछ विद्वानों ने चटमल की 'गौराबादल की कथा' को स्वीकार किया है, वहीं कुछ विचारकों ने सूरदास को प्रथम बाल रचनाकार माना है, तो कुछ ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से बाल साहित्य की विधिवत शुरूआत मानी है। भारतेन्दु की प्रेरणा से श्रीधर पाठक, हरिऔध, नाथूलाल शर्मा भी बाल साहित्य की ओर उन्मुख हुए। तत्पश्चात् शिवप्रसाद सितारे सिंह बद्रीलाल बंशीधर, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीनिवास आदि बड़े साहित्यकारों ने बाल साहित्य को परिपुष्ट करके इसके उत्कर्ष में महती भूमिका निभाई।

1.3 बाल साहित्य का स्वरूप

सम्पूर्ण चराचर जगत के समस्त जीवधारियों का स्वरूप परमेश्वर ने भांति–भांति बनाया है। यहाँ तक कि एक जाति विशेष के प्राणियों का रंग–रूप, बनावट, आकार, स्वभाव, हाव–भाव, मुखाकृति शारीरिक संरचना भिन्न–भिन्न मिलेंगी, जैसे मनुष्य को ही लें तो संसार का प्रत्येक मानव अन्य लोगों से जुदा मिलेगा। इसी वैविध्यगत विरोधाभास से दुनिया की खूबसूरती कायम है। स्वरूप का साधारण भाषा में सरल अर्थ– रूप, आकार, बनावट, संरचना आदि है। स्वरूप शब्द 'स्व' और 'रूप' शब्दों से मिलकर निर्मित हुआ है। 'स्व' का अर्थ 'अपना' और रूप का अर्थ– आकृति, आकार, सुन्दरता, बनावट आदि।

शब्द कोश के अनुसार 'स्वरूप' का अर्थ है– अपनी आकृति, अपनी विशेषता, स्वभाव, अपनी विशेषताओं से युक्त, सम्मान, तुलना, सुन्दर, मनोहर, अनुरूपता के आधार पर स्थापित सम्बन्ध स्वरूप होने का भान।[28]

अवस्था की दृष्टि से मानव जीवन को चार वर्गों में विभक्त किया गया है– (1) बाल्यावस्था, (2) युवावस्था, (3) प्रौढ अवस्था, (4) वृद्धावस्था, इन में प्रथम अवस्था अर्थात् बाल्यावस्था सब से खूबसूरत, सरल, अद्भुत कोमल निश्चल, भोली–भाली होती है। उल्लेखनीय है कि जब से दुनिया बनी तब से आज तक बाल्यावस्था में कोई अन्तर नहीं आया। आज भी आंतरिक रूप से बालक आदि काल की ही भांति भोला–भाला, मासूम, सरल, निश्चल से खिले हुए फूल सी ताजगी और कोमलता लिए हुए, रंग–बिरंगा, चहकता–महकता हुआ होता है। ईश्वर की सृष्टि में कोई भेद नहीं आया। लेकिन बाल साहित्य का स्वरूप कई कारणों से परिवर्तित होता रहा। बाह्य रूप से बचपन को हम बाल साहित्य का आकार, आकृति, स्वभाव के तौर पर ग्रहण कर सकते हैं। यद्यपि बाल साहित्य के स्वरूप को परिभाषित करना, उस का निर्धारण करना अत्यन्त दुष्कर्म कार्य है, क्योंकि किसी भी वस्तु का स्वरूप सदैव एक समान नहीं रह सकता। यह देश–काल, परिस्थिति सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। बाल्यावस्था एक तरल अवस्था है जैसे पानी को जिस पात्र में रख दिया जाता है, वह वैसा ही

आकार ग्रहण कर लेता हैं इसी प्रकार बालक का भी अपने परिवेश, परिवार, अवस्था, समाज, परिस्थिति के अनुसार स्वरूप निर्धारित होता है।फिर भी इतना तो सुनिश्चित है कि बाल साहित्य ऐसा हो जिसमें बालोपयोगी सारे सार्थक तत्वों का उन की वयः और बाल साहित्य की भिन्न–विधाओं के अनुरूप सार्थक समावेश हो, जैसे बाल साहित्य जिस भी विधा का हो, उससे बालकों का मनोरंजन हो, उन्हें आनन्द की प्राति हो, शिक्षा एवं सुसंस्कार मिले, भावी जीवन के लिए सुव्यवस्थित दिशा बोध प्राप्त हो, वे श्रेष्ठ इंसान बन सके। बाल साहित्य के स्वरूप के निर्धारण को लेकर विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रकट किये हैं यथा–

रमेश तैलंग–'बाल साहित्यकार का काम केवल बाल साहित्य रचना ही नहीं है बल्कि उसे बच्चों के पूरे संसार के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार होने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।'[29]

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार योगेन्द्र कुमार लल्ला– 'बाल साहित्य बच्चों की रुचि जाग्रत करने वाला हो। जब बालक को आनन्द आएगा तभी वह उसे पढ़ेगा। अगर उस में शिक्षा रखेंगे तो बच्चा उसे नकार देगा। मनोरंजन के साथ–साथ उसे शिक्षा मिल जाती है तो अच्छी बात है, किन्तु कोशिश नहीं होने चाहिये उपदेश देने की।'[30]

बाल साहित्यकार अखिलेश श्रीवास्तव चमन– 'वस्तुतः बाल साहित्य के स्वरूप का मुद्दा इतना जटिल एवं संवेदनशील है कि इस के बारे में एक झटके में निर्णय नहीं लिया जा सकता। चूंकि बचपन गीली मिट्टी एक लोंदा होता है, जिसे अभी आकार देना शेष है। अतः उसके लिये ऐसे साहित्य की आवश्यकता होती है जो उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त कर सके।'[31]

प्रख्यात बाल रचनाकार श्रीनाथ सहाय–'बाल रचना ऐसे हो जिस में जिज्ञासा की पूर्ति तो हो पर साथ–साथ बालक की काल्पनिक, कोमल भावनाओं को कोई ठेस न पहुँचे, भावना कुंठित न हो जाये, इसका रागात्मक लगाव अबाधित बना रहे, जटिल भाषा बच्चों के लिए अनुकूल नहीं होती।'[32]

बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय– 'बाल साहित्य कैसा हो यदि इस प्रश्न का उत्तर मुझे एक वाक्य में देना हो तो मैं कहूँगा कि उसे बच्चे की तरह होना चाहिए। बच्चे बड़े सहज, सरल, कौतुहल से पूर्ण और उमंगों से रचे–पगे होते हैं, ये सब एक बच्चे की मूलभूत विशेषताऐं हैं और ये ही विशेषताऐं बाल साहित्य में भी होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में बच्चे उस बाल साहित्य को तुरन्त स्वीकार करेंगे। बाल साहित्य को बच्चे के अभिन्न मित्र की भांति होना चाहिए, ऐसा मित्र जिसमें बच्चे अपने जीवन, अपनी रुचियों, अपनी अनुभूतियों और कार्य व्यवहारों की झलक प्राप्त कर सकें। ऐसा मित्र जो बच्चों से उनके मन की बात कहता हो। उनके मन की बात समझता हो, उसे दिशा देता हो। एक सच्चा मित्र कभी भी कोई बात दूसरे पर जबरदस्ती थोपता नहीं,

बाल साहित्य को भी ऐसा होना चाहिए। बाल साहित्य में जो कुछ भी कहा–बताया जाये, वह स्वाभाविक हो, वास्तविक हो। एक तरह से कहें कि जबरदस्त हो, जबरदस्ती कतई नहीं।'[33]

बाल रचनाकार योगेन्द्र कुमार लल्ला ने अपने साक्षात्कार में कहा है– 'मनोरंजन, मनोरंजन ही बाल साहित्य की पहली और आखिरी कसौटी है। शिक्षा दूसरे नम्बर पर है। शिक्षा न भी दे तो चलेगा। जहाँ शिक्षा प्रमुख हो जाती हैं वहाँ बाल साहित्य बाल साहित्य नहीं रहता।'[34]

उपरांकित परिभाषाओं से जाहिर है कि बाल साहित्य को किसी एक निश्चित आकार में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि बचपन स्वयं बहुत चंचल होता है, रंग–बिरंगा होता है और देश, काल, स्थिति, संस्कृति के अनुरूप इस में लगातार बदलाव आते रहते हैं, फिर भी इतना कहा जा सकता है बाल साहित्य सरल भाषा में रचित ऐसा साहित्य है जो, बच्चों को प्रफुल्लित कर दे, उन रुचियों में, कल्पनाओं में और मोरपंखी रंग भर दे, उनसे बातें करे, उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाये और अपरोक्ष रूप से कुछ सिखा भी सके तो 'सोने में सुहागा' क्योंकि बाल साहित्य का प्रथम कार्य बालकों का मनोरंजन करना ही है। समग्रतः बाल साहित्य ऐसा हो जो बालकों की शरारतों को, उमंगों को अभिव्यक्त करे, ताकि उनका स्वाभाविक एवं सर्वत्रोन्मुखी विकास हो सके। बालक का सबसे पहले प्रकृति से साक्षात्कार होता है। अतः फूल–पत्ती, पेड़, नदियाँ, पक्षी, पशु, तितली, आकाश, चाँद–सितारे, गुब्बारा, गुड़िया, पुस्तक, खिलौने आदि को विषय बनाकर सृजन किया जाये जिससे बालक सहजता से आकर्षित हो सके। साथ ही देवी–देवता, परियाँ, चमत्कारिक अलौकिक उपादान, राक्षस, राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारी आदि भी बालक को प्रिय लगते हैं, उनसे वह आसानी से तारतम्य बिठा लेता है। ये सब बच्चों की रचनाओं के अंग होते हैं।

पुरातन काल से बाल साहित्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि बाल साहित्य का स्वरूप इन्हीं से निर्मित हुआ है। आदि काल में माँ की लोरियाँ, प्रभातियाँ, तुकबंदियों से ही बाल साहित्य ने स्वरूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया है। तत्पश्चात् बाल साहित्य परियों, अप्सराओं, राक्षसों, देवी–देवताओं के किस्सों–कहानियों के रूप में बच्चों के समक्ष आया। धीरे–धीरे सभ्यताओं के विकास के साथ–साथ राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारियों के अस्तित्व में आने से इनका उल्लेख भी साहित्य में बहुतायत से होने लगा। इसी श्रृंखला में आगे चलकर पंचतन्त्र की कहानियों, हितोपदेश कथासरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी, जातक कथा से अमीर खुसरो की पहेलियाँ एवं कह मुकरनियाँ आदि के रूप में बाल साहित्य हमारे समक्ष आया। इस समय प्रकृति के उपादानों का भरपूर प्रयोग किया गया। जंगली जानवरों, पशु–पक्षियों को कहानियों का पात्र बनाकर सैंकड़ों किस्से–कहानियाँ रची गई। विष्णु शर्मा के पंचतंत्र में बोलते जंगली जानवरों को लेकर कहानियों की रचना की जिसमें ये जानवर मनुष्य की तरह संवाद करते हैं और सुखद बात ये है कि शिशुओं और बालकों को स्वभाव से ही बोलने वाले पशु–पक्षी बहुत पसंद आते हैं।

इन्होंने जटिल से जटिल विषयों को भी बाल मनोवृत्तियों के अनुरूप बड़ी सहजता और आकर्षक–रूप से प्रस्तुत किया है, जिससे बालक का भरपूर मनोरंजन हो सके। आज इन पर कई धारावाहिक भी बन चुके हैं। यहाँ **एडगर राइस की कृति 'टारजन'** का संदर्भ भी प्रासंगिक है। इस का पात्र भी जंगली जानवरों के साथ खेलते–खेलते बड़ा होता है और कई बार दुश्मनों से जंगल की रक्षा करता है। भारत में इसको लेकर कॉमिक्स भी प्रकाशित हो चुके हैं, जिन्हें बालकों ने बहुत पसंद किया है। मोगली को कौन नहीं जानता... बच्चों का बहुत पसंदीदा पात्र रहा है। **अंग्रेजी लेखक रुडयार्ड किपलिंग की प्रसिद्ध बाल कृति 'जंगल बुक्स'** का पात्र मोगली नन्हा बालक जंगली जानवरों का दोस्त बन जाता है। भारत में इस विषय पर धारावाहिक बनाया जा चुका है। जिसे बालकों से भरपूर प्यार मिला है। बड़ों ने भी इसे जी भर कर सराहा है। **आर.के. नारायण कृत 'मालगुडी डेज'** ने भी बालको के बीच बहुत लोकप्रियता हासिल की है।

सबसे बड़ा प्रश्न ये रहा कि उस समय तक बाल साहित्य का अलग से कोई स्वरूप नहीं था। सब बड़ों के साहित्य का ही अंग था। बच्चों को इनमें जो पंसद आता था बच्चे उसे अपना लेते थे। इसीलिए **बाल साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने लिखा है–** 'यदि हम किसी भी देश का साहित्य आलोड़न–विलोड़न करके देखें तो पायेंगे कि साहित्य में ऐसा कुछ भी नहीं है जो केवल बच्चों के लिए लिखा गया हो। हमारे यहाँ रामलीला, यूरोप के थियेटर बाल, युवा और वृद्ध सभी का मनोरंजन करते थे।[35]

इन्हीं के समानांतर दादा–दादी, नाना–नानी की हजारों काल्पनिक कहानियाँ बाल साहित्य को समृद्ध करती रहीं। कुछ गीत तो इतने प्रभावशाली और प्रचलित हुए कि आख्यान बन गए, कालजयी हो गए, जिस का प्रमुख कारण उनका विशुद्ध मनोरंजक एवं हास्य प्रधान होता रहा है, जो आज भी बच्चे–बच्चे की जुबान पर चढ़े हुए हैं, जिनके रचयिताओं के नाम से बाल पाठक पूरी तरह परिचित तक नहीं हैं–

- मछली जल की रानी है.....!
- हरा समन्दर, गोपी चन्दर.... बोल मेरी मछली कितना पानी....चन्डदत्त इन्दू
- अक्कड़–बक्कड़ बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ.... सौ में लागा धागा, चोर निकलकर भागा...
- लल्ला–लल्ला लोरी.... दूध की कटोरी, दूध में बताशा... मुन्नी करे तमाशा...
- एक चिड़िया के बच्चे चार, घर निकले पंख पसार...
- हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की...

ऐसे ही अंग्रेजी के एक–दो गीत जो आज भी बच्चे–बच्चे के मुख से सुने जा सकते हैं–

- **'Humpty Dumpy set on a wall**

  Humpty dumpty had a great fall".

- **'Johny Johny yes papa, eating sugar no papa**

  Telling a lie no papa, open your moth ha, ha, ha".

ये है बाल साहित्य की शक्ति और लोकप्रियता। लेकिन ये भी सच है कि बच्चों का साहित्य कैसा हो? यह प्रश्न अद्यतन अनुत्तरित है। विश्व के सभी देशों के बाल साहित्य का रूप अलग–अलग है, क्योंकि सभी देशों का परिवेश एक समान नहीं होता और न ही चिंतन। रूस में बालक के प्राकृतिक और स्वाभाविक विकास पर बल नहीं देकर उन्हें साम्यवादी विचारधारा से पोषित किया जाता है। जर्मनी में जीवन मूल्यों पर अधिक बल दिया जाता है। वहाँ के बाल साहित्य बालकों में जीवन मूल्यों और उन्हें प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है। अमेरिका में बाल साहित्य मनोरंजक और व्यावहारिक होता हैं। इंग्लैण्ड में मनोरंजन के साथ जादूगरी जैसे चमत्कृत विषयों को महत्वपूर्ण माना जाता है। **"हैरी पोटर"** इस का प्रमाण है। लेकिन भारत में लम्बे समय तक बाल साहित्य पर ध्यान नहीं दिया गया। आज भी यहाँ के बाल साहित्य के स्वरूप को लेकर कोई निश्चित विचारधारा विकसित नहीं हो सकी है। घुमा–फिराकर वही जादूगरी, पौराणिक कहानियाँ सुनाते हैं। एक बार चाचा नेहरू ने कहा था कि 'दुर्भाग्य है कि जो लोग पुस्तकें लिखते हैं, उनमें से बहुत कम ऐसे हैं जो ये सोचते हैं कि बच्चों की वास्तविक मांग क्या है?'

इसी संदर्भ में मैंने कुछ बालकों से जो बाल साहित्य पढ़ने के शौक़ीन थे, पूछा कि आपको बाल साहित्य की कौन सी किताबें अच्छी लगती हैं, किस प्रकार की किताबें पसंद करते हो, ऐसी किताबों या पत्रिकाओं में क्या पढ़ना चाहते हो, उनका समवेत स्वर में जवाब मिला कि ऐसी किताबें, पत्रिकाएँ जो खूब रंग–बिरंगी हो, जिनमें चित्र कथाएँ हो, कार्टून हो, छोटी–छोटी रोचक कहानियाँ हों, बाल पहेलियाँ हो, मानसिक व्यायाम के लिए 'उत्तर बताओ', 'रास्ता बताओ', 'रंग भरो' आदि प्रतियोगिताएँ हों, प्यारे–प्यारे चुटकले हों, अर्थात् जो भी हो उसे पढ़कर हमारा मन खुश हो जाए, हम हँसी रोक नहीं पायें और ऊबाऊ बिल्कुल नहीं हो।

आज ऐसे ही बाल साहित्य की जरूरत है, जो नये परिवेश में रहकर भी अपनी मूलभूत विशेषताओं और प्रवृत्तियों को कम न होने दे। वास्तव में बाल साहित्य युगों की परम्परा के रूप में निर्मित होता है। तथापि हमारे देश में बाल साहित्य में नित नूतन प्रयोग हो रहे हैं, व्यापक स्तर में इसका सृजन अविराम है और बड़ों के साहित्य के समान ही बाल साहित्य भी भावनात्मक तथा

कलात्मक रूप से सुदृढ़ है। सैकड़ों बाल रचनाकार बाल साहित्य लेखन में निरंतर रत हैं, प्रति वर्ष अनगिनत बाल कृतियों का प्रकाशन जारी हैं। एक से एक बाल पत्रिकाएँ बाजार में उपलब्ध हैं। इनके समानान्तर कई कार्टून फिल्में, कार्टून धारावाहिक, ऐनिमेटेड कहानियाँ निरंतर निर्मित हो रही हैं और टीवी पर प्रसारित हो रही हैं, जिन्हें बालक बहुत पंसद कर रहे हैं। इसी के साथ बाल साहित्य को रेडियो, रिकार्ड प्लेयर, कैसेट्स के माध्यम से घर–घर तक पहुँचाने में भारतीय फिल्मों का अभूतपूर्व योगदान रेखांकित करने काबिल है। हिन्दी फिल्मों के बाल–गीतों और लोरियों के बाल सुलभ मिश्री जैसे बोल, सुमधुर आवाज, कोमल–कोमल भाव, संगीत की मीठी–मीठी स्वरलहरियाँ फिल्म निर्माण के समय से आज तक बच्चों व बड़ों के कानों में रस घोल रही हैं, मन को सम्मोहित कर रही हैं, जिन्हें बार–बार सुनने पर भी जी नहीं भरता। यह बहुत बड़ी आश्वस्ति है। बाल साहित्य का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। कुछ फिल्मी बाल गीत भी काफी लोकप्रिय रहें–

'चंदामामा दूर के, पुए पकाए बूर के, आप खाए थाली में, मुन्ने को दे प्याली में.....'

'लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा, घोड़े की दुम में जो मारा हथौड़ा...'

'दादी अम्मा, दादी अम्मा मान जाओ, छोड़ो जी ये गुस्सा जरा हँस के बताओ....'

'सात समन्दर पार से, गुड़ियों के बाजार से, अच्छी सी गुड़िया लाना, पप्पा जल्दी आ जाना.....'

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि बाल साहित्य को विधिवत रूप बीसवीं सदी में ही प्राप्त हुआ। विशेषकर भारतेंदु के समय से क्योंकि यह समय सम्पूर्ण दुनिया में हर क्षेत्र में विश्वव्यापी परिवर्तन का काल रहा है और तब बाल साहित्य कई स्वरूपों में सामने आने लगा। गीत, कहानियों और पहेलियों से इतर कई विधाओं में बाल रचनाकार सर्जना करने लगे। बाल साहित्य के स्वरूप में निरंतर परिमार्जन होता गया, जिसका सब से आकर्षक, विकसित, वैज्ञानिक, तकनीकि, बालोपयोगी स्वरूप आज हमारे समक्ष है। बाल समीक्षकों ने बाल साहित्य के स्वरूप को अवस्था, विधा और अध्ययन के अनुरूप उजागर करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम बाल साहित्य को तीन रूपों में विभक्त किया गया है–

1. शिशु साहित्य
2. बाल साहित्य
3. किशोर साहित्य

1.3.1 शिशु साहित्य

छः साल तक के बालक के लिए लिखा गया साहित्य शिशु साहित्य की श्रेणी के अंतर्गत माना गया है। शिशु का अनुभव जगत बहुत सीमित होता है और कल्पना क्षेत्र बहुत विस्तृत। अतः इनके लिए अति सहज, सुग्राह्य भाषा में लघु आकार की रचनाएँ लिखी जाती हैं यथा लौरी, प्रभाती, खेल गीत, अभिनय गीत, निरर्थक गीत, कल्पना प्रधान छोटी–छोटी कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले इत्यादि। कठपुतली के नाटक, विभिन्न मुद्रओं वाली नृत्य नाटिकाएँ भी शिशुओं के प्रिय रहे हैं। इनके विषय पशु–पक्षी, फूल–पत्तियाँ, प्राकृतिक उपादान रहे। शिशु सुनकर और देखकर साहित्य का आस्वादन करता है। लोरियाँ, प्रभातियाँ, कहानियाँ आदि सुनकर वह प्रमुदित होता है। नाटक, नृत्य आदि को देखकर वह उल्लसित होकर नाचने तक लग जाता है। शिशु साहित्य की भाषा बहुत सरल, सहज होती है। इसमें एक भी शब्द ऐसा नहीं होना चाहिए जिसे शिशु आत्मसात नहीं कर सके।

डॉ. नागेश पाण्डेय के अनुसार– '6 वर्ष तक के बालकों के लिए रचित साहित्य शिशु साहित्य कहलाता है। शिशुओं के अनुभव एवं शब्दकोश अत्यंत सीमित और कल्पनाक्षेत्र अत्यन्त विचित्र होता है। अस्तु, उनके लिए अति सरल, सहज एवं सुग्राह्य विषयवस्तु की आवश्यकता है।'[36]

1.3.2 बाल साहित्य

छः वर्ष के बाद बालक की दुनिया धीरे–धीरे बदलने लगती है। वह घर, परिवार, विद्यालय, समाज, देश के बारे में जानने–समझाने की कोशिश करने लगता है। उसकी जिज्ञासा, वृति बदलने लगती है। मैत्री–भाव जाग्रत होने लगता है। पाठ्य–पुस्तकें और बाह्य परिवेश से घुल–मिल जाने से उसके शब्द ज्ञान में वृद्धि भी हो जाती है और वह कल्पना के साथ–साथ यथार्थवादी होने लगता है। क्या, कैसे, क्यों, कब आदि अनेक सवाल उस के मन में करवटें बदलने लगते हैं। अपने परिवेश की हर वस्तु को देखकर वह कौतुहल से भर जाता है। उनके संदर्भ में कई–कई प्रकार से सोचने लगता है। उसकी तर्क–क्षमता, उत्सुकता, संपर्क–क्षेत्र में विस्तार होने लगता है। उसकी कल्पनाशक्ति का विस्तार होने लगता है। अतः बाल रचनाकार को भी उसी के अनुरूप सर्जना करनी होती है। उसको बालक की उपर्युक्त प्रवृतियों की कसौटी पर खरा उतरने के लिए ऐसा साहित्य रचना चाहिए जिसे बालक खुशी से अपना सके। उस उम्र के बच्चे के लिए सकारात्मक, वैज्ञानिक, यथार्थवादी, आस्थावादी प्रेरेक, राष्ट्र प्रेम जाग्रत करने वाली रचनाएँ पसंद करते हैं जो सरल, सहज, सरस और सुबोध भी हो और बालक में सृजनात्मक शक्ति भी जाग्रत कर सके एवं जीवन मूल्यों से जुड़ सके। इनके द्वारा अनायास शिक्षा भी ग्रहण करे तो अत्युत्तम होगी। बालक अनेक विधाओं में रचनाएँ पढ़ना चाहते हैं यथा– गीत, कविता,

कहानियाँ, नाटक, एकांकी, बाल–गजल, पहेलियाँ, चुटुकले, संस्मरण, बाल उपन्यास आदि। बाल साहित्यकार का दायित्व है कि वह इन सभी विधाओं में रोचक साहित्य का सृजन करे।

1.3.3 किशोर साहित्य

तेरह से अठठारह वर्ष की उम्र किशोरावस्था कहलाती है। यह अवस्था एक तरह से संक्रमण की होती है। इस समय रसायनों के परिवर्तन के कारण किशोर में शारीरिक एवं मानसिक बदलाव या कहें कि उसके व्यक्तित्व का विकास बड़ी तीव्रता के साथ होने लगता है। इस वजह से किशोर किसी प्रकार का नियंत्रण पसंद नहीं करता, यह उम्र अंतरमुखी होती है एवं उनकी रुचियों में विस्तार हो जाता है। किशोर अपनी अलग कल्पनालोकीय दुनिया में विचरण करता है। उसका स्वाभिमान बहुत बढ़ जाता है और समझदारी भी। हर बात का विश्लेक्षण तर्क से करता है। भावी जीवन को लेकर, केरियर को लेकर वह चिंता भी करने लगता है। समाज, संस्कृति, परिवेश, राजनीति, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय, परिस्थितियों, धर्म आदि किशोर को चिंतन करने के लिए विवश करते हैं एवं कई प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों से उसका साक्षात्कार होता है, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, प्रतिस्पर्द्धा, अंधविश्वासों से उसे दो चार होना पड़ता है। इस वय में पढ़ाई का बोझ सबसे अधिक होने के कारण किशोर अकसर चिड़चिड़े हो जाते हैं। विपरीत लिंग के प्रति उत्सुकता और आकर्षण चरम पर होता है। यह उम्र अत्यधिक नाजुक मोड़ से गुजरती है, सही रास्ते से भटकते देर नहीं लगती।[37]

किशोर साहित्य किशोरों की मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करने के साथ उनका संमाग्दर्शन भी करें, शिक्षित करे, उनकी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करें। किशोर बौद्धिक रूप से बहुत विकसित होते हैं, अतः उनका साहित्य बहुआयामी होना चाहिए और सभी विधाओं में भी, क्योंकि किशारों को गीत, गजल, कहानियाँ, निबन्ध, नाटक, एकांकी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा आदि सभी विधाओं को पढ़ना अच्छा लगता है। अध्ययन की दृष्टि से बाल साहित्य के स्वरूप को निम्नलिखित रूपों में विभाजित किया जा सकता है–

ऐतिहासिक बाल साहित्य, पौराणिक बाल साहित्य, राष्ट्रीय बाल साहित्य, सामाजिक बाल साहित्य, वैज्ञानिक बाल साहित्य, सांस्कृतिक बाल साहित्य, काल्पनिक बाल साहित्य, मनोवैज्ञानिक बाल साहित्य। इसी प्रकार विधागत रूप से बाल साहित्य के निम्नांकित स्वरूप विद्वानों ने निरूपित किये हैं। बाल काव्य, बाल कहानियाँ, बाल नाटक और एकांकी, बाल उपन्यास, बाल संस्मरण, बाल निबन्ध, अन्य–बाल पहेलियाँ, चुटुकले, चित्र–कथायें, बाल जीवनी आदि।

1.3.4 बाल काव्य

बाल काव्य बालकों की अत्यंत प्रिय विधा है क्योंकि बालक कविताओं को गाते हैं, गुनगुनाते हैं, झूमते हैं, नाचते हैं, रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं, शारीरिक हाव–भाव के साथ अर्थात् अंग संचालन के साथ प्रस्तुत भी करते हैं। लयात्मकता काव्य की सब से बड़ी विशिष्टता मानी गई है। बालक की हर क्रीड़ा लय से परिपूर्ण होती है। बालक रोता भी लय में है, हँसता भी लय में है, अंग संचालन भी लय में करता है, रूठना, चहचहाना, खिलखिलाना आदि भी लयबद्ध तरीके से करता है। अतः बाल कविता बच्चों की भांति स्वतंत्र, भोली–भाली, निष्कपट, मासूम, कोमल, हंसती–खिलखिलाती, गुदगुदाने वाली होती है। बाल काव्य बालकों के लिए, बालकों की सरल, सरस भाषा में रचित ऐसी पद्यात्मक रचना है, जो बालकों की अनुभूतियों को, कल्पनाओं को साकार करती है, उनमें कौतुहल व जिज्ञासा जाग्रत करती है, उन्हें आनन्द प्रदान करने साथ शिक्षित भी करती है। डॉ नागेश पाण्डेय के अनुसार–

'बाल कविता अर्थात् बालकों के लिए काव्य। जिस काव्य में बालकों की भाषा में, उनकी अपनी दृष्टि, अपना चिंतन और अपनी कल्पनाएँ, अभिव्यक्त होती हों सही अर्थ में वही बाल काव्य है। सच्ची बाल कविता वह है जिसमें बच्चों के होठों से दोस्ती करने की ताकत हो। कभी हरा समन्दर गोपी चन्दर..... अक्कड़–बक्कड़ बम्बे बो.....। अस्सी नब्बे पूरे सौ..... के रूप में कविता बच्चे से जन्म जन्मान्तरों का नाता बनाये हुए हैं। बाल काव्य का प्रत्यक्ष उद्देश्य तो मनोरंजन होता है किन्तु परोक्षत वह बालकों के मन में संवेदना के अंकुरण उपजाकर उन्हें राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में तैयार भी करता है। बालकों में अर्थग्रहण और सौन्दर्यबोध की क्षमता प्रदान करने की दृष्टि से भी बाल काव्य की अपनी विशिष्ट भूमिका है।'[38]

बाल काव्य में प्रमुख रूप से बाल गीत, बाल कविता, बाल गजल, हाइकू, मुक्तक, बाल पहेलियाँ, बाल कुंडलियाँ आदि गिनी जाती हैं। विषय की दृष्टि से बाल काव्य का व्यापक परिवेश है। बच्चों को प्रिय लगने वाले सभी उपादान बाल काव्य के विषय होते हैं यथा पेड़–पौधे–तितलियाँ, फूल–पत्ते, तारे, चंदामामा, हवा, सागर, नदियाँ, पर्वत, पशु–पक्षी, खेल–खिलौने, बस्ता, किताबें, मदारी, गुड़िया, फल–फूल, मोर, बाग–बगीचे आदि।

आचार्य भरत मुनि ने रस को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिपादित किया है। बाल काव्य में भी रस की महती भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता है। इस में मुख्यतः वात्सल्य, हास्य, वीर, शांत, अद्भुत रस का प्राधान्य होता है। रस का अर्थ आनन्द होता है और बाल काव्य का प्रधान रस आनन्द रस ही है। आयु के अनुसार विद्वानों ने बाल काव्य तीन स्वरूपों में विभाजित किया है– शिशु काव्य, बाल काव्य, किशोर काव्य। बाल काव्य की भाषा बालकों के तरह सरल, सरस, स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण चित्रात्मक, गेय, संगीतात्मक ध्वन्यात्मक होनी चाहिए।

शैली अत्यंत सहज हो। कठिन, क्लिष्ट शब्दावली के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं होता। मुहावरों, लोकोक्तियों का अधिक प्रयोग बाल काव्य को दुरूह बना सकता है। बड़ों के काव्य की तरह कटाक्ष, व्यंग्य, दुरूहता, काठिन्य, बौद्धिकता, वैचारिकता, गम्भीरता का प्रयोग एक तरह से बाल काव्य में वर्जित माना गया है।

1.3.5 बाल कहानी

कहानी बालकों की सर्वाधिक प्रिय, प्राचीन विधा है। कहानी सुनने में बच्चों को परम आनन्द प्राप्त होता है। वे कहानी सुनने के बड़ों की हर बात मान सकते हैं, यहाँ तक की खाना–पीना भी भूल जाते हैं। बच्चे स्वभाव से ही जिज्ञासु, कौतूहल प्रिय होते हैं। इस उम्र में कल्पना शक्ति, चरम पर होती है। कहानी की सबसे बड़ी विशेषता ही ये ही है कि इसमें कौतूहल निरंतर बना रहता है। बच्चों के साथ–साथ बड़े लोगों को भी कहानी सुनना और सुनाना बहुत प्रिय लगता है। जहाँ तक कहानी के जन्म का सवाल है, सुनिश्चित भाषा के जन्म के साथ ही इस का प्रादुर्भाव हुआ होगा। जैसे ही मनुष्य ने बोलना सीखा होगा, तभी से उसने कहानी कहना शुरू कर दिया होगा। किसी आदमी के साथ कोई रोचक या किसी भी प्रकार की कोई घटना घटित हुई होगी, तब उसने अपने परिवेश के लोगों को बढ़ा–चढ़ा कर बताया होगा, और इस प्रकार धीरे–धीरे कहानी का अपना रूप विकसित होने लगा होगा। एक से दूसरे व्यक्ति, दूसरे से अगले आदमी तक पहुँचते–पहुँचते कहानी ने अपनी यात्रा शुरू की होगी। इस संदर्भ में **प्रसिद्ध पत्रिका 'नंदन' के सम्पादक जय प्रकाश भारती ने लिखा है–**

'मानव ने जब से भाषा द्वारा अपने भाव व्यक्त करने की क्षमता विकसित की, तभी से वह कहानी कहने और सुनने लगा। मनुष्य जंगल में चला जा रहा होगा। अचानक किसी जंगली जानवर ने उस पर आक्रमण कर दिया। आदिम युग के उस मानव ने आत्म रक्षा के लिए संघर्ष किया। उस जंगली पशु का वध कर साँझ को निवास पर लौटकर उस ने इस घटना को बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन किया। भय, कौतूहल, अतिरंजना, मनोरंजन जैसे तत्वों के कारण यह छोटी सी घटना कहानी बन गई। एक ने दूसरे से और उसने तीसरे को, चौथे को वह सुनाई, इसी तरह मौखिक रूप से कहानी की शुरूआत हुई।'[39]

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार– 'पुराने जमाने में किन्हीं रोचक और रोमांचक घटनाओं से प्रेरित होकर मानव के महत्वपूर्ण अनुभवों को लोग कहानियों के रूप में सुनाया करते थे। ये कहानियाँ बच्चे विशेष रुचि से सुनते थे। उन्हीं की स्मरण–शक्ति के परिणामस्वरूप ये कहानियाँ हजारों मील की यात्रायें करके संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँची और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सुरक्षित रही।'

उपर्युक्त संदर्भों से स्पष्ट है कि कहानी का प्रादुर्भाव मानव की वाणी के विकास के समानान्तर हुआ। कहानियों के पात्र जंगली जानवर, परियों, चमत्कारिक घटनायें, राक्षस, देवी–देवता, पौराणिक घटनाएँ, राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारियाँ आदि रहे। तदुपरांत समयानुसार परिवर्तन के साथ नए पात्र जुड़ते गए, नई–नई घटनायें घटित होती रहीं और कहानी अपना स्वरूप बदलती रही। इस प्रकार लम्बी यात्रा के बाद आधुनिक कहानी के रूप में हमारे समक्ष है। कहानी जहाँ बालकों का मनोरंजन करती हैं वहीं उनमें सुसंस्कारों का बीजारोपण भी करती हैं, बालकों को जीवनोपयोगी शिक्षा भी दे देती हैं। उनकी जिज्ञासा, कौतूहल को शांत करके उनकी कल्पनाशक्ति में वृद्धि करती है, क्रियाशीलता से जोड़ती है, दिशा निर्देश करती है। दादा–दादी, नाना–नानी से बचपन में सुनी गई कहानियाँ बालकों का दृष्टिकोण ही बदल देती हैं। माता जीजाबाई से कहानियाँ सुनकर शिवाजी ने वीरता की नई गाथा प्रस्तुत की। यह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है। इस संदर्भ में डॉ. नागेश पाण्डेय ने लिखा भी है 'कहानियाँ ऐसा माध्यम है कि वह बच्चों की कल्पनाशक्ति के विकास में सर्वाधिक योगदान करती हैं। बाल साहित्य में कथा साहित्य बालकों के लिए अत्यंत उपयोगी है, इससे बालक अपनी कल्पना द्वारा सद्पात्रों से तादात्म्य स्थापित करता है और उनसे सद्गुणों की प्रेरणा लेता है।'[40] डॉ. नागेश पाण्डेय के अनुरूप कहानियाँ बालकों के व्यक्तिव के समग्र विकास के लिए अत्यंत उपयोगी है। ये कहानियाँ काल्पनिक भी हो सकती हैं और यथार्थवादी भी। विषय की दृष्टि से बाल कहानियाँ कई रूपों में विकसित हुई हैं यथा–काल्पनिक कहानियाँ, यथार्थवादी कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, चमत्कारिक कहानियाँ, मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, सांस्कृतिक कहानियाँ। जंगली जानवारों से सम्बन्धित कहानियाँ–पौराणिक कहानियाँ लोक कथाएँ कहानियाँ, जासूसी कहानियाँ, राजा–रानी की कहानियाँ, पशु–पक्षियों की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, देवी–देवता की कहानियाँ, वैज्ञानिक कहानियाँ।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि बालकों के सर्वत्रोन्मुखी विकास के लिए कहानियों की भूमिका, उपयोगिता निर्विवाद है। बाल कथाएँ सरल और सहज होनी चाहिए जिन्हें बालक आसानी से आत्मसात कर सके। इनकी भाषा सरल हो। इनके विषय बालक की पसंद और परिवेश से सम्बन्धित उपादान हों अर्थात् बालोपयोगी हो। बालक की सबसे बड़ी विशेषता उसका कौतूहल और जिज्ञासा होती है। बाल कथाएँ इनकी जिज्ञासा शमन करने में सक्षम हो। बाल कहानियाँ आकार की दृष्टि से लघु हैं, इनके संवाद चटपटे, चुलबुले, वाक्य छोटे–छोटे होते हैं। इनमें बच्चों को शिक्षित करने की क्षमता भी होती है। बड़ों की कहानियों जैसी क्लिष्टता, जटिलता, अधूरापन, प्रतीकात्मकता बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।

1.3.6 बाल नाटक व बाल एकांकी

यह संसार एक नाट्यशाला है, जहाँ हर व्यक्ति अपनी–अपनी भूमिका का अभिनय करता है। देखा जाये तो अभिनय उस के जीवन का विशेष अंग है और अभिनय बहुत बड़ी कला भी है। बालक अभिनय करने में निष्णात होते हैं। सच तो यह है कि नाटक के प्रणेता स्वयम् बालक ही हैं। अपनी बात मनवानी हो या फिर अपनी गलतियाँ छिपानी हो या कुछ और बात हो, बालक इतना सहज अभिनय करते हैं कि देखते ही बनता है। श्रीकृष्ण की माखन लीला एवं अन्य लीलाएँ इस बात के प्रमाण हैं। बालक की मासूम, चंचल भाव भंगिमाएँ, बाल–क्रिड़ायें, भोली चेष्टायें सब कुछ नाटक के परिष्कृत और शुद्ध स्वरूप है। डॉ. नागेश पाण्डेय के मतानुसार–

'बाल साहित्य के क्षेत्र में नाटकों की और भी अधिक गरिमा है। नाटकों का मूल तत्व अनुकरण बालकों के जीवन में सहज ही रचा–बसा होता है, उन्हें सहज अभिनेता कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। बालकों को दूसरों की नकल करने में विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। बच्चों द्वारा नाटक करना शाश्वत कला है। बड़ों ने तो उसे बाद में अपनाया।'[41]

बालक स्वभाव से अनुकरणशील होते हैं। वे बड़ों के हर क्रियाकलाप का अनुसरण करके आत्मीय आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते हैं। शाला से आने के बाद काल्पनिक कक्षा बनाकर, दीवार को श्यामपट्ट मानकर पढ़ाने का अभिनय देखते ही बनता है। बालक अनुसरण के द्वारा ही सीखते हैं।नाटक साहित्य की अन्यतम विद्या है, क्योंकि नाटक अभिनय, दृश्य, रंग मंचीय विद्या है। '**अवस्थानुकृतिर्नाटक**' अर्थात् अवस्था की अनुकृति ही नाटक है। नाटक क्रिया केन्द्रित विद्या है। अभिनय नाटक का मूलभूत तत्व है। बाल नाटकों का भी प्राण तत्व है। बाल नाटक बड़ों के नाटक का ही अंग है, इनमें भी वो ही सारे तत्व होते हैं, फिर भी इन में मूलभूत अन्तर है, क्योंकि बाल मनोविज्ञान बड़ों से बहुत भिन्न होता है।बाल नाटकों का आकार छोटा होता है। इनका कथानक बच्चों के मनोनुकूल विषय होते हैं, कथानक का चयन बाल अभिरुचियों, मनोविज्ञान, स्वभाव के अनुरूप होता है। बाल नाटकों के संवाद संक्षिप्त, सहज और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए। भाषा अत्यन्त सरल हो, देश–काल, वेशभूषा, वातावरण आदि का निर्माण इस प्रकार किया जाये, जिस से बालकों को अभिनय करने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। मंचीय व्यवस्था एकदम सहज हो। बाल नाटकों में पात्रों की संख्या भी कम होनी चाहिए। नाटकों के श्रेष्ठ मंचन के लिए गीत–संगीत और पार्श्वध्वनियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बाल नाटकों के गीत बड़ों के नाटकों की तुलना में छोटे, सरस, सहज, तुकांत और सुमधुर होने चाहिए ताकि बालक तन्मयता के साथ नाटक का भरपूर आनन्द ले सकें। बच्चों के नाटकों के शीर्षक भी आकर्षक, रोचक और सरल होंगे तो बालक शीघ्रता से समझ सकेंगे और नाटक से अच्छी तरह जुड़ सकेंगे। बाल नाटकों के विषय में **डॉ. हरिकृष्ण देवसरे** के मतानुसार– 'बच्चों के नाटकों की

कुछ अनिवार्य शर्तें हैं। पहली यह कि उसके कथानक बच्चों की रुचि और उनके मनोविज्ञान के अनुरूप हों दूसरी शर्त यह कि उसमें पात्र ऐसे हो–जिनका अभिनय बच्चे स्वयं कर सकें।'[42]

एकांकी नाटक का ही लघु स्वरूप है। इसमें एक ही अंक होता है, इसीलिए एकांकी नाम से अभिहित किया गया हैं। बाल एकांकी के कथानक अत्यंत छोटे होते हैं। पात्र सीमित, संवाद अति संक्षिप्त होते हैं। इनमें संकलन–त्रय का होना बहुत जरूरी माना गया है, अर्थात् घटना, समय, स्थान की एकता। एकांकी के मंचन की गति तीव्र होती है।

1.3.7 बाल उपन्यास

बाल उपन्यास अर्थात बच्चों की अभिरुचि, मनोविज्ञान, मानसिकता के अनुरूप सृजित उपन्यास। उपन्यास एक मनोरंजक और लोकप्रिय विद्या है। बच्चों में भी उपन्यास पढ़ने की जिज्ञासा होती है। अन्य विधाओं की भांति उपन्यास भी बच्चों के लिए प्रेरक और सही दिशानिर्देशक सिद्ध होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ–साथ बालक नई–नई चीजों से, नए–नए परिवेश से जुड़ने के लिए लालायित रहता है। वह कहानियों से कुछ आगे बढ़कर उपन्यास की ओर प्रवृत होने लगता है, अतः बाल उपन्यासकार का दायित्व है कि वह बालकों के अनुरूप ऐसे उपन्यास की रचना करे, जिससे बालकों का स्वस्थ मनोरंजन भी हो और ज्ञान में भी वर्द्धन हो।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार– 'बाल उपन्यास एक ऐसी लम्बी कथा है जिसमें घटनायें कैसी भी हों लोक की, परलोक की, आकाश की, पाताल की, घर की या समाज की, वे बच्चों के मन की अनेक गुत्थियों को सुलझाने में सहायक होती हैं। बच्चों को उपन्यास पढ़ने में इसलिए भी आनन्द आता है कि उसमें घटनाचक्र बढ़ी तेजी से चलता है, 'आगे क्या हुआ' जानने की उत्सुकता बनी रहती है और काफी देर तक एक रोचक कथासंसार, में विचरण करने का अवसर मिलता है।'[43]

स्पष्ट है, बाल उपन्यास में गतिशीलता, कौतुहल, जिज्ञासा का बने रहना अतिआवश्यक है। आगे क्या होगा? फिर इसके बाद कौनसी घटना होगी ? ये जिज्ञासा उपन्यास में निरंतर बनी रहनी चाहिए, तभी बालक उससे जुड़ सकेगा क्योंकि बालक का चंचल मन अधिक देर तक धैर्य नहीं दख सकता। तत्वों की दृष्टि से बाल उपन्यास का कथानक न अति संक्षिप्त हो और न ही अधिक विस्तृत। बाल स्वभाव से नटखट, चंचल, शरारती, हास्य–पसंद, साहसिक होते हैं। अतः बाल उपन्यासों के कथानक का चयन करते समय इन बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है। इनके कथानक ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक, जासूसी, साहसिक, वैज्ञानिक, हास्य प्रधान और बाल मनोविज्ञान पर आधारित होने चाहिए। जिससे बालक का मनोरंजन हो और उनका चारित्रिक विकास भी हो सके। बाल उपन्यासों में पात्रों की संख्या सीमित होती है। ये पात्र काल्पनिक और यर्थाथवादी होते हैं। पशु–पक्षी भी प्रतीकात्मकता के रूप में पात्र की भूमिका निभाते हैं। बाल

उपन्यासों के संवाद चुटीले, रोचक, सहज, संक्षिप्त और कौतुहल उत्पन्न करने वाले होते हैं। इसी प्रकार भाषा सरस, सरल, प्रवाहमय, सुग्राह्य, प्रभावोत्पादक, चित्रात्मक, सम्प्रेषणीय, पात्रानुकूल होती है। कहावतों, मुहावरों, सूक्तियों का प्रसंगानुरूप प्रयोग बाल उपन्यासों को अधिक रोचक बनाने के लिए किया जाता रहा है। बड़ों के उपन्यासों की भांति भाषागत दुरुहता, बोझिलता, लम्बे–लम्बे कथन, क्लिष्टता बाल उपन्यासों के लिए अमान्य हैं। देशकाल, वातावरण का चित्रण इतना सजीव हो कि बालमन में उसका चित्र अंकित हो जाये। शब्द संयोजन, वाक्य विन्यास सुगठित होना चाहिए ताकि परिवेश सजीव हो उठे। एक शब्द में कहें तो बाल उपन्यास बालकों के मनोनुकूल होने चाहिए।

1.3.8 बाल निबन्ध

निबन्ध गद्य साहित्य की सशक्त, लोकप्रिय, आधुनिक और महत्वपूर्ण विधा है। निबन्ध का अर्थ स्पष्ट करते हुए **डॉ. नागेश पाण्डेय ने लिखा है**– 'निबन्ध का व्युत्पत्तिक अर्थ है– 'विचारों का बंधन अर्थात् निबन्ध वह गद्य रचना है जिसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया हो।'[44]

बालक ज्यों–ज्यों बड़ा होता है, कविता, कहानी, नाटक से इतर गद्य की अन्य विधाओं की ओर आकर्षित होने लगता है यथा– निबन्ध, जीवनी, पत्र साहित्य, आदि। बाल निबन्ध का आशय है, बालकों के निबन्ध। बाल निबन्ध और बड़ों के निबन्ध के स्वरूप में भी अन्य विधाओं की तरह कुछ विभेद हैं। बाल निबन्ध बच्चों के लिए होते हैं, अतः इनके शीर्षक संक्षिप्त, चुटीले, विषयानुरूप, आकर्षक होते हैं, जिससे बच्चे इन्हें पढ़ने के लिये प्रेरित होते हैं। तत्पश्चात निबन्ध की रचना उपशीर्षकों में विभाजित करके अति सहजता से विषय केन्द्रित होकर की जाती है। उपसंहार में निबन्ध का सारांश और उद्देश्य इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जिससे बालक निबन्ध के केन्द्रीय भाव को आत्मसात कर सके। आवश्यकतानुसार बीच–बीच में छोटे–मोटे उदाहरण भी प्रस्तुत किये जाते हैं। मुहावरों का प्रयोग भी विषयानुरूप सम्भव है। संक्षिप्त वाक्य, सरल शब्दावली, सरस, सहज भाषा प्रयुक्त की जाती है। निबन्धों के समान्यतया निम्न विषय माने हैं– ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पर्वो सम्बन्धी, साहसिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक, सामाजिक, हास्य प्रधान, व्यक्ति सम्बन्धी, ललित निबन्ध, धार्मिक, काल्पनिक, व्यंग्यात्मक आदि–आदि।

अन्य विधायें

कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास से इतर बाल साहित्य की अन्य विधाओं यथा– बाल जीवनी, बाल आत्मकथा, बाल पहेलियाँ, संस्मरण, यात्रा–साहित्य, पत्र–साहित्य, डायरी, साक्षात्कार आदि को भी बच्चे पसंद करने लगे हैं। बाल रचनाकार भी इन विधाओं में श्रेष्ठ सृजन कर रहे हैं

और यह पुस्तकाकार में प्रकाशित भी हो रहा है। इन विधाओं का स्वरूप भी कविता, कहानी आदि की तरह बाल मनोनुकूल होता है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि बाल साहित्य का स्वरूप आदि युगीन लोक जीवन से प्रारम्भ होकर आधुनिक काल तक अविराम परिवर्तित होता आया है। वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकि युग के आने से बीसवीं शताब्दी में बाल साहित्य में उल्लेखनीय बदलाव आया। बदलती दुनिया साथ कई पुरानी परम्पराओं को नए परिवेश में ढालकर प्रस्तुत किया गया। अब बच्चे कल्पना लोक में विचरण करने के बजाय यथार्थ के धरातल पर चीजों को परखने लगे हैं। अतः बाल साहित्यकारों ने भी पुराने ढर्रे को त्याग कर नई शैली, नया शिल्प, नया मुहावरा, नई जिज्ञासा, नई संकल्पना, नई तकनीक को अपनाकर सृजन कार्य करते रहे हैं। प्रगतिशील और समसामयिक चेतना के साथ विज्ञान, कम्प्यूटर, इण्टरनेट जैसे विषयों को रोचक और मनोरंजक बनाकर प्रस्तुत किया जाने लगा। वर्तमान युग में प्रकृति चित्रण के साथ–साथ बालक को केन्द्र में रखकर उसकी जिज्ञासा, रूचियों, प्रवृतियों, मनोदशाओं के अनुकूल सभी विधाओं में बाल रचनायें लिखी जा रही हैं। आज का हिन्दी बाल साहित्य स्वरूप हर दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है, व्यापक है जिसे सीमाओं में आबद्ध नहीं किया जा सकता। साहित्य समाज, काल, परिस्थिति सापेक्ष होता है। फिर भी विद्वत जनों, आलोचकों के द्वारा तय किए गये मापदण्डों के अनुरूप बाल साहित्य की रचना सुनिश्चित होनी ही चाहिए।

1.4 बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एवं विशिष्टता

किसी भी रचना के सृजन मे ंअनेक विचार भावभूमि, सामाजिक सरोकार, उपयोगिता सभी महत्वपूर्ण होते है। इस दृष्टि से बाल साहित्य अति विशिष्ट है।

1.4.1 आवश्यकता

कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि मानव की पेट की क्षुधा के अतिरिक्त एक भूख और होती है, जो साहित्य, संगीत और चित्रकला से तृप्त होती है। साहित्य समाज का अभिन्न अंग है। आदमी को इन्सान बनाने की प्रक्रिया में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा मानव के विकारों का परिष्कार होता है और वह उच्चतर जीवन जीने की ओर अग्रसर होने लगता है। साहित्य मनुष्य का मनोरंजन भी करता है, वहीं सुसंस्कृत बनाते हुए सभ्यता से भी जोड़े रखता हैं किं कर्तव्यविमूढ़ होने की स्थिति में सहित्य समाज को सत्पथ की ओर अग्रसर करता है, इसी के साथ–साथ साहित्य के रसास्वादन से मनुष्य दिव्य आनन्द को भी अनुभूत करता है। बाल साहित्य, साहित्य का ही महत्वपूर्ण अंग है ओर बालक के सम्यक उन्नयन की आधारशिला तैयार करता है। उसे प्रकृति से जोड़ता है, बातों ही बातों में प्रेम, सहयोग, करुणा, सौहाद्र, सत्य,

सद्भावना, संवेदना, साहस आदि मानवीय गुणों से बालक का साक्षात्कार करवाता हैं मूलतः, बाल साहित्य बच्चों को जीने की कला सिखाता है, चीजों को देखने–परखने की नई दृष्टि देता है।

बाल साहित्य की आवश्यकता को **डॉ. नागेश पाण्डेय ने व्यक्त** करते हुए लिखा है– 'बच्चों को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने की दिशा में बाल साहित्य की अवर्णनीय भूमिका है। आज जब विश्व के समग्र राष्ट्रों में एक प्रतियोगिता का वातावरण है और विकास की आपाधापी में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, ऐसे में बालक को एक सफल नागरिक के रूप में तैयार करने हेतु बाल साहित्य की आवश्यकता विशेष रूप से बढ़ गई है।'[45]

प्रख्यात बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे का मानना है– 'बाल साहित्य की तुलना माँ के दूध से की जा सकती है। जैसे बच्चा अपना पहला आहार माँ के दूध के रूप में लेता है वैसे ही उस का पहला बौद्धिक आहार माँ के मुहँ से सुनी लोरी के रूप में बाल साहित्य होता है। जैसे बच्चे के स्वस्थ शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध आवश्यक होता है वैसे ही उस के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए बाल साहित्य।'[46]

मूर्धन्य आलोचक डॉ. नगेन्द्र ने माना है, पहले समाज में बालक का अस्तित्व खिलौने के रूप में था। उनको प्यार–दुलार तो मिलता था लेकिन उसे समाज का एक अभिन्न अंग नहीं समझा जाता था। लेकिन आज के बालक की आवश्यकताओं में एक आवश्यकता बाल साहित्य की भी है।'[47] अर्थात् बाल साहित्य माँ के दुलार जितना आवश्यक है क्योंकि इसका पाठक एक बच्चा होता है और बच्चे को सर्वप्रथम माँ का प्यार, दुलार ही चाहिए।

श्रीनाथ सहाय ने बाल साहित्य की आवश्यकता को बताते हुए लिखा है– 'बालक देश की आधारशिला है। इसकी समुचित शिक्षा, संवेगकव बौद्धिक विकास पर ही देश का विकास सम्भव है। प्रारम्भ से ही इन्हें राष्ट्रीय, जनतान्त्रिक मूल्य आधारित शिक्षा देने की आवश्यकता पड़ती है, जिससे एक जागरूक नागरिक के रूप में इनका उत्तरोत्तर विकास हो। इस दिशा में बाल–साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके द्वारा बालकों में स्वस्थ संस्कार प्रस्तिस्थापित हो सकें। अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्था की नींव बचपन में ही उचित बाल साहित्य द्वारा निर्मित की जा सकती है।'[48]

डॉ. देवसरे के अनुसार बाल साहित्य बच्चों के लिए माँ के दूध जितना उपयोगी है। उपर्युक्त संदर्भों एवं विद्वानों के मतानुसार बाल साहित्य बच्चों के मन बहलाव के लिए अत्यावश्यक है। यह एक पथ प्रदर्शक की भांति काम करता है, जो बालकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। डॉ. नागेश पाण्डेय ने इसे बच्चों को सुनागरिक बनाने के लिए जरूरी माना है, वहीं श्रीनाथ सहाय बच्चों के समुचित विकास और नैतिक मूल्यों से जुड़ने के लिए बाल साहित्य की अहम् भूमिका को स्वीकारते हैं। डॉ. नगेन्द्र इसे बच्चों के लिए प्रमुख आवश्यकता मानते हैं।

बाल साहित्य बच्चों का मनोरंजन करने के साथ–साथ उन्हें आनन्द आह्लाद, उत्स, प्रेरणा, प्रदान करता है उनका ज्ञानवर्द्धन करता है, उनकी कल्पनाओं, जिज्ञासाओं का शमन करता है, स्मरण शक्ति में एवं तर्क क्षमता में वृद्धि करता है। बौद्धिकता का विकास करके प्रकृति और पर्यावरण प्रेम भी जाग्रत करता है। बाल रचनाओं के द्वारा बालक अपने परिवेश को, चीजों को, सामाजिक गतिविधियों को, रिश्तों को बारीकि से जानने लगता है। बाल साहित्य बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षित करता है, उनके सामान्य ज्ञान में बढ़ोतरी करता है, प्रज्ञा को तीव्र करता है। वही नई वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़े रखता है। पाठ्य–पुस्तकों में केवल ज्ञान–विज्ञान की बातें होती हैं। अतः बालक इस से इतर भी ऐसी पुस्तकें पढ़ना चाहता है जिसमें उसके मन की बात हो और यह उसको बाल साहित्य से ही मिल सकती है। बच्चा जैसे–जैसे बड़ा होता है वह अपने परिवेश की चीजों को अपने अनुसार जानने की कोशिश करता है, यह उनमें बहुत कुछ खोज लेना चाहता है और इस संदर्भ में जब भी बालक किसी चीज के बारे में बड़ों से सवाल करता है, तो अक्सर उसे चुप करवा दिया जाता है। ऐसे में बालक की सहायता केवल बाल पुस्तकें ही कर सकती हैं और ये साहित्य स्कूली शिक्षा में भी सहायक का काम करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बालकों का साहित्य दादा–दादी, नाना–नानी की कमी को पूरी करते हुए, बच्चों के एकाकीपन को दूर करता है। बाल साहित्य से, बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास से व्यवहारगत परिवर्तन भी परिलक्षित होने लगता है। एक वाक्य में, बाल साहित्य, बालकों को जीवन जीने की कला सिखाता है। बाल साहित्य बच्चों के साथ–साथ प्रोढ़, नवसाक्षरों और इनसे जुड़े अन्य व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक माना गया है, जैसे दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता, शिक्षक आदि तभी तो वे अपने बालकों को कवितायें, कहानियाँ सुना सकेंगे और उन से जुड़ कर उनका प्यार पा सकेंगे। ये भी निर्धारित कर सकेंगे कि बालक के लिए कब, कौन सा साहित्य उपयोगी रहेगा। **डॉ. नागेश पाण्डेय** ने इस परिप्रेक्ष्य में लिखा भी है– 'बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए ही नहीं, प्रोढ़ों, नवसाक्षरों के लिए भी समान रूप से अपनी महत्ता सिद्ध करता है। वास्तविकता तो ये है, कि बच्चे से जुड़े हर व्यक्ति के लिए बाल साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है।'[49] समग्रतः बाल साहित्य केवल बालकों के लिए ही जरूरी नहीं है अपितु प्रौढ़ों, नवसाक्षरों एवं बालक से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के भी उतना ही आवश्यक है, क्योंकि जब बड़े बाल साहित्य पढ़ेगे तभी तो बालकों को सुनायेंगे, पढ़ने को प्रेरित करेंगे। सनातन काल से बाल साहित्य की आवश्यकता रही है और जब तक संसार है, तब तक रहेगी।

1.4.2 बाल साहित्य की उपयोगिता

बाल साहित्य बालकों के लिए जितना आवश्यक है उतना ही उपयोगी भी। इस संदर्भ में **डॉ. राष्ट्रबंधु** का मानना है– 'हमें चाहिये कि हम बाल साहित्य की उपयोगिता से समाज को परिचित करायें। आंगनबाड़ी में बच्चों को पहेलियाँ, लोरियाँ और कहानियों का प्रवेश क्रमबद्धता से

नहीं है। शिक्षा में जे.टी.सी., बी.टी.सी., बी.एड., एम.एड. और पुस्तकालयों के लिए बाल साहित्य का ज्ञान, शिक्षा को सामाजिकता से जोड़ सकता है। अतः बाल साहित्य में जो मनोविज्ञान है उससे मनोचिकित्सा की सफलता सरलता से हो सकती है। स्वास्थ्य और चिकित्सा में भी बाल साहित्य का उपयोग चमत्कारी प्रभाव दिखा सकता है।'[50] बाल साहित्य की उपयोगिता निम्नांकित बिन्दुओं से स्पष्ट है–

- बाल साहित्य बच्चों को खुशियों से भर देता है।
- इससे बालकों की कल्पना शक्ति का विस्तार होता है।
- बाल साहित्य पढ़ने, देखने और सुनने से बच्चे कई प्रकार की कई कलाओं से सहज रूप से जुड़ जाते हैं। साथ ही बाल साहित्य लिखना भी सीख जाते हैं।
- बाल साहित्य से बालकों की क्रियात्मक क्षमता और सृजनशीलता में वृद्धि होती है।
- बाल साहित्य से बच्चों के अतिरिक्त समय का बहुत अच्छा सदुपयोग होता है।
- इसके पढ़ने से बालकों में स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता, अनुशासन, दृढ़ता, साहस, मैत्री–भाव, सहयोग की भावना, प्रेम आदि भाव स्वतः ही जाग्रत हो जाते हैं।
- कहानियों, कविताओं, पहेलियों आदि के पठन–पाठन से बालकों की स्मरण शक्ति बढ़ती है, और उन्हें कंठस्थ कर लेने से जीवन भर के लिए मन–मस्तिष्क में संचित हो जाती है।
- कहानी सुन कर मित्रों को या किसी और को सुनाने से उनकी वाक कला, वाक चातुर्य में संवर्द्धन होता है।
- नाटकों के पठन और मंचन से अभिनय कला का विकास भी होता है।
- बाल साहित्य की पुस्तकों में बने चित्रों को बार–बार देखने से बालक में बनाने का कौतूहल जाग्रत होता है और इससे उनमें रेखांकन एवं रंग भरने की कला स्वतः ही विकसित हो जाती है।
- बाल साहित्य को आत्मसात करने से बच्चे व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।
- बाल पहेलियाँ सुनने से कौतूहल जाग्रत होता है और हल करने से बच्चों का मानसिक विकास होता है, संतुष्टि मिलती है, चिंतन–मनन से द्वार खुलते हैं।
- चुटकुले बच्चों को हंसा–हंसा कर लोटपोट कर देते हैं।

- जब बच्चे बड़ों को कवितायें सुनते हैं, तब उन से प्रशंसा पाकर बच्चे फूले नहीं समाते।

इस प्रकार बाल साहित्य न केवल टाबरों के लिए जरूरी है अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए ही बहुपयोगी हैं।

1.4.3 बाल साहित्य की विशिष्टता

बाल साहित्य की प्रथम विशिष्टता ये ही है कि वह बालकों के लिए होता है, क्योंकि बाल साहित्य सम्पूर्ण वाङ्मय का अति महत्वपूर्ण अंग है। बालक अपने आप में ही इस संसार की प्रथम और विशिष्ट इकाई है। बाल साहित्य बड़ों के साहित्य से अनेक प्रकार से अलग हैं, जो इसकी विशेषताओं के फलस्वरूप ही है। इस संदर्भ में **डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'** का कथन–'बाल साहित्य सामान्य साहित्य का अंग होता हुए भी उससे सर्वथा पृथक है। भाषा–शैली, शिल्प, उद्देश्य, संवेदना, मनोविज्ञान और महत्व इत्यादि अनेकानेक दृष्टियों से दोनों में मूलभूत अंतर है।'[51]

डॉ. श्रीप्रसाद के अनुसार– 'बड़े और बच्चों की कविता में मूल अंतर संवेदना का है।'[52]

डॉ. नामवर सिंह की मान्यता है– 'बाल साहित्य लिखना एक दुष्कर कार्य है। बड़ों का साहित्य लिखना आसान है लेकिन छोटों के लिए छोटों की भाषा में, बहुत कठिन कार्य है।'[53]

श्रीप्रसाद के अनुसार– 'बाल साहित्य वर्तमान में बालकों का मनोरंजन करता है और भविष्य में नया सुसंस्कृत समाजोपयोगी जीवन देता है।'[54]

बाल साहित्य की भाव–पक्ष और कला–पक्ष के आधार पर अपनी अलग विशेषतायें है क्योंकि बालक और बड़ों की दुनिया हर दृष्टि से अलग होती है। जहाँ बच्चा कल्पनाओं के आकाश में विचरण करते नहीं थकता, वहीं बड़ों को यथार्थ के कठोर धरातल पर चलना पड़ता है। बाल साहित्य रस से परिपूर्ण, सहज, बच्चों की तरह मासूम होता है और इसके लिए बाल रचनाकार को उनकी भाव भूमि पर उतर कर सर्जना करनी पड़ती है। बाल साहित्य जितना सरल होता है, उसका सृजन उतना ही कठिन। इसी के साथ बाल साहित्य की अन्य विशेषताओं में उसका आकार में लघु होना भी है, चाहे गीत हो, कहानी हो, नाटक हो या दूसरी विधा। ये इसलिए कि बालकों को शीघ्र याद हो सके और हमेशा स्मृति में रहे। बाल साहित्य का सकारात्मक होना इसकी विशेषता है, इसमें नकारात्मक बातों के लिए कोई स्थान नहीं होता क्योंकि छल–कपट, झूठ, घृणा, द्वेष, दुर्भावना, नफरत आदि भाव बाल्यावस्था से कोसों दूर होते हैं। बालक सदैव वर्तमान में जीता है या फिर सपनों एवं कल्पनाओं में। अतः बाल साहित्य वर्तमान के साथ भविष्य की संकल्पना को लेकर लिखा जाता है। बाल साहित्य केवल बच्चे ही

चाव से पढ़ते हो ऐसा नहीं है। बाल साहित्य प्रौढ़, युवा, महिलायें भी बड़ी रुचि से पढ़ते हैं और भरपूर आनन्द लेते हैं अर्थात् बाल रचनाएँ हर वर्ग को बहुत पसंद आती हैं।

1.5 हिन्दी बाल साहित्य : परम्परा एवं विकास क्रम

साहित्य लेखन की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। विश्व की अनेक भाषाओं के विकास का इतिहास लिखा जा चुका है, जिनमें अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश सहित कई अन्य भाषाऐं सम्मिलित हैं। हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवाशाली रहा। जिसके कई विद्वानों, विचारकों और समीक्षकों ने अपने–अपने मतानुसार भिन्न–भिन्न तरीके से लिखा है एवं नामकरण भी उसी के अनुरूप किया है, जिनमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' सबसे प्रामाणिक और प्रासंगिक माना जाता है। बाद में विद्वानों ने इसी में आंशिक परविर्तन करके नया स्वरूप प्रदान किया हैं। हिन्दी बाल साहित्य भी हिन्दी साहित्य का ही एक अंग है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के समान बाल साहित्य का अपना वैभवशाली इतिहास रहा है। किन्तु अभी तक ऐसा माना जाता रहा है कि किसी भी विद्वान के द्वारा बाल साहित्य का व्यवस्थित, संतुलित इतिहास नहीं लिखा गया हैं, यूँ कई विद्वानों ने इसे अपने–अपने अन्दाज में लिखा है, जिनमें से प्रमुख रूप से प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. परशुराम शुक्ल, रोहिताश्व अस्थाना, निरंकार देव सेवक और प्रकाश मनु प्रमुख हैं। परम हर्ष की बात है कि लम्बे अन्तराल के पश्चात् 2018 में प्रकाश मनु कृत 544 पृष्ठीय 'बाल साहित्य का इतिहास' प्रकाशन में आया है। जिसे मुख्य रूप से विधागत स्वरुप देकर व्याख्यायित किया है, जो काफी चर्चित हो रहा है।

प्रस्तुत है कतिपय विद्वानों के द्वारा किया गया बाल साहित्य का विभाजन। **डॉ. देवसरे** ने हिन्दी बाल साहित्य को छः काल खण्डों में विभाजित किया है–

1. पूर्व भारतेन्दु युग (सन् 1845–1873 तक)
2. भारतेन्दु युग (सन् 1874–1900 तक)
3. द्विवेदी युग (सन् 1901–1930 तक)
4. आधुनिक युग (सन् 1931–1946 तक)
5. स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1947–1957 तक)
6. वर्तमान युग (सन् 1958–1967 तक)

रोहिताश्व अस्थाना ने बाल साहित्य के इतिहास को चार काल खण्डों में प्रस्तुत किया–

1. आदिकाल (सन् 1900–1921 तक)
2. मध्यकाल (सन् 1922–1942 तक)
3. आधुनिक काल (सन् 1943–1962 तक)
4. साठोत्तरी काल (सन् 1963–अद्यतन)

इसी क्रम में **डॉ. परशुराम शुक्ल** ने बाल साहित्य को पांच काल खण्डों में विभाजित किया। उन्हीं के शब्दों में–

'बाल साहित्य की उपरोक्त आवश्यकताओं और गुणों के आधार पर एक लम्बे समय से हिन्दी बाल साहित्यकार अनुभव कर रहे हैं। मैंने हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास तो नहीं लिखा। किन्तु इसकी रूपरेखा अवश्य बनाई है मैंने हिन्दी बाल साहित्य के इतिहास को पांच युगों में विभाजित किया है–

1. आदि युग (प्रारम्भ से 1950 तक)
2. भारतेन्दु युग (1851 से 1900 तक)
3. पूर्व–स्वाधीनता युग (1901 से 1947 तक)
4. उत्तर–स्वाधीनता युग (1948 से 1990 तक)
5. प्रयोगवादी युग (1991 से निरंतर)[55]

प्रकाश मनु ने अपने बाल साहित्य के इतिहास का विधिवत शुभारम्भ उन्नीसवीं सदी से किया है जिसे तीन चरणों में बांटा है। उन्हीं के अनुरूप देश की सामाजिक–सांस्कृतिक दशा–दिशा और हिन्दी बाल साहित्य के बदलते मिजाज पर एक साथ नजर डालें तो मोटे तौर से हिन्दी बाल साहित्य की विकास यात्रा को तीन चरणों में बांटा जा सकता है–

1. प्रारम्भिक युग (सन् 1901 से 1947)
2. गौरव युग (सन् 1948 से 1970)
3. विकास युग (सन् 1971 से अब तक)

उपर्युक्त विद्वानों द्वारा किये गये हिन्दी बाल साहित्य के वर्गीकरण को देखते हुये कहा जा सकता, सभी रचनाओं ने इसे अपने–अपने नजरिये से देखा और बांटा है। अलग–अलग नामकरण जरूर है, किन्तु सभी विद्वानों का सार सम्भवतः समान ही है। उक्त विभाजन को ध्यान

में रखते हुए बाल साहित्य की परम्परा और विकास का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर करने का प्रयास किया है–

1. आदि युग (प्रारम्भ से 1850 तक)
2. भारतेन्दु युग (1851 से 1900 तक)
3. पूर्व स्वाधीनता युग (1901 से 1947 तक)
4. स्वातंत्र्योत्तर युग (1948 से अब तक)

1.5.1 आदि युग (प्रारम्भ से 1850 तक)

बाल साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन और सुसम्पन्न रहा है। भारत में ही सबसे पहले बाल साहित्य उपलब्ध हुआ है। संभव है बाल साहित्य का उद्‌भव इस पृथ्वी पर बालक के अवतरण के साथ हुआ होगा। जब बालक शिशु के रूप में माँ की गोद में आया होगा तब माता के वात्सल्य रस की भावधारा स्वतः प्रवाहित होने लगी। अपने बालक का लाड लड़ाते समय, सुलाते समय, झुलाते समय, माता के द्वारा अनायास ही कुछ ध्वनियाँ तुकबन्दी के रूप में निसृत होकर लोरी, प्रभाती रूप में विकसित हुई होगी। इसी प्रकार पिता के दुलार ने भी कुछ न कुछ रचा होगा। बच्चों को खुश करने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए, घर के समाज के बड़े लोगों ने कुछ किस्से, कहानियाँ सुनाना शुरू किया होगा। यह सब प्राकृतिक रूप से होता रहा होगा। इसी के साथ–साथ परियों की परिकल्पनायें की जाने लगी होंगी और कहानियाँ बनने लगी होंगी और किसी ने राजा–रानी, राजकुमार–राजकुमारियों के किस्से कुछ सुने होंगे और उनमें कल्पना के रंग भर कर कई रोचक कहानियाँ गड़ी होंगी। राजा–रानी से एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार हुई कि इस पर हजारों किस्से कहानियाँ बनती गई और आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। 'एक था राजा, एक थी रानी' ये पंक्ति तो कहानी के श्रीगणेश के लिए मिथक ही बन चुकी है। सम्भव है, खेलते–कूदते समय बालकों के मुँह से भी कुछ ऐसे ही स्वर निकल गए होंगे और वो भी तुकबन्दियाँ बन गई होंगी।

इस तरह श्रुति एवं वाचिक परम्परा के द्वारा बाल साहित्य की विकास यात्रा का शुभारम्भ हुआ। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक स्थान से दूसरे स्थान एवं एक कालखण्ड से दूसरे कालखण्ड तक की यात्रा करता रहा। इसी के समानान्तर लोक कथायें, लोक विश्वास, लोक परम्परायें, दन्त कथायें, लोक–गीत, लोक अनुभव आदि बाल साहित्य की सर्जना में सहायक बनते गए और पीढ़ी–दर पीढ़ी बाल साहित्य सुरक्षित रहा और हस्तांतरित होता गया। हिन्दी बाल साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्य को भी सम्मिलित किया गया है, जिसके रचियता ज्ञात हैं, जैसे– जगिनक, अमीर खुसरो, सूरदास, लाल बुझक्कड़ आदि। जगिनक के 'आल्हाखण्ड' के कुछ भाग

बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। अमीर खुसरो (1253 से 1325) की पहेलियों के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। अमीर खुसरो की पहेलियाँ, कह मुकरनियाँ, ढकोसले आदि में नीति, शिक्षा और मनोरंजन के वे सभी तत्व मिलते हैं, जो बाल साहित्य लिए आवश्यक होते हैं। ये अनुपम पहेलियाँ और कह मुकरनियाँ बड़ों के साथ–साथ बच्चों का भी स्वस्थ मनोरंजन करते रहे हैं। एक कह मुकरी–

वह आवे तब शादी होय। उस बिन दूजा और न कोय।।
मीठे लागें वाके बोल। ऐ सिख साजन? ना सिख ढोल।

महाकवि सूरदास ने कृष्ण की बाल सुलभ लीलाओं का इतना स्वाभाविक, सहज, लालित्यपूर्ण चित्रण किया है, जो हिन्दी साहित्य में बेजोड़ है। इसीलिए वे वात्सल्य रस के सम्राट कहलाते हैं। यद्यपि ये पद बालकों के लिए नहीं लिखे गये थे अपितु श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया गया था तथापि बच्चों को उन्हें सुनने व पढ़ने में आनन्द आता था–

मैया, मैं नहीं माखन खायो।
जान परे सब संग सखा मिल मुख दधि लपटायो।.....
मैया, कबिहँ बढ़ेगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत मई, है अजहूँ यह छोटी।.....
मैया मोहिं दाऊ बहुत खिजाओ।
मो सों कहत मोल को लीन्हों तोहि जसुमति कब जायो।.....
कहा करों इहि रिस के मारे खेलन हौं नहीं जात।

रीतिकाल के कुछ कवियों, वृन्द, रहीम, गिरधर कविराय आदि के साहित्य में भी बाल साहित्य की कुछ विशेषताऐं दृष्टिगत होती हैं। सभी विधाओं की तरह बाल साहित्य का उद्‌भव भी सर्वप्रथम विकृत की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत में ही हुआ, जैसा कि डॉ. परशुराम शुक्ल मानते हैं कि 'हिन्दी बाल साहित्य की इमारत संस्कृत और लोक कथाओं की नींव पर खड़ी है। लोक कथाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका रचनाकार और इनका रचनाकाल दोनों ही अज्ञात होते हैं, अतः इस काल की आरम्भिक सीमा का निर्धारण नहीं किया जा सकता, किन्तु इस काल की विशिष्टताओं के आधार पर इसकी अन्तिम सीमा 1850 निर्धारित की जा सकती है।'

डॉ. देवसरे का मानना है कि 'हिन्दी बाल साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में संस्कृत के बाल साहित्य की जो परम्परा प्रारम्भ चली आ रही थी, वही आगे चलकर हिन्दी साहित्य में गृहीत हुई।'[56]

विष्णु शर्मा ने 'पंचतंत्र' की रचना की, जो बहुत लोकप्रिय हुई। लगभग 2500 वर्ष पूर्व महिला रोप्य नगर के राजा अमरकीर्ति के चार पुत्र थे जिनका मन पढ़ाई–लिखाई में नहीं लगता था। राजा ने अपने राजकुमारों को चरित्रवान बनाने एवं नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए पंडित

विष्णु शर्मा को नियुक्त किया। उन्होंने पशु–पक्षियों तथा जीव–जंतुओं को पात्र बनाकर कहानियों के माध्यम से राजकुमारों को शिक्षित किया। वही कथाएँ 'पंचतंत्र की कहानियाँ' के रूप में संस्कृत भाषा में 'हितोपदेश' के नाम से साहित्य में लिखित रूप से आई। इसी के साथ 'ईसप की कहानियाँ' भी बाल साहित्य के रूप से काफी प्रसिद्ध हुई। तत्पश्चात् क्रमानुसार प्राकृत, पाली, अपभ्रंश में बाल साहित्य विकसित हुआ। जिनसे हिन्दी बाल साहित्य लेखन को प्रेरणा मिली। इस प्रकार संस्कृत से प्रारम्भ हुई बाल साहित्य की परम्परा हिन्दी ने ग्रहण की। इन्हीं भाषाओं में रचित हितोपदेश, बेताल पच्चीसी, कथा सरित्सागर, पंचतंत्र में बाल साहित्य और प्रमाणिकता के साथ प्रचुरता के साथ उपलब्ध है। पंचतंत्र की कहानियाँ सब से लोकप्रिय हुई। क्या बच्चे और क्या बड़े सबको ये कहानियाँ आज भी बहुत प्रिय हैं। इन पर कई कार्टून फिल्में और धारावाहिक भी बन चुके हैं, जो बहुत पंसद किये गये हैं, किये जा रहे हैं। इन्हीं के साथ–साथ लाल बुझक्कड़, गोपाल भांड, तेनालीराम के किस्से, शेखचिल्ली की कहानियों और अकबर बीरबल के किस्से आदि ने भी बहुत लोकप्रियता हासिल की।

ध्यातव्य है कि अभी तक का सारा साहित्य सामान्य जन के लिए रचा गया था, बच्चों के लिए अलग से इनमें कुछ नहीं लिखा गया था। इनमें से जो बच्चों जो भाता था, बच्चे उसे अपना लेते थे। पंचतंत्र की कहानियाँ अवश्यमेव बच्चों के लिए लिखी थीं। बाल साहित्य का नामकरण बहुत बाद में हुआ है। इस प्रसंग में डॉ. नागेश पाण्डेय, 'संजय' के अनुसार– 'प्रारम्भिक बाल साहित्य बड़ों के साहित्य का बालोपयोगी अंश लेश मात्र था। बाल साहित्य की विधायें भी कहानी, पहेली, चुटुकलों तक ही सीमित थी। रामायण, महाभारत इत्यादि पुरानों के बाल प्रसंग ही बालकों को नाट्य आनन्द प्रदान करते थे। संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश के अतिरिक्त हिन्दी की प्रारम्भिक विभाषाओं (अवधी, कन्नौजी, ब्रज, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, निभाड़ी, भोजपुरी और राजस्थानी) और भारतीय भाषाओं असमिया, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलगु, पंजाबी, बंगला, मराठी और मलयालम में बाल साहित्य की सर्जना होती रही।'[57]

इस संदर्भ में **ओम प्रकाश कश्यप** ने अपनी आखरमाला में लिखा है– 'अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव और परिवर्तनशील समय की आवश्यकताओं को देखते हुये बच्चों के लिए उपर्युक्त साहित्य की पुस्तकों की आवश्यकता अनुभव की गई तो श्रेष्ठ और मौलिक बाल साहित्य के विकल्प के अभाव में बेताल पच्चीसी, कथा सरित्सागर, जातक कथा, अलिफ लैला की रचनाओं को भी बालोपयोगी साहित्य में शुमार कर लिया और उनकी कहानियों का संक्षिप्त रूप लिखित और वाचिक परम्परा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया–सुनाया जाता रहा। यह स्थिति हिन्दी में मौलिक बाल साहित्य की दस्तक तक चलती रही। कालान्तर में हिन्दी में मौलिक लेखन का शुभारम्भ हुआ। उसका श्रेय जाता है– मुंशी लल्लूलाल (1763–1835) तथा सदल मिश्र (1767/68–1647/48) आदि को। वे फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी की पुस्तकों को बढ़ावा देने के

लिए नियुक्त किए गए थे। दोनों में विशेष साहित्यिक प्रतिभा तो न थी, लेकिन संस्कृत, ब्रज भाषा का अच्छा ज्ञान था। उपलब्ध साहित्य के खड़ी बोली में रूपांतरण के साथ नए भाषाई क्षेत्र में आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाने का उन्होंने जो साहस दिखाया वह उनकी ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित करने के लिए पर्याप्त है। उस समय के साहित्यकारों की समस्या थी कि भाषा का रूप तत्सम हो या आम बोलचाल वाला उर्दू और हिन्दी में साहित्य की भाषा क्या हो, वह भी मसला था। इस बीच बच्चों की शिक्षा के लिए पुस्तकों की आवश्यकता आन पड़ी। इसके लिए हिन्दी लेखकों की आवश्यकता थी, जो बच्चों की युगीन आवश्यकता को पहचान कर पुस्तकें लिख सकें। विलियम कॉलेज के प्रोफेसर ग्रिलक्राइस्ट उस योजना के प्रभारी थे। उन्होंनें लल्लूलाल और सदल मिश्र को यह जिम्मेदारी सौंपी। लल्लू लाल ने ब्रजभाषा में लिखी कहानियों को उर्दू–हिन्दी गद्य में लिखा, उन्होंने 'सिंहासन बत्तीसी', 'बेताल पचीसी', 'शंकुतला नाटक', 'माधोनल' आदि पुस्तकें लिखी। इसके अतिरिक्त उन्होने सन् 1812 में 'राजनीति' नाम से हितोपदेश की कहानियों को भी गद्य में लिखा। इन पुस्तकों के लिखवाने के दो उद्देश्य थे– एक यह कि 'भाखा' की समस्या सुलझाई जा सके और दूसरा यह कि वे पुस्तकें स्कूलों में भी पढ़ाई जायें, जिनसे 'भाखा' का भविष्य निर्मित हो सके और वह अधिक लोकप्रिय हो सके। इन पुस्तकों की भाषा आसानी से समझ में आने वाली होती थी। जिन स्थानों पर अंग्रेजी पढ़ाने के लिए कॉलेज खुल चुके थे, वहाँ भी अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी पढ़ाई जाने लगी।[58]

'आदि युग' के बाल साहित्य को दो भागों में बांटा जा सकता है, एक लोक साहित्य और दूसरे भाग में खड़ी बोली के प्रारम्भ में लिखी गई बाल साहित्य की रचनाएँ। प्रथम भाग में दादा–दादी, नाना–नानी, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि की कहानियाँ। दूसरे भाग में खड़ी बोली में रचित अनुदित और मौलिक साहित्य, जिसमें सदल मिश्र, लल्लूलाल और शिवप्रसाद सिंह सितारे का नाम प्रमुख है। सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' का हिन्दी में अनुवाद किया, जिसमें बालोपयोगी तत्व मिलते हैं। शिवप्रसाद सितारे सिंह ने सरकारी नौकरी करते हुए 'राजाभोज का सपना', 'बच्चों का ईनाम', 'बाल बोध', 'वीर सिंह का वृतांत' आदि रचनाएँ लिखकर बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई रचनाकारों ने अन्य भाषाओं के बाल साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया। इस प्रकार यह युग बाल साहित्य के लिए आरम्भिक उत्कर्ष का रहा। इस समय के बाल साहित्य में लेखकों का उद्देश्य बालकों का नैतिक चारित्रिक एवं सद्गुणों की शिक्षा देना था। जाहिर है। कि निरंतर संघर्ष के साथ बाल साहित्य की यात्रा निरंतर गतिशील रही।

1.5.2 भारतेन्दु युग (1851–1900 तक)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। ये एक युग प्रवर्तक रचनाकार थे। इन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में सृजन किया और नई दिशा प्रदान की, इसीलिए इस काल को नवजागरण काल या पुनःजागरण काल के नाम से अभिहित किया गया है। यह काल राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक दृष्टियों से संक्रमण का था। देश पर अंग्रेजी सत्ता का आधिपत्य था। इनकी दमनकारी नीतियों, शोषण और गुलामी से त्रस्त देशवादी पराधीनता के जंजीरों को तोड़ कर आजाद होने के लिए छटपटा रहे थे। परतंत्रता के विरुद्ध देश में कई आन्दोलन जारी थे। राजनैतिक दृष्टि से देश घोर संकट से गुजर रहा था।

राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर दिखाई दे रहा था। देशवासी सदियों की गुलामी के कारण भाग्यवादी बन चुके थे तथा उनका मनोबल टूटता जा रहा था। समाज कई प्रकार के अन्धविश्वासों, कुरीतियों, विसंगतियों जकड़ चुका था। इस काल में अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा का वर्चस्व था। ऐसे संक्रमण काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पदार्पण नए सूर्योदय की भांति नई जाग्रति का उजियारा लेकर उदित हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजी नीतियों का खुलकर विरोध करना प्रारम्भ किया और देशप्रेम का शंखनाद किया। साथ ही अपने समकालीन साहित्यकारों को भी प्रेरित किया। इसके फलस्वरूप गद्य और पद्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन प्रारम्भ हुआ और अपनी रचनाओं के द्वारा विदेशी संस्कृति, सभ्यता और भाषा का विरोध करते हुए देश–प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, त्याग, बलिदान, स्वाभिमान की भावना को जगाने का प्रयास आरम्भ हुआ। भारतेन्दु अंग्रेजों के शोषण से त्रस्त जनता को देखकर स्वयं बहुत दुखी थे जिसका जीवंत प्रमाण 1875 ईस्वी में 'भारत दुर्दशा' नाटक में देखा जा सकता है– **'रोअहू सब मिलिके आवहु भारत भाई। हा हा! भारत दुर्दशा न देखि जाई।'**

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कुल 238 ग्रन्थों की रचना की, जिनमें से 69 उपलब्ध हैं। इन्होंने प्रौढ़ों, किशोरों एवं बालकों नई दिशा बोध देने वाले प्रेरणात्मक साहित्य सर्जा की। इस युग से हिन्दी बाल साहित्य को एक अलग विधा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इस विषय में **डॉ. देवसरे** का कथन– 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी बाल साहित्य के जन्मदाता के रूप में भले ही स्वीकार न किये जायें किन्तु इन्हें इसका प्रथम प्रेरक मानना समीचीन होगा। उनकी प्रेरणा से तत्कालीन अन्य लोगों ने भी बाल साहित्य की रचना की।'[59]

भारतेन्दु की 'अंधेर नगरी चौपट राजा', 'भारत दुर्दशा', 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र', 'नील देवी', 'बादशाह दर्पण' 'कश्मीर कुसुम' आदि श्रेष्ठ बालोपयोगी नाट्य कृतियाँ हैं। 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक में सत्य निष्ठा एवं कर्तव्य पालन की भावना को निरूपित किया है, यह नाटक तब से आज तक प्रासंगिक है। 'भारत दुर्दशा' नाट्य कृति इन की कालजयी रचना मानी जा सकती है।

यह कृति राष्ट्र–प्रेम की उत्कृष्ट भावना से ओतप्रोत है। जो तत्कालीन समाज को दिशा निर्देश देने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। इसके विषय में **डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'** ने लिखा है– 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र नाटक बच्चों में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ और आज तक स्कूल–कॉलेजों में मंचित होकर सत्य पर अडिग रहने की प्रेरणा जनमानस को दे रहा है।'[60]

'नीलदेवी' एक गीतात्मक रूपक है, इसमें भी स्वाधीनता संग्राम का आह्वान किया गया है। भारतेन्दु की ये सभी नाट्य कृतियाँ बालकों के व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है एवं बाल साहित्य के लिए एक धरोहर है। भारतेन्दु जी को लेखन कला विरासत में मिली थी। इसके पिता गोपालचन्द्र श्रेष्ठ साहित्यकार थे। इन्होंने 'गिरधर कविराय' उपनाम से अनेक लोकोपयोगी, उपदेशात्मक, नीतिपरक जीवन मूल्यों से ओतप्रोत कुण्डलियाँ लिखी हैं जो आज भी प्रासंगिक है, लोक विख्यात है, और बालकों को पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जा रही हैं। भारतेन्दु राजा शिवप्रसाद सितारे सिंह को अपना गुरु मानते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1882 में 'बाल दर्पण' नामक बाल पत्रिका का प्रकाशन करके बाल पत्रिकारिता का शुभारम्भ किया, जो इस युग की महत्वपूर्ण देन कही जा सकती है। इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता माने जाते हैं। यह बात भी प्रमाणिक है कि हिन्दी में बाल साहित्य का इतिहास ठीक उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं हिन्दी साहित्य का।[61] भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य के लिए विकास युग के साथ–साथ हर दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस संदर्भ में रचनाकार **दिविक रमेश के उद्‌गार–** '.....मौलिक कहानियाँ भारतेन्दु युग से ही उपलब्ध होनी शुरू हो गई थी। शिव प्रसाद सितारे हिन्द को कुछ विद्वानों ने बाल कहानी के सूत्रपात का श्रेय दिया है। इनकी कहानियाँ हैं– 'राजा भोज का सपना', 'बच्चों का इनाम', 'लड़कों की कहानी' आदि। बाद में सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रेमचन्द, राम नरेश त्रिपाठी की कहानियों में हिन्दी बाल साहित्य की परम्परा का समृद्ध रूप मिलता है।'[62]

भारतेन्दु जी की प्रेरणा से तत्कालीन अन्य लेखकों ने भी बाल साहित्य की रचना हेतु अपनी लेखनी उठाई। इस युग के अन्य प्रमुख साहित्यकों में राधाकृष्ण दास (महाराणा प्रताप), देवीप्रसाद मुंसिफ (विद्यार्थी विनोद), अम्बिकादत्त व्यास (कथा कुसुम, कलिका), लक्ष्मीनारायण शर्मा (शिशु मनोरंजन), लाला श्रीनिवास (प्रहलाद चरित), बद्रीनारायण चौधरी, काशीनाथ खत्री, बालकृष्ण भट्ट आदि। राधाकृष्ण दास ने कई नाटक, उपन्यास एवं कविताओं का सृजन किया। इन सब से प्रमुख एतिहासिक नाटक 'महाराणा प्रताप' है। काशीनाथ खत्री भी मुख्यतः नाटककार थे, इनकी रचनाओं में देश प्रेम और नैतिक शिक्षा प्रमुख रूप से उल्लेख हुआ है। इन्होंने अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद भी किया। बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमधन' ने कई काव्यमय रचनाओं का सृजन किया। ये मूलतः कवि थे। इन्होंने सवैया छंद को अपनाया। भारतेन्दु से प्रभावित होकर इन्होंने साहित्य की रचना की। इनके प्रिय विषय प्रकृति, जीव–जंतु, शिक्षा, मौसम आदि रहे। प्रताप

नारायण मिश्र एक प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार थे। इन्होंने लगभग पचास पुस्तकों की रचना की। ये प्रमुख रूप से निबन्ध और नाटककार थे। इनकी भाषा सरल, सहज और विनोदपूर्ण होने के कारण इनकी रचनाएँ बच्चों के लिए उपयोगी बन गई। इनकी लिखी प्रार्थना तो इतनी प्रसिद्ध हुई की आज भी बालकों की प्रिय रचना है और इनके लिए कई प्रकार के उपयोगी भी।

पं. बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के प्रमुख साहित्यकार थे। इन्होंने बड़ी मात्रा में निबन्ध लिखे ओर कुछ नाटकों की भी रचना की। मुहावरों पर आधारित अनेक छोटे–छोटे निबंधों की रचना की जो अत्यंत मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक भी थे। 'शिशुपाल वध', 'नल–दमयंती', 'शिक्षादान नाटक' अत्यंत लोकप्रिय हुए। ये नाटक बालकों के लिए उपयोगी थी। इस युग में मौलिक सृजन के साथ–साथ अनुवाद का कार्य भी हुआ। इन सभी लेखकों मौलिक ने सृजन के साथ–साथ साहित्य में आये दोषों के परिमार्जन का कार्य भी किया। नवजागृति सामाजिक चेतना, बालकों के चारित्रिक विकास के लिए 'बाल बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन भी किया।

बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार– 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी–साहित्य की समस्त धाराओं में चेतना फूंकने वाले रचनाकार माने जाते हैं। हिन्दी बाल–साहित्य की दिशा में भी भारतेन्दु जी का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है।' 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'अंधेर नगरी चौपट राजा' जैसे नाटकों की रचना की जो बच्चों के लिए भी बड़े ही शिक्षाप्रद और उपयोगी सिद्ध हुए।'[63]

परशुराम शुक्ल– 'भारतेंदु युग के आरम्भ में बाल साहित्य अधिकांश उन्ही स्कूली पुस्तकों के रूप में था जिन्हें हिंदी पढने के लिए लिखा गया था।'[64] उक्त कथनों के उपरान्त निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है सभी विद्वान और विचारक हिन्दी साहित्य की भान्ति ही बाल साहित्य का विधिवत उद्‌भव और विकास भारतेन्दु काल से ही स्वीकारते हैं। इसी युग में हिन्दी साहित्य ने अपना परिमार्जित रूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया। 1 जनवरी 1874 'बाल प्रबोधिनी पत्रिका' का प्रकाशन शुरू हुआ और इसी से बाल साहित्य का सूत्रपात हुआ। लेकिन कुछ इतिहासकार, लेखक इसे बाल पत्रिका नहीं मानते। प्रारम्भिक मौलिक रचना मानते हैं। इनकी कुछ बाल कहानियाँ भी इसी श्रेणी में रखी जा सकती हैं।

1.5.3 पूर्व स्वाधीनता युग (1901–1947)

बाल साहित्य को भारतेन्दु युग में अलग विद्या के रूप में स्वीकार किया गया। इसकी विधिवत विकास यात्रा यहाँ से प्रारम्भ होकर द्विवेदी युग में परवान चढ़ने लगी। राजनैतिक दृष्टि से यह युग भी भारतेन्दु युग की भांति अस्थिरता का युग था। स्वाधीनता संग्राम जारी था। अंग्रेजी शासन के दमनचक्र से भारतीय जनता बुरी तरह से आहत थी। लेकिन स्वतंत्रता सैनानियों को देशवासियों का सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त था। महात्मा गाँधी का अहिंसात्मक आन्दोलन पूरी शिद्दत से जारी था इसी के समानान्तर क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ भी अंग्रेजी के लिए सिर दर्द बनी हुई

थी। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, विचलन से देश गुजर रहा था। राजनैतिक जागरण का बीजारोपण हो चुका था। इन सभी गतिविधियों का प्रत्यक्ष प्रभाव साहित्य पर परिलक्षित हो रहा था क्योंकि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। इसलिये इस युग का साहित्य देश–प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, नैतिकता त्याग, बलिदान, स्वाभिमान आदि मूल्यों से अभिप्रेरित रहा।

हिन्दी बाल साहित्य की दृष्टि से यह युग अत्यंत सम्पन्न और महत्वपूर्ण रहा। पहली बार मौलिक बाल साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ। इस विषय में **अखिलेश श्रीवास्तव चमन** का कथ्य– 'हिन्दी बाल साहित्य में मौलिक', सामाजिक तथा उद्देश्यपूर्ण लेखन की विधिवत शुरूआत बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से देखने को मिलती है। जब 'विद्यार्थी', 'शिशु' तथा 'बाल सखा' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।[65]

इस युग की सबसे देन है आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का पदार्पण। इनके आगमन से हिन्दी साहित्य के इतिहास में युगांतकारी परिवर्तन परिलक्षित हुआ। 1903 में द्विवेदी के तत्वावधान में 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन से नए युग का सूत्रपात हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य के रचनात्मक सुधार के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया। इस युग में बाल साहित्य के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। 'सरस्वती' पत्रिका में बालोपयोगी रचनाओं को स्थान दिया जाने लगा। वर्तमान बाल साहित्य की आधारशिला इसी युग की देन है। आचार्य द्विवेदी हिन्दी भाषा के रचनात्मक, तात्विक परिमार्जन के लिए सम्पूर्णता से समर्पित हो गए। इस युग में पहली बार बालकों के मनोरंजन के लिए पाठ्येतर पुस्तकों की रचना की जाने लगी। आवश्यकतानुसार कई पुस्तकें अलग से भी लिखवाई गई। इस काल के अनेक साहित्यकारों ने स्वतः स्फूर्त होकर मौलिक बाल साहित्य को अपने रचनाकर्म में महत्वपूर्ण स्थान दिया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कई बालोपयोगी संस्मरणों की रचना की, जिन्होंने बालकों को भारतीय संस्कृति से परिचित करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे लिखते हैं कि 'द्विवेदी–युग में पहुँच पर बाल साहित्य की धारा को काफी विस्तार मिला। यह ऐसा समय था जबकि खड़ी बोली का साफ–सुथरा रूप सामने आने लगा था। सम्पादकाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से अलेक लेखकों को जन्म मिला। द्विवेदी जी ने व्याकरण की शुद्धता और भाषा की सफाई पर विशेष बल दिया। इन्होंने बच्चों के ज्ञानवर्द्धन तथा मनोरंजन के लिए सरल, सुबोध शैली में बच्चों के लिए स्वयं लेख लिखे और अन्य लेखकों से भी लिखवाए। इसी समय शिशु (1915) और 'बालसखा' (1917) के प्रकाशन ने बालसाहित्य की समृद्धि में बड़ा योगदान दिया। पं. सुदर्शनाचार्य की प्रेरणा से 'शिशु' और द्विवेदी जी की प्रेरणा से 'बाल सखा' में अनेक लेखकों ने बालकों के लिए सरल और पठनीय सामग्री प्रस्तुत की। इंडियन प्रेस से छोटी–छोटी कहानियों की पुस्तकें भी सीरीज में प्रकाशित की गई। पं. बद्रीनाथ भट्ट, सुदर्शनाचार्य, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' आदि लेखकों ने बालसाहित्य को

प्रगतिशील बनाने में अपना पूरा योग दिया। इनकी पुस्तकें छात्रहितकारी पुस्तकमाला, इंडियन प्रेस और ओंकार प्रेस से प्रकाशित भी हुईं। हाँ, इस युग की पुस्तकों की एक विशेषता यह थी कि वे स्कूली पुस्तकों से अलग थी। उनके विषय प्रतिपादन का ढंग और दृष्टिकोण सभी भिन्न थे। तात्पर्य यह है कि शुद्ध और मौलिक बालसाहित्य की रचना द्विवेदी युग से ही आरम्भ हुई।'[66]

द्विवेदी युग को बाल साहित्य की दृष्टि से स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। इस समय अनेक विधाओं– कहानी, कविता, नाटक, गीत आदि में विभिन्न विषयों पर रचनाकर्म किया गया जो बालकों के लिए मनोरंजन, धर्म और नीति से भरपूर था, साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का ज्ञान देने वाला था। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिओध' भी बहुत पहले से बालकों के लिए रचनाएँ लिख रहे थे, सत्यनारायण 'कविरत्न' बालमुकुन्द गुप्त ने भी कई बालोपयोगी साहित्य का सृजन किया। बाबू मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सनेही ने बालकों के लिए बहुत सरस गीत लिखे। रधुनंदन प्रसाद त्रिपाठी 'रघु' ने सुन्दर शिशु गीतों की सर्जना करके बाल साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान किया। इनके गीत तत्कालीन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये। इस काल तक एकल परिवार हुआ करते थे और मानवीय रिश्ते सघन थे, प्राकृतिक वैभव भरा–पूरा था। अतः बाल रचनाओं में इनकी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। एक और बात महत्वपूर्ण रही कि पं. श्रीधर पाठक, बाल मुकुंद गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की तिकड़ी ने एक से एक श्रेष्ठ बाल रचनाओं की रचना करके बाल साहित्य अतुलित सम्बल प्रदान किया। श्रीधर 'पाठक' की सुविख्यात बाल कविता जिसे बाल सुलभ भाषा में रचकर बाल कविता को नई दिशा प्रदान की और भाषाई प्रयोग से चटकार उत्पन्न कर दिखाया–

बाबा आज देल छे आए,
चिज्जी–पिज्जी कुछ ना लाए,
बाबा क्यों नहीं चिज्जी लाए,
इतनी देली से क्यूँ आए
कां है मेला बला खिलौना,
कलाकंद लड्डू का दोना,
चां–चां गाने वाली चिलिया,
चें–चें करने वाली गुलिया,
बाबा तुम और का से आए,
आं–आं चिज्जी क्यों न लाए।'

इसी समय पं. सुदर्शनाचार्य ने 1916 में 'शिशु' नामक बाल पत्रिका निकाल कर बाल साहित्यकारों के लिए नया मार्ग प्रशस्त किया और स्वयं ने भी श्रेष्ठ बाल कवितायें लिखीं। सन्

1880 के बाद बाल साहित्य और समृद्ध होने लगा। मन्नन द्विवेदी, प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी आदि मूर्धन्य साहित्यकारों ने बाल साहित्य को नई ऊँचाईयाँ दी। हिन्दी बाल साहित्य के प्रमुख बालगीतकार कवियों में पं. श्रीधर पाठक, बालमुकुन्द गुप्त, सुखराम चौबे 'गुणाकर' लगभग समकालीन थे। इनमें से श्रीधर पाठक और बालमुकुन्द गुप्त ने सबसे पहले एक ही समय में बच्चों के लिए भी कवितायें लिखना प्रारम्भ कर दिया था पर बालमुकुन्द गुप्त एक पत्रकार के रूप में अधिक विख्यात थे।

पद्य के साथ गद्य भी द्विवेदी युग में प्रचुरता से सृजित किया गया। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद, सुदर्शन, जहूरबख्श जैसे प्रख्यात लेखकों ने बालकों के लिए भी बहुत सुंदर कथा साहित्य लिखा। प्रेमचन्द की बालोपयोगी कहानियाँ में 'ईदगाह', 'गिल्ली–डंडा', 'आत्माराम', 'बूढी काकी', 'बड़े भाई साहब' आदि कहानियाँ बाल साहित्य के लिए कालजयी रचनाएँ बन गई। ईदगाह तो आज भी पाठ्य पुस्तकों में पढाई जा रही है। इन कई कहानियों के पात्र बालक और किशोर हैं। ये कहानियाँ तत्कालीन मासिक पत्रों में प्रकाशित होती रहीं। इसी क्रम में श्रीराम शर्मा की 'शिकार', भागीरथ प्रसाद दीक्षित की 'सियार' पांडे उल्लेखनीय पुस्तकें हैं जो रेखांकित करने योग्य हैं। प्रसिद्ध निबन्धकार बाबू गुलाबराय ने बच्चों के लिए छोटी–छोटी सरस कहानियों की रचना की। रामनरेश त्रिपाठी की बाल कहानियाँ भी इस युग की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद का 'प्रताप प्रतिज्ञा', कैलासनाथ भटनागर का 'भीम प्रतिज्ञा', चतुरसेन शास्त्री का 'अमरसिंह राठौर' नाटक बच्चों की पसंद बने और उनके द्वारा सफल अभिनीत भी किये। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे मूर्धन्य रचनाकार ने सरस बालगीतों की इस रचना करके बालसाहित्य को समृद्ध किया। इस युग के बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा के साथ बालकों का भरपूर मनोरंजन करने का भी पूरा प्रयास इन रचनाकारों का रहा।

बाल पत्रकारिता की दृष्टि से द्विवेदी युग अत्यंत समृद्ध रहा, बाल साहित्य की स्वतंत्र विधा के प्रारम्भ का श्रेय द्विवेदी युग को ही मिला। 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ ही प्रकाशन का क्रम निरंतर होता गया और बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन का क्रम निरंतर जारी रहा। सन् 1917 में प्रथम पत्रिका 'बालसखा' का प्रकाशन हुआ। इस समय जब बड़े–बड़े साहित्यकार बड़ी संख्या में बालोपयोगी रचनाओं का सृजन कर रहे थे वहीं बालोपयोगी पत्रकारिता भी हो रही थी। लखनऊ से 'बाल हितकर' प्रकाशित हो रहा था। यह मासिक बाल पत्रिका थी। 1906 में अलीगढ़ में 'छात्र हितैषी' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसमें बालकों और छात्रों ने ज्ञान संवर्धन के साथ नैतिक विकास सम्बन्धी विषयवस्तु भी होती थी। बनारस से 'बाल प्रभाकर', नरसिंहपुर से 'मॉनीटर', मालवा से 'बाल मनोरंजन' पत्रिकाएँ प्रारम्भ इन बाल पत्रिकाओं ने बाल मनोरंजन एवं बालकों के व्यक्तिव निर्माण की दिशा में अच्छा कार्य किया, किन्तु ये पत्रिकाएँ दीर्घावधि तक संचालित नहीं रह सकीं।

बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन में सन् 1910 में इलाहाबाद से प्रकाशित 'विद्यार्थी' ने बाल पत्रकारिता को और ऊँचाइयाँ प्रदान की। इस में बालकों और किशोरों के लिए मनोरंजक और ज्ञान बढ़ाने वाली सामग्री का प्रकाशन होता था। इसी क्रम में सुदर्शनाचार्य के संपादन के 1915 में 'शिशु' पत्रिका प्रकाशित हुई। इसमें मौलिकता होने से बाल साहित्य को नई दृष्टि मिली। इस पंक्ति को आगे बढ़ते हुए 1920 में 'सहोदर', मातादीन के सम्पादन में आई, 1924 में 'वीर बालक', 1926 में 'बालक' जिस का सम्पादन रामजीलाल शर्मा ने किया। 1927 में 'खिलौना' प्रकाशित हुई। इस काल की 'कुमार', 'चमचम', 'वानर', 'तितली' आदि अनेक पत्रिकाएँ भी प्रकाश में आई। इन सभी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को समृद्ध और पुष्ट किया।

उपर्युक्त सभी पत्रिकाओं में 'बाल सखा' को सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली और सब से लम्बी यात्रा भी इसी ने तय की, यह बालोपयोगी पत्रिका 53 वर्षों तक लगातार प्रकाशित हुई। इस पत्रिका ने नए कीर्तिमान स्थापित किये, नए–नए बाल साहित्यकारों की नई कतार को जन्म दिया। इन सभी बाल पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने एवं लोक तक बाल साहित्य को पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इसके परिणाम स्वरूप बड़े–बड़े साहित्यकारों का ध्यान इस ओर जाने लगा। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की प्रथम कविता 1924 में 'छात्र सहोदर' में प्रकाशित हुई। बाल पत्रकारिता की दृष्टि से द्विवेदी युग सदा स्मरणीय रहेगा। उन्नीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक अविष्कार प्रारम्भ हो चुके थे। ज्ञान–विज्ञान, यांत्रिकी, संचार, उद्योग, तकनीकि आदि क्षेत्रों में संचेतना का सूत्रपात हुआ। बाल साहित्य पर इनका प्रभाव पड़ने लगा और विज्ञान, तकनीक, यांत्रिकी आदि विषयों पर बाल रचनाएँ लिखी जाने लगीं। वैज्ञानिकों की जीवनियाँ भी लिखी गई। बालमनोविज्ञान के ज्ञाता आचार्य रामलोचन शरण ने गणित, विज्ञान, इतिहास जैसे विषयों पर सरल एवं सरस भाषा में बाल साहित्य की रचना की। अम्बिकादत्त व्यास ने विज्ञान आधारित 'आश्चर्य वृतांत' उपन्यास लिखा।

इस युग में बाल साहित्यकारों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाले लगभग सभी मूर्धन्य साहित्यकार इसी युग की देन है। इस युग के प्रमुख रचनाकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त श्रीधर पाठक, बालमुकुन्द गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिओध', मैथिलीशरण गुप्त, कामता प्रसाद गुरु, रामजीलाल शर्मा, मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी', सुदर्शनाचार्य, रामनरेश त्रिपाठी, विद्याभूषण विभु, मुरारी लाल शर्मा, 'बाल बंधु', स्वर्ण सहोदय श्रीनाथ सिंह, जहूर बख्श, रामवृक्ष बेनीपुरी, सोहनलाल द्विवेदी, रमापति शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रेमचन्द, सुभद्रा कुमारी चौहान, कन्हैया लाल मत्त, रामेश्वर दयाल दुबे, रामधारी सिंह 'दिनकर', श्यामनारायण कपूर, सुखराम चौबे 'गुणाकर', गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', ठाकुर श्रीनाथ सिंह, गोपालशरण सिंह, देवीदत्त शुक्ल, रामचन्द्र रघुनाथ, केशव प्रसाद पाठक, डॉ. सुधीन्द्र, राम सिंहासन सहाय 'मधुर', रामलोचन शरण,

गौरीशंकर लहरी, कुंजबिहारी लाल चौबे, सुमित्रानंदन पंत, देवी दयाल चतुर्वेदी, पूरनचंद श्रीवास्तव, रामकुमार वर्मा, रघुनंदन प्रसाद त्रिपाठी, 'रघु', शम्भूदयाल सक्सेना, चन्द्रमौलि शुक्ल, लल्ली प्रसाद पाण्डेय मूलचन्द्र, राजेश्वर प्रसाद गुरू, रामेश्वर प्रसाद गुरू, दौलत सिंह लोढा 'अरविन्द', रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, नानूराम संसकर्ता, डॉ. कन्हैया लाल सहल, नारायणदत्त श्रीमाली, दाऊदयाल, जगदीश माथुर, कल्याणसिंह राजावत, शक्तिसिंह कविया, गिरिधारीलाल परिहार, मोहन मंडेला, ब्रजमोहन सपूत, लक्ष्मणसिंह रसवत, किशोर कल्पनाकांत, गणपतिचन्द्र भण्डारी, बंशीलाल बेकारी, मुरलीधर व्यास, प्रतापनारायण पुरोहित आदि। यहाँ कुछ कालजयी रचनाकारों की किंचित कृतियों का उल्लेख प्रासंगिक है।

श्रीधर पाठक जोंधरी आगरा : 'बाल भूगोल', 'भारतगीत', 'मनोविनोद', **पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी**, 'बालविनोद', **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध',** 'बाल विभव, बाल विलास, फूल पत्ते, चन्द्र खिलौना, 'खेल–तमाशा', उपदेश – कुसुम' बाल गीतावली, चाँद सितारे, पद्य–प्रसून, **बाल मुकुंद गुप्त** : 'खेल तमाशा', खिलौना, **कामता प्रसाद गुरु**, 'सुदर्शन', पदम पुष्पावली, दामोदर सहाय कविकिंकरः 'रसाल', 'अंगूर', 'सुधा सरोवर', 'सरल सितारी', 'बाल सितारी' उल्लेखनीय है।

प्रेमचन्द : 'कुत्ते की कहानी', 'नमक का दा**रो**गा', 'ईदगाह', **मैथिलीशरण गुप्त**ः 'यशोधरा', 'स्फुट बाल कवितायें', **विद्या भूषण** 'विभु' 'चार साथी', 'बबुआ', 'पंख–शंख', **देवीप्रसाद गुप्त** 'कुसुमाकर', **मुरारी लाल शर्मा 'बंधु'**, 'बच्चे', 'होनहार बिरवे', 'गोदी भरे लाल', 'ज्ञान गंगा', 'कोकिला', **रामनरेश 'त्रिपाठी'**, 'हंसू की हिम्मत', 'मोहन माला', 'मोहन भोग', 'वानर संगीत', कविता विनोद, 'मोतीचूर के लड्डू', **गोपालशरण सिंह, भूपनारायण दीक्षित** : 'खण्ड–खण्ड देव', 'गधे की कहानी', 'नटखट पाण्डे', 'नया आल्हा', 'बाल राज्य', 'साहसी कौआ'।

शम्भूदयाल सक्सेना : 'पालना', 'लोरी और प्रभाती', 'मधु लोरी', 'फूलों के गीत', 'चन्द्र लोरी', 'शिशु लोरी', 'रेशम झूला', 'आरी निंदिया', 'नाचो गाओ', 'बाल कवितावली' ठाकुर**; श्रीनाथ सिंह** : 'गुब्बारा', 'बाल भारती', 'दोनों भाई', 'पिपहरी', 'मीठी तानें', 'लम्बा–चौड़ा', 'खेल घर', **'स्वर्ण सहोदय',** 'चगन–मगन', 'ललकार', 'लाल फाग', 'बाल खिलौना, 'नटखट हम', 'बाल वीर बालक', 'बादल', 'शतमन्यु', 'वीर हकीकत राय', 'बच्चे के गीत– भाग–4', **सुभद्रा कुमारी चौहान** : 'कोयल', 'सभा का खेल', **सोहन लाल द्विवेदी**; 'दूध बताशा', शिशु भारती', 'बिगुल', 'बाल भारती', 'बांसुरी', 'हंसो–हँसाओ', 'शिशु गीत', 'बच्चों के बापू', 'गौरव गीत', 'हम बलवीर', 'बाल सिपाही, 'उठो–उठो', 'गीत भारती', **रमापति शुक्ल**, 'अंगूरों का गुच्छा', 'हुआ सवेरा', 'शैशव', 'बच्चों के भावगीत', **रामेश्वर दयाल** 'चलो–चलो', 'डाल–डाल के पंछी', 'कूझड़ कूं', 'फूल और कांटे', 'धरती के लाल', **रामधारी सिंह दिनकर** 'धूप छाँह', 'मिर्च का मजा', 'सूरज का ब्याह'।

कन्हैया लाल मत्त : 'लोरियाँ और बाल गीत', 'अब है मेरी बारी', 'बोल मेरी मछली कितना पानी', 'रजत पालना', 'खेल तमाशे', 'आटे बाटे–सैर सपाटे', **आरसी प्रसाद सिंह** : 'चंदा मामा', 'चित्रों में लोरियाँ', 'ओनामासी', 'जादू की बंसी', 'कागज की नाव', 'बाल गोपाल', 'हीरा–मोती', 'राम कथा', **भवानी प्रसाद मिश्र** : 'तुर्कों के खेल', **शकुंतला सिरोठिया** : 'चटकीले फूल', 'नन्ही चिड़िया', 'सोन चिरैया', 'आ री निंदिया', 'काले मेघा पानी दे', 'बाल गीत', **अमृतलाल नागरः** (उपन्यास) 'बजरंगी पहलवान', 'बजरंगी नौरंगी', 'बजरंगी स्मगलरों के फंदे में', 'अक्ल बड़ी या भैंस', (नाटक) – 'पानी देश की सैर', 'बाल दिवस की रेल', (अन्य) 'बाल महाभारत', (कहानियाँ) 'सात पूँछो वाला चीकू', 'लिटिल रेड इजिप्शिया', **'अमृतलाल नागर :** बैंक लिमिटेड, **द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी** : 'काटो और गाओ', 'बढ़े चलो', 'माखन मिश्री', 'हाथी घोड़ा पालकी', **निरंकार देव सेवक** : 'मुन्ना के गीत', 'धूप छाया', 'चाचा नेहरू के गीत', 'दूध जलेबी', माखन मिसरी, 'रिमझिम', 'फूलों के गीत', 'मटर के दाने', 'महापुरूषों के गीत', 'शेखर के बाल गीत', पप्पू के बालगीत', 'बिल्ली के गीत', 'आज़ादी के गीत', 'टेसू के गीत' आदि।

उपरांकित अवलोकन के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि स्वाधीनता पूर्व का बाल साहित्य के अध्येताओं का हर दृष्टि से बाल साहित्य के उत्कर्ष में अविस्मरणीय, अतुलित अवदान रेखांकित करने योग्य है। बाल पत्रिकाओं ने इस संदर्भ में सोने में सुगंध का कार्य किया। एक से बढ़कर एक बाल पत्रिकाएँ इस युग की बहुत बड़ी देन है।

1.5.4 स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1948 से अनवरत)

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारत में नए भास्कर का उदय हुआ और नई स्फूर्ति, नई संचेतना, नई गति की रश्मियों ने देश के कण–कण को आलोकित कर दिया। सदियों की पराधीनता के पश्चात् देशवासियों ने खुली हवा में साँस ली। राजनैतिक आजादी के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्रों में नए–नए आयामों की स्थापना हुई। विज्ञान और तकनीकी धरातल पर नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ। इस काल में साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। नवीन अवधारणायें, नए विचार, नया चिंतन, नए स्वर साहित्य सृजन में मुखरित होने लगे। इन सबके फलस्वरूप बाल साहित्य के स्वरूप में तीव्रता के साथ परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। अभी–अभी देश स्वतंत्र हुआ था, अतः स्वाधीनता सैनानियों, राष्ट्रनायकों, महापुरुषों के त्याग–बलिदान का प्रभाव बाल साहित्य पर भी पड़ा और राष्ट्रीय चेतना के स्वर गूंजने लगे। आजादी के पांचवे, छठे दशक में बाल साहित्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई। बालकों के रुचियों के अनुरूप रोचक, मनोरंजक, सरस साहित्य में रचा जाने लगा।

बालक कल्पनालोक से इतर बदलते परिवेश, जीवन मूल्यों, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों के यथार्थ धरातल से परिचित हुआ। इसी समय निरंकार देव 'सेवक' ने बाल

साहित्य में आलोचना की परम्परा को आरम्भ किया। इस अवधि में बाल साहित्य को निरंकार देव 'सेवक', स्वर्ण सहोदय, डॉ. विद्याभूषण 'विभू', सोहन लाल 'गुप्त' जैसे सुस्थापित बाल साहित्यकारों ने मनोरंजन, बाल मनोविज्ञान, बाल सुलभता, सरसता पर बल देते हुए बाल साहित्य को नई ऊँचाईयाँ प्रदान कीं।

स्वातंत्र्योत्तर काल के संदर्भ में डॉ. नागेश पांडेय के विचार यहाँ प्रासंगिक है— 'स्वतन्त्रता के पश्चात् बाल साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसके कई कारण थे— एक—प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को बच्चों से विशेष प्रेम था। मासिक पत्रिका 'बाल भारती' और संस्था 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' उन्हीं की सदमानसिकता का प्रतिफल है। 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना हेतु पं. नेहरू ने 50 लाख रूपये का ऋण स्वीकृत किया था। दूसरा—स्वातन्त्र्य—पूर्व कालीन पत्रिकाओं, विशेषतः 'बाल सखा' ने बाल साहित्य लेखकों का एक अलग ही वर्ग तैयार कर दिया था। 'बाल भारती', 'पराग', 'नंदन' जैसी पत्रिकाओं ने इस वर्ग को एक मंच प्रदान कर सार्थक सृजन हेतु विशेष प्रोत्साहित किया। तीसरा—बालकों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक चिंतन के फलस्वरूप बाल साहित्य की पुस्तकों की आवश्यकता अनुभव किये जाने से प्रकाशकों की संख्या में भी खासी वृद्धि हुई। चार—बाल साहित्य की आवश्यकता तथा शास्त्रीय पक्ष पर चर्चा प्रारम्भ होने से विश्वविद्यालयों ने भी इसे शोध विषय के रूप में मान्यता प्रदान की। इसी प्रकार बाल साहित्य, बाल साहित्यकारों के महत्व को अनुभव करते हुए अनेकानेक संस्थाओं की स्थापना तथा पुरस्कारों का प्रवर्तन भी इसी युग की देन है। स्वातंत्र्योतर बाल साहित्य लेखकों की विविध विधाओं की लाखों रचनाऐं पत्र—पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी है। आकर्षक साज—सज्जा के साथ हजारों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।[67]

बाल साहित्य के विकास के लिए स्वातंत्र्योत्तर काल बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ । यह भी माना जाने लगा कि बच्चा अपना अलग अस्तित्व रखता है और उसके लिए अलग किस्म के साहित्य की जरूरत है। इस समय नवीन विचारधाराओं का जन्म होने से साहित्य का स्वर धीरे—धीरे बदलने लगा। बाल साहित्य की धूम मच जाने से लगभग सभी विधाओं की पुस्तकें प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। उस समय विषयगत रूप से बाल साहित्य अत्यंत समृद्ध हुआ। पौराणिक और लोकथाओं, राजा—रानी एवं परी—कथाओं से इतर नए—नए विषयों का समावेश हुआ। बाल रचनाओं में राष्ट्र भक्ति, देश—प्रेम, प्रकृति, परिवेश, दैनिक जीवन, नवीन भावबोध, मानवीय मूल्यों के स्वर मुखरित हुए। प्रस्तुत संदर्भ में **डॉ. परशुराम शुक्ल** ने लिखा है— 'भारत की आजादी के बाद यहाँ की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी परिस्थितियों में तेजी से परिवर्तन आरम्भ हुआ। जिससे समाज के सभी वर्गों में चेतना और जागरूकता बड़ी। नई शिक्षा—नीति बनी, शिक्षण संस्थाएं खुली, जिससे शिक्षितों का प्रतिशत बढ़ा। इन सबका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। भारत की स्वतंत्रता के बाद बाल साहित्य की सीमायें टूटी तथा इसमें अनेक विषयों और

विचारधाराओं का समावेश हुआ। इससे भाषा में भी कुछ सुधार आया। इस युग के पूर्वार्द्ध में नेहरू, गाँधी, सुभाष, भगतसिंह आदि नेताओं और क्रांतिकारियों पर प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा गया। इसके साथ ही स्वतंत्रता का महत्व, कर्त्तव्यपरायणता, मानवता का महत्व, पर्वों त्यौहारों का महत्व तथा पशु–पक्षियों का महत्व दर्शाने वाला बाल साहित्य भी लिखा गया। इसके बाद बाल मनोरंजन और विज्ञान की रचनाएँ प्रकाश में आई तथा बाल उपन्यासों का सृजन आरम्भ हुआ, इनमें कुछ वैज्ञानिक उपन्यास भी थे।[68]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी बाल साहित्य में नित नई ऊँचाईयाँ छूने लगा। जिन लेखकों, कवियों और प्रकाशकों ने बच्चों की मनोवृत्ति के अनुकूल सरस और सीधी–साधी भाषा में रोचक ढंग से विषय–वस्तु को प्रस्तुत कर पुस्तकों की रचना की है, उनका कार्य प्रशंसनीय है। स्वतंत्रता के बाद लिखा गया। अधिकांश बाल साहित्य बच्चों की बौद्धिक क्षुधा के लिए पौष्टिक सिद्ध हुआ है।

‘स्वातंत्र्योत्तर काल में बाल साहित्य रचना का विकास संतोषप्रद रहा। इस अवधि में गद्य–विधाओं के रूप में बाल साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध तथा जीवनी आदि विधाओं में स्तरीय बाल साहित्य लिखा गया। इस दौर के बाल साहित्य में उपदेशात्मकता का भाव पाया जाता है क्योंकि बालकों और युवाओं को चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देने के लिए लिखी गई रचनाओं में उपदेशात्मकता का भाव आ जाना स्वाभाविक है। ‘इस समय के बाल साहित्य की प्रमुख विशेषता मनोरंजन की प्रवृत्ति है।[69]

उपरांकित संदर्भों से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में बाल साहित्यकारों ने बच्चों, किशोरों के चारित्रिक, नैतिक एवं उनके समग्र व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखकर सृजन कार्य किया। बाल साहित्य में कई–नई विधाओं को अपनाया गया जैसे बालोपयोगी गीत, कविता, निबन्ध, जीवनी आदि। बाल रचनाकारों ने मनोरंजन का पूरा ध्यान रखते हुए सरल, सरस, बाल मनोवृत्ति के अनुकूल भाषा और शिल्प को अपनाया गया। स्वातंत्र्योत्तर काल के उतरार्द्ध में बाल गीतकारों ने अत्यंत सरस, अभिराम, सुमधुर गीतों की रचना की। इस अवधि के गीत और कविता में सौन्दर्य बोध, उपमान, प्रतिमान, भावबोध, अर्थबोध, शिल्प के क्षेत्र में नवीन स्वर मुखरित हुए। ये गीत बालकों के मनोभावों के अनुकूल प्रस्तुत किये गये, जिन्हें पढ़कर बच्चे आह्लादित होते हैं। इस अवधि में शिशु–गीतों का प्रणयन विशिष्टता के साथ हुआ। श्रीधर पाठक, स्वर्ण सहोदय, हरिऔध, श्रीनाथ सिंह गुणाकर आदि गीतकारों ने रससिक्त, रोचक, सुमधुर बोधगम्य गीत लिखे। डॉ. चक्रधर नलिन के अनुरूप श्रेष्ठ शिशु गीत– ‘अच्छा शिशु गीति–काव्य’ प्रवाहपूर्ण, लयात्मक, रागात्मक और बोधगम्य होता है, संवाद, अभिनय, वर्णनात्मक, कथा तथा पद्य, लोक और अनुरंजन, शिशु काव्य की विशेषतायें हैं।[70]

सूर्य कुमार पांडेय का एक सुन्दर शिशु गीत, जिसमें बालकों का क्रिकेट के प्रति विशेष अनुराग व्यक्त हुआ है–

'माँ, मैं भी अब सचिन बनूँगा
मुझे गेंद–बल्ला दिलवा दो
पेंट–शर्ट सुन्दर सिलवा दो
हेलमेट मेरे लिए मंगा दो
जूते और पैड संग ला दो
मैं दिनभर जमकर खेलूँगा।[71]

इस युग के प्रमुख बाल साहित्यकार, गीतकार, शम्भूदयाल श्रीवास्तव, नारायणलाल परमार, स्वर्ण सहोदय, हरिकृष्ण देवसरे, दामोदर अग्रवाल, जय प्रकाश भारती, श्रीप्रसाद, चन्द्रपाल सिंह 'मयंक', विनोदचन्द्र पाण्डेय, निरंकार देव सेवक, विष्णुकांत पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी, योगेन्द्र कुमार 'लल्ला', मोहन लाल गुप्त, ठाकुर दत्त शर्मा, श्रीकृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु', शिवचन्द्र सागर, सीताराम गुप्त हैं। नई पीढ़ी का उत्साहवर्द्धन करने तथा प्रेरणा देने के लिए उत्तर–स्वतंत्रता युग में विष्णु प्रभाकर, रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवशंराय 'बच्चन', मैथिलीशरण गुप्त, कमलेश्वर ऐसे अनेक बड़े साहित्यकारों ने सामान्य साहित्य के साथ ही बाल साहित्य की रचना करके बाल साहित्य के भण्डार में श्रीवृद्धि की। इसी प्रकार निरंकार देव 'सेवक', चन्द्रपाल सिंह 'मयंक', राष्ट्रबंधु, योगेश कुमार लल्ला, श्रीप्रसाद, रामवचन सिंह 'आनन्द', शोभनाथ लाला के अतुलनीय योगदान के लिए हिन्दी बाल साहित्य इन बाल साहित्यकारों का चिरऋणी रहेगा। बाल गीतों की भांति स्वतंत्रता के उत्तर युग में कहानी अधिक मौलिक, प्रगतिशील, संवेदनात्मक और यथार्थवादी हो गई। नए प्रतिमान स्थापित हुए। **डॉ.हरिकृष्ण देवसरे** ने इस युग की कहानी को परिभाषित किया है– 'सांतवें और आठवें दशक में बालकथा–साहित्य में कई प्रयोग भी हुए। नई परीकथाएँ लिखी गई, मुहावरों पर आधारित कहानियाँ इंटरव्यू शैली में लिखी गई कहानियाँ, पंचतंत्र–शैली में नई कहानियाँ लिखी गई। इस अवधि में जिन लेखकों ने बालकथा–साहित्य को आगे बढ़ाया उनके अपने रचना–सिद्धांत और वैचारिक पक्ष भी थे। विष्णु प्रभाकर ने बच्चों के लिए आधुनिक संदर्भ में पौराणिक–नीतिपरक और शिक्षाप्रद कथाएँ लिखीं, साथ ही नए भावबोध की कहानियाँ भी लिखीं। श्री व्यथित हृदय ने अपनी कहानियों में राष्ट्रीयता, ईमानदारी, साहस और भारतीय आदर्शों के प्रति आग्रह प्रस्तुत किया किन्तु रचनाओं में पिष्टपोषण बहुत हुआ। हरिकृष्ण देवसरे ने अपनी कहानियों में बच्चों को उनकी समस्याओं और परिवेश से जोड़ा। इस प्रकार से आज का बालकथा–साहित्य अपने नए स्वरूप में बच्चों के लिए अधिक प्रभावशाली और पठनीय बन गया है।[72]

बाल नाटकों और उपन्यासों में भी नया मोड़ आया। इस के पूर्व बालोपयोगी नाटकों की कमी को दूर करने के लिए इस अवधि में रंगमंच निर्देश, बालोपयोगी भाषा–शिल्प, संवाद, सहज अभिनीत होने वाले नाटकों की रचना की। बच्चों की अपने समस्याओं, सामाजिक परिस्थितियों और बदलते समाज की स्थितियों पर आधारित विषयों पर लिखे गए एकांकियों का संग्रह 'प्रतिष्ठित बाल–एकांकी' सम्पादन श्रीकृष्ण और योगेन्द्र कुमार लल्ला ने बाईस एकांकी प्रस्तुत किये। यह उल्लेखनीय प्रकाशन था। बच्चों के उपन्यासों का अपना विशिष्ट महत्व इसलिए है कि बच्चे साहसिक, रोमांचक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विषयों पर लिखी कहानियाँ पढ़ने में अधिक रुचि लेते हैं। बाल उपन्यास उन्हें पूरा मनोरंजन और संतोष देते हैं। बालकों की कल्पना, जिज्ञासा और मनोरंजन से भरपूर, सहज सरल भाषा–शैली में सामाजिक, ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और साहसिक वृति जाग्रत करने वाले उपन्यासों की रचना हुई। स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य में सन् 1990 में अभूतपूर्व, क्रांतिकारी बदलाव आया। इस युग में बाल साहित्य के भाव–पक्ष और शिल्प में नए–नए प्रयोग हुए। **डॉ. परशुराम शुक्ल ने इस युग को 'प्रयोगवादी युग' से नामांकित किया है।** 'प्रयोगवादी बाल साहित्य की अपनी विशेषतायें हैं जो किसी अन्य युग में देखने को नहीं मिलती। इसमें वैज्ञानिक बाल साहित्य अथवा सूचनात्मक बाल साहित्य प्रमुख हैं।[73]

यह युग प्रौद्योगिकी, सूचना एवं संचार क्रांति, तकनीक, पर्यावरण, मोबाइल, इण्टरनेट का है। इसीलिए बाल रचनाकारों ने बच्चों की असीम कल्पनाओं, नवीनता के प्रति आग्रह को देखते हुए उन्हें जीवनोपयोगी ज्ञान देने और यथार्थ से परिचित करवाने के लिए विज्ञान जैसे जटिल विषय पर बहुत प्रवीणता के साथ रोचक, मनोरंजक, सरस, सहज बालोपयोगी कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, लिखे। इस काल खण्ड में भारत सरकार ने 'नेशनल चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया' नई दिल्ली संस्था की स्थापना की। यह संस्था बाल साहित्य के प्रकाशन के साथ–साथ श्रेष्ठ बाल साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत भी करती है। इसी समय बाल साहित्य पर शोध के नए द्वार खुले। कई विश्वविद्यालयों ने बाल साहित्य पर विद्यार्थियों को शोध करने की अनुमति प्रदान की और उन्हें पीएच.डी. की डिग्री से अलंकृत किया। बाल साहित्य में अभी तक सौ से अधिक शोध सम्पन्न हो चुके हैं। सन 1968 में बाल साहित्य पर प्रथम शोध करने का गौरव डॉ. हरिकृष्ण देवसरे को मिला। सुरेन अग्रवाल, जगदीश चन्द्र अग्रवाल, जगदीश लाल द्वारा 1972 में रचित हिन्दी में बाल साहित्य की पुस्तक दो खण्डों में प्रकाशित हुई, जिसमें लगभग चार हजार बाल साहित्य की पुस्तकों का विवरण है। यह पुस्तक नेशनल चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के द्वारा बाल साहित्य ग्रंथ विवरण पुस्तिका के अभाव की बात को लेकर ही लिखी गई है।

भारत सरकार ने 1948 में 'बाल–भारती' नामक प्रथम बाल पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् एक के बाद उत्तम बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला चल पड़ा। इन

पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। 'नंदन', बालहँस', 'लोटपोट', 'चन्दा मामा', 'चंपक', 'पराग', 'देवपुत्र', 'नन्हे सम्राट', बाल साहित्य समीक्षा, बालवाणी, अवझड बवझड, बच्चों का देश, मेला, सुमन सौरभ, निडर, मधु मुस्कान, 'चकमक', 'बाल बिगुल', इन्द्र धनुष, बाल मेला, नौनिहाल, बाल प्रहरी, बालवाटिका, बाल प्रतिभा आदि पत्रिकाओं के माध्यम से बालकों को अपनी पसंद की कविता, गीत, निबन्ध, बाल पहेली, कहानी, चित्र कथायें आदि उपलब्ध हुई। आज भी ये पत्रिकायें उत्कृष्ट बाल साहित्य को बालकों तक पहुँचा कर उन्हें आनन्दित कर रही हैं। देश के शीर्षस्थ समाचार–पत्र भी बाल साहित्य को घर–घर तक ले जाने में अग्रणी रहे हैं। साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, राष्ट्रदूत, दैनिक ट्रिब्यून, नई दुनिया, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, इतवारी पत्रिका, लोकमत, सहारा समय, अमर उजाला आदि में बालकों के लिए विशेष स्तम्भ प्रकाशित होते रहे, साप्ताहिक परिशिष्टों में बाल साहित्य की सभी विधाओं को स्थान दिया जाता है, कुछ पत्र तो एक–दो पृष्ठ बाल साहित्य देते रहे हैं। दैनिक नवज्योति में आज भी रविवारीय परिशिष्ट में दो पेज बालकों के लिए निर्धारित है। राष्ट्रदूत की रविवारीय 'राष्ट्रदूत' मैगजीन बरसों से बाल साहित्य को प्रकाशित करके अति अभिनंदनीय कार्य कर रही है। देश का प्रथम पाक्षिक बाल अखबार 'टाबर टोली', नवम्बर 2003 से सम्पूर्ण रूप से बालकों को समर्पित है। बालकों के पसंद की हर प्रकार की सामग्री को इसमें प्रकाशित स्थान दिया जाता है। इसके मानद सम्पादक बाल साहित्यकार दीन दयाल शर्मा हैं। आधुनिक काल टीवी, संचार, इण्टरनेट, मोबाइल, चलचित्रों एवं कार्टून फिल्मों का है। बाल साहित्य को ऊँचाईयाँ प्रदान करने तथा घर–घर तक पहुँचाने में कार्टून फिल्मों की उल्लेखनीय भूमिका सर्वमान्य है एवं आज का सबसे सशक्त माध्यम है। इनके माध्यम से रोचकता और मनोरंजन के साथ बड़ी सहजता से अपनी संस्कृति, पौराणिक–कथाओं, पौराणिक पात्रों से बालकों को परिचित करवाने में इनका महत योगदान सराहनीय है। इन कार्टून फिल्मों में 'डक टेल्स', 'अलादीन', 'ही–मेन', 'मिकी माउस', 'टॉम एण्ड जैरी', 'निन्ज्या हतौड़ी', 'डोनाल्ड डक', 'बाल गणेश', 'माय फ्रेन्ड गणेश', 'हनुमान', 'बाल हनुमान', 'चाचा चौधरी', 'हनुमान रिटर्न' आदि प्रमुख हैं। इसी के साथ वर्तमान में प्रसारित हो रहे 'छोटा भीम', 'सिंगम रिटर्न' कार्टून धारावाहिक हिंसा और मारधाड़ वाले हैं, 'डोरेमोन' जो बालकों का अत्यंत पसंदीदा धारावाहिक है, उसमें भी सकारात्मक सन्देश नहीं है, जो बालकों के लिए अपेक्षित है। निर्माताओं को चाहिए की कोमल कान्त बाल–गोपाल के लिए ऐसे सीरियल ही बनाएं जो बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करे एवं नैतिकता का सबक भी दे दे।

स्वातंत्र्योत्तर युग के बाल साहित्य में राजस्थान के बाल साहित्यकारों का अवधान रेखांकित करने योग्य है। इनमें प्रख्यात बाल साहित्यकार शम्भूदयाल शर्मा सक्सेना को राजस्थान का प्रथम प्रमुख बाल साहित्यकार होने का गौरव प्राप्त है। इनकी बाल सहित्य की अनेक कृतियाँ

प्रकाशित हैं। जिनमें नाचो–गाओ, वीर संतान, फूलों के गीत, भालू की हार, बाल कवितावली आदि मुख्य हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी इनके नाम से प्रति वर्ष पुरस्कार भी प्रदान करती हैं। इनके अतिरिक्त मूर्धन्य बाल साहित्यकार जगदीश चन्द्र शर्मा (गिलूण्ड) जाना–माना नाम है। इनकी भी बाल साहित्य की कई पुस्तकें छप चुकी हैं। पत्र–पत्रिकाओं में हजारों रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है। अन्य नामों में बद्रीप्रसाद पंचौली, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, श्याम मनोहर व्यास, दीनदयाल शर्मा, डॉ. भगवती लाल व्यास, हरिवल्लभ बोहरा 'हरि', डॉ. भैरूलाल गर्ग, गोविन्द शर्मा, अनुपम परदेशी, शिवचरण सेन 'शिवा दिनेश विजयवर्गीय, अरनी रोबट्र्स प्रमुख हैं। श्यामसुन्दर जोशी, सत्यनारायण 'सत्य', सावित्री परमार, प्रमोद जोशी, कृपा शंकर शर्मा, 'अचूक', पूरन सरमा हरदर्शन 'सहगल', शिव मृदुल, तारादत्त निर्विरोध, राम सेवक शर्मा आदि नाम अग्रणी हैं। इस युग में राजस्थान के अतिरिक्त सम्पूर्ण देश के बाल रचनाकारों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। बाल चित्र कथाओं के रचनाकारों में अनंत कुशवाहा चाँद मोहम्मद घोसी, टीकाराम सिप्पी आदि। कतिपय रचनाकारों के नाम और उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं–

दिविक रमेश : 'कबूतरों की रेल', 'तस्वीर और मुन्ना', 'बंदर मामा', 'एक सौ एक बाल कवितायें', **प्रकाश मनु :** 'दही बड़े', 'चलो शिमाला', 'आज सवेरे', 'चिड़िया रानी', 'कितनी देर हुई है', 'पापा, तंग करता है भैया', हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास 'जानकीपुर की रामलीला', **रेणु चौहान** : 'रंग बिरंगे बादल', **सूर्य कुमार पाण्डेय** : 'खिले फूल', 'चूहे राजा', 'गीत तुम्हारे', 'मेरी प्रिय बाल कवितायें', 'अक्कड़–बक्कड़', 'हम हैं किससे कम', **रामनिवास मानव** : 'मिल कर साथ चलें', 'कबूतर', **डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'** : 'जो बूझे वह चतुर सुजान', 'चल मेरे घोड़े', 'अपलम–चपलम', 'मोती झरे टपटप', 'आधुनिक बाल कहानियाँ' 'यदि ऐसा हो जाए', 'छोटे मास्टरजी', 'पीठ पर बस्ता', **रोहिताश्व अस्थाना** : 'नन्हीं गजलें', 'मोनू के गीत', 'भूत से टक्कर', **जहीर कुरेशी** : 'उगते सूरज', 'तुम्हें सलाम', **घमण्डी लाल अग्रवाल** : 'बाल कवितावली', 'बाल गीतावली', **भगवती प्रसाद द्विवेदी** : 'नन्हे गीत', 'मेरी प्रिय बाल कवितायें', 'ठोला गुरू', 'समय का मोल', 'अनोखा गुड़सवार', **गोविन्द शर्मा** : 'चीं ची ने किया कमाल', 'मेहनत का मन्त्र', 'दोस्ती का रंग', 'सच्चे दोस्त' 'हीरा मिल गया', 'नया बाल दिवस', **उषा यादव** : 'तस्वीर के रंग', **अखिलेश चमन श्रीवास्तव** : 'खीर का पेड़', 'बहादूर टीपू', 'गुल्लक', **श्रीनिवास मिश्र** : 'अनोखा फल', 'बगिया के फूल', 'लाल फूल', अनुपम प्रेरक कथायें, **जगदीश चन्द्र शर्मा**, पद्य प्रसंग, 'नेहरू के संग', **दर्शन सिंह आहट** : 'पवित्र कार्य', **साबिर हुसैन** : 'नुपूर नक्षत्र', 'जामुन का पेड़', **मनोहर पुरी** : सात बाल कहानियाँ 'जंगल के दोस्त', **गीतिका गोयल** : 'चुनमुन की कहानियाँ', भालू का बच्चा', 'नाव चली' **विमला भण्डारी** : प्रेरणास्पद बाल कहानियाँ, **अलका पाठक** : 'नटखट बाबू', **नीलम राकेश** : 'अनोखी छुट्टियाँ', **मनोहर श्याम जोशी** : 'आओ करें चाँद की सैर', **सत्य प्रकाश अग्रवाल**

: 'एक डर', 'पांच निडर', **मस्तराम कपूर** : 'भूतनाथ', **आनन्द प्रकाश जैन** : 'सांवरी सलौनी', **प्रताप सहगलः** 'दो बाल नाटक', 'दस बाल नाटक', **रमेश चन्द्र पन्त** : 'एक सौ एक बाल कवितायें', **शेषपाल सिंह** : 'गुल्लक', 'सजा', **राजनारायण चौधरी** : 'पराग', 'अगड़म–बगड़म', 'ना–ना', **देवेन्द्र कुमार** : 'इक्कवान बाल गीत', 'एक सौ एक बाल गीत', 'हंसने का स्कूल', 'बिस्तर छोड़', 'मीठा बोल', **योगेन्द्र सिंह भाटी** : 'बच्चों की दुनिया', 'जंगल में मंगल', **अखिलेश श्रीवास्तव चमन** : 'एक पते की बात', **उषा यादव** : 'इक्कवान बाल कवितायें', 'मम्मी की साड़ी', **शकुन्तला कालरा** : 'फुलवारी', 'मुनिया करे तमाशा', **डॉ. रवि शर्मा 'मधुप'** : 'मैं ऐसा ही हूँ', **डॉ. सूरज मृदुल** : 'बचपन की परख', **डॉ. राजेन्द्र पंजियार** : 'सूरज का गुस्सा', **शिवराज भारतीय** : 'माँ', सुशीला शर्मा : 'रंग बिरंगी बच्चों की दुनिया', **कुसुम अग्रवाल** : 'अंत भले का भला', **अलका अग्रवाल** : 'जब खिलौने रूठ गये', **सुकीर्ति भटनागर** : 'पाहे वाली दादी', **कृष्णा कुमारी** : 'जंगल में फाग', **ओम शरण आर्य 'चंचल'** : 'अच्छे बच्चे', **जयसिंह आशावत** : 'गौरया ने घर बनाया', **महेश चन्द्र त्रिपाठी** : 'जंगल में मंगल', 'हम चौकन्ने', **चाँद मोहम्मद घोसी** : 'आओ बनाऐ अंक चित्र', 'बुद्धि की परख', **सुरेश चन्द्र सर्वहारा** : 'फूलों सा महके बचपन', **शिवराज श्रीवास्तवः** 'फूल चिड़िया और मेरा देश' आदि।

इस युग के राष्ट्रीय स्तर के जाने–माने बाल साहित्यकारों ने निरंकारदेव 'सेवक', डॉ. श्रीप्रसाद, डॉ. राष्ट्रबंधु, शंकुतला सिरोठिया, डॉ. हरिकृष्ण 'देवसरे', बाल मुकुंद गुप्त, हरिवंश राय बच्चन, रमापति शुक्ला, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ. शोभनाथ लाल, पं. सोहन लाल द्विवेदी, योगेश कुमार 'लल्ला', डॉ. शेरजंग गर्ग, चक्रधर 'नलिन', डॉ. देवेन्द्र दत्त तिवारी, सुदर्शनाचार्य, नरेशचन्द्र सक्सेना, सूर्यकुमार पाण्डेय, डॉ. उषा यादव, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, प्रयाग शुक्ल, भवानी प्रसाद मिश्र, बाल स्वरूप 'राही', डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, विनोदचन्द्र पाण्डेय, भालचन्द्र सेठिया, ओमप्रकाश कश्यप, सुरेन्द्र विक्रम, महेश चन्द्र त्रिपाठी, कृष्ण शलभ, अमृता शुक्ला, अजय जनमेजय, यश मालवीय, विजय कुमार मानव, अमरनाथ श्रीवास्तव, अशोक रंजन सक्सेना, आरसी प्रसाद सिंह, रघुवीर शरण मिश्र, शम्भुदयाल सक्सेना, रोहिताश्व अस्थाना, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, शोभनाथ लाल, विनयकुमार मानवीय, प्रकाश मनु, अनामिका रिछारिया, अनिल द्विवेदी 'तपन', डॉ. दिविक रमेश, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', यादराम रसेन्द्र, योगेन्द्र दत्त शर्मा, सरोजनी अग्रवाल, रामवचन सिंह आनन्द, डॉ. वेद प्रकाश, जय प्रकाश भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नागार्जुन, दामोदर अग्रवाल, राजेन्द्र, अवस्थी, नरेन्द्र कोहली, सीताराम गुप्त, नवीन जैन, शीला गुजराल, रामानुज त्रिपाठी, राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ', मनोहर वर्मा, आचार्य अज्ञात, जगदीश चन्द्र शर्मा, अनन्त कुशवाहा, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, डॉ. परशुराम शुक्ल, रमेश तैलंग, देवेन्द्र कुमार, डॉ. शकुंतला कालरा, डॉ. जाकिर हुसैन, भारत भूषण अग्रवाल, लक्ष्मीशंकर बाजपेई, कन्हैया लाल नंदन, प्रकाश मनु, भगवती प्रसाद द्विवेदी, राम सागर सदन, शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, कमलेश सक्सेना, मधु भारतीय, उमा सूद, डॉ. नागेश पाण्डेय, घमण्डी लाल

अग्रवाल, बालकृष्ण गर्ग, कृष्ण विनायक फडके, जाकिर अली 'रजनीश', ओमप्रकाश कश्यप, दिनेश पाठक 'शशि', गोपी चन्द्र श्रीनागर, हरदर्शन सहगल, सावित्री परमार, दीनदयाल शर्मा, सरोजनी प्रीतम, इंदिरा परमार, स्नेहलता प्रसाद, अरनी राबर्ट्स, सुधीर सक्सेना 'सुधि', विष्णुकांत पाण्डे, रत्न प्रकाश 'शील', दुर्गाप्रसाद शुक्ल आजाद, जाकिर अली, राम नरेश त्रिपाठी, आनन्द प्रकाश जैन, रामसेवक शर्मा, सत्यदेव सवितेन्द्र, गोविन्द शर्मा, गोकुलचंद पढ़हार, टीकाराम सिप्पी, प्रभात गुप्त, आनन्द विश्वास, विनोद बब्बर, मोहम्मद अरशद खान, कमला चमोला, भगवती लाल व्यास, आनन्द प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश, शिव मृदुल, अश्वघोष, मालती शर्मा, उदय किरौला, सत्यनारायण 'सत्य', मंजुरानी जैन, प्रहलाद श्रीमाली, शादाब आलम, कृष्ण कुमार यादव, भगवती प्रसाद गौतम, शैलेश मटियानी, जितेन्द्र शंकर बजाड़, अनिल चौधरी, मनोहर सिंह राठौर, मनमोहन अभिलाषी, पवन कुमार शर्मा, नरेन्द्र मस्ताना, राजेन्द्र परदेसी, शिवचरण सेन शिवा, राकेश नैया, शशि गोयल, इन्द्रा रानी, डॉ. प्रत्युष गुलेरी, पुरुषोतम 'यकीन', देवदत्त शर्मा, संगीता सेठी, सुनीता रावत, पद्मा पंचौली आदि प्रमुख हैं।

सार स्वरूप कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के पश्चात् बाल साहित्य के विकास में अभूतपूर्व उन्नति हुई। नवीन चेतना, नई स्फूर्ति, उत्साह के नित नये आयाम स्थापित होने लगे। राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में नूतन क्रांति का सूत्रपात होने से बाल साहित्य में नए विचार, नई अवधारणायें, नया चिंतन, नए स्वर, मुखरित हुए। इस समय बालकों की रुचि के अनुरूप रोचक, मनोरंजक सरल, सहज, साहित्य की सर्जना हुई। बालक कल्पना लोक से निकल कर यथार्थ के धरातल से परिचित हुए। बाल कविताओं व कहानियों से इतर अन्यान्य विधाओं में यथा बाल नाटक, बाल उपन्यास, बाल निबन्ध, बाल यात्रा वृत्तांत की भी रचना प्रारम्भ हुई, जो उल्लेखनीय कही जा सकती है।

इसी के साथ–साथ बाल साहित्य की पुस्तकों का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ जिसमें सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं का बहुत योगदान रहा। स्वातंत्र्योत्तर काल में बच्चों और किशोरों के चारित्रिक, नैतिक व समग्र व्यक्तिव निर्माण की दृष्टि से भी बाल साहित्य सृजन हुआ जो उल्लेखनीय रहा। बाल गीतों में सरसता, माधुर्य का संचार होने लगा, बाल उपन्यासों एवं नाटकों में नित नवीन रंग भरे जाने लगे। इस प्रकार बाल साहित्य अधिक प्रभावशाली, रोचक, जीवनोपयोगी और पठनीय बन गया। इस दौर में बाल साहित्य के उन्नयन में बाल पत्रिकाओं की भूमिका अवर्णनीय रही। सभी पत्र–पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन होने लगा, जिससे यह साहित्य घर–घर तक पहुँचने से बच्चों के लिए सुलभ हो सका। इस यज्ञ में बड़े–बड़े साहित्यकारों ने आहुति देकर बाल साहित्य में उल्लेखनीय योगदान दिया, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये अल्प होगी।

♦ ♦ ♦ ♦

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 581
2. संस्कृत हिन्दी शब्द कोश, पृ. 714
3. अशोक मानक हिन्दी शब्द कोश, डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज 'शास्त्री' पृ. 84
4. हिन्दी–उर्दू शब्दकोश, वेदप्रकाश सोनी, पृ. 146
5. Kamal"s Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, 129
6. अंग्रजी–हिंदी व्यावहारिक कोश, डॉ. द्वारका प्रसाद पृ. 84
7. राधाकृष्ण अंग्रेजी–हिन्दी व्यावहारिक कोश, डॉ. द्वारका प्रसाद, संतोष प्रसाद, पृष्ठ 336
8. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 825
9. Kamal"s Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, 458
10. नव आधुनिक हिन्दी निबन्ध, राजेश शर्मा, कपिल शर्मा, पृष्ठ 9
11. खड़ी बोली में रामायणों में चित्रित समाज और संस्कृति, डॉ. मनोहर सर्राफ, पृष्ठ 32
12. भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ राज किशोर सिंह, पृष्ठ 14
13. भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ राज किशोर सिंह, पृष्ठ 14
14. साहित्य के मान ओर मूल्य, मोतीलाल मनेरिया, पृष्ठ 111
15. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 10
16. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 12
17. आजकल नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 15
18. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय, 'संजय', पृष्ठ 12
19. हिन्दी बाल पत्रकारिता, उद्भव और विकास, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, पृष्ठ 16
20. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 12
21. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 12
22. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 3
23. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 112
24. Kamal"s Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, 98
25. मधुमती जून 2015, सं. रोहित गुप्ता, पृष्ठ 25
26. आजकल, नवम्बर 2012, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 16
27. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 31
28. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 862
29. आजकल नवम्बर 2012, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 46
30. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 40

31. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 13
32. आजकल, नवम्बर 2012, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 15
33. बाल साहित्य सृजन और समीक्षा, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 28
34. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 40
35. बाल साहित्य : मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 21
36. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 17
37. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 19
38. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 82–83
39. हिन्दी बाल पत्रकारिता, उद्भव और विकास, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, पृष्ठ 21
40. बाल सहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 148
41. बाल सहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 181
42. बाल सहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 182
43. बाल साहित्य : मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 137
44. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 15
45. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 15
46. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 12
47. हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, पृष्ठ 11
48. आजकल, नवम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 15
49. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 16
50. बाल वाटिका दिसम्बर 2014, सं. फरहत परवीन, पृष्ठ 8
51. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 13
52. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 13
53. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 14
54. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 14
55. हिन्दी बाल कविता में नए प्रयोग, डॉ. सुधा मिश्रा, पृष्ठ 18
56. बाल साहित्य मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 62
57. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 52
58. ओम प्रकाश कश्यप, 'आखर माला', समय से संवाद दृ 25/07/2014 पृष्ठ 40
59. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 32
60. साठोत्तरी हिन्दी बाल साहित्य, डॉ. शेषपाल 'शेष', पृष्ठ 64
61. हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, अखिलेश श्रीवास्तव चमन, पृष्ठ 8
62- हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, अखिलेश श्रीवास्तव, पृष्ठ 20

63. बाल साहित्य : मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 63
64. हिन्दी बाल साहित्य में नए प्रयोग, डॉ. सुधा मिश्रा, पृष्ठ 24
65. हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, अखिलेश श्रीवास्तव चमन, पृष्ठ 8
66. बाल साहित्य मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण 'देवसरे', पृष्ठ 63–64
67. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृष्ठ 33
68. हिन्दी बाल कविता में नए प्रयोग, डॉ. सुधा मिश्रा, पृष्ठ 28
69. समकालीन हिन्दी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृष्ठ 12
70. चक्रवाक, अक्टूबर 2012 से मार्च 2013, सं. निशांत केतु, पृष्ठ 77
71. चक्रवाक, अक्टूबर 2012 से मार्च 2013 सं. निशांत केतु, पृष्ठ 83
72. बाल साहित्य : मेरा चिंतन : डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 78
73. समकालीन हिन्दी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृष्ठ 14

द्वितीय अध्याय

दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय

दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व

साहित्य और समाज परस्पर पूरक होते हैं। साहित्य समाज के रूप को प्रतिबिंबित करता है और समाज में होने वाले विभिन्न परिवर्तन, घटित घटनाओं, कार्य व्यापार आदि की आहट को साहित्य अति संवेदनशीलता के कारण महसूस कर लेता है। मानव समाज में मनोभावों की अभिव्यक्ति के तरीके अलग–अलग अवश्य हो सकते हैं, जैसे–चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र उकेर कर अपनी अनुभूतियों को दर्शाता हैं, संगीतकार स्वरलहरियों के माध्यम से अपनी भावनाओं को साकार करता है, वहीं साहित्यकार शब्दों के द्वारा अपनी संवेदनाओं को संजोता है। इन सभी कलाओं के स्वरूप को बिम्बित करने में उसके परिवेश की अहम् भूमिका होती है, वहीं उसकी अनुभूतियों को आकार प्रदान करती है। मरूधरा राजे–रजवाड़ो की धरती है। चांदनी रात की आभा में रजत कणों से दमकते रेत के टीले भला किसका मन नहीं मोह लेते। वीर प्रसूता माटी के कण–कण में वीरता, शौर्य, वीरांगनाओं की गाथाएं आज भी देश के कोने–कोने में गुंजायमान हैं। प्राचीन काल से ही राजस्थान की धरा कला, साहित्य, संगीत, संस्कृति का केंद्र रही है। यहाँ की धरती को अनेक दिग्गज कलाकारों, संगीतकारों, चित्रकारों, रचनाकारों ने इसे गौरवान्वित किया हे एवं करते आ रहे हैं। यहाँ के साहित्यकारे हिंदी साहित्य को सदैव से समृद्ध करते रहे हैं। राजस्थानी और हिंदी बाल साहित्य के क्षेत्र में भी राजस्थान अग्रणी रहा है। यहाँ के बाल साहित्यकार गोविन्द शर्मा, भगवती लाल व्यास, जगदीशचन्द्र शर्मा, सत्यनारायण 'सत्य', सुधीर सक्सेना 'सुधी', जितेन्द्र सिंह बजाज, विमला भंडारी, भगवती प्रसाद गौतम, चाँद मोहम्मद घोसी आदि की श्रृंखला में बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का नाम प्रमुख और प्रासंगिक है। इनका बाल साहित्य के क्षेत्र में किया गया अभूतपूर्व योगदान रेखांकित करने योग्य है। विगत चालीस वर्षों में इतनी ही पुस्तकों के लेखक शर्मा के बाल साहित्य के आकलन करने के पूर्व इनके व्यक्तित्व, कृतित्व पर दृष्टिपात करना अनिवार्य प्रतीत होता है।

2.1 व्यक्तित्व

व्यक्ति अपने परिवेश से अप्रभावित नहीं रह सकता। व्यक्तित्व का सामान्य तात्पर्य व्यक्ति विशेष की बाह्य संरचना और उसके गुणों, व्यवहार, रंग–ढंग, रूप, आदतों, जीवन शैली के विविध पक्षों का संगठन कहा जा सकता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके माता–पिता, परिजन, स्वभाव, घर–परिवार, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, आस–पडौस, परिवेश, पाठशाला का वातावरण, मित्र–मण्डली, सोच–विचार, रहन–सहन, रंग–ढंग, जिन्स (सात पीढ़ियों से प्राप्त) आदि का समन्वित प्रभाव परिलक्षित होता है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दूसरे से

अलग होता है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को विशेष बनाया है। सभी को कोई न कोई गुण अथवा खूबियाँ अवश्य दी हैं। व्यक्तित्व एक गत्यात्मक उपादान है।

व्यक्तित्व का अंग्रेजी पर्याय शब्द 'Personality' है। पर्सनेल्टी शब्द का उत्पत्ति यूनानी भाषा के (**'पर्सोना'**) 'Persona' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ 'मुखोटा', मास्क होता है। उस समय सामान्यतः व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी गुणों से लगाया जाता था। व्यक्तित्व को कई विद्वानों ने परिभाषित किया है–

मन के अनुसार– 'व्यक्तित्व एवं व्यक्ति के गठन, व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं और सब से विशिष्ट संगठन है।'[1]

गिलफोर्ड– व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।'[2]

इस प्रकार व्यक्तित्व व्यक्ति विशेष के गुणों, रूचियों, भावनाओं, तरीकों, विचारधाराओं, क्षमताओं का समुच्चय है। दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा रहा है।

जन्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि–

मानव जीवन परमात्मा का दिया हुआ अद्भुत उपहार है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में उद्धत किया है कि '**बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ जेहि ग्रंथहिं गावा।**' हर व्यक्ति पर उसके जन्म स्थान, परिवार की पृष्ठभूमि का प्रभाव लक्षित होता है। समय–समय पर महान विभूतियाँ जन्म लेकर वीरों की धरती मरूधरा को धन्य करती आई है। एक ऐसे ही गुदड़ी के लाल ने इस धरती पर जन्म लेकर इसे गौरवान्वित किया, जिसका नाम है दीनदयाल शर्मा, जिसकी की ख्याति आज देश के कोने–कोने में फैली हुई है। इस विभूति का लालन–पालन माँ श्रीमती महादेवी और पिता श्री प्रयागचंद की वात्सल्यमयी गोद में हुआ। इनका जन्म राजस्थान के जिले हनुमानगढ़ की नोहर तहसील के गाँव जसाना में एक साधारण परिवार में चैत्र सुदी तीज (गणगौर) विक्रम संवत 2013 की प्रातः हुआ। सरकारी कागजों में इनकी जन्मतिथि 15 जुलाई 1956 दर्ज है। नौ भाई–बहिनों में अपने माता–पिता की ये पांचवी संतान हैं। जसाना गाँव के लगभग 200 लोग राजकीय सेवा में विभिन्न पदों पर सेवारत हैं। गांव जसाना कृषि प्रधान है। गांव जसाना शिक्षा के क्षेत्र में काफी अग्रणी एवं जागरूक है। यहां एक बड़ा राजकीय सीनियर स्कूल, लड़कियों के लिए अलग से राजकीय सैकेण्डरी स्कूल तथा तीन राजकीय प्राथमिक स्कूल हैं। चार–पांच प्राइवेट स्कूल भी हैं। गांव में पानी–बिजली की सुविधा उपलब्ध है। बैंक, खेल स्टेडियम, सरकारी अस्पताल हैं। वर्तमान में गाँव में साहित्यिक वातावरण भी है। युवा कवि सतीश गोल्यान, कथाकार कीर्ति व्यास एवं युवा कवयित्री कृष्णा जांगिड़ 'कीर्ति'

है; जो समय–समय पर साहित्यिक गतिविधियां आयोजित करते रहते हैं। गांव में एक गढ़ है जो अब जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। गांव में छतरियां है। जसाना गांव में लोकदेवता गुंसाई जी का मंदिर हैं, जहां दूर दूर से लोग ढोक लगाने आते हैं। इनके पारिवारिक संस्कार दीनदयाल शर्मा की सृजन धर्मिता में प्रतिबिंबित हुए हे।

दीनदयाल शर्मा के दादाजी का नाम श्री वीरभान जोशी और दादी का नाम आसी था। नानाजी का नाम सुखदेवराम एवं नानीजी का नाम भीखी था। दीनदयाल शर्मा जी को इन चारों के संदर्भ कोई जानकारी नहीं है और न ही इन्होंने कभी इनकी तस्वीरें देखी हैं। दीनदयाल शर्मा की मां महादेवी धार्मिक रूचि की महिला थी, जो तीन–त्यौहार को बहुत मन से मनाती थी। घर और आस–पास की सफाई का पूरा ध्यान रखती थी। सभी भाई बहिनों को नहाने धोने और साफ सुथरा रहने पर पूरा जोर देती थी। चौके में किसी को भी हाथ धोए बिना भोजन नहीं परोसती थी। पीने के पानी के घड़ो में जूठा बर्तन नहीं डुबोने देती थी। खाने पीने की कोई भी चीज हो उसे धोकर खाने पर बल देती थी। दूध हो या पानी हमेशा छान कर ही काम में लेती थी। परिवार के अलावा पड़ौसियों को खिलाकर उनकी प्रशंसा हासिल करती थी। पक्षियों और कीड़े–मकोड़ों को आटा–दाल डालना तथा पशुओं को रोटी, दाल, गुड़ और हरा चारा खिलाकर पुण्य कमाने में विश्वास करती थी। महादेवी जी कभी स्कूल नहीं गई, फिर भी धार्मिक किताबों का अच्छी तरह पढ़ लेती थी। अनेक लोकगीत और लोकथाएं उनको कंठस्थ थे। घर पर पूजा का स्थान अलग से बना था। यहां दोनों समय घी का दीपक जलाकर मां धूप ध्यान करती थी। महादेवी जी हमेशा सजी संवरी रहती थी। इनको सोने के गहनों से बहुत लगाव था। लगभग आधा किलों सोने के जेवरों से खुद को सजाए संवारे रखती थी। जिसमें जड़ाऊ का बोरला, टड्डा, फिणी, झूमकी, लूंग, अंगूठी, चूडियां, गळसरी, गुलीबंद, तागड़ी और पैरों में घुंघरूओं वाली पायजेब पहनती थी। महादेवी जी ने जीवन के 84 बसंत देखे।

दीनदयाल की पिताश्री प्रयागचंद जी बहुत परिश्रमी थे, आलस्य इनको छू तक नहीं गया था। उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्षशील रहा। व्यावसायिक दृष्टि से कई उतार–चढ़ाव देखे। उनके दादा वीरभान जी राजकीय सेवा के खिलाफ थे, वे अपने पुत्र को सेठजी बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि 'चल पड़े दुकानदारी तो क्या करे तहसीलदारी।' इसके लिए उन्होंने प्रयागचंद जी को सेठ जी का काम सीखने के लिए आसाम भेजा। वहां उन्होंने काम के साथ–साथ नेपाली, भूटानी, भोटिया, मोड़ी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। प्रयांगचंद जी को राजकीय सेवा करने के कई सुअवसर भी मिले लेकिन उन्होंने स्वयं भी नौकरी नहीं करना चाहा। माता–पिता के चले जाने के बाद उनको संयुक्त परिवार से अलग कर दिया गया और बंटवारे में मात्र एक अंधी ऊंटनी और गांव से तीन कोस दूर रेतीले टीले वाला खेत मिला। अंधी ऊंटनी ने खेत की बिजाई करने में बहुत सहयोग दिया। प्रयागचंद जी ने खेती करने में जी–जान लगा

दी। प्रतिदिन सुबह से शाम तक खेत पर काम किया करते थे। लेकिन यहाँ जब पूरी तरह बात नहीं बनी तो जसाना के दूसरे बाम में दुकानदारी का व्यवसाय शुरू किया। कुछ ही दिनों में दुकान खूब चलने लगी, मगर कर्ज इतना ज्यादा था कि सारी बिक्री ले डूबी। उधर खेत अकाल की चपेट में आ गया। कहते हैं कि मुसीबत अकेली नहीं आती। उन्हीं दिनों प्रयागचंद जी के पाव को रींगण बाव के दर्द ने घेर लिया, यह पीड़ा गई सालों तक सालती रही। इस दौरान दुकान पूरी तरह बंद हो गई। रोजगार एकदम ठप्प हो जाने से खाने–पीने के भी लाले पड़ गए। तत्पश्चात छठे दशक में प्रयागचंद जी जसाना से रावतसर आ गए और यहाँ दुकानदारी का काम पुनः प्रारम्भ किया, लेकिन बात नहीं बनी, परिवार की गुजर–बसर जितनी भी आमदनी नहीं होने से आठवें दशक में प्रयागचंद जी बीकानेर आकर बस गए। यहां उन्होंने पान की दुकान खोली। मगर गुजारा नहीं हो पाया। कुछ अवधि के बाद हनुमानगढ़ आये और वहां से रावतसर जाकर हमेशा के लिए बस गए। इस प्रकार दीनदयाल जी के पिताजी का जीवन संघर्षों से भरा हुआ रहा। प्रयांगचंद जी छोटी उम्र में ही महादेवी जी के साथ दाम्पत्य सूत्र में बंध गए। इनकी शिक्षा सातवीं कक्षा तक हुई। अभिनय कला से इनका गहरा लगाव था। पढाई के साथ–साथ ये नाटकों का मंचन भी किया करते थे।

सातवीं कक्षा में प्रयागचंद ने स्कूल में 'सत्यवान सावित्री' में सावित्री का अभिनय किया, जो इतना सफल रहा कि लोग इन्हें सावित्री के नाम से पुकारने लगे। यही से दीनदयाल शर्मा के भीतर साहित्य और कला विकसित होने लगी। अपने पिता की तरह दीनदयाल शर्मा भी बहुत परिश्रमी और पुरूषार्थी रहे। प्रयागचंद जी को घुड़सवारी में बहुत रूचि थी, इसमें वे पारंगत थे। दुकान के लिए सामान लेने के लिये जब भी नोहर जाना होता था, घोड़ी पर सवार होकर जाया करते थे। इनकी घोड़ी भी बड़ी बुद्धिमान थी। जब कभी लौटते में इनका रेल से आना होता था, तब लगाम घोड़ी की पीठ पर रखकर उसे रवाना कर देते थे और वो सीधे घर आ जाया करती थी। दौड़ने में भी घोड़ी अव्वल थी। एक बार बातों ही बातों में प्रयागचंद जी एक जीप चालक से शर्त लगा बैठे। घोड़ी और जीप में प्रतिस्पर्द्धा हुई। इस दौड़ में घोड़ी विजय हुई। घोड़ी या घोड़ा कभी बैठता नहीं और सोता भी खड़े–खड़े ही है। सुबह जल्दी उठना एवं रात का जल्दी सोना। प्रयागचंद जी की दिनचर्या नियमित थी, प्रतिदिन सुबह स्नान के उपरांत ईश्वर की माला फेरना दैनन्दिनी में शामिल हुआ करता था। इस प्रकार रचनाकार शर्मा के घर का वातावरण धार्मिक और अध्यात्मिक था, जिसका गहरा प्रभाव इनके व्यक्तित्व पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। सच्चाई, ईमानदारी, दया परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम आदि मानवीय मूल्यों की शिक्षा इन्हें माता–पिता से प्राप्त हुई।

पारिवारिक जीवन

दीनदयाल शर्मा का विवाह 12 नवम्बर 1986 में सौभाग्यकांक्षिणी श्रीमती कमलेश शर्मा से सम्पन्न हुआ। माता श्रीमती संतोष शर्मा और पिता श्री रामकृष्ण की चार संतानों में सबसे बड़ी हैं। ये बी.ए. तक शिक्षित हैं। कमलेश शर्मा धार्मिक प्रवृत्ति की महिला है, धार्मिक पत्र–पत्रिकाओं को खूब मन लगाकर पढ़ती है। प्रतिदिन अखबार मे वर्ग पहेली भरती हैं। स्वभाव से सरल, सहज। घर सभी कार्यों में दक्ष होने साथ पाक कला में निपुण हैं। घर आये मेहमान की दिल खोल कर आवभगत करती है। इनकी लोकगीतों में गहरी रूचि है। दीनदयाल शर्मा ने जितना यश अर्जित किया है, उसमें इनकी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दीनदयाल शर्मा को दो पुत्रियों एवं एक पुत्र के पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त है। सबसे बड़ी बिटिया ऋतुप्रिया का जन्म 19 अस्त 1990 को, बेटे दुष्यंत का 12 फरवरी 1994 को, मानसी बिटिया का 12 अगस्त, 1999 को हुआ है। ऋतुप्रिया के जीवनसाथी श्रीमान हरीश कुमार शर्मा हैं। पुत्र दुष्यंत जोशी का विवाह हर्षिता से हो चुका है। छोटी पुत्री मानसी बी.ए. फाइनल में है। यह अत्यन्त प्रतिभाशाली, कलाकार व कहानीकार भी है। सभी बच्चों को साहित्य लेखन अपने पिता से विरासत में मिला है। ऋतुप्रिया का राजस्थानी भाषा में 'सपना संजोवती हीरा' कविता संग्रह प्रकाशित है। जिसे 2015 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से युवा पुरस्कार मिल चुका है। बेटे दुष्यंत भी 2012 में प्रथम राजस्थानी काव्यकृति 'अेकर आज्या रै चाँद' नामक किताब प्रकाशित हो चुकी है। अभी हाल ही में मानसी शर्मा की 'च्युइंग गम' शीर्षक से राजस्थानी बाल कहानी की पुस्तक प्रकाशित हुई है। जिसे पढ़ने का सौभाग्य मुझे भी मिला है। इस किताब की भूमिका में **डॉ. मदन सैनी ने लिखा है–**"च्युइंग गम में फ़गत आठ कहाण्यां है अेक सु अेक भदने। इन्दर धनख में सात रंग हुवै और सातां रै मेळ सूं घोढो रंग बण जावै। इण भांत आठ रंगाभांय मांड्यौड़ी कहाण्यां री लेखिका नै घणा–घणा रंग। साहित्य ई अंधारलोक मांय अजळी किरणां रौ आसावाद जगावै।"[3]

शिक्षा

सुखी, समृद्ध, सभ्य, सुसंस्कृत और विवेकशील जीवन शैली के लिए शिक्षा अनिवार्य है। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' कहावत दीनदयाल शर्मा पर पूरी तरह खरी उतरती हे, दीनदयाल शर्मा प्रारम्भ से ही प्रतिभाशाली, होनहार एवं कुशाग्र बुद्धि के छात्र रहे हैं। दीनदयाल शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा गांव जसाना में सरकारी स्कूल में हुई। गणित के पहाड़े हो या अंग्रेजी के शब्दार्थ उन्हें याद करके सुनाने में ये अव्वल रहा करते थे। विद्यालय में सभी गुरूजनों के प्रिय एवं विश्वास पात्र रहे। पढ़ाई और गुरूजनों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहे। सन् 1973–74 में राज. उच्च. माध्य. विद्यालय श्रीगंगानगर से विज्ञान और कृषि में दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की। ब.ज.सि.रामपुरिया कॉलेज से बी.कॉम. की परीक्षा पास की। श्री जैन (पीजी) कॉलेज से एम.

कॉम उत्तीर्ण किया। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से सी.लिब. साइंस में किया। इसी कॉलेज से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया। इन्होंने स्काउट मास्टर का बेसिक कोर्स भी किया है, यह दौर इनके लिए गहरे संघर्ष का रहा। स्वयं ने पैसे कमाकर अपनी पढ़ाई पूरी की। दसवीं कक्षा में पढ़ते समय संवाददाता के रूप में पार्ट टाइम कार्य किया। कॉलेज शिक्षा के समय लिए सुबह चार बजे उठकर अखबार बांटने का काम किया, रात्रि को अखबारों में पार्ट टाईम कार्य किया। दिन में ट्यूशन भी की। इसके अतिरिक्त अखबारों के दफ्तर में नौकरी भी की और पत्रकारिता भी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव जसाना के सरकारी स्कूल में ही हुई। बचपन के गई गुरूजी इन्हें आज भी याद आते हैं, जिनमें पूनमचंद जी भड़िया, जगदीश जी शर्मा और हेतराम जी विश्नोई। दीनदयाल शर्मा ने अपने साक्षात्कार अपने जीवन अनुभव सांझा करते हुए अपनी प्रारंभिक शिक्षा से जुड़ी छोटी छोटी बातों का उल्लेख किया। परिवर्तन के दौर में आज वे स्वप्न सी प्रतीत होती है। पूनम चंद जी बच्चों से बहुत ही प्यार करते थे। जगदीश जी नगराना गांव के थे और हेतराम जी हमें अंग्रेजी पढ़ाते थे। मुझे अंग्रेजी विषय सबसे कठिन लगता था। गुरूजी एक तरफ तो ए बी सी डी सिखाते और दूसरी तरफ अंग्रेजी की किताब। पढाई के साथ हम सब गुरूजी के गृहकार्यो व स्कूल में सहयोग भी करते थे। स्कूल में ग्रुप के हिसाब से सबकी क्यारियाँ बनी होती थी। जिनमें सब्जी लगाते और बाद में ये सब्जी गुरूजी के कमरे में पहुंचाते। क्यारी का काम हम छठे सातवें घंटे में करते थे और आठवां घंटा लगते ही पहाड़े बोलने शुरू। जब तक चालीस तक पहाड़े नहीं बोल लेते, स्कूल की छुट्टी नहीं होती। पहाड़े बोलने में मैं और मेरा एक सहपाठी राममूर्ति सबसे आगे होते। छुट्टी की घंटी हो या स्कूल लगने की घंटी, घंटी बजाने का सब बच्चों को बहुत ही चाव था। गुरूजी घड़ी की ओर देख कर कहते कि पहली घंटी लगा दो। तब घंटी की तरफ अनेक बच्चे दौड़ते और जो सबसे पहले घंटा लेकर घंटी बजाता तो यूं लगता मानो उसने बहुत बड़ा युद्ध जीत लिया है।

व्यवसाय

मानव के समस्त कार्य व्यापार अर्थ प्रधान हैं। अर्थ का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पारिवारिक जीवन का सम्बल अर्थ ही है। परिवार का लालन–पालन, भरण–पोषण करने उसके मुखिया का जिम्मेदारी होती है, पूरे परिवार का सुखद भविष्य, बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, करियर, शादी–ब्याह, आदि आमदनी पर निर्भर करते हैं। इसीलिए मानव जीवन के भिन्न–भिन्न पड़ावों में व्यवसाय का प्रमुख स्थान है। सरकारी नौकरी लगने के बाद दीनदयाल शर्मा का जीवन व्यावसायिक दृष्टि से सम्पन्न रहा है। इसके पूर्व अर्थोपार्जन हेतु काफी संघर्ष करना पड़ा। जीवन की शुरूआत संवाददाता के पद से हुई। 1972–74 तक गंगानगर पत्रिका का रावतसर क्षेत्र से संवाददाता के रूप में कार्यरत रहे। इसके बाद दैनिक तेज, दैनिक प्रताप केसरी, दैनिक तेज केसरी के लिए स्तम्भ लिखे। 18 फरवरी 1983 को इनकी प्रथम नियुक्ति पुस्तकालय अध्यक्ष के

पद पर मक्कासर गांव के सैकेंडरी स्कूल में हुई। 25 जुलाई 1986 में रा.मा.वि. हनुमानगढ़ जंक्शन में पुस्तकालय अध्यक्ष के पद पर तबादला हुआ। जुलाई माह सन् 1994 में रा.मा.वि., जंडावाली, हनुमानगढ़ में इनका स्थानान्तरण हुआ। यही से 31 जुलाई, 2016 को सेवानिवृत्ति हुई। प्रतिदिन पुस्तकालय के बोर्ड पर 'आज का विचार' लिखते थे, जिसे पढ़ने के लिए छात्र पुस्तकालय में आया करते थे। इस परम्परा को इन्होंने नियुक्ति से लेकर सेवानिवृति तक पूरी निष्ठा से निभाया। इनकी पूरी नौकरी का समय बहुत अच्छा बीता। इन्होंने पुस्तकालय अध्यक्ष के साथ अध्यापन कार्य भी किया। कक्षा अध्यापक भी रहे। पूरे सेवा काल में विद्यालयों में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को संचालित भी किया। बच्चों के लिए नाटक व गीत लिखकर उन्हें मंचित भी करवाया।

2.1.2 कवि कर्म

दीनदयाल शर्मा के मन में सृजन का बीजारोपण बचपन से ही हो गया था। बचपन से ही इनकी पढ़ने में इनकी गहरी रूचि थी। इनके पिताश्री इन्हें छोटी उम्र में ही बाल साहित्य की किताबें, पत्र–पत्रिकाएं लाकर देते थे। जिन्हें पढ़ते–पढ़ते दीनदयाल शर्मा स्वयं कवितायें लिखने लग गए। स्कूल में गुरूजी कोई घटना सुना कर सभी बच्चों से उस पर कहानी लिख कर लाने को कहते थे, कहानीकार शर्मा कहानी लिख कर ले जाते। इस प्रकार विद्यार्थी जीवन से ही इन्होंने रचनाएं लिखना शुरू कर दिया था किन्तु साहित्य सृजन की विधिवत प्रक्रिया 1975 से प्रारम्भ हुई, जो आज भी अबाध गति से प्रवाहित हो रही है। एक बार रचना कर्म प्रारम्भ करने के बाद इन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

2.1.3 अभिरूचियाँ

प्रत्येक मनुष्य की अपनी–अपनी रूचियां होती हैं, पसंद होती है, सोच होती है। जिसे वह जी भर कर जी लेना चाहता है, उन्हें पूरा करने में प्राण–प्रण से जुटा रहता है। दीनदयाल शर्मा को फोटोग्राफी में काफी रूचि है। भ्रमण, मंच संचालन, मंचों पर काव्य पाठ करने में इन्हें बहुत आनंद आता है। दीनदयाल शर्मा फ़िल्में देखने के बहुत शौकीन हैं। सामाजिक समस्याओं पर आधारित फिल्मों ने इन्हें सदैव प्रभावित किया है।

2.1.4 दीनदयाल शर्मा के व्यक्तित्व की विशेषताऐं

दीनदयाल शर्मा पर 'यथा नाम तथा गुण' कहावत पूरी तरह से लागू होती है। क्योंकि ये अत्यन्त दयालु, मृदुल, सहयोगी, सरल, सहज, द्रवणशील और मिलनसार हैं। दीनदयाल शर्मा बचपन से ही शांत स्वभाव के और मस्तमौला रहे हैं। छात्र जीवन में भी सामान्य बालकों की भांति शरारती नहीं अपितु संजीदा थे। पढ़ने में अव्वल, गुरूजनों की सेवा और सम्मान करने में सबसे

आगे रहा करते थै। स्कूल की घंटी बजाने का इतना शौक था कि जैसे ही गुरू जी का आदेश होता सबसे पहले दौड़कर घंटी बजा देते थे, तब ऐसा प्रतीत होता मानो मैदान जीत लिया हो। शारीरिक संरचना की दृष्टि से कवि शर्मा अत्यन्त प्रभावशाली और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं। 'बिग बी' कट सफ़ेद फ्रेंच दाड़ी और काले बाल इनके व्यक्तित्व में अनोखा आकर्षण उत्पन्न करते हैं। मंझोली कद–काठी, गेहूवां रंग, चौडा चेहरा, पनीली आँखों के स्वामी रचनाकार शर्मा स्वभाव से अत्यन्त सरल, भोले, सीधे–सादे, व्यवहारकुशल, मृदुभाषी, हंसमुख, मिलनसार, सामाजिक संवेदनशील, सौम्य और मिलनसार हैं। इनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर **साहित्यकार डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल लिखते हैं–**

यथा नाम गुण तथा लिए हैं

मन के भोले–भाले

सच कहता हूँ इन्सानों में

अद्‌भुत और निराले।

पा ऐसा व्यक्तित्व हो गया

राजस्थान निहाल।[4]

रचनाकार शर्मा बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हैं और बड़ों के साथ बड़े। ये सबसे टूटकर मिलते हैं और जिससे एक बार मिल लेते हैं, वह इनका होकर रह जाता है। बच्चों के बीच रहना, उनकी सुनना, अपनी कहना, उनकी समस्याओं को सुलझाना, हंसी–ठिठोली करना आज भी इनकी दैनन्दिनी का हिस्सा है, इसलिए 'पचपन में बचपन' को जी रहे हैं। इनका हर रविवार 'टॉफी डे' होता है। इस दिन ये कई बच्चों को एक साथ इकट्टा करके उन्हें टोफियाँ खिलातें हैं, उनके साथ मौज–मस्ती करते हैं, खेलते हैं, उन्हें गोद में उठाते हैं, दुलारते हैं, कहानियां सुनाते हैं। सेल्फी भी जरूर लेते हैं, जिसे फेस–बुक पर शेर करना भी नहीं भूलते। ये बच्चों के बीच 'टॉफी वाले अंकल' के नाम से पहचाने जाते हैं। इनका बाल–प्रेम देख कर बरबस ही चाचा नेहरू याद आ जाते हैं। अक्सर इतवार को खुद बच्चे ही इकट्ठे होकर इनके पास आ जाते हैं। रचनाकार शर्मा को पुस्तकों से अनन्य प्रेम है। कोई भी अतिथि इनके घर पधारते हैं या जिनसे ये मिलते हैं, उन सभी को अपनी पुस्तकें भेंट करते हैं। अपने बच्चों को भी यही संस्कार दिए हैं। इनकी द्रवणशीलता को देखकर **डॉ. मदनमोहन लढ़ा लिखते हैं–** 'उनका मन नवनीत की तरह कोमल है। सम्बन्धों के निर्वाह में उनका कोई जोड़ नहीं। उनसे दूरभाष वार्ता भी आनंद–उत्साह से भर देती हैं।[5]

बच्चे अपने माता–पिता की प्रतिछाया होते हैं, उन्हीं से सब कुछ सीखते हैं। दीनदयाल शर्मा पर अपने माँ–पिता की अमित छाप दिखाई देती है। उन्हीं के दिए संस्कारों और सीख ने उनके जीवन को इतना उच्चतर, सुंदर, सुसंस्कृत, आकर्षक और अनुकरणीय बनाया है। दीनदयाल शर्मा ने घोड़ा खड़ा–खड़ा सोता है यह प्रसंग अपने पिता से सुना था जिसे अपनी कहानी 'साधु का शाप' की थीम बनाया है। ऐसे कई और प्रसंग भी हैं। दीनदयाल शर्मा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध लेखक, चित्रकार **मनोहर सिंह राठौड लिखते हैं**– 'चौड़े चहरे, गेंहुवें रंग, मुस्कराती आँखे, पेण्ट–शर्ट–जाकेट में फिट रहने वाले कभी फ्रेंच दाढ़ी, कभी क्लीन शेव्ड दीनदयाल जी जिससे मिलते हैं उसे अपने साथ जोड़ लेते हैं। दीनदयाल जी ठहाके लगाकर हँस सकते है। निश्छल, बेझिझक, बेलगाम हँसी इनके पास है।[6]

कलम के सिपाही शर्मा ने अपने सृजन में कई नवाचार भी किये हैं। अपने कामों को छोड़कर सदैव नवोदित, युवाओं को आगे बढ़ाने, मार्गदर्शन देने में और प्रेरित करने में आगे रहते थे। कितने ही युवाओं के जीवन को सही दिशा की ओर प्रेरित कर चुके हैं। साहित्य सेवी शर्मा हमेशा समय के पाबंद रहे है। चाहे स्कूल हो, नौकरी हो या अन्य कोई संदर्भ। समय पर मदद करना इनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण है। दीनदयाल शर्मा के प्रखर व्यक्तित्व के संदर्भ में **डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' लिखते हैं**– 'वे एक अच्छे लेखक तो हैं ही एक अच्छे इन्सान भी हैं, सहजता उनका सहज गुण है। उनकी विनम्रता भी किसी पुस्तक से कम नहीं। जिसके पाठकों की संख्या हजारों में होती है। स्नेह के वटवृक्ष सरीके शर्मा जी का यही स्वभाव कदाचित उनके सृजन को अप्रतिम बनाना है। उनमें गजब की दृढ़ता और प्रतिकूलताओं में स्थिर रहने की कला में वे पारंगत हैं।'[7]

2.1.5 सम्मान और पुरस्कार

बाल साहित्य के प्रकाश पुंज दीनदयाल शर्मा बाल रचनाकार के रूप में पूरे देश में जाने जाते हैं। किसी भी कलाकार, रचनाकार या व्यक्ति विशेष को जब कोई सम्मान अथवा पुरस्कार मिलता है, तो उसे आनंद की अनुभूति तो होती ही है, साथ ही गौरव भी महसूस होता है और बहुत कुछ और श्रेष्ठ करने का हौसला भी मिलता है, यही सम्मान एवं पुरस्कार का महत्व है। दीनदयाल शर्मा इस संदर्भ में भी खुशकिस्मत रहे हैं। इनके भव्य व्यक्तित्व और कृतित्व को नाना प्रकार की संस्थाओं, अकादमियों, सरकारी संस्थानों ने अनेक सम्मानों और पुरस्कारों से नवाजा है, यह धारा आज भी अबाध, अविरल गति से बह रही है। दीनदयाल शर्मा को प्राप्त पुरस्कारों और सम्मानों की लम्बी सूची है, जिनमें से प्रमुख हैं –

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर से हिंदी बाल कथा संग्रह 'चिंटू–पिंटू की सूझ' पर **डॉ. शम्भूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार** (1988–89), नगर परिषद् हनुमानगढ़ से

सार्वजनिक सम्मान–(1989), जिला प्रशासन, हनुमानगढ़ से **सार्वजनिक सम्मान,** (1998), बाल साहित्य की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर** की ओर से **बाल साहित्य सम्मान**–(1998), पंडित भूपनारायण दीक्षित '**बाल साहित्य पुरस्कार,** हरदोई, उत्तरप्रदेश–(1998–99), नागरी **बाल साहित्य संस्थान,** बलिया, उत्तरप्रदेश से **बाल साहित्य सम्मान**, –(1998–99), रूचिर साहित्य समिति सोजतशहर, पाली, राज. से **सार्वजनिक सम्मान**–(1998–99), हिंदी बाल कथा पर **अखिल भारतीय शकुन्तला सिरोठिया बाल कहानी पुरस्कार, इलाहाबाद,** (2000), हिंदी बाल कथा पर कमला चौहान स्मृति ट्रस्ट देहरादून की ओर से **उत्कृष्ट बाल साहित्यकार पुरस्कार**–(2001), बाल साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **भटेसर महर्षि सेवा समिति हनुमानगढ़ की ओर से सम्मानित**–(2003), लायंस क्लब हनुमानगढ़ से बाल साहित्य की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **सार्वजनिक सम्मान**–(2004), राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अकादमी बीकानेर से राजस्थानी बाल नाटक 'शंखेसर रा सींग' पर **पं. जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य पुरस्कार** (1998–99), राजस्थानी बाल साहित्यिक सेवाओं के लिए प्रयास संस्थान, चुरू की ओर से **सार्वजनिक सम्मान**, (2009), राजस्थानी बाल एकांकी 'म्हारा गुरूजी' पर राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह, चित्तौड़गढ़ से **चन्द्रसिंह बिरकाली राजस्थानी बाल साहित्य का प्रथम पुरस्कार,** (2001) केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से राजस्थानी बाल निबन्ध संग्रह '**बालपणें री बातां**' पर **राजस्थानी बाल साहित्य के राष्ट्रीय पुरस्कार** से पुरस्कृत (2012), अभी हाल ही में 12 दिसम्बर, 2018 में राष्ट्रीय साहित्य पुस्तक मेला समिति, कटनी (म.प्र.) द्वारा डॉ. **राष्ट्रबंधु स्मृति बाल साहित्य सम्मान**' तथा अन्य। इस प्रकार पुरस्कार व सम्मान से इनकी सृजनधर्मिता का सम्मानित किया गया। कहते हैं कि लेखक को रचनाकर्म से आर्थिक रूप से कुछ प्राप्ति नहीं होती लेकिन दीनदयाल शर्मा ने अपने प्रथम पुरस्कार से अपने लिए घर खरीदा और भारत के प्रमुख स्थलों का भ्रमण किया। इन्होंने बताया कि मुझे साहित्य ने बहुत कुछ दिया है।

2.1.6 समाजसेवी

मानव एक सामाजिक प्राणी है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में समाज से जुड़ा होता है। दीनदयाल शर्मा कुछ अधिक ही सामाजिक प्राणी है। इस क्षेत्र में भी इन्होंने विपुल ख्याति अर्जित की है एवं कई साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की है, यथा–

संस्थापक, अध्यक्ष – राजस्थान साहित्य परिषद्, हनुमानगढ़, राज., 1984

संस्थापक, अध्यक्ष–राजस्थान बाल कल्याण परिषद्, हनुमानगढ़, राज., 1986

संस्थापक – स्वयंसेवी संस्थान राष्ट्र उन्नति विद्यालय की हनुमानगढ़ में स्थापना 1988

कवि शर्मा बेहद मिलनसार हैं, सबकी खुशियों में शामिल होते हैं, फोन करते हैं, पत्र भी लिखते हैं, फिर चाहे जन्म दिन हो, शादी हो, कोई समारोह, पुस्तक का लोकार्पण हो, या कोई अन्य उपलब्धि। ये युवा पीढ़ी का भरपूर मार्गदर्शन करते आये हैं। जिस महफिल में इनकी उपस्थिति होती है वहां हँसी के फव्वारे फूट पड़ते हैं। परेशानी में सबकी मदद करना इनकी खूबी हैं। समाजसेवी शर्मा सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, अंध धारणाओं के बिल्कुल खिलाफ रहे है। इनका अपनी रचनाओं के माध्यम से कट्टर विरोध भी जताया है, जिसका ज्वलंत प्रमाण इनकी कृति 'जंग जारी है' में देखा जा सकता है। ये सब लिखा ही नहीं अपितु इसे अपने जीवन में उतारा भी। इनके कथनी करनी में समानता दिखाई देती है। प्रारम्भ से ही गांव–गांव, घर–घर जाकर अपनी पुस्तकों का निशुल्क वितरण करते आये हैं।। ये जहाँ जाते हैं, इनके कंधे पर एक झोला लटका होता है जिसमें किताबें होती हैं, जिन्हें वे बाँट सके। **सन् 2005 में 51000 रूपये की साहित्यिक पुस्तकें हनुमानगढ़ जिले के साक्षरता केन्द्रों पर दान कर चुके हैं जिसके फलस्वरूप इन्हें जयपुर के बिरला सभागार में आयोजित अंतर राष्ट्रीय साक्षरता मिशन राज्य स्तरीय सम्मान समारोह, 2006 में सर्वाधिक पुस्तक दानदाता के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। बाल रोग विशेषज्ञ, प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. अजय जनमेजय की दृष्टि में–**

"सेवा ओ' सद्भाव को अपनाया है धर्म,

जीवन में लेखन बना, अब तो जिनका कर्म,

अब तो जिनका कर्म, अभी लेखन है, जारी,

रचें नए आयाम, खेलकर दूजी पारी"[8]

'आपने समाज चिंतको, सृजनधर्मी, विचारको प्रबुद्ध जन के साथ मिलकर एक बेहतर समाज बनाने के लिए संभव प्रयास किया हैं।[9]

2.1.7 प्रसारण

सन् 1989 में जयपुर दूरदर्शन से प्रथम साक्षात्कार प्रसारित हुआ। सन् 1979 से आकाशवाणी बीकानेर और जयपुर से बाल कहानियों, कविताओं, वार्ता एवं अन्य साहित्य का लगातार प्रसारण। राज्य स्तर पर 15 रेडियों नाटक प्रसारित, 3 झलकियाँ एवं अन्य हिंदी राजस्थानी के बाल नाटक प्रसारित। सिन्धु की समकालीन सभ्यता : कालीबंगा पर रेडियो रूपक प्रसारित हो चुके हैं।

2.1.8 विशेष उपलब्धियाँ

दीनदयाल शर्मा ने अपने साक्षात्कार में बताया कि मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि तो मेरे तीनों पुत्र–पुत्रियाँ और मेरी जीवन संगिनी है। ये छोटा सा संसार मेरे लिए सबसे सुंदर है। इसके बाद तीन तीन राष्ट्रपतियों से मिलना, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के कर कमलों से मेरे बाल एकांकी 'सपने' का लोकार्पण होना जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। साथ ही 'कुछ अनकही बातें' ग्रन्थ इनकी बहुत बड़ी संप्राप्ति है, जो अभी 2018 विकास प्रकाशन, बीकानेर से छप कर आया है। इसके अंतर्गत देशभर के रचनाकारों, बाल साहित्यकारों, मित्रों, प्रशासनिक अधिकारियों, परिजनों सामान्य नागरिकों, पाठकों एवं अपने बच्चों द्वारा रचित 101 लेख, संस्मरण, इनसे जुड़ी प्रेरणास्पद घटनाएँ, समग्र जीवन वृत्त, छाया–चित्र, विशेष उपलब्धियाँ–घटनाएँ (सन् सहित) प्रकाशित हैं। कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ–

1. महामहिम राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा द्वारा अंग्रेजी में अनुदित बाल नाट्य कृति 'द ड्रीम' 17 नवम्बर 2005 को लोकार्पण
2. बाल दिवस की पूर्व संध्या पर महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में बाल साहित्य पर चर्चा और अपनी साहित्यिक पुस्तकें भेट–2012।
3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर की एम्.फिल. (हिंदी विषय) की छात्र प्रदीप कौर ने हिंदी साहित्य की व्याख्याता डॉ नवज्योति भनोत के निर्देशन में महाराज गंगा सिंह विश्वविधालय, बीकानेर सत्र 2009–10 में लघु शोध प्रबंध 'दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्यः एक अध्ययन' एम.फिल् (हिन्दी साहित्य) के चतुर्थ प्रश्न–पत्र हेतु प्रस्तुत।
4. कवि शर्मा से कवि सम्मेलनों और काव्य गोष्ठियों के भागीदार बन रहे हैं। इनके मंच पर आते ही तालियों की गूंज से इनका स्वागत होता है। कवि शर्मा की हास्य प्रधान कवितायें हों या अन्य रस की, श्रोता बड़े मनोयोग से सुनते हैं। कितने ही श्रोताओं को तो इनकी कवितायें बरसों से याद भी है। मंच संचालन में कवि प्रवीण हैं ही। श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने का जादू इनके पास है।
5. दीनदयाल शर्मा को हनुमानगढ़ जिले का प्रथम ब्लोगर होने का गौरव भी प्राप्त है। फेस बुक, यू–ट्यूब पर भी इनके हजारों मित्र, समर्थक एवं प्रशंसक हैं।
6. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की ओर से आयोजित क्षेत्र के प्रसिद्ध साहित्यकार के प्रोजेक्ट निर्माण योजना के अंतर्गत 'बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषय पर सत्र 2010–11 में सीनियर सैकेण्डरी की छात्रा कुमारी रेणु बाला द्वारा प्रोजेक्ट निर्माण।
7. हिंदी प्रचार समिति श्रीडूंगरगढ़, बीकानेर, केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कई कार्य शालाओं में भागीदारी एवं बाल साहित्य विषय पर पत्र वाचन, लेखक से

मिलिए' में राजस्थानी बाल साहित्यकार के रूप में सक्रिय भागीदारी। हिंदी **राजस्थानी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान अर्जुन देव चारण ने इस** बात की पुष्टि भी की है। 'तीन–तीन राष्ट्रपतियों से मुलाकात करना और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा 2005 में आपकी किताब 'द ड्रीम' का लोकार्पण करना...... यह सौभाग्य किसी विरले लेखक को ही मिलता है। साहित्य सृजन के साथ–साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियां भी आप बखूबी निभा रहा है।'[10] अपने लिए तो सभी जीते हैं किन्तु जो औरों के काम आये वो ही अच्छे इंसान की सच्ची पहचान है। भारतीय संस्कृति में परोपकार एवं मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म माना है। उत्तम जीवन की सार्थकता ही प्राणी मात्र की सेवा करना है। समाजसेवी शर्मा इस भूमिका में खरे उतरते हैं।

2.2 कृतित्व

दीनदयाल शर्मा अत्यन्त प्रतिभाशाली रचनाकार हैं। ये छात्र जीवन से छुट–पुट रचनाएँ लिखने लग गये थे। घर और स्कूल के वातावरण ने उन्हें अनवरत लिखने को प्रेरित किया। हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं पर इनका पूरा–पूरा अधिकार हे। उम्र के साथ–साथ इनका रचनाकर्म परवान चढ़ने लगा। दैनिक तेज, दैनिक तेज केसरी, युगपक्ष, श्रीगंगानगर पत्रिका जैसे अखबारों में निरंतर लिखने लगे। नौकरी के पूर्व इन्होंने पत्रकारिता करना शुरू कर दिया था। तब से ये निरन्तर अग्रसर होते रहे। आज साहित्यकार शर्मा विभिन्न विधाओं में चालीस के ऊपर पुस्तकों की रचना कर चुके हैं। इनकी सबसे विलक्षण बात यह है कि किसी भी बाल रचना को अंतिम रूप देने से पूर्व इसे कई बच्चों को सुनाते हैं, उनकी राय जानते हैं। अनेक पत्र–पत्रिकाओं में इनकी हजार से अधिक रचनाएँ छप चुकी हैं। शिक्षक दिवस पर राज्यस्तरीय पुस्तकों में सौ से अधिक रचनाएँ आ चुकी है। पाठ्य क्रम में भी इनकी कविता, कहानी, बाल पहेलियाँ, संस्मरण आदि पढ़ाये जा रहे हैं। कई किताबों का अंग्रेजी, पंजाबी और मराठी में अनुवाद हो चुका है। इनकी बाल कृतियों से प्रभावित होकर **सुनील कुमार डीडवाना ने कहा है**– 'कलम के धनी रचनाकार शर्मा ने बाल साहित्य में कुछ अलग करने, देश भक्ति की अविरल धाराएँ बहाते हुए, अपने कार्य की निष्ठा को जिस रूप में आगे बिखेरा है कि हर सदन, मानस–पटल, साहित्यकारों, रचनाकारों के मध्य अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रहे हैं। साहित्य ऐसा हो जो हमें विचार करने को बाध्य करे, बच्चों में जिज्ञासा एवं आत्मविश्वास की वृद्धि करे। श्री शर्मा की लेखनी ऐसी ही अमृत वर्षा करने को आतुर रहती है।'[11] बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना संसार अत्यंत समद्ध है, मेरा समस्त शोध इन पर आधारित है, जिसे मैंने विविध द्रष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

बाल काव्य :

1. कर दो बस्ता हल्का, शिशु गीत–(1998),
2. सूरज एक सितारा है, शिशु गीत–(2000),
3. चूं–चूं (शिशु कवितायें–2010)
4. नानी तू है कैसी नानी, बाल गीत–(2010),
5. गिलीगिली गप्पा, बाल गीत–(2014),
6. अगड़म–बगड़म, शिशु गीत–(2014),
7. रसगुल्ला, शिशु गीत–(2016)
8. चिड़िया चहके गीत सुनाये, बाल–गीत–(2016),

बाल पहेलियाँ :

1. इक्कावन बाल पहेलियाँ– (2009)

बाल कहानी संग्रह :

1. चिंटू–पिंटू की सूझ–(1987),
2. बड़ों के बचपन की कहानियां–(1987),
3. पापा झूठ नहीं बोलते–(1997),
4. चमत्कारी चूर्ण–(2003),
5. मित्र की मदद–(2016)

बाल नाटक :

1. फैसला–(1988)

बाल एकांकी :

1. फैसला बदल गया–(1999),
2. सपने–(2007)
3. (जंग जारी है) किशोर नाटक संग्रह (2007)

अनुवाद

- 'द ड्रीम' (बाल नाटक सपने का हिंदी अंग्रेजी मे) अनुवादक पी.आर. गुप्ता, व्याख्याता।
- 'सुपणै' (बाल नाटक, हिंदी से पंजाबी में डॉ दर्शनसिंह आशट द्वारा अनुदित।
- राजस्थानी बाल कहानियों की आठ किताबों का राजस्थानी से मराठी में, मराठी साहित्यकार प्रो साईनाथ पाचाराण द्वारा अनुदित।

पाठय पुस्तकों में

- 'कब मिलेगी आजादी', (बाल संस्मरणात्मक निबंध) 'बातों की फुलवारी', सहायक पुस्तकमाला में।
- 'जोकर' (बाल कविता) 'अक्षर दीपिका' हिंदी पुस्तकमाला–4, महाराष्ट्र के पाठ्यक्रम में ।
- 'पहेलियां', 'नंदिनी हिंदी पाठ्य पुस्तक–3' (हनुमानगढ़ के प्राइवेट विधालय कक्षा–3)।
- दीपों का त्यौहार (बाल कविता) 'संकल्प हिंदी पाठ्यमाला–2' में।

महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, दिल्ली व अन्य कई राज्यों में इनकी कई रचनाए पढाई जा रही है।

मंचित राजस्थानी बाल नाटकः फैसला, फैसला बदल गया, बातां रा दाम, जैरीली नागण, म्हारा गुरूजी, बिगडग्यो बबलू, मास्टर फकीरचंद, सैंसू बड़ी पढाई, तूं काई बणसी, बाड़ली बस्ती, उड़ान।

- डॉक्युमेंट्रीः दीनदयाल शर्मा ने हनुमान जिले के श्रेष्ठतम विद्यालय की डॉक्युमेंट्री उड़ान का निर्माण किया, 1912

बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य को बाल कविता, बाल कहानी, बाल नाटक और एकांकी, पत्रकारिता और संपादन बिन्दुओं में विभाजित किया गया है। इन कृतियों का समालोचनात्मक परिचय निम्नानुसार दिया जा रहा है।

2.2.1 बाल कविता संग्रह

1. कर दो बस्ता हल्का (1998)– यह एक शिशु गीत संग्रह है। जिस में अठठारह गीत समाहित हैं – बस्ता, प्यारा कुत्ता, आजादी, दादाजी, मौसी, मेढ़क, कुत्ता, पान, नानी, नाव, निराला कुत्ता, खरगोश, मैडम–सरजी, बोल कबूतर, रेलगाड़ी, बंदर, चिड़िया, पिचकारी। सभी रचनाएँ मात्र चार–चार पंक्तियों की हैं। प्रस्तुत कृति में सभी प्रकार के विषय लिए गये है, कुछ परम्परागत हैं तो कुछ परिवेशगत। दादाजी, मौसी, नानी आदि परिजनों के बहुत निकट होता हैं। इन सभी रिश्तों में जैसे बालक की जान बसती है। 'दादीजी, मौसी, नानी गीतों में दादाजी को चिड़ाना, उनके चश्मे को स्वयं के लगाना, मौसी को बिल्ली कह देना, नानी से नित नई कहानियां सुनने की जिद करना, इन सभी बातों से बालक को परम आनंद मिलता है, किन्तु नानी को लेकर यहाँ स्थिति विपरीत है। बच्चे को शिकायत है कि सबकी नानी प्रतिदिन रात को कहानी सुनाती है, पर मेरी नानी ऐसा नहीं करती अपितु बिना कहानी सुनाए ही सो जाती है। इन गीतों में कभी बालक गुर्राते कुत्ते से डर जाता हैं तो कभी पापा से जिद करना कि गुलकंद वाला पान खाने चलो, तो कभी पिचकारी लाने को हठ करता है। कभी कभी खरगोश को हरी घास खाते हुए देख कर खुश

होता है। कवि शर्मा ने 'बंदर' गीत में खो–खो करता बंदर, नाचता–कूदता बंदर का शिशु सुलभ अंकन किया है। 'कबूतर', चिड़िया' आदि रचनाओं में उनकी आवाजों को शब्द बद्ध करने का सार्थक प्रयास हुआ है। ये गीत बालकों के मनभावन कहे जा सकते हैं। एक शिशु गीत –

पापा मुझे, रंग दिला दो

मोटी सी, पिचकारी ला दो[12]

'कर दो बस्ता हल्का' के सभी गीत अत्यंत सरल, सहज, सुरूचिपूर्ण, सार्थक, मधुर, बालक से अभिराम हैं। इनके माध्यम से बालकों को अपने परिवेश की छोटी–छोटी चीजों की जानकारी भी मिलेगी, उनसे परिचित भी होगें।

2. सूरज एक सितारा है (2000)–प्रस्तुत कृति में कुल सोलह गीत हैं, सभी गीत चार–चार पंक्तियों के हैं। इन के शीर्षक नहीं दिए गए हैं, ये गीत शिशु गीत हैं। कुछ गीतों में पशु–पक्षियों की बोलियों को चिन्ह्ति किया गया है, जैसे बछड़े रंभाते हैं, गधे 'ढेचू–ढेचू' करते हैं, मक्खी भिनभिनाती है, कुत्ते भौकते हैं, घोड़े हिनहिनाते हैं आदि। पुस्तक में प्रकृति प्रेम सम्बन्धित कई गीत हैं। बालक चिड़ी–कबूतर को अपना साथी मानता है, उन्हें दाना खिलाता है। पानी पिलाता है। सर्दी में धूप बहुत सुहाती है। कवि ने इसका भी सुंदर चित्रण किया है। तितली, भँवरे, फूल आदि पर भी सुंदर गीत हैं। कभी सब बालक मिलकर रेल बनाते हैं, जैसे कि लड़कपन में सब बच्चे ये खेल अवश्य खेलते हैं। बचपन में हर बालक रामलीला करता है और राम की तरह अच्छे अच्छे काम करना चाहता है, यही भाव प्रकट करता एक शिशु भी–

राम लीला का मैं हूूँ राम, रावण मार गिराऊंगा,

अच्छे अच्छे काम करूँगा, जग में नाम कमाऊंगा [13]

एक सवाल सब बच्चों के मन में अवश्य उठता है, जब वे गाड़ी में बैठते है तो गाड़ी के साथ पेड़–पौधों, चाँद–सितारों को चलते देखते है, तब अपने पिता से पूछते कि पापा, जब गाड़ी चलती है तो पेड़ भी हमारे साथ–साथ चलते हैं क्या? इसी सवाल को बहुत सहजता से रचनाकार ने प्रस्तुत करके बचपन याद दिला दिया है। एक और बड़ा मासूम सा प्रश्न कि जब हमें स्कूल जाने में देर हो जाती है तो सरजी पिटाई करते हैं, किन्तु जब सरजी देर से आते हैं तो उनकी कौन खिंचाई करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बालक भी इन बातों को देखता और महसूस करता है। शिक्षकों की कर्त्तव्य निष्ठा पर उठाया गया बालकों द्वारा यह सवाल हमारी शिक्षण–व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह है। कुछ गीतों में, बालक को दिन भर पढ़ना अच्छा नहीं लगता, वह खेलना चाहता है, किन्तु खेल नहीं पाता, इसलिए उसे स्कूल जेल लगता है। शीर्षक गीत 'सूरज एक सितारा' विज्ञान पर आधारित गीत है, विज्ञान के अनुसार सूर्य एक सितारा है, इस

गीत के माध्यम से कवि ने शिशुओं को बड़ी जानकारी दे दी है। कृति के सभी गीतों की भाषा अत्यंत सहज और सीधी है, शिशु उपयोगी है। गीतों का लघु आकार शिशु वय के अनुरूप है। सभी गीत मनोरंजक होने के साथ प्रेरणास्पद भी है।

3. नानी तू है कैसी नानी (2010) – इस पुस्तक में 21 बाल रचनायें संग्रहित हैं – जोकर, बापूजी के बंदर, भलाई, दिवाली, होली, गर्मी, सर्दी चिड़िया, उल्टा–पुल्टा, चूं–चूं चूहा, अकड़, किससे पूँछूं पापा, मुनिया पेड़, जीवनदाता पेड़, जय जवान जय किसान, मोबाइल, समय, रावण, उल्लू, नानी। विषय परम्परागत होते हुए भी सभी कवितायें मनोरंजन से भरपूर हैं, रोचक हैं, आधुनिक भावबोध को दर्शाती 'बंदर' में बुराई से बचने की बात कही गई है, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो। इसमें भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती है। 'भलाई' कविता में सामाजिक सद्भावना, मेलजोल, जाति–पाति के सारे भेद–भावों से दूर रहने की प्रेरणा हैं। बच्चे तो होते ही सरल हैं, जो सभी बुराईयों से कोसों दूर रहते हैं। 'होली', 'दीवाली' में पर्वो की महत्ता प्रतिपादित है और खुशियाँ बाँटने की पुरजोर वकालत की गई है। 'चिड़िया' कविता बहुत भावपूर्ण और आधुनिक समस्या 'होमवर्क' के बोझ से परेशान बालक के दर्द को बड़े ही मार्मिक तरीके से प्रकट करती है। बालक कहता है कि कितना अच्छा हो मैं एक चिड़िया होता, ताकि मुझे रोज–रोज होमवर्क नहीं करना पड़ता। आधुनिक शिक्षण पद्धति पर करारा प्रहार करती यह कविता अत्यंत श्लाघनीय है। 'चूं–चूं चूहा' में चूहा अब बिल्ली से नहीं डरता क्योंकि उसने काँटो वाली ड्रेस जो पहन ली है इसी तरह 'अकड' में चूहा कहता है कि मैंने बिल्ली से ब्याह रचा लिया है, अब मुझे बिल्ली से डरने की जरूरत ही नहीं है। 'पेड' में पेड़ों का महत्त्व बहुत भली प्रकार से प्रस्तुत किया है। इस रचना से बालक प्रकृति से प्रेम करने की सीख लेंगे। 'मोबाइल' में बालक मोबाइल दिलाने के लिए माँ को बातों से फुसलाने की बड़ी मासूम सी कोशिश करता हैं, जो वरेण्य है। संदर्भित किताब की सभी काव्य रचनाएँ सुंदरता, बालसुलभता, जिज्ञासा से भरी हुई हैं। कल्पना का मनभावन प्रयोग बालकों को आकर्षित करता है।

4. चूं–चूं (2010) – यह पुस्तक शिशु गीत की है। इसमें 14 गीत शामिल हैं, जो अशीर्षित हैं। सभी गीत मनोरंजक, रोचक शिक्षाप्रद प्रकृति के निकट हैं। बंदर की उछल–कूद है, चूहे की चूं–चूं है, घोड़े का अनुशासन है। 'पिकोक' गीत में शोर से दूर रहने व ध्वनि प्रदूषण नहीं करने की प्रेरणा है, बिल्ली के तो क्या कहने, दूध–मलाई मिल जाये तो डट के खाऊँ। 'टर्र–टर्र' में परिश्रम करने और आलस्य छोड़ने की पुरजोर कोशिश कवि ने की है। 'गधा' में कचरा कूड़ेदान में डालने की बात रोचक तरीके से प्रस्तुत की गई है। 'शेर' में तो कवि ने बहुत ही कमाल किया है, शेर की दहाड़ को मंदिर के घंटे से उपमित करके अनुपम बना दिया। 'चिड़िया' की चीं–चीं से तो जैसे पुस्तक चहक उठी है। एक गीत प्रस्तुत है–

टन टन टनन घंटी बोली

हम सब करने लगे ठिठोली [14]

5. गिली–गिली गप्पा (2014)– यह शिशु गीत संग्रह है, जो अत्यंत रोचक, मधुर व सरस है। बाल साहित्य का प्रमुख ध्येय बालकों को आनंद प्रदान, सुसंस्कृत, सुसभ्य और श्रेष्ठ नागरिक बनाना तथा सुसंस्कारित करना माना गया है, ताकि स्वस्थ और श्रेष्ठ समाज की संरचना हो सके, यह तभी संभव है जब बाल साहित्य में जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य, रोचकता, आनन्द, जिज्ञासा, प्रकृति–चितन, पर्यावरण–प्रेम, बाल मनोविज्ञान, प्रेरणा, उत्साह, मनोरंजन, देशप्रेम, सरलता, सरसता आदि तत्त्व निहित हो। इस परिपेक्ष्य में हम बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की बाल काव्य कृति 'गिली–गिली गप्पा' के सन्दर्भ में बात करें तो यह पुस्तक उपरोक्त तत्वों पर खरी उतरती है। कवि ने मानों 'गागर में सागर' भर दिया है। इसमें वो सारी विशिष्टताएं दृष्टिगोचर होती है जिन की बाल कविताओं में अपेक्षा की जाती है। कवि ने बड़ी सरलता से बच्चों के मन तक पहुँचने की कोशिश की है। सब जानते है, मानते हैं कि किताबी ज्ञान किसी को भी अच्छा नहीं लगता, जब तक रोचक नही हो, भला बच्चों से फिर ऐसी उम्मीद कैसे की जायें। आज की किताबों में बच्चों की रूचि के अनुसार कम ही सामग्री मिलती है। ये ही तो चाहता है आज का बच्चा.......। आज ही **'शिविरा पत्रिका' में सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार, कवि, आलोचक श्री भगवती प्रसाद गौतम की रचना 'विश्व का विलक्षण विद्यालय–समरहिल में ये ही बात उद्धृत है'।**

बच्चों की स्वतंत्रता स्कूल के अनुशासन में बाधक नहीं है, बशर्ते है, स्कूली पढ़ाई को बच्चों की रूचि का अनुरूप बनाया जावे और व्यर्थ की नैतिकता उन पर न थोपी जाये' (**सहारा समय, 18.12.2004**।[15])

प्रस्तुत कृति में नैतिकता, जीवन मूल्यों, प्रेम, करूणा, क्षमा, सहयोग, परोपकार, मानवता आदि तत्वों का अप्रतिम रूप से उल्लेख हुआ है। बातों ही बातों में बड़ी सहजता से कवि ने बच्चों को अच्छा इंसान बनने की ओर प्रेरित किया है। प्रकृति–चिंतन और पर्यावरण–संचेतना का भी प्रस्तुत पुस्तक में बहुत सरलता से, बालोपयोगी संदर्भ अभिव्यक्त करने का सम्पूर्ण प्रयास दीनदयाल शर्मा ने किया है आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। निसंदेह प्रकृति और वातावरण शुद्ध रहेगा तभी समस्त जीव जगत खुशहाल रह सकेगा। परम्परा और आधुनिकता का सुन्दर समन्वय 'गिली–गिली गप्पा' में बड़ी शिद्दत से देखा जा सकता है। परम्परा का निर्वहन के प्रसंग में दिवाली, गाँधी बाबा, मधुमक्खी, मुर्गे की सीख, अक्कड़–बक्कड़ विषयक रचनाओं का सौन्दर्य देखते ही बनता है। शब्द ब्रह्म स्वरूप है, इन की महिमा न्यारी है। सम्पूर्ण मानव जाति के उन्नयन में शब्दों की अहम् भूमिका रही है। सच में सारा खेल ही शब्दों का ही है। शब्दों से ही हम तुम हैं।

शब्दों का यहाँ खेल है सारा, शब्दों की ताकत पहचाने,

शब्द शब्द मिल बनाती बातें, शब्दों की ताकत पहचाने।[16]

बाल साहित्य का सबसे महत्ववपूर्ण बिंदू है मनोरंजन, सुरूचि, आनंदानुभूति। इस परिप्रेक्ष्य में आलोच्य कृति पूर्णरूपेण खरी उतरती है। जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है। प्रस्तुत पुस्तक में बड़ी सादगी से खेल ही खेल में बड़ी–बड़ी शिक्षाएं बालकों के अंतर्मन में उतार दी गई हैं। समय पर सोना, समय पर जागना, शांति से जीना व जीने देना, मिल जुलकर रहना, बुरा नहीं सुनना, बुरा नहीं बोलना, बुरा नहीं देखना आदि। भाव–पक्ष के साथ–साथ कला पक्ष में भी यह कृति समृद्ध है। भाषा सरल, सहज, बालोपयोगी है। शब्द का चयन तो गजब ढा रहा है। बच्चों के प्रिय लगने वाले शब्दों के प्रयोग ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिए हैं, ध्वन्यात्मकता बेजोड़ है, लयात्मकता, गेयता बाल गीतों की जान होती है, जो इस पुस्तक में धड़कती हैं, जैसे कंचों की खनक गूंज रही हो। दीनदयाल शर्मा की अपनी विशिष्ट शैली है, अपना अलग मुहावरा है, सरल शब्दों में अपनी कह देना इनकी विशिष्टता है। मुहावरों, प्रतीकों, बिम्बों, उपमानों आदि का यथोचित प्रयोग हुआ है। सारांशत कृति बालकों को आनंद विभोर करने में, अच्छा इंसान बनाने में सम्पूर्णत सार्थक है।

6. अगड़म–बगड़म (2014)– प्रस्तुत काव्य कृति में 28 रचनाएँ शामिल हैं, चूहा, बिल्ली, कुत्ता, हाथी, बकरी, मोर, बंदर, ऊंट, तोता, मछली, उल्लू, बोलियाँ, शेर, चौकीदारी, ओ–चिड़िया, बादल, इन्द्रधनुष, अगड़म–बगड़म, गुब्बारे, टीवी, अपनी दुनिया, कौआ और कोयल, कम्प्यूटर, जोकर, चंदा मामा, आओ बच्चों, इधर–उधर, सबसे प्यारा सच। यह शिशु गीत एवं बाल गीतों का संग्रह है। कुछ विषयों को छोड़ कर अधिकतर विषय परम्परागत हैं। पालतू पशु–पक्षी, घरेलू वस्तुएँ, पशु–पक्षियों की बोलियाँ आदि मुख्यत वर्णित हैं। चूहा, हार्थी, बंदर, बिल्ली, बकरी, ऊंट आदि में इनके करतबों, इनकी आवाजों को माध्यम बनाकर सुंदर रचनाएँ लिखी गई हैं। रटन विद्या में पारंगत, तोतो की विशेषता को कवि ने 'तोता' गीत में प्रकट किया है। तोता को 'शुक' भी कहते है, यह जानकारी भी लगे हाथों दे दी गई जो श्लाध्य हैं। कुत्ते से अच्छा कोई चौकीदार संभव नहीं है, इसी संदर्भ को 'चौकीदार' गीत में उजागर किया गया हैं। 'बादल' 'इन्द्रधनुष' में प्रकृति का सुषमा का अंकन है, दोनों गीत बहुत प्यारे हैं। 'गुब्बारा' जो बालकों का अत्यंत प्रिय मित्र है, जिसे फुलाने से अधिक आनंद उसे उड़ाने व फोड़ने में आता है। ऐसा ही प्यारा सा गीत है ' गुब्बारे'।

माँ मै भी गुब्बारे लूँगा, आया है गुब्बारे वाला,

रंग–बिरगे न्यारे–न्यारे, लगते हैं मुझे सबसे प्यारे। [17]

आधुनिक समय में टी.वी. बच्चों के लिए एक खिलौना सा बन गया है। कार्टून फिल्मों की भरमार होने की वजह से बालक टी.वी. के सामने से हटने का नाम नहीं लेता। 'टी.वी.' रचना में यही भाव पूरित है। 'कौआ–कोयल' कविता में दोनों के स्वभाव एवं करतूतों के भेद दिखाने में रचनाकार शर्मा सफल रहे हैं। 'चंदामामा' की तो बात ही निराली है। जो बाल सुलभ सौन्दर्य, कल्पनाशीलता की अनुपम रचना है। बालक सच की प्रतिमूर्ति होते हैं। झूठ से तो जानते तक नहीं। 'सबसे प्यारा सच' रचना 'सत्यमेव जयते' का सन्देश देती, नैतिक मूलयों की पैरवी करती उत्तम रचना है। संदर्भित कृति की अन्य कवितायें और गीत रोचक, मनोरंजक, सरल, सहज, बालसुलभ हैं। परम्परागत विषयों पर आधारित होने के बाद भी यह पुस्तक बहु उपयोगी है। बालकों की पंसंद की है।

7. रसगुल्ला (2016)– दीनदयाल शर्मा का 'रसगुल्ला' शिशुगीत काव्य संग्रह सितम्बर 2016 में 'बोधि प्रकाशन' से प्रकाशित हुआ। यह कृति बाल–सुलभ, रोचक, मनोरंजक एवं बालोपयोगी गीतों से अलंकृत है। इसमें विविध विषयों पर आधारित कुल 44 शिशुगीत संग्रहीत हैं – घर, बोलिंग यात्रा, ऊंट, पढ़ाई, शेर की दहाड़, कुर्र, मछली, पतंग, बारात, मीत, मोबाईल, टी.वी. कौआ, जोकर, लाला–लाली, कम्प्यूटर, चंदा मामा, घोड़ा, रसगुल्ला, शेर, चिड़िया और बच्चे, तितली, मटर, रोटी, टीवी नानी, कट–मट, चरक चूं, तबड़क–तबड़क, बिजली, आराम, मेरा बस्ता, घंटी, गुल्ली–डंडा, जेल–खेल, मेरा तोता, किताब, चटोरी, मकटूराम, टोकरी, गुलगुला, चीं–पीं, मिरची आटा–पाटा।

संग्रह के कुछ गीत परम्परागत विषयों से सम्बन्धित हैं, कुछ नवीन भाव बोध को अभिव्यक्त करने वाले हैं। सभी गीत शिशुओं का विशुद्ध मनोरंजन करने वाले हैं। दो गीतों को छोड़कर सभी गीत मात्र चार पंक्तियों के हैं। कुछ गीत तो केवल आठ शब्दों के ही हैं। इन्हें शिशु आसानी से बोल सकते हैं, दुहरा सकते हैं, कंठस्थ कर सकते है। दीनदयाल शर्मा ने शिशुओं की अवस्था को ध्यान में रखते हुए ही इस कृति की रचना की है। सभी गीत सुमधुर, सरल, सहज, रोचक और आकर्षक है। शब्दों का चयन अत्यंत सरल, सहज है। शिशु इन्हें सरलता से गा सकते हैं। इनके विषय बालकों के इर्द–गिर्द के परिवेश से लिये गए हैं। कुछ गीत मात्र तुकबंदिया हैं, ऐसे गीतों को निरर्थक गीत कहा जाता है, ये गुण भी इनका सौन्दर्य माना जाता है।

कम गीला आटा, रोटी गोल गोल ,

कितनी अच्छी बनाती हूँ, बोल मम्मी बोल। [18]

इनकी रचना शिशुओं को मात्र आनंद देने की लिए की जाती हैं, समग्रत शिशु गीतों में बाल सौन्दर्य के अतिरिक्त शिक्षा, नई–तकनीक, जिज्ञासा, उत्स, जीवन–दर्शन, मनोरंजन, प्रकृति–माधुर्य, ध्वन्यात्मकता, चित्रात्मकता, शाब्दिक सौन्दर्य और प्रवाह अनुपम है।

8. चिड़िया चहके गीत सुनाए (2016)– यह बाल रचनाओं का सुरम्य संकलन है। इसमें कुल 29 बाल कवितायें और बाल गीत हैं – चिड़िया चहके गीत सुनाए, मोर, अंक में झूला, गाय, किताब, मेरी नानी, ता–ता–थैया, अंक गणित, आलस छोड़ो, बाल–दिवस, चल–चल–चल, शिक्षा की ताकत, सफाई की सौगंध, अपना घर, पढ़ाई, भालू जी, कर्म, सरदी आई, गर्मी, अच्छे काम, कोशिश आठ पैर की होती मकड़ी, बन्दजी, चूहा, मच्छरों की शामत, पेड़ की प्रार्थना, मम्मी तू मेरी प्यारी मम्मी, फोटोग्राफर बंदर जी, क्यों?

प्रस्तुत कविताओं में विषय का वैविध्य आकर्षक है जिन्हें विभिन्न कोणों से दर्शाया गया है। मोर, चिड़िया आदि पक्षयों की मनभावना क्रीड़ाओं को चित्रित किया गया है जो बालकों को लुभाने में सक्षम है। मातृत्व–बोध की दोनों कवितायें वात्सल्य भाव से ओतप्रोत है। गाय हमारे समाज का अहम हिस्सा है। इसकी हर चीज मानव के लिए बहुउपयोगी है। पुराणों में कहा गया है कि गाय में करोड़ो देवताओं का वास होता है। इसका दुग्ध अमृत तुल्य माना जाता है। 'गाय' कविता में इन सभी भावों को कवि ने प्रकट किया है। इसी भांति जीवन चलने का नाम है, इसी बात को दर्शाती 'चल–चल' कविता भी बहुत प्यारी बन गई है। संदर्भित पुस्तक में कवि ने जहाँ 'सफाई की सौगंध' में स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने का पुरजोर सन्देश दिया है। एक गीत में बस्ते के बोझ को हल्का करने का भी प्रयास रचनाकार करता दिखाई देता है। भालू, बंदर, मकड़ी, मच्छर आदि बालकों के प्रिय जीवों पर भी रचनाकार ने उत्तम सृजन किया है जिनमें बालकों को आनंदित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' मूल्य पर भी प्यारी सी रचना है। पेड़ हमारे जीवन दाता, भाग्य विधाता होते हैं, इन्हीं से धरती पर समस्त जीवधारियों का अस्तित्व है। 'पेड़ें की प्रार्थना' रचना इसी प्रसंग को लेकर लिखी गई है, जो अत्यंत मार्मिक है। 'चिड़िया चहके गीत सुनाए' संग्रह की समग्र रचनाएँ बाल मनोविज्ञान, नैतिक मूल्यों, प्रकृति–प्रेम, बाल सुलभ सौन्दर्य, माधुर्य, प्रेरणा, उत्साह, मनोरंजन से अभिसिक्त हैं। परम्परा और आधुनिक भाव बोध का भी कवि ने पूरा ध्यान रखा है। ये सभी रचनाएँ बच्चों और शिशुओं को आनंद प्रदान करने में सफल कही जा सकती है। जल के महत्व को दर्शाती एक रचना–

पीने का जल करें क्यों गन्दा, जीवन होता है जल,
इसका न कोई विकल्प होता, जल पीना है केवल जल। [19]

इक्कावन बाल पहेलियाँ (2009)– इस पुस्तक में इक्कावन बाल पहेलियॉ शामिल है। सभी पहेलियों के विषय बालको को प्रिय लगने वाली चीजों, महापुरुषों, प्राकृतिक उपादानों, घरेलू वस्तुओं से सम्बंधित हैं। साथ में सभी पहेलियों के उत्तर वाली चीजों के चित्र भी दिये गये है, जिससे बालक आसानी से समझ सके, इनकी भाषा अत्यंत सरल सहज है। सभी पहेलियॉ अत्यंत

रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, जिज्ञासा जाग्रत करने वाली हैं। ये बालको के मानसिक विकास में भी सहायक हैं। एक पहेली–

ऊँचा ऊँचा जो उड़े,
ना बादल ना चील,
कभी डोर उसकी खिचें,
कभी पेच में ढील। [20]

उपर्युक्त वर्णित सभी पुस्तकों में शिशु गीत, बाल कवितायें और किशोर काव्य सम्मिलित हैं तथा इनमें बाल काव्य के समग्र तत्त्व एवं गुण विद्यमान हैं। दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य अत्यंत सरल, सरस, माधुर्य पूर्ण, मनोरंजक, प्रेरक, रोचक होने के साथ साथ प्रकृति प्रेम, पर्यावरण चेतना तथा नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है। इन की बाल कवितायें, बालकों का भरपूर मनोरंजन करती हैं और उन्हें चरित्रवान नागरिक बनाने में भी सक्षम हैं। रचनाकार शर्मा स्वयं बालकों की तरह संवेदनशील, भावुक एवं कोमल ह्रदय हैं। इन गुणों को धारण करने वाला रचनाकार ही बात मन की कोमल भावनाओं और बाल संवेदना को आत्मसात कर सकता है और बालकों से जुड़ कर बाल सुलभ साहित्य रच सकता है। रचना क्रम में दीनदयाल शर्मा बोले मन की गहराई को समझने की अद्‌भुत पकड़ दिखाई देती है।

2.2.2 बाल कहानी संग्रह

चमत्कारी चूर्ण (2003)– प्रस्तुत कहानी संग्रह में छः कहानियां संग्रहित हैं। **प्रथम कथा 'चमत्कारी चूर्ण'** हैं। स्कूल में एक साधु बाबा दस रूपये में चूर्ण बेचने आता है, और कहता है कि इस को खाने से बच्चों के पंख आ जायेंगे और वे हवा में उड़ने लगेंगे। एक छात्र दुष्यन्त भी चूर्ण लेता है, घर आकर अपनी दीदी ऋतू को बताता है। वह कहती है कि बाबा झूठा है, ढोंगी है, लेकिन दुष्यन्त के बार–बार कहने पर वह मान लेती है। साधु बाबा ने दस साल से बड़े आदमी को बताने से इंकार किया था, इसलिए बच्चे माता–पिता को कुछ नहीं बताते और चूर्ण खा लेते हैं और साईकिल से गली में चक्कर लगाते हैं। बार–बार पीठ पर हाथ फेरकर देखते हैं कि पंख आये या नहीं। कुछ देर बाद उनके पंख आ जाते हैं, दोनों आसमान में उड़ने लगते हैं। वहाँ से एक चोर को चोरी करते हुए देखते हैं और पुलिस को पकडवा देते हैं। जैसे ही नींद खुलती है तो देखते हैं कि पंख तो आये ही नहीं, ये तो सपना था। किन्तु सपने में उड़कर भी बालक बहुत प्रसन्न थे। इससे ढोंगी साधु बाबाओं से सतर्क रहने की प्रेरणा दी गई है, जो भोले–भाले बालकों को बहला–फुसला कर बेवकूफ बनाते हैं।कहानी में जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। जो बाल कहानियो का प्रमुख उद्देश्य हे। इस संग्रह की प्रथम कहानी– **प्रहेलिका की प्रहेलिया–**इस की पात्र एक पहेलिका दस वर्ष कि बालिका है, जो छठी कक्षा में पढ़ती है, बहुत चतुर व् होशियार है,

बातूनी भी है, सबकी चहेती है। पहेलियों में उसकी विशेष रूचि है। एक दिन उसके पापा के मित्र उनके घर आते हैं, पापा घर पर नहीं होते अतएव प्रहेलिका उन से प्रतीक्षा करने हेतु कहती है, इस बीच वह उस से पहेलियाँ पूछती हैं, जो सुनने में आसान लगती है किन्तु अंकल उनके सही उत्तर नहीं दे पाते, अंत में प्रहेलिका ही सही उत्तर बताती है। कहानी अंत तक रोचक बनी रहती है, जिज्ञासा बरकरार बनी रहती है, बाल सुलभ चंचलता लुभाती है, भाषा सरल बालोपयोगी है, आज के बच्चे बहुत होशियार, बुद्धिमान हैं, इसका चित्रण कहानीकार ने अच्छे से किया है। **'बरसात'** विज्ञान पर आधारित कथा है, इस में बरसात कैसे होती है, यह बताया गया है। कहानी का पात्र दीपू है। वह एक दिन उसकी दीदी के स्कूल जाता है जहाँ टी. वी. से पढ़ाते हैं, वहां वह देखता है कि बारिश कैसी होती है और घर आकर अपने पापा को चाय की केतली में गर्म पानी भरकर पूरी विधि से बरसात के संदर्भ में बताता है। कहानी उद्येश्य पूर्ण है, भाषा चित्रात्मक है। **'सबसे बड़ी सजा'** कथा में स्कूल की प्रार्थना सभा का दृश्य है। राष्ट्र–गान के समय वहां झाड़ू लगाते हुए चपरासी झाड़ू छोड़कर सावधान की मुद्रा में खड़ा हो जाता है, यह बात प्रधानाध्यापक जी नोटिस करते हैं और सभी बच्चों को बताते हैं, वहीं एक शिक्षक ऐसा नहीं करके किन्तु अपनी गलती स्वीकार करके हैं, क्षमा मांग लेते हैं। कहानी में नैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों का उल्लेख किया गया है जो अनुकरणीय है। जीवन में जो हम सीखते हैं उसे आचरण में उतारने से ही वह सार्थक हो पाता है।

'ठोकर' कहानी का पात्र छठी कक्षा का सुनील नामक छात्र है जो बहुत शरारती है, हर चीज को ठोकर मारता रहता है, यहाँ तक कि बच्चों के भी एक दिन ईट से उसके पैर में ही ठोकर लग जाती है, खून बहने लगता है, बहुत दर्द होता है, तब उसे अपनी गलती का अहसास होता है और कभी किसी को ठोकर नहीं मारने का संकल्प लेता है। कहानी सरल एवं सहज है। **'आज़ादी का अर्थ'**–जयपुर शहर में एक आधुनिक साज–सज्जा से युक्त कोठी का दृश्य, जिसमें सुसंपन्न भरा–पूरा परिवार रहता है,साथ ही एक कुत्ता, तोता, माली, चौकीदार भी रहते हैं। अजय एक छोटा बच्चा है जो कक्षा तीन में पढता है। 15 अगस्त को स्कूल में शिक्षण द्वरा लिख कर दिया भाषण पढ़ने से आज़ादी का अर्थ समझ में आता है और घर आते ही पिंजरे में बंद तोते को आज़ाद कर देता है। कथा पारम्परिक ढ़र्रे से लिखी गई है किन्तु उद्येश्य अत्यंत शिक्षा प्रद है। राष्ट्रीय, नैतिक, सांस्कृतिक चेतना का चित्रात्मक वर्णन हुआ है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि चमत्कारी चूर्ण की सभी कहानियां बालोपयोगी, उद्देश्य पूर्ण, मनोरंजक, रोचक, सरल, सरस हैं।

चिंटू–पिंटू की सूझ (1987) – प्रस्तुत कृति में सात बाल कथाएं हैं, प्रथम शीर्षित कहानी **'चिंटू–पिंटू की सूझ'** है। इस के पात्र झबरी बिल्ली तथा चिंटू–पिंटू नामक दो बच्चे हैं। यह कथा वही दो बिल्लियों के झगड़े वाली है। जिसमें वे रोटी के लिए झगडती हैं, और बंदर उनको मुर्ख

बनाकर पूरी रोटी खा जाता है। इसे कहानीकार ने नया रूप दिया है। चिंटू–पिंटू भी रोटी के टुकड़ों को लेकर लड़ते हैं, गुथमगुत्था होते हैं, जैसे ही पास के पेड़ पर बैठा बंदर रोटी का न्याय करने को कहता है। बच्चों को अपनी माँ द्वारा सुनाई गई बंदर वाली कहानी याद आ जाती है और वो दोनों मिलकर अपनी–अपनी आधी रोटी खा कर खुश हो जाते हैं। बन्दर से कहते हैं कि अब हम आज के होशियार बच्चे हैं। तुम्हारी बातों में नहीं आने वाले। बहुत ठग चुके तुम बिल्लियों को। इस तरह प्रस्तुत कहानी सोध्येश्य है। बड़े सुंदर तरीके से कथा को नया स्वरुप देकर परस्पर सहयोग व् प्रेम से रहने की शिक्षा भी दे दी गई है। भाषा शैली सहज, सरस है। चिंटू पिंटू की सूझ के संदर्भ में **प्रख्यात साहित्यकार प्रभाकर माचवे का कथन प्रासंगिक है**–'चिंटू पिंटू की सूझ बड़ी सरल भाषा में, लोक कथा की शेली में लोमड़ी, मोर, कोयल, कौवा को आधार बनाकर सात कहानियों का संग्रह है, जो सुविचित्र है, छोटी आयु के बच्चो को ये खूब रुचेंगी। इसमें चमत्कार (सस्पेंस) भी है और बाल मनोविज्ञान का भी उचित ध्यान रखा गया है।'[21] **'लोमड़ी की सूझ'** कहानी जंगली एवं पालतू पशु–पक्षियों पर आधारित है। संदर्भित कहानी के पात्र, राजा शेर, मंत्री चिपकू बंदर, झुमरी लोमड़ी, गुप्तचर विभाग का मुखिया जम्बू हाथी, चीनू मुर्गी, सेनापति गबदू भालू हैं। कहानी का प्रारम्भ जंगल के एक दृश्य से होता है। जिसमें बहुत सारे जानवर आराम से रहते हैं, उनका राजा शेर होता है। शेर राजा एक दिन चीनू मुर्गी की फरियाद पर पीपल के पेड़ तले एक सभा बुलाता है, जिसमें चीनू मुर्गी अपनी पीड़ा बताते हुए कहती है कि, मेरे दडबे में आकर कोई रोज रात को मेरे अण्डों को कोई तोड़ जाता है। शेर मंत्री बंदर को तीन दिन में अपराधी का पता लगाने का आदेश देता है। साथ ही लोमड़ी से भी दड़बे के आस–पास की जाँच करने करने को कहता है। लोमड़ी चीनू से कहती है कि अपने अंडे पास वाली शालू मुर्गी के दडबे में रख आओ, जिसमें मधुमक्खियों का छत्ता लगा था। चीनू ने ऐसा ही किया। तीन दिन बाद शेर ने सभा बुलाई। मंत्री बंदर को नहीं देख कर जम्बू हाथी से उसे उठाकर लाने को कहा। बंदर को लाया गया, जिसका सारा शरीर मधुमक्खियों के हमले से सूजा हुआ था। अपराधी पकड़ा गया, राजा ने बंदर को मंत्री पद से हटा दिया और भालू से कोड़े लगवाए। सभी जानवरों ने 'झुमरी लोमड़ी जिंदाबाद', 'शेर राजा जिंदाबाद' के नारे लगाये। इस प्रकार कहानी में लोमड़ी की सूझ–बूझ, और शेर राजा के न्याय को दर्शाया गया है, जिसे एक आदर्श राजा के रूप में चित्रित किया गया है और लोमड़ी की चतुराई को भी। कहानी प्रेरणापद है। बाल मन के अनुरूप है। पात्र पशु–पक्षी होने के कारण कथा रोचक एवं अधिक मनोरंजक हो गई है।

'मोर कि जिद' रोचक कथा है, इस में मोर के पैर बदरंग कैसे हुए, इस का अंकन किया गया है। एक जंगल में बहुत सारे पशु–पक्षी होते हैं, और एक तालाब भी होता है जहाँ सभी जानवर पानी पीते हैं। एक साधु उधर से गुजरता है, प्यास बुझाने के लिए तालाब से पानी पीने लगता है लेकिन मनकू मोर इंकार कर देता है कि ये पानी हमारे लिए है। सभी जानवरों के

समझाने पर भी वह जिद पर अड़ा रहता है। साधु श्राप देता है कि अब जो भी इस पानी में जायेगा, वह बदरंग हो जायेगा, और वह प्यासा ही चला जाता है। मोर कहता है कि मैं नहीं मानता किसी श्राप को और पानी उतरने लगता है, तभी सभी पशु–पक्षी और स्वयं मोर भी देखते हैं कि उसके पैर बदरंग हो गए हैं, वह तुरंत बाहर आता है, अपने पांव देख कर दुखी हो जाता है। कालू कबूतर उस साधु को खोज कर लाता है। मोर साधु से क्षमा मांगता है लेकिन साधु कहता है कि तुम्हे अपनी गलती की सजा मिल गई। सभी जीवों की प्रार्थना पर साधु तालाब के पानी को बादल बना देता है और कहता है कि बादल से पानी तभी बरसेगा जब मोर नाचेगा। बादल घिर आते हैं, मोर नाचता है और रिमझिम–रिमझिम जल बरसता है, ताल भर जाता है, सारे जीव ख़ुशी से चहचहाने लगते हैं, लेकिन अपने बदरंग पांवों को देखकर मोर रोता भी है। इस कहानी में जिद नहीं करने की सीख है, जो बहुत रोचक ढंग से दी गई है। बारिश में बादलों को देख कर मोर क्यों नाचता है, कहानीकार ने ये भी बताने का प्रयास किया है। बालकों को यह कहानी रुचिकर लगेगी। जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है।

'कोयल की चालाकी' कहानी भी जंगल पर आधारित है। एक आम के पेड़ पर काली नाम की कोयल रहती है। जो बहुत मीठा बोलती है, अच्छा व्यवहार करती है किन्तु आलसी होती है। उसी के सामने वाले पीपल के पेड़ पर 'छबीली' नामक कौवी रहती है। दोनों में गहरी मित्रता होती है। कौवी बहुत मेहनती होती है और काली से कहती है कि कुछ काम करना सीख लो, आगे काम आएगा। कम से कम घोसला बनाना तो सीख लो ताकि जब अंडे देने का समय काम आ सके, वरना तब क्या करोगी। लेकिन काली उसकी बात नहीं मानती, कहती है काम करके क्या करना है। भोजन तो मिल ही जाता है। कुछ समय पश्चात् काली के अंडे देने का समय आता है, और उसे जमीन पर ही अंडे देने पड़ते हैं। वह बहुत सोचती है कि अब क्या होगा। उसे एक विचार आता है कि छबीली के घोसले में अंडे रख आती हूँ। वह ऐसा करती है और छबीली के अंडे फोड़ कर अपने रख देती है और अपनी चालाकी पर बहुत प्रसन्न होती है। छबीली को सब पता चल जाता है। छबीली को बहुत क्रोध आता है वह काली के पास जाती है और कहती है कि तुमने मेरे साथ दगा किया है, तुम बहुत धूर्त हो। पर काली पर कोई असर नहीं होता, वह फुर्र से उड़ जाती है। छबीली उसका पीछा करते हुए उडती है। तब से आज तक कोयल घोसला बनाना नहीं सीखी है। दोनों की दुश्मनी आज तक चल रही है। कहानी रोचक और लोक मान्यता पर आधारित है। अभी भी ऐसा ही माना जाता है कि कोयल अपने अंडे कौवी के घोसले में रखती है।

'कौवा काला क्यों' कथा में जैसा कि शीर्षक से ज्ञात हो रहा है कि आखिर कौवा काला कैसे हुआ। हजारों साल पहले सभी पक्षी सफ़ेद रंग के हुआ करते थे। एक दिन ब्रह्मा जी मन में विचार आया कि सबका एक रंग होने कारण इनको पहचान करने में परेशानी होती होगी, सो

क्यों न इन्हें अलग–अलग रंग दे दिए जाएँ। ब्रह्मा जी जंगल में जाते हैं, बरगद के पेड़ के नीचे आसान पर विराजमान होकर सभी पक्षियों को एकत्र करते हैं और सब को मन पसंद का रंग चुनने को कहते हैं। बारी–बारी से सभी को अपनी पसंद का रंग दे देते हैं। कौवे की बारी आती है तो वह कहता है कि मुझे पीला रंग दे दो। लेकिन पीले रंग पसंद नहीं आता, फिर कहता है कि नीला रंग दे दो। ब्रह्माजी जी ने नीला रंग दे दिया ।जो मिलकर हरा बन गया, उसे हरा भी अच्छा नहीं लगा, फिर लाल रंग मांगता है जो नीले पर चढ़ते ही बैंगनी बन जाता है, वह भी कौवे को नहीं सुहाता। ब्रह्माजी को गुस्सा आता है और कहते हैं कि तुझे कोई रंग अच्छा नहीं लगा, अब तू काला हो जा। काले रंग से कौवा बहुत दुखी होता है और वापस पीला रंग मांगता है लेकिन ब्रह्माजी कहते हैं कि तुझे अपनी ही पसंद से संतोष नहीं हुआ, अब कुछ नहीं हो सकता। इस तरह कौवा हमेशा के लिए काला हो गया।कहानी बालकों को जरुर पसंद आएगी। भाषा अत्यंत सरल है। अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है। संतोष करना भी जरुरी है, यह इस कथा से शिक्षा मिलती है ।

'चिंटू–पिंटू की सूझ' कृति कि सभी कथाएं प्रकृति के निकट हैं। जंगलाराधित होने के कारण वातावरण की मनोहरता, सुरम्यता मन को मोह लेती है। सभी के पात्र पशु–पक्षी हैं, इसलिए सुरुचिपूर्ण एवं मनोरंजक हैं।

पापा झूठ नहीं बोलते (1997) : प्रस्तुत कृति में छः कहानियां संग्रहित हैं। पहली कहानी **'इनाम और सजा'** हैं। यह एक स्कूल की कथा है। स्कूल में नये प्रधानाध्यापक जी आते हैं जो ईमानदार, कर्मठ, अनुशासित और निष्ठावान हैं। छात्र आकाश ओर नरेश पढाई के समय स्कूल से बाहर चले जाते हैं। सडक पर ट्रक की टक्कर से आकाश नरेश को बचाता है। जिसकी खबर हेडमास्टर जी मिलती है, दोनों बच्चों से सारी बात की जानकारी लेते हैं, सच से अवगत होते हैं, आकाश को बाल सभा में बहादुरी के लिए पुरस्कार स्वरुप पुष्पगुच्छ भेंट करते हैं साथ ही बिना पूछे स्कूल बाहर जाने पर सजा स्वरुप दोनों को तीन दिन के लिए स्कूल से निकाल भी देते हैं। कहानी रोचक है, जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। **'पश्चाताप के आँसू'** में कालू और पप्पू दो छात्र होते हैं। पप्पू को कहानी पढ़ने में रूचि होती है। वह प्रतिदिन कहानी की किताब लेने के लिए गुरूजी के घर जाता है। उसका मित्र कालू भी उसके साथ जाता है। गुरूजी चाय बनाने जाते हैं, पप्पू कहानी की किताब पढने लगता है किन्तु कालू इधर–उधर चीजों को छेड़ने लगता है। मेज पर एक रुपया देख कर उसके मन में लालच आ जाता है और वह रुपथा जेब में रख लेता है। गुरूजी चाय लेकर आते हैं, कालू को खड़ा देख कर पूछते हैं तुम्हें कहानी पढना अच्छा नहीं लगता, वह इंकार कर देता है, तभी गुरूजी की नजर मेज पर जाती है, एक रुपया वहां नहीं देख कर उन्हें कालू पर संदेह होता है, चाय पीकर, कालू जल्दी से जाने लगता है, गुरूजी उसे बारबार रोकते हैं, उसकी जेब की तरफ देखते हैं, कालू डर सा जाता है। गुरूजी उसे प्यार से

पास बुलाते हैं और उसकी जेब से एक रुपया निकाल लेते हैं। कालू गुरूजी के पैरों में गिर कर फूट–फूट कर रोने लगता है। गुरूजी उसे पुचकार कर उठाते हैं, कहते हैं, कोई बात नहीं, तुम्हें अपनी गलती का अहसास है, ये बड़ी बात है। कालू रोते–रोते कहता है 'अब कभी चोरी नहीं करूँगा। कहानी में गलती करके उसे स्वीकार कर लेना और गलती करने वाले को क्षमा कर देना, इन दोनों मूल्यों को उजागर किया गया है। कहानी सफल कही जा सकती है।

'आखिरी हथियार' कथा श्याम और मोहन सहपाठियों की है, दोनों कक्षा आठवीं में पढ़ते हैं, मोहन पढने में बहुत होशियार है, श्याम कमजोर है। मोहन को हर विषय में 'गुड' मिलते हैं, यह देखकर श्याम को ईर्ष्या होती है और वह बार–बार अभ्यास करके मास्टरजी जैसे 'गुड' अपनी कोपी में दे देता है, और मोहन को बताता है कि तुझ से अधिक 'गुड' मेरी कोपी में है, मोहन को विश्वास नहीं होता। ये सारा वार्तालाप मास्टरजी सुन लेते हैं, पूछने पर श्याम कहता है कि आप ने ही तो 'गुड' दिए थे। मास्टरजी कुछ नहीं कहते और जाने लगते हैं, तभी श्याम उनको रोकता है और फूट–फूट कर रोते हुए कहता है कि ये 'गुड' मैंने ही दिए हैं, मैंने आप से झूठ बोला है, आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा, आप मेरी पिटाई कीजिये, पिटाई कीजिये। मास्टरजी उसे छाती से लगाते हुए कहते हैं कि 'किसी को सुधारने के लिए केवल पिटाई ही तो आखिरी हथियार नहीं है। अपनी गलती पर पश्चाताप कर लेना ही सुधरने का उत्तम मार्ग है। कहानी सोध्येश्य है। यह कहानी उधेश्यपूर्ण व् प्रभावी है।'[22]

शिवगणेश की चतुराई, शिवगणेश और भोलाशंकर नामक दो मित्रों की कहानी है, शिवगणेश पढ़ा–लिखा और चतुर है जबकि भोलाशंकर सीधा–साधा है। दोनों राजा बाणभट्ट के पास नौकरी के लिए जाते हैं, राजा उनकी परीक्षा लेता है। जिसमें शिवगणेश को अपनी चतुराई के कारण मंत्री की नौकरी मिल जाती है और भोलाशंकर को दरबान की। कहानी दर्शाती है कि जिसकी जैसी योग्यता वैसा ही कार्य उसे मिलता है। **'अंजू की सीख'** एक लड़की कि कथा है जो कक्षा छ में पढ़ती है, बुद्धिमान, चतुर और बहुत हाजिर जवाब है। हर बात का ऐसा उत्तर देती है कि बड़े–बड़े निरुत्तर हो जाते हैं। इस कहानी में दो कहानियां है जिनके माध्यम से अंजू की हाजिर जवाबी और सीख सामने आती है। पहले सभी को उसकी बातें अटपटी लगती हैं किन्तु कुछ देर बाद में मर्म समझ में आता है। कहानी में अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है। यह नए ज़माने की कथा है, आज के बच्चे बहुत स्मार्ट और हाजिर जवाब हो गये हैं। **'पापा झूठ नहीं बोलते'** सुरभि नाम की एक बालिका जिसकी उम्र ग्यारह वर्ष है, पर आधारित है। वह पापा की बहुत लाडली बेटी है। सुरभि पापा से स्कूल की हर बात बांटती है। स्कूल की एक घटना से उसे मालूम होता है कि लड़के के जन्म पर थाली बजाते हैं, किन्तु लड़की के जन्म पर नहीं और वह यह बात पापा से पूछती है तो कहते हैं कि लड़की के जन्म पर भी बजाते हैं। सुरभि मान भी लेती है कि पापा झूठ नहीं बोलते, जबकि पापा उसका मन रखने के लिए ऐसा कहते हैं। बाद में

पापा कहते हैं कि मैंने झूठ कहा है, मुझे क्षमा कर दे, फिर भी वह ये ही कहती है कि पापा झूठ नहीं बोलते।कहानी में बेटे तथा बेटी में सदियों से चले आ रहे भेद–भाव जैसी रुढिवादिता का विरोध दर्शाया गया है। बेटियों को भी बेटों के बराबर मानने की पैरवी की गई है। चरित्र–चित्रण और उद्देश्य की दृष्टि से कहानी सशक्त और वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक है।

'मित्र की मदद' (2016)– यह कृति 2018 में 'बोधि प्रकाशन से आई है इसमे छः कहानियॉ़ है। संग्रह की प्रथम कथा गिल्लू गिलहरी और टिल्लू तोते की है। वे दोनों पास–पास लगे पेड़ों पर रहते हैं, पडौसी होने के साथ–साथ दोनों अच्छे मित्र भी हैं। एक दिन गिल्लू को सर्दी लगकर बुखार आ जाता है, वह टिल्लू को आवाज देती है, लेकिन टिल्लू नहीं आता। गिल्लू खुद उठकर सिनकोना पेड़ के दो पत्ते चबा लेती है क्योंकि उसकी माँ से उसने यह सुन रखा था। जब गिल्लू की तबियत ठीक हो जाती है वह फिर बाहर आकर टिल्लू को पुकारती है, उसे नहीं आते देख कर गिल्लू को संदेह होता है। वह उसके घोसले में देखती है, वहां टिल्लू नहीं होता। आदमी के पैरों के निशान देख कर, उनके पीछे–पीछे जाती है, उसे टिल्लू की आवाज सुनाई देती है, वह और आगे बड़ती है। एक नीम के पेड़ पर लटके पिंजरे में टिल्लू को देख कर, दबे पांव पेड़ पर चढ़ कर टिल्लू को आजाद कर देती है, टिल्लू उड़ जाता है, गिल्लू की आँखे नम हो जाती हैं। 'मित्र की मदद' शीर्षक सार्थक है। इस कथा में मैत्री–भाव का सुंदर चित्रण हुआ है। प्रकृति–प्रेम, पक्षी प्रेम के साथ किसी जीव को कैद नहीं करना चाहिए, की भी सीख मिलती है।

'बिबो बकरी की हिम्मत' में बिबो के सोनू, मोनू नाम के दो बच्चे होते हैं। एक दिन वह बच्चों को बाहर नहीं निकलने की हिदायत देकर किसी काम से बाहर जाती है क्योंकि जंगल में एक शेर पागलशेर घूम रहा होता है। बच्चे माँ की बात नहीं मानकर बाहर आकर खेलने लगते हैं, तभी शेर आ जाता है और मोनू को अपना शिकार बना लेता है। चमकू हिरण सोनू को बचाकर ले जाता है। बिबो घर आकर यह सब देख कर बिलख पड़ती है और अपने बच्चे का बदला लेने की ठान लेती है। एक दिन अवसर देख कर शेर का सामना करके उसे अपने तीखे सींगों से मार डालती है। सब जानवर उसकी हिम्मत की दाद देते हैं। कहानी वात्सल्य, ममता, संवेदना, भाव से ओतप्रोत है। हिम्मत से ताकतवर को भी परास्त किया जा सकता है, यह सीख मिलती है। संवाद चुटीले, रोचक, पात्रानुकूल हैं, भाषा सरल, सहज है। मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया गया है। **'लालच का फल'** कहानी काली कुतिया और भूरी सुअरी पर आधारित है? दोनों के घर पास–पास हैं, दोनों अच्छी सहेलियां हैं। एक दिन दोनों सड़क पर पड़े भोजन को खा रही थीं, तभी एक ट्रक दूर से आता हुआ दिखाई देता है, काली कहती हैं कि बहिन दूर हट जाओ, लेकिन भूरी खाने में ही लगी रहती है, देखते ही देखते और ट्रक से टकरा कर घायल हो जाती है। काली उसे अस्पताल ले जाती है, जहाँ उसका लम्बा इलाज चलता है। भूरी के बच्चों को

काली अपने बच्चों की तरह ही प्यार से पालती है, अपना दूध पिलाती है। लालच नहीं करना चाहिए, यही इस कथा का उद्येश्य है। ममत्त्व, प्रेम, मैत्री, सद्भाव, अपनापन, संवेदनशीलता आदि मूल्यों का उल्लेख प्रेरणाप्रद है। 'अगली कहानी **'मोर राजा का फैसला'** है, जो निष्पक्ष न्याय को उजागर करती है। एक बार जंगल के पक्षी अपने मोर राजा के पास शिकायत लेकर आते हैं कि हमारे घोसलों को न जाने कौन तोड़ जाता है। मोर चिंतित होता है और मंत्री मन्नू उल्लू को अपराधी का पता लगाने के आदेश देता है। मंत्री को रास्ते में कौवा मिलता है, दोनों कि इस विषय में बात होती है, कौवा कहता ही कि यह चिकी कमेडी की करतूत है। मंत्री के कहने पर मोर चिकी को दंड देने का फैसला करता है। चिकी बार बार फरियाद करती है कि यह मैंने नहीं किया, पर राजा उसकी एक नहीं मानता। उस को सजा होने ही वाली होती कि चिंकी का पति चीकू कमेड़ा असली गुनहगार का पता लगा कर आता है कि महाराज, असली मुजरिम तो उल्लू कौवा है। मोर सेनापति जम्बो बाज को कौवे को लाकर पेश करने को कहता है। कौवे को लाया जाता है, चीकू की बात सच निकलती है। मोर उसे दंड देने के आदेश देता है किन्तु चीकू कमेड़े के कहने पर उसे क्षमा दे कर देता है लेकिन देश निकाला दे देता है। मन्नू उल्लू को मंत्री पद से हटा कर चीकू को नया मंत्री मनोनीत कर देता है। तब से कमेड़ी व कौवे की दुश्मनी चली आ रही है। निष्पक्ष न्याय हुआ और अपराधी को क्षमा किया गया। इस कथा में 'क्षमा बडन को चाहिए 'मूल्य का मूल्य दिखाया गया है। कहानी की प्रवाहशीलता श्लाघ्य है।

'दृढ संकल्प का चमत्कार' में मदिरापान की ज्वलंत समस्या को उठाया गया है। जंगल में शेरसिंह राजा के आदेश पर सभी जानवरों के विरोध करने पर भी शराब की दुकान खोली जाती जाती है। तीन दिन तक मुफ्त में शराब पिलाई जाती है। सब जानवरों की पीने की आदत पड़ जाती है, कुछ दिनों बाद कई जानवर शराब पीने से बीमार पड़ जाते है। तीन अंधे हो जाते हैं। घर बर्बाद होने लगते हैं। खाने के लाले पड़ने लगते हैं। जानवरों की पत्नियों और बच्चों के समझाने पर सारे जानवर मिल कर शराब नहीं पीने का दृढ संकल्प लेते हैं। जंगल में उत्सव मनाया जाता है। सभी जानवरों का मानवीकरण प्रशंसनीय है। कहानी आधुनिक समस्या पर केन्द्रित है, शराब को दृढ संकल्प से ही छोड़ा जा सकता है। सामाजिक विसंगतियों, के साथ सामाजिक चेतना पर भी जोर दिया गया है। गलत का विरोध दर्ज हुआ है। कथा सभी तत्त्वों पर खरी उतरती है। **'सीख न मानने की जिद'** बच्चों के लिए उपयोगी कहानी है। बच्चे अक्सर बड़ों की बात को नकार देते हैं, जिसका परिणाम उनको भुगतना पड़ जाता है। जंगल के एक स्कूल होता है जिस में बच्चे बस के द्वारा आते–जाते हैं। चिपकू बंदर कंडक्टर भालू के बार–बार मना करने के बाद भी, मास्टर जी नक़ल करते हुए हर बार चलती बस से उतरता है। आखिर एक दिन चलती बस से गिर जाता है। उसका पैर टूट जाता है और हमेशा के लिए लंगड़ा हो जाता

है। कहानी छोटी है किन्तु उद्देश्य बड़ा है। बड़ों को भी सडक नियमों की अनुपालना करनी चाहिए। आधुनिक जीवन शैली को दर्शाती यह कथा शिक्षाप्रद व प्रभावी है।

'बड़ों के बचपन की कहानियां' (1987)– इस कृति नौ महान पुरुषों के बचपन के प्रेरणा दायक प्रसंगों पर आधारित है, ये महापुरुष–न्यायमूर्ति, नेता और गुरु महादेव गोविन्द रानाडे, इब्राहीम लिंकन, लाल बहादुर शास्त्री, सुप्रसिद्द गायिका केसर बाई, विद्यासागर, साहसी रेवाराम ,सिकन्दर, महारानी विक्टोरिया, क्रन्तिकारी नेता सुभाषचन्द्र बोस। 'सही न्याय' में एक बालक निर्जीव खम्भे के साथ एक खेल खेलता है और उसके साथ भी न्याय करता है, खेल में स्वयं उससे हार जाता है। ये बालक आगे चलकर न्यायमूर्ति गोविन्द रानाडे के नाम से प्रख्यात होता है।इस प्रकार सभी प्रसंग जीवन मूल्यों से अनुप्राणित हैं, यथा–परिश्रम, दृढ निश्चय, सच्ची लगन, न्याय, गरीबों की मदद, मानवीयता ,साहस, आत्मविश्वास, मानवीय संवेदना, वास्तविक पूजा आदि। इन्हें रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने अतिशय रोचकता, सहजता, बाल–मनोनुकूलता, सुरुचिपूर्णता के साथ रचा है। भाषा–शैली बालकों के अनुरूप सरल है, कहानियों का प्रवाह तरलता से बहता है। बाल मन के उत्कर्ष, व्यक्तित्त्व के विकास में बहुपयोगी है। बालक इन्हें पढ़कर श्रेष्ठ नागरिक बन सकेंगे।

2.2.3 बाल नाटक और एकांकी संग्रह

सपने (2007)– 'सपने' एकांकी का कथानक पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के सपने को ध्यान में रख कर रचा गया है। 'शांत और सौम्य चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिये कलाम साहब बोले 'वाट दिस अबाउट' मैने उन्हें बताया कि इस किताब में एक ऐसा नाटक है जो बच्चों को अनुशासन में रहना सिखाता है, जो कि आपकी ही शिक्षा है। कलाम साहब ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए किताब का लोकार्पण किया, उसमें शुभकामनाए लिखकर अपने हस्ताक्षर कर दिए।'[23]

इस के पात्र कक्षा के छात्र और एक शिक्षक है, जिनके नाम क्रमश विकास, विनोद, हनीफ, आशा, जागृती, डेविड, मस्तान और शिक्षक प्रकाश। एकंकी का प्रारम्भ कक्षा–कक्ष से होता, जिसमें केवल बच्चे हैं, जो तरह–तरह की शरारतें कर रहे हैं, तभी अध्यापक प्रकाश का कक्षा में पहली बार प्रवेश होता है। प्रकाश सबका अभिवादन स्वीकार करके सब से पहले अपना परिचय देते हैं, फिर एक–एक करके विद्यार्थियों से उनका नाम और वे आगे चलाकर क्या बनना चाहते हैं, आप के भावी सपने क्या–क्या हैं, ये सब भी पूछते हैं। सब बच्चे एक–एक करके अपने–अपने सपने के विषय में बताते हैं–विकास डॉक्टर, हनीफ अफसर, डेविड नेता, जागृति मन और कर्म से इन्सान बनना चाहती है, आशा चाहती है कि सब मिलजुल कर रहें, कोई आपस में झगड़ा नहीं करे, सब के बीच अमन शांति, सद्भावना बनी रहे, इस प्रकार सब के अपने अपने सपने हैं।

बीच–बीच में प्रकाश हर बालक के सपने की प्रशंसा करते हैं, शाबासी देते हैं, उत्प्रेरित करते हुए कहते हैं कि आप सब के सपने बहुत ऊँचे एवं उत्तम हैं। भावी सुखद तथा आदर्श जीवन–यापन के लिए सभी बालकों को सपने अवश्य देखने चाहिए और उनको पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए, क्योंकि सपने देखेंगे तभी तो पूरे होंगे। इस वार्तालाप के मध्य प्रकृति–प्रेम के संदर्भ में प्रकाश कहते हैं कि इन्सान ने प्रकृति के साथ जो छेड़छाड़ की है, उसका परिणाम आज भोग रहा है। अनुशासन के प्रसंग में, जिस का का अंग्रेजी उच्चारण 'Discipline'-है, के एक–एक प्रथम वर्ण को लेकर प्रकाश बहुत अच्छे व् सुंदर तरीके से व्याख्या प्रस्तुत करते है। जिसमें लेखक की मौलिकता उल्लेखनीय है। सारांश है कि अनुशासन में रह कर ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। कथानक छोटा किन्तु महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित है। पात्रों की संख्या एकांकी की मांग के अनुरूप संतुलित है। देशकाल का भी पूरा भी ध्यान रखा गया है।वर्तमान समय की शिक्षण–व्यवस्था, आधुनिक विद्यार्थियों की सोच व शरारतों, उनके मानसिंक स्तर का सुव्यवस्थित ढंग से चित्रण हुआ है। यथा स्थान अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों का प्रयोग नाटक को प्रभावी बनाता है। संवाद सरल, संक्षिप्त, लम्बे, चुटीले, रोचक व पात्रानुकूल हैं। भाषा–शैली बालकों के स्तर के अनुसार सरल, सहज एवं पात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप है। उद्देश्य स्पष्ट है कि बाल्यावस्था से ही इन्सान को ऊँचे सपने देखने चाहिए और उन्हें दृढ़ता के साथ पूरा करके श्रेष्ठ जीवन जीना चाहिए, साथ ही माता–पिता को भी चाहिए कि बच्चों के सपने को पूरा करने में उनकी सहायता करे। तभी समाज एवं राष्ट्र उन्नत बन सकता है। सार यह है कि 'सपने' बालोपयोगी तथा किशोरों के लिए भी बहुत प्रेरणास्पद है, मनोरंजक भी है, शिक्षाप्रद भी, एक वाक्य में कहें तो 'गागर में सागर' है। बाल मनोविज्ञान को भली–भाति समझने वाले नाटककार दीनदयाल शर्मा इस के लिए साधुवाद के पात्र हैं ।

फैसला (1988) – यह पुस्तक 'लोमड़ी की सूझ' कहानी का लगभग नाट्य रूपांतरण है जिसमें शीर्षक एवं कुछ पात्रों के नाम बदल दिए गये हैं। नाटक संवादात्मक शैली में होने के कारण अतिशय रोचक हो गया है। इस में राजा द्वारा उचित फैसला लेकर दोषी को समुचित दंड दिया जाता है जो उल्लेखनीय है। कथानक लघु आकार का है, सभी पात्र अपनी–अपनी भूमिका में खरे उतरते हैं। संवाद बहुत ही चुटीले, व्यंग्य प्रधान, सरल, पात्रानुकूल हैं। उद्देश्य निष्पक्ष न्याय है । इस नाटक पर बाल भारती नई दिल्ली के अनुसार लिखा है–'फैसला नाटक में लेखक ने जंगल के समाज में तोड़–फोड़ का वातावरण उपस्थित कर वर्त्तमान समाज की दशा को कुरेदने का अच्छा प्रयास किया है, जहां रक्षक ही भक्षक बन जाएं, वहा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन ही कारगर साबित हो सकता है, बालको के मन में गहरे बैठ कर अच्छा सन्देश पंहुचानें में लेखक का प्रयास सुंदर है।[24]

फैसला बदल गया (1999)—यह नाट्य कृति एक सामाजिक कुरीति, 'सुबह—सुबह जिस आदमी का मुंह देखो दिन वैसा ही बीतता है' पर आधारित है। यदि अच्छे व्यक्ति का मुंह दिख जाये तो दिन अच्छा बन जाता है, वहीँ, किसी मनहूस का चेहरा देख लेने से पूरा दिन ख़राब हो जाता है, ऐसी हमारे समाज की मान्यता बन चुकी है। इस नाटक के पात्र महाराज, मंत्री, हरकू धोबी, राजगुरु हैं। महाराज एक दिन सुबह— सुबह धोबी का मुंह देखता है, उसी दिन राजकुमारी को लड़के वाले देखने आते हैं, और रिश्ते को ठुकरा देते हैं। यह बात महाराज अपने मंत्री को बताते हैं, मंत्री पूछता हैं कि आज आपने सुबह—सवेरे किस का मुंह देखा था? महाराज कहते हैं कि हरकू धोबी का। मंत्री उत्तर देता हैं कि, महाराज, वह तो मनहूस हैं, उसका राज्य में रहना उचित नहीं हैं। महाराज इसका उपाय भी मंत्री से ही पूछते है, जिसके उत्तर में वह कहता है, महाराज उसे मृत्यु दंड दे दीजिये। महाराज ऐसा ही करते हैं, धोबी बहुत गिड़गिडाता कि महाराज मैं मनहूस कैसे हुआ। मैं तो मेहनत और ईमानदारी से कमाता और खाता हूँ, किसी का बुरा नहीं करता, अपने रस्ते आता जाता हूँ। मैं निरपराधी हूँ। मुझे दंड मत दीजिये। महाराज उसकी एक नहीं सुनते। उसे दंड दिया जाने लगता है तभी राजगुरु का प्रवेश होता है। वे इस संदर्भ की सारी सच्चाई की जानकारी महाराज से लेते हैं। धोबी का दंड रुकवाते हैं और कहते हैं कि तुम मंत्री के बहकावे में आकर निर्दोष को सजा देने जा रहे हो। दंड देना है तो ऐसे अंधविश्वासों, कुरीतियों, भ्रामक धारणाओं को दीजिये, किसी भोले भाले इन्सान को नहीं। राजगुरु की बात सुनकर महाराज की आँखें खुल जाती है और अपना फैसला बदल लेते हैं। महाराज राजगुरु के चरणों में गिरकर माफ़ी मांगते हैं ।

जंग जारी है (रेडियो नाटक संग्रह, 2017)— प्रस्तुत नाटक संग्रह में नौ नाटक हैं जो किशोरोपयोगी हैं—घर की रोशनी, रिश्तों का मोल, मेरा कसूर क्या है, पगली, अपने—अपने सुख, जंग जारी है, अँधेरे की तस्वीर, मुझे माफ़ कर दो, रिश्ता विश्वास का। 'घर की रोशनी' में बेटे—बेटी का भेद उभर कर आया है, बाद में बेटी की महत्ता समझ में आती है। अंत सुखद है। बेटा घर का दीपक है तो बेटी घर की रोशनी, यही इस रचना का मर्म है। **'रिश्तों का मोल'** आज के टूटते—बिखरते रिश्तों की पीड़ा को व्यक्त करता है और बुढ़ापे में माता—पिता के साथ बेटे—बहू के तिरस्कार पूर्ण व्यवहार की निर्मम तस्वीर सामने आती है। माता पिता बेटों के उपर बोझ बन जाते हैं, ये वर्तमान की कडुवी सच्चाई है, जिसे नाटककार ने बहुत भली प्रकार से प्रस्तुत किया है। **'मेरा क्या कसूर था'** टूटते बिखरते परिवारों, नशे की लत एवं नारी उत्पीडन की कथा है, जिसे नाटकीय स्वरुप में रचनाकर ने अंकित किया है। **'पगली'** नाटक में नारी जीवन की त्रासदी का दीनदयाल शर्मा ने बहुत खुलकर चित्रण किया है जिसमें औरत के बाँझपन के दर्द को बड़े मार्मिक ढंग से वर्णित किया है। नारी अगर माँ नहीं बन पाती है तो समाज द्वारा उसे कितनी प्रताड़ना सहनी पड़ती है, इसी पीड़ा को दर्शाता है यह नाटक। हमारे समाज की यह

क्रूर रूढ़ी बन चुकी है कि बाँझ औरत का सुबह–सुबह मुंह देखना भी अपशकुन माना जाता है। हर मांगलिक कार्य में उसे दूर रखा जाता है, जीवन भर परिवार और समाज के तानों से उसका कलेजा छलनी हो जाता है। कितना बड़ा पाखंड है कि बच्चे पैदा नहीं हो तो नारी ही दोषी है, पुरुष नहीं, लेकिन समाज इस सच को आज तक स्वीकार नहीं कर पाया है। इस प्रसंग में नारी ही नारी की दुश्मन बनती है। इस की नायिका शांति इस पीड़ा को सहते सहते अंत में टूट कर बिखर जाती है। उसकी स्थिति पागल जैसी हो जाती है। **'अपने–अपने सुख'** नाटक में भी पुत्र मोह की लालसा उभर कर आई है। और फिर चार–चार बेटियों के बाद पुत्र का जन्म हो तो माता–पिता ख़ुशी में फूले नहीं समाते। बेटियों के मुंह का निवाला छीन कर बेटो को पुष्ट किया जाता है, क्योंकि पुत्र कुल–दीपक है। पुत्र रत्न की कामना के लिए क्या कुछ नहीं करते माँ–बाप। नाटक का ताना–बाना दीनदयाल शर्मा ने बड़ी सुघड़ता से बुना है। वही बेटा जब बड़ा होता है तो माता–पिता को उपेक्षित करता है, भला–बुरा सुनाता है, जुबान लड़ाता है, तब उन्हें अपनी बेटियां याद आती हैं। अपनी गलतियों पर पछताते हैं। नाटक के अंत में बेटियों को बचाना, उनका का सम्मान करना, उन्हें मन से अपनाना, ये ही सन्देश इस नाटक द्वारा प्रेषित किया गया है। कन्या भ्रूण हत्या बंद करने, नारी नारी की शत्रु न बने, इसके लिए समाज में जागरूकता पैदा की जाये, यह इस रचना का मूल ध्येय है। शीर्षित रचना **'जंग जारी है'** में पुत्र–जन्म पर थाली बजाकर ख़ुशी प्रकट की जाती है, लेकिन बेटी के जन्म पर माता–पिता का मुँह लटक जाता है। यही नहीं जहाँ तक इनका वश चलता है, उसे दुनिया में आने ही नहीं देते। इस नाटक में नाटककार सारे उतार–चढाव के पश्चात् अंत में बेटी के जन्म पर थाली बजवा ही देते हैं। ये ही इस रचना की सार्थकता है। इसके संदर्भ में मदन मोहन लढ़ा ने लिखा है–जंग जारी है पुस्तक में संकलित नाटक सामाजिक प्रष्ठभूमि पर रचित है, जिनमे समाज में व्यापत बुराइयों और विसंगतियों के खिलाफ आवाज़ मुखरित है। मसलन 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ' का आह्वान समाज की ज्वलंत समस्या के समाधान की सकारात्मक पहल है।'[25]

'जंग जारी है' के अन्य नाटक भी समाज की रूढ़ियों, अंधविश्वासों, रूढ़ परम्पराओं, दहेज–प्रथा, नारी शोषण, कुप्रथाओं, पुत्र मोह आदि के विरुद्ध बुने गये हैं। सभी नाटक नारी शोषण, उत्पीड़न, प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाते हैं। समग्र कृति आधुनिक जीवन शैली का जीता–जागता चित्र दर्शाती है और कुंठा, तनाव, उहापोह, पीड़ा, अन्तर्द्वन्द्व, मानसिक विक्षिप्तता, पागलपन, निराशा, अवसाद, संत्रास का यथार्थवादी वर्णन किया गया है। यह सम्पूर्ण कृति समाज के नकारात्मक पक्ष की तस्वीर दिखाती और कटु यथार्थ को प्रस्तुत करती है।

2.2.4 संपादन और पत्रकारिता

कलम के सिपाही दीनदयाल शर्मा ने पत्रकारिता के क्षेत्र में काफी ख्याति अर्जित की है। अपनी सरकारी नौकरी के पूर्व अनेक पत्र–पत्रिकाओं में दैनिक तेज, दैनिक तेज केसरी, गंगानगर पत्रिका, युगपक्ष आदि में पत्रकार के रूप में कार्य कर चुके हैं। इनमें नियमित स्तम्भ भी लिखते हैं, डुक भी लिखते हैं। संपादक शर्मा पहले अलग–अलग नामों से लिखा करते थे जैसे–लंकेश्वर, दिनेश्चर, प्रयागराज, दीनदयाल शर्मा आदि। इन समाचार पत्रों में अपने गांव की खबरें, रिपोटर्स और पानी–बिजली, सड़क–स्वास्थ्य आदि समस्याओं के बारे में भी खूब लिखा है। कई पत्र पत्रिकाओं, स्मारिकाओं एवं पुस्तकों का संपादन इन्होंने किया है। दीनदयाल शर्मा एक सुलझे हुए संपादक हैं। इनके द्वारा संपादित साहित्य–

- **साहित्य संपादक (मानद) 'टाबर टोली' (पाक्षिक बच्चों का हिंदी अखबार) 2003 से प्रकाशित**
- **संपादक (मानद) 'कानिया मानिया कुर्र' (बच्चों का राजस्थानी अखबार, 2005)**
- **संपादक (मानद) 'पारस मणि' (बच्चों का राजस्थानी तिमाही पत्रिका) का जुलाई, 3013 से प्रकाशन**
- **संपादक, 'आखर भटेसर' (साक्षरता की मासिक पत्रिका) 'भटनेरिका (स्मारिका)**
- **'घग्घर' (स्मारिका, "बाल साहित्य समीक्षा वर्ष:30 फरवरी–2017, बाल कथा संग्रह पुरस्कार का दण्ड, घुंघरूओं की आवाज)**

कोई भी अखबार निजी व्यय पर प्रकाशित करना बच्चों का खेल नहीं है, लेकिन इस श्रमसाध्य और व्ययसाध्य कार्य को भी बाल मन के चितेरे दीनदयाल शर्मा ने बड़ी कुशलता, निष्ठा, समर्पण भाव एवं लगन के साथ साकार कर दिखाया है। 'टाबर टोली' (पाक्षिक) देश का प्रथम बाल अखबार है, जिसका श्री गणेश 14 नवम्बर, 2003 से हुआ। तब से इसके मानद और साहित्य सम्पादक दीनदयाल शर्मा हैं। देश भर में प्रसारित होने वाले इस पत्र की प्रति पक्ष छः हजार प्रतियाँ प्रकाशित होती रही हैं। तब से अब तक संपादक शर्मा इस कार्य को तपस्या की तरह पूरी तन्मयता, जिम्मेदारी और नियमित रूप से निभा रहे हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से यह बाल–पत्र काफी समृद्ध है। इसमें सारी सामग्री बालोपयोगी होती है, जैसे–बाल गीत, बाल कहानियां, बाल पहेलियाँ, बाल साहित्यकारों के प्रेरक प्रसंग, उनके साक्षात्कार, बालकों के सामान्य ज्ञान को बढ़ाने वाली बातें, उपयोगी समाचार, डुक, टाबर टून, अब हंसने की बारी है, (चुटकले जो बच्चे ही भेजते हैं) महापुरुषों के अनमोल विचार, खाना खजाना एवं कई बालोपयोगी छोटे लेख जैसे–योग आसन आपके बच्चे को रखेंगे चुस्त–दुरूस्त, धुमपान से बच्चों में मोटापे का खतरा सहित होते हैं। आज यह पत्र बालकों के हाथों में पहुँच रहा है। क्या छोटे क्या बड़े सभी

इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। आज इस अखबार ने देशभर में अपनी अलग पहचान बनाई हैं। पाठकों विद्वानों की नजर में टाबर–टोली–

के.के. बोहरा (सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर) 'बच्चों के अखबार 'टाबर टोली' की कल्पना तो मेरी सोच से परे हैं। इस पूंजीवादी युग में सबकी जरूरत धन–लक्ष्मी है वहीं दीनदयाल शर्मा जैसे कलमकार अपनी सोच से देश और समाज के लिए सुंदर–सुंदर, सलौनी पौध तैयार करने में लगे हैं। भविष्य के कर्णधारों के लिए लेखन किसी मिशन से कम नहीं होता। टाबर टोली के अंक न केवल स्वयं चटकारे लेकर पढ़ता रहा हूँ वरन् दूरदर्शन के मेरे सहयोगी साथियों के साथ भी बांट रहा हूँ और गर्व से कहता हूँ कि बाल जगत का ये अखबार मेरे मित्र अपने सीमित संसाधनों से बड़े पैमाने पर प्रकाशित कर वितरित करते हैं।'[26]

साहित्यकार गोविन्द शर्मा– 'पत्रकारिता के क्षेत्र में टाबर टोली उनका अभिनव प्रयोग है। साहित्य और बाल साहित्य से जुड़े इस पाक्षिक को उनके धैर्य का प्रतीक कहा जा सकता है। वर्ष 2003 से निरंतर नियमित प्रकाशन, संपादन वह भी साधन विहीनता की स्थिति में आश्चर्य चकित तो करता ही है।'[27]

प्रसिद्ध रचनाकार चित्रकार मनोहर सिंह राठौड– 'आज टाबर टोली बाल अखबार 15वें वर्ष में प्रवेश कर गया है। यह बाल अखबार इनकी अंगुली पकड़े दौड रहा है। इस अखबार ने इनके मान–सम्मान में श्रीवृद्धि की है।'[28]

साहित्यकार डॉ. विनोद सोमानी 'हंस 'टाबर टोली' के माध्यम से नया कीर्तिमान रचा है। अपनी सम्पादकीय सूझ–बूझ से उन्होंने अनेकानेक लेखकों–कवियों को जोड़ा है। एक बाल पत्र को नियमितता देकर राज्य में बाल साहित्य के रचनाकारों को मंच प्रदान किया है।'[29]

रचनाकार शर्मा श्रेष्ठ लेखक के साथ–साथ सुलझे हुए पत्रकार एवं कुशल संपादक भी हैं। उपर्युक्त कृतिव के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दीनदयाल शर्मा का रचनाकर्म बेहद विस्तृत, रोचक, मनोरंजक, कल्पनाशील, ज्ञानवर्द्धक, समाजोपयोगी, सरल, सहज और बालकों के लिए समुचित है। रचनाकार ने राजस्थानी भाषा में भी बहुत बड़ी मात्रा में बाल साहित्य एवं बड़ों का साहित्य रचा है। राजस्थान भाषा में बाल साहित्य का इतिहास रचकर नया इतिहास बनाया है। नवसाक्षरों के लिए भी साहित्य सृजन कर चुके हैं। यह समग्र साहित्य पाठकों, समीक्षों, साहित्यकारों एवं बालकों के बीच अत्यन्त चर्चित रहा है। बाल साहित्य की संस्मरणात्मक निबन्ध शैली में लिखित पुस्तक 'बालपणै री बातां' को केन्द्रीय साहित्य अकादमी से 2009 में पुरस्कृत किया जा चुका है, जिसे सभी विद्वानों, लेखकों, पाठकों, बाल पाठकों ने जी भर कर सराहा है। प्रस्तुत कृति आज के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है एवं दीनदयाल शर्मा की हस्ताक्षरित पुस्तक है। इसके अन्तर्गत बचपन के प्रसंगों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। ये पुस्तक शिक्षाप्रद,

मनोरंजक, हास्य प्रधान, सहज, सरल और सुरूचिपूर्ण है। इस तरह कृतिकार शर्मा ने साहित्य के संसार में अपना अलग कीर्तिमान स्थापित किया है। शोध की अपनी सीमाएं होती है, इसलिए शोधार्थी अपने शोध प्रबंध के लिए केवल हिंदी बाल साहित्य को आधार बनाकर शोध कार्य कर रही है। दीनदयाल शर्मा विराट व्यक्तित्व के स्वामी हैं, 'सादा जीवन उच्च विचार' कहावत इन पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। इन्हें अनेक मानवीय खूबियों का समुच्चय कहा जा सकता है। बचपन से ही इनकी पढ़ाई लिखाई में बहुत गहरी रूचि थी, इसीलिए कवि शर्मा शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त प्रतिभावान और तीक्ष्ण बुद्धि के रहे है। हाँ, इन्हें व्यावसायिक—जीवन के आरम्भ में बहुत संघर्ष करना पड़ा। सरकारी नौकरी के बाद का कार्य काल उत्तम रहा। पारिवारिक क्षेत्र में रचनाकार ने पुत्र, पति, पिता भाई आदि के रूप में अपने उत्तरदायित्वों एवं जिम्मेदारियों का निर्वाह पूरी ईमानदारी एवं समर्पण भाव से किया है। सफल पत्रकार, संपादक, समाजसेवी के रूप में इन्होंने समाज में अपनी प्रभावशाली छवि बनाई है। कई सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित लेखक शर्मा मंजे हुए रचनाकार, आत्मीय मित्र, लोकप्रिय लेखक, श्रेष्ठ इन्सान हैं। शिशुओं, बालकों एवं किशोरों के लिए अनेक विधाओं में, अनेक रूप—रंगों में, किए गए सुंदर और बालोपयोगी सृजन कार्य को बाल साहित्य जगत में मील का पत्थर कहा जा सकता है। अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, मित्रों ने इनके व्यक्तित्व और कृतिव से प्रभावित होकर अपने उद्गार प्रस्तुत किए हैं, जो कवि शर्मा की लोकप्रियता, मानवीय संवेदना, सहृदयता, सेवाभाव को प्रमाणित करते हैं।

♦♦♦♦

सन्दर्भ सूची

1. teacherdarapan.blogspot.com
2. vikasaurmanovigyan.blogspot.com
3. च्युइंग गम, मानसी शर्मा, भूमिका से
4. कुछ अनकही बातें, सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 181
5. कुछ अनकही बातें, सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 104
6. कुछ अनकही बातें, सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 109
7. कुछ अनकही बातें, सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 79
8. कुछ अनकही बातें, सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 33
9. टाबर टोली–1 मई, 2010, संपादक, पृ. 2
10. टाबर टोली–1 मई, 2010, संपादक, पृ. 19
11. टाबर टोली–1 मई, 2010, संपादक, पृ. 169
12. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ. 24
13. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 16
14. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृ. 12
15. शिविरा सितम्बर–2015, संपादक, पृ. 11
16. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 26
17. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 23
18. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 29
19. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 36
20. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 10
21. चिंटू–पिंटू की सूझ, द्वितीय संस्करण–1989, डॉ. प्रभाकर माचवे की कलम से
22. कुछ अनकही बातें...., सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 28
23. कुछ अनकही बातें....., संपादकः दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 27
24. deendayalsharma.blogspot.com बालभारती नई दिल्ली, समीक्षा अंक, 1988
25. epaperpatrika.com 1 अप्रैल–2018
26. कुछ अनकही बातें....., सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 54
27. कुछ अनकही बातें....., सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 57
28. कुछ अनकही बातें....., सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 109
29. कुछ अनकही बातें....., सं. दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 150

तृतीय अध्याय

दीनदयाल शर्मा का पद्य

तृतीय अध्याय

दीनदयाल शर्मा का पद्य

काव्य का स्वरूप अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है, साथ ही साथ अतिसूक्ष्म भी है। यही कारण है कि काव्य को किसी निश्चित परिधि में आबद्ध नहीं किया जा सकता। काव्य की व्यापकता इसी बात से प्रमाणित है कि काव्य की सत्ता सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। मानव के भावों का साधारणीकरण एवं रूपायन काव्य के माध्यम से ही संभव है। काव्यात्मकता हृदय से निसृत होकर सहृदय भावुकपाठक के अन्तस् तक पहुँचकर रस, आनंद से भर देती है। काव्य का पर्याय कविता रूपी कामिनी का सौन्दर्य प्रतिक्षण परिवर्तित होता है, अतएव आज तक उसे किसी भी स्वरूप या परिभाषा में प्रकट करना सम्भव नहीं हो पाया है। वस्तुतः कविता उतनी ही पुरातन है जितना कि मानव। बाल साहित्य का मूल तत्त्व स्पृणीय सुन्दर भाव है। जिसकी अभिव्यक्ति का अनिवार्य घटक भाषा शैली है। काव्य का प्राण तत्त्व भाव है, तो भाषा शैली उसका शरीर निःसन्देह भाव ही कविता का मूलभूत तत्त्व है। उत्तम काव्य की रचना में लिए उदात्तता, गहनता, प्रगाढ़ अनुभूतियां एवं व्यापकता अनिवार्य है। कविता मनुष्य की भावसत्ता के सर्वोत्तम रूप से साक्षात्कार करवाती है। कविता का प्रयोजन मानव का आनंद प्रदान करना, साथ ही किसी मार्मिक तथ्य को प्रकट करना है। कविता, काव्य अथवा पद्य छंद में आबद्ध ऐसी काव्यात्मक रचना है, जिसमें लयात्मकता, प्रवाहशीलता हो, जो पूरे विधि–विधान, अनुशासन के साथ छन्दमय हो, जिसे पढ़कर चित्त किसी रस या मनोवेग से परिपूर्ण हो जाए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कविता की प्रेरणा से मनोवेगों के प्रवाह जोर से बहने लगते हैं। इस प्रकार कविता मनोवेगों की उत्तेजित करने का एक उत्तम साधन है। भारत में कविता का इतिहासऔर दर्शन अत्यंत प्राचीन है। इसका शुभारम्भ आचार्य भरतमुनि से माना जा सकता है। गद्य का प्रादुर्भाव बहुत बाद में हुआ है, जिसका प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना गया है, इसके पूर्व का समूचा साहित्य काव्य के रूप में प्राप्त है। इसके साथ–साथ कई विद्वानों एवं इतिहासकारों ने हिंदी साहित्य को गद्य, पद्य एवं चम्पू, तीन विधाओं में विभाजित किया है, जिनमें सबसे सरस, सुमधुर, जीवन के निकट पद्य रचना को स्वीकार किया गया है। कविता भारतीय हिंदी एवं संस्कृत साहित्य की सर्वाधिक प्राचीन विधा है। कविता और जीवन का अन्तरंग सम्बन्ध है। कविता है तो जीवन है, और जीवन है तो कविता है। कविता क्या है, के प्रसंग में महान आचार्यों के सूत्र वाक्य बहु प्रचलित हैं, **यथा–विश्वनाथ का 'वाक्य रसात्मक काव्यम', आचार्य भामह का 'शब्दार्थौं सहितों काव्यम्' और छायावाद के प्रख्यात कवि और रचनाकार जयशंकर प्रसाद का 'सत्य की अनुभूति, पंडित जगन्नाथ ने 'रसगंगाधर' में**

'रमणीय' अर्थ को काव्य के अर्थ के रूप में प्रतिपादित किया है। इनका निचोड़ है, काव्य जीवन की रस सिक्त अनुभूति है जिसे किसी भाषा द्वारा कलात्मक रूप देकर प्रस्तुत किया जाता है। अग्निपुराण के अनुसार काव्य मे इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली ऐसी पदावली से युक्त वाक्य हैं, जो दोषरहित, गुणसहित और अलंकृत हो अर्थात् काव्य इष्टार्थ, संक्षिप्त वाक्य, अलंकार, गुण और दोष रहितता अनिवार्य है। इष्ट काव्य का मूल तत्व है, जो सभी काव्य रचनाओं में व्यक्त होता है। दोषरहित होना उत्तम काव्य का गुण है। गुण की उपस्थिति काव्य गुणों का प्रतिनिधित्व है और अलंकार काव्य सौन्दर्य के लिए अभीष्ट माना गया हे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने काव्य का निहितार्थ लोकमंगल को स्वीकारा हैं –

'कीरति भनिति भूति भलि सोई।

सुरसरी सम सब कह हित होई'

अर्थात् कीर्ति कविता और सम्पत्ति वही उत्तम हैं, जो गंगाजी की भांति सबका हित करती है। 'काव्य' शब्द का हिंदी शब्दकोश सम्मत तात्पर्य है –

सं. (पु.) 1. कविता, 2. कवि की रसात्मक (जैसे–सरल एवं ओजस्वी काव्य। गत (वि.) काव्यात्मकः(पु.), गीत एवं कविता की पुस्तक।[1]

प्रख्यात आलोचक, निबंधकार इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते है। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और, कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं।[2]

डॉ. रमाकांत शर्मा– "कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य और असभ्य सभी जातियों में पाई जाती है। चाहे विज्ञान न हो, दर्शन न हो, पर कविता अवश्य होगी। इसका क्या कारण है? बात यह है कि मनुष्य अपने ही व्यापारों का ऐसा घना मण्डल बांधता चला आ रहा है कि जिसके भीतर फंसकर वह शेष सृष्टि के साथ अपने हृदय का सम्बन्ध कभी–कभी नहीं रख सकता। इस बात से मनुष्य की मनुष्यता जाती रहने का डर रहता है। अतएव मनुषी प्रकृति को जाग्रत रखने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ लग गई है। कविता ये ही प्रयत्न करती है कि शेष प्रकृति से मनुष्य की दृष्टि कटने न पाए। जानवरों की इसकी जरूरत नहीं।"[3]

आचार्य नन्ददुलाने वाजपेयी– "काव्य तो प्रकृत–मानव–अनुभूतियों का नैसर्गिक कल्पना के सहारे ऐसा सौन्दर्यमय चित्रण है जो मनुष्य मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छवास और सौन्दर्य संवेदना उत्पन्न करता है।"[4]

अंग्रेजी कवि हड़सन– "Poetry is interpretation of life thought, imgagination and emotion."[5]

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं शब्दकोशगत अर्थानुसार कहा जा सकता है कि कविता एक ऐसी छंदबद्ध रचना है, जो रस से परिपूर्ण हो, जिस में लय प्रवाह, गेयता, कल्पना, प्रेरणा, इष्टार्थ, काव्य गुण, दोष रहितता, सौन्दर्य, पद लालित्य, अलंकार प्रेरणा आदि तत्त्वों का समायोजन हो। कविता विश्व की सभी जातियों में पाई जाती हैं। कविता से मनुष्य भाव की रक्षा होती है, जब तक कविता है, मनुष्यता बची रहेगी क्योंकि कविता का रागात्मक सम्बन्ध हृदय से है, कविता सत्य की अनुभूति भी है। वस्तुत संस्कृत में काव्य शब्द साहित्य का ही पर्याय माना गया है, बाद में इसे केवल कविता या पद्य के रूप में ही स्वीकार किया जाने लगा। अनेक विद्वानों के द्वारा कविता अथवा काव्य का अर्थ स्पष्ट हुआ है और हो रहा है। फिर भी इस सम्बन्ध में यही कहना समीचीन होगा कि कविता कामिनी का अर्थ पूर्ण विशुद्ध, सर्वसम्मत रूप से आज तक नहीं लिखा जा सका और न ही ऐसी कोई संभावना है, क्योंकि 'भाव भेद, रस भेद अपारा' का गायक काव्य को एक संक्षिप्त परिभाषा में आबद्ध नहीं किया जा सकता, ऐसा सम्भव भी नहीं है क्योंकि आत्मानुभूति का व्यक्त रूप है। 'न शक्यते वर्णयितु गिरा स्वयं तदन्त करणेन गृह्यते', कहना ही उपयुक्त होगा।

साधारणतः काव्य के दो भेद सर्वाधिक प्रचलित है, महाकाव्य और खंड काव्य। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है, जिनकी संख्या कम से कम आठ हो। जिसका नायक कोई देवता, राजा, महापुरूष या धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न होना चाहिए। इसमें वीर, शृंगार या शांत रसों में से कोई एक इस प्रधान होना चाहिए। इनके साथ–साथ करूण हास्य आदि रस एवं अन्य पात्रों के प्रसंग भी आवश्यक रूप से आने चाहिए। प्रकृति–चित्रण भी होना चाहिए। खंडकाव्य में जीवन के किसी एक अंश या खंड विशेष को केन्द्र में रखकर रचा जाता है, जिसमें संकलन त्रय का होना आवश्यक है।

आदिकाल से भक्तिकाल तक सभी कृतियाँ कविता प्रधान रही हैं। साहित्य की उत्पत्ति ही पद्य से हुई है। यह भी संभव है कि बाल साहित्य से ही हिंदी साहित्य का उद्घाटन हुआ हो। आदि काल से लेकर वर्तमान तक साहित्यकारों की लम्बी परम्परा रही है, जिसमें चंदबरदायी, नरपति नाल्ह, जगनिक, श्रीधर, स्वयंभू, अमीर खुसरो, नन्ददास, हित हरिवंश, मीरा, सूरदास, केशवदास, 'देव', बिहारी, रहीम, अद्माकर, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, विष्णु प्रभाकर, मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंश राय बच्चन, मतिराम, प्रसाद, पन्त, 'निराला', सूरदास, भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, डॉ. श्री प्रसाद, गुणाकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, नागार्जुन, जगदीश गुप्त, इंदिरा अग्रवाल, डॉ. विद्या भूषण, श्रीनाथ, सोहन लाल द्विवेदी आदि प्रमुख हैं। बाल साहित्य की पौध को श्रीधर पाठक, बाल मुकुंद गुप्त, अयोध्या

सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने रोपा, जो आज फल फूल कर विशाल वटवृक्ष का आकार ले चुकी है। इनके समकालीन अनेक बाल साहित्यकारों में ममता प्रसाद 'गुरू' का नाम अग्रणी है। भारत में लम्बे समय के बाद बाल साहित्य को स्वतंत्र विधा के रूप में मान्यता मिली, वर्तमान समय में हजारों बाल रचनाकार बाल रचनाकर्म में रत हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देवेन्द्र कुमार, रत्नप्रकाश, निरंकार देव सेवक, नारायण परमार, निशांत केतु, प्रेमकिशोर, डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजेश जोशी, जगदीश चन्द्र शर्मा, सीताराम गुप्त, राम निरंजन, कल्पना जैन, श्रीनाथ सिंह, स्वर्ण सहोदय, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', दिविक रमेश, प्रकाश मनु, शेरजंग, हरिकृष्ण देवसरे, राष्ट्रबन्धु, योगेश कुमार लल्ला, श्रीप्रसाद, जयप्रकाश 'भारती' विनोद चन्द्र, अब्दुल समद राही, शकुन्तला सिरोठिया, भैरूलाल गर्ग, विमला भंडारी, निरंकार देव सेवक, गोविन्द शर्मा, इंदिरा गौड़ एवं घमंडी लाल अग्रवाल आदि का योगदान उल्लेखनीय है। बाल साहित्य की इसी परम्परा में हनुमानगढ़ जंक्शन, राजस्थान के जाने–माने बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता हैं। विभिन्न विधाओं, बाल गीत, बाल कविता, बाल कहानी, बाल नाटक, बाल एकांकी, बाल संस्मरण, बाल हास्य–व्यंग्य, बाल पहेलियां, चुटकले, क्षणिकाएं में सृजित बाल साहित्य बाल्यकाल से ही मनुष्य के संतुलित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने में सक्षम है। स्वाभाविक बाल जिज्ञासा एवं रूचियों के अनुसार साहित्य सृजन दीनदयाल शर्मा की विशेषता है। इनके बाल साहित्य में लगभग वे सभी तत्व दृष्टिगोचर हैं, जो बाल साहित्य के लिए अपेक्षित हैं। ये कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि रचनाकार शर्मा व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था के रूप में कार्यरत है।बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की अभी तक बाल काव्य की आठ कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है–

कर दो बस्ता हल्का (1998),	**सूरज एक सितारा** (2000),
नानी तू है कैसी नानी (2010),	**चूं–चूं** (2010),
गिली गिली गप्पा (2014),	**अगड़म–बगड़म** (2014),
रसगुल्ला (2016),	**चिड़िया चहके गीत सुनाये** (2016)।

3.1 बाल काव्य

3.1.1 सौन्दर्य चेतना और बाल काव्य

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् भारतीय संस्कृति के प्रमुख कारक हैं। जो सत्य है, वहीं शिव है और जो शिव है वही सुन्दर है। सौन्दर्य सार्वभौमिक सत्य है, जो निखिल सृष्टि के कण–कण में परिव्याप्त है। समस्त चराचर जगत परिवर्तनशील है, यहाँ क्षण–क्षण परिवर्तन घटित होते हैं, इसी परिवर्तन को सौन्दर्य की संज्ञा से चिन्हित करते हुए संस्कृत के **महाकवि माघ ने 'शिशुपालवध' में**

लिखा है 'क्षणे–क्षणे यन्नवतामुंपोति तदैव रूपं रमणीयताय'[6] और रीतिकाल के प्रकाण्ड पंडित, महाकवि बिहारीलाल रत्नाकर ने नायिका के क्षण–क्षण परिवर्तित होते अनिर्वचनीय रूप के प्रसंग में सौन्दर्य को अप्रतिमता के साथ वर्णित किया है–**'लिखन बैठि जाकी सबी, गहि–गहि गरब गुरूर। भये न केते जगत के, चतुर।'**

सम्पूर्ण प्रकृति एवं जगत् के कण–कण में विराट सौन्दर्य समाया हुआ है, सारा जगत ही सुन्दरता का साकार स्वरूप है, इसे आत्मसात करने के लिए आवश्यकता है तो सुन्दर दृष्टि की। ऐसी कहावत है कि 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि।' सौन्दर्य वस्तु में नहीं अपितु आँखों में होता है और यह वस्तुनिष्ठ होने के साथ–साथ अनुभूतिजन्य भी है। सुन्दरता का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। सरल शब्दों में कहें तो सौन्दर्य बालक की तरह सरल, निश्छल, सहज, सरस एवं सुरूचिपूर्ण माना जा सकता है। एक वाक्य में कहें तो सहजता ही सौन्दर्य है। इसीलिए बालक सब को प्रिय लगता है। 'सौन्दर्य' शब्द का अर्थ शब्दकोश के अनुरूप–

सौन्दर्य : सं. (पु.) सुन्दरता, खूबसूरती, चेतना, सौन्दर्य भावना वाला, दिव्यता (स्त्री.)

सौंदर्यवाद : बोध (पु.) कला के सूक्ष्म सौन्दर्य का ज्ञान, वाद (पु.) कला के सौन्दर्य को प्राधान्य देने का मत या सिद्धान्त [7]

अंग्रेजी में सौन्दर्य का समानार्थक शब्द 'Beauty' है, जिसका अंग्रेजी शब्दकोश में गत तात्पर्य है–

Beauty - n. (p.l. Beauties) grace or excellance in the features of a person or thing रूप, शोभा, मनोहरता, रमणीयता, सुन्दरत n.a. beautiful person (esp. a woman)सुन्दर मनुष्य, विशेषकर सुन्दर स्त्री।[8]

शब्द निर्माण की दृष्टि से–'सु' उपसर्ग 'उन्द' धातु तथा 'अरन्' प्रत्यय के सुनियोजन से यह शब्द बना है। 'उन्द' का अर्थ आर्द्र करना (पिघलना) तथा 'अरन' कर्तृवाच्य प्रत्यय है। 'सु' का अर्थ सुष्ठु या भली–भांति, इस प्रकार सुन्दर शब्द का अर्थ भली भांति आर्द्र करने वाला।[9]

सौन्दर्य को विभिन्न विद्वानों ने निम्नांकित रूप से परिभाषित किया है–

डॉ. धर्मपाल देशवाल–'सुष्ठुतया नन्दयतिडिति सुन्दरम् तस्य भावः सौन्दर्य।' अतः सुन्दर शब्द की भाववाचक संज्ञा ही सौन्दर्य है।'[10]

भगवतीचरण वर्मा– 'सुन्दर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो।' एवं **गोयथे**–'एक शख्स हर दिन संगीत सुने, थोड़ी सी कविता पढ़े और अपने जीवन की सुन्दर तस्वीर रोज दिखे, उसे सुन्दरता की परिभाषा तलाशने की जरूरत नहीं क्योंकि भगवान ने सारे संसार का सौन्दर्य उसकी झोली में डाल रखा है।'[11]

सौन्दर्य शास्त्र के ज्ञाता **हरद्वारी लाल शर्मा** का "सौन्दर्य हम उस शक्ति को कह सकते हैं जो जनमानस को अतृप्त संकल्पों और संस्कारों के मकड़जाल से छुड़ा कर वर्तमान में आत्मसात आनन्द प्रदान करने में सक्षम है।"[12]

डॉ. अनुराधा शुक्ल का मानना है–

'आनन्दो भासमानस्तु सत्वों पाधिष साकृति।
आत्मविश्रान्त्य भेवेन सौन्दर्य व्यपविश्यते।।'[13]

अर्थात् सत्व की उपाधियों से अलंकृत विश्रांति रूप आनंद ही सौन्दर्य कहलाता है।

गेटे के अनुसार– 'सौन्दर्य वह आदिम विषय है जो स्वयं कभी प्रकट नहीं होता। वस्तु जिसका प्रतिबिम्ब सृजनशील मन की सहस्त्रों विविध उक्तियों से उद्भासित होता रहता है और उतना ही वैविध्यपूर्ण है जितनी स्वयं प्रकृति।'[14]

विभिन्न शब्दकोशों में अंकित सौन्दर्य के अर्थों एवं गहन अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सौन्दर्य सम्पूर्ण वाङमय का आधार है। सौन्दर्य प्रतिक्षण परिवर्तित होने वाली अतिसूक्ष, गंगा की तरह पवित्र, शाश्वत, दिव्य, रसमय, सत्य से आप्लावित, कल्याणकारी एवं विराट अनुभूति है, जो लोक कल्याण से आपूरित होती है। सौन्दर्य और काव्य एक सिक्के के दो पहलू हैं क्योंकि सौन्दर्य काव्य का प्रमुख तत्त्व माना गया है। सौन्दर्य का काव्य से निगूढ़ सम्बन्ध है। संभवतयाः प्रत्येक कवि ने अपने पद्य में सौन्दर्य का उद्घाटन किया है। विद्यापति, जायसी, सूरदास, तुलसी, घनानंद, रसखान, बिहारी, कबीर, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, प्रसाद आदि रचनाकारों ने सौन्दर्य का विविध भांति निरूपण किया है। तुलसी ने श्रीराम के अनुपम अद्वितीय, अनिर्वच, बिराट सौन्दर्य को **'गिरा अनयन नयन बिनु बानी'** और सूर ने इसी सुन्दरता को **'ज्यों गूंगेही मीठे फल को रस'** अन्तर्मन ही भावै' कहकर हिंदी साहित्य मे सोंदर्य की प्रतिष्ठा भी है। बाल साहित्य में सौन्दर्य नीर–क्षीर की तरह धुला–मिला होता है। बाल काव्य अर्थात् बालकों के लिए काव्य, जो बच्चों के लिए, बच्चों को ध्यान में रख कर लिखा गया हो। बाल काव्य का नाम सुनते ही मन में सरसता की अनुभूति होने लगती है। बालक और कविता का जन्म से ही प्रगाढ़ सम्बन्ध होता, क्योंकि बाल लोरियाँ सुन कर ही बड़ा होता है। लोरी के संदर्भ में प्रसिद्ध कवयित्री रजनी सिंह अपनी कृति 'लोरी सुख' में लिखती है। लोरी वह संगीत है जो माँ द्वारा अपनी संतान की निन्द्रा को सुव्यवस्थित, सुरुचिकर और सोंदर्यकर बनाने के लिए मधुरिम स्वरों, मधुरिम धुनों और चुम्बकीय शब्दों में गाया जाने वाला गान है।[15] बाल काव्य को कई रचनाकारों ने परिभाषित किया है–

महान कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुरूप–'बालक तो स्वयं एक काव्य है, स्वयं ही साहित्य है।' बाल काव्य अर्थात बालकों के लिए काव्य है। जिस काव्य में बालक की भाषा में उसकी अपनी दृष्टि, अपना चिन्तन और अपनी कल्पनाएँ अभिव्यक्त होती हों, सही अर्थ में वही बाल काव्य है। अस्तु, हम कह सकते हैं कि शिशु, बालक और किशोरो को मानसिक आल्हाद प्रदान करने की दृष्टि से लिखित अथवा संकलित काव्य ही सही अर्थो में बाल काव्य है।[16]

डॉ. परशुराम शुक्ल ने माना है–'बाल साहित्य में कविता सर्वाधिक प्रभावशाली होती है। कविता में रस होता है और रस में स्वाद। बच्चों को स्वादिष्ट कवितायें देकर उनके व्यक्तित्व को सरलता से संवारा जा सकता है।[17]

बालक और काव्य को परस्पर पर्याय कहा जा सकता है या कहें कि बालक स्वयं कविता है। बाल कविता का प्रमुख गुण उसकी लयात्मकता, सहजता और मनोरंजन है। बालक की हर क्रीडा, हर गतिविधि लय से परिपूर्ण होती है। बाल काव्य की गेयता उसे बच्चे की प्रिय बनाती है। बाल कविता, बालक की भांति सरल, सरस, सहज, रूचिकर, सौन्दर्यवान होती है, इसलिए बालक ऐसे गीतों को गुनगुनाता है, गाता है, उन पर झूमता है, नाचता है। जिस प्रकार कवियों के लिए गद्य लिखना एक कसौटी है, उसी प्रकार बाल रचनाकारों के लिए बाल कविता लिखना अत्यन्त कठिन और श्रमसाध्य कार्य है, क्योंकि इस के लिए कवि को स्वयं बालक बनना होता है, जो इतना आसान नहीं है। हाँ, खेलते हुए बालकों को देखकर रूपहली कविता लिखना जरूर आसान है। बाल कविता लिखना बच्चों का खेल नहीं हैं। बाल काव्य को शिशु काव्य, बाल काव्य एवं किशोर काव्य के रूप में विभाजित किया गया है, बाल काव्य के अंतर्गत शिशुगीत, लोरी, प्रभाती पालने गीत एवं खेलगीत और बालक तथा किशोरों के लिए बाल कविता, ग़ज़ल, दोहा, गीत, पहेली स्वीकारे गए हैं। बाल काव्यकारों की एक लम्बी परम्परा है जिनमें प्रमुख हैं– रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', स्वर्ण सहोदर, हरिवंशराय 'बच्चन' डॉ. सुधीन्द्र, निरंकारदेव 'सेवक', राष्ट्रबन्धु, योगेन्द्रकुमार लल्ला, शकुन्तला सिरोठिया, सुरेन्द्र विक्रम, हरीश निगम, उषा यादव, प्रदीप शुक्ल, सूर्यकान्त पांडेय, डॉ. नागेश पांडेय, 'संजय', बालकृष्ण गर्ग, जगदीशचंद्र शर्मा, भगवती प्रसाद गौतम इत्यादि।

आदिकाल से ही बाल–साहित्य में सौन्दर्य का प्राधान्य रहा है। बालक स्वयं सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति होता है, अतः बाल काव्य में सुन्दरता का वास स्वाभाविक है। अमीर खुसरो, सूरदास के बाल काव्य में सौन्दर्य चेतना का अपूर्व संयोजन मिलता है। सूरदास के द्वारा किया गया कृष्ण के सौन्दर्य का नयनाभिराम चित्रण बाल साहित्य में बेजोड़ है। लब्ध प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य सौन्दर्य चेतना से समृद्ध है एवं उनके सम्पूर्ण काव्य में जिज्ञासा, उत्सुकता, चैतन्यता, सरलता, सरसता, रोचकता, कौतुहल आदि तत्व दृष्टिगोचर होते हैं, जो बाल काव्य का वैशिष्ट्य है, इसलिए इनसे बच्चा सरलता से जुड़ जाता है। बालक स्वभाव से ही

कौतुहल प्रिय एवं अत्यन्त जिज्ञासु होता है, स्वप्निल संसार में विचरण करता है, उस की कल्पना की उडान सातवें आसमान तक हो सकती है। शिशु के लिए तो एक तोता खीर बना सकता है तो पेड़—पौधे नाच भी सकते हैं। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य का सौन्दर्य शिशु गीत, बाल कविता एवं किशोर काव्य के रूप में बिखरा पड़ा है जिस में सुन्दर कल्पनाएँ हैं, ताल है, लय है, गेयता है, ममत्व है, मधुरता है, रोमांच, लालित्य है जो बच्चों का सहज मनोरंजन करने के साथ—साथ शिक्षा भी देंता है। बाल काव्य के लिए ये सभी कारक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। सहजता, रोचकता के क्रमशः कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं—

पल भर में लड़ते हैं हम सब, पल भर में मिलते हैं हम सब।
अपनी दुनिया सबसे न्यारी, लगती हम को सब से प्यारी।।[18]

पापा मुझे बताओ बात, कैसे बनते हैं दिन—रात।
चंदा—तारे दिन रात को, सुबह चले जाते चुपचाप।।[19]

चट पट चट पट चने चबाए, बकरी मे कर मिमियाए।
टर टर टर टर मेढ़क करता, चूहा बिल्ली से है डरता।।[20]

उपर्युक्त कवितांशों के सार स्वरूप कहा जा सकता है कि बालक निर्मल, निश्चल होते हैं। एक पल में लड़ते हैं तो अगले ही क्षण गले लग जाते हैं। इनकी दुनिया बड़ो के संसार से बहुत निराली होती है। बालक में जिज्ञासा चरम पर होती है, दिन—रात कैसे बनते हैं, चाँद—तारे में ही क्यों आते हैं। ऐसे अनेक प्रश्न उनके मन में उठते हैं और वे पापा से इनके उत्तर पूछते हैं। इसी प्रकार बकरी का मिमियाना, मेढ़क का टर्राना, चूहे का बिल्ली से डरना बच्चों को बहुत रूचिकर लगता है। प्रस्तुत रचनाओं का सहज सौन्दर्य अप्रतिम, अनुपम है। बालक जब बहुत प्रसन्न होते हैं तो हा—हा—हूँ—हूँ करते हुए नाचने लगते हैं इनकी किलकारियों से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठता है। ऐसा ही एक दृश्य—

'हा—हा—हू—हू—ही—ही करते, बच्चों ने मारी किलकारी।
दूर दूर तक महकी जैसे,भांत—भंतीली खुशबू प्यारी।[21]

'मछली रानी, मछली रानी, घर तेरा, होता है पानी।[22]

कवि ने मात्र नौ शब्दों में मछली से जल का सम्बन्ध अंकित कर के शिशुओं को जानकारी दे दी है। उपर्युक्त बाल गीतों में बाल सुलभ सौन्दर्य, जिज्ञासा, सरलता एवं चांचल्य की सुषमा देखते ही बनती है। हर पंक्ति में सुन्दरता को आत्मसात किया जा सकता है। बालक खुशी में उछल पड़ते हैं, हा, हा, ही, ही, करने लगते हैं साथ ही उनका किलकारियां भरना सौन्दर्य की प्रतीति करवाता है। भला इससे बढ़कर सुन्दरता कहाँ हो सकती है। इन में सौन्दर्य की अनुरति जितनी महीन है, उतना ही यह विराट भी है, कवि शर्मा के बाल काव्य में सौन्दर्य सर्वत्र परिव्याप्त है।

3.1.2 मनोरंजन

जिस प्रकार जीवन के लिए हवा, पानी और भोजन की आवश्यकता होती है उसी भांति मन की क्षुधा को परितृप्त करने के लिए मनोरंजन अनिवार्य है। मनुष्य स्वभाव से ही उत्सवधर्मी है। भारतीय संस्कृति में प्रायः प्रतिदिन उत्सव मनाये जाते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए मन का रंजन होना परमावश्यक माना गया है। प्राचीन काल से ही मनोरंजन के लिए मानव ने तरह–तरह के खेल–तमाशों, मानसिक खेलों, कठपुतली नृत्य, स्वांग, नृत्य–संगीत, नाटक, चलचित्र इत्यादि अनेकानेक क्रीड़ओं का आविष्कार किया है। बात जब बालकों की हो तो क्या कहने, बालक और मनोरंजन परस्पर मित्र माने जा सकते हैं। बच्चों के मन बहलाव के अनेक संसाधनों में बाल साहित्य अधिकतम साधन है। मनोरंजन का अर्थ–मन का आनंद, मन की प्रसन्नता, मन का आल्हाद, खुशी, दिल बदलाव के रूप में लिया जाता है। मनोरंजन शब्द का शिक्षार्थी शब्द्कोश सम्मत तात्पर्य है–

सं.(पु.)– दिल बहलाव, इंटरटेनमेंट[23]

अंग्रेजी में मनोरंजन का समकक्ष शब्द Entertain है–

Entertain - ,u & v.t. to maintain, to amuse, to cherish, to recive guests,पोषण करना, मन बहलाना, ह्दय में रखना Entertainer (n. one who entretains) Entertaining - ad. amusing, Pleasing[24]

अधिकतर विद्वानों एवं समीक्षकों ने मनोरंजन का बाल साहित्य का अनिवार्य घटक माना है। **डॉ. हरिकृष्ण देवसरे** ने भी मनोरंजन को बाल साहित्य के लिए अनिवार्य तत्त्व मानते हुए लिखा है–'बच्चों का मनोरंजन करना और उनकी बातों को अभिव्यक्ति प्रदान करना बाल साहित्य की किसी भी रचना की पहली पहचान है।[25]

मनोरंजन और साहित्य का अटूट रिश्ता रहा है। इतिहासकारों एवं रचनाकारों ने लोकमंगल के पश्चात् लोकरंजन को साहित्य का प्रयोजन माना है क्योंकि साहित्य का प्रयोजन स्वान्तः सुखाय के साथ परजनहिताय होना है। हर युग के साहित्य में मनोरंजक तत्त्वों का समाहार मिलता है, हास्य प्रधान कवितायें अनवरत लिखीं जाती रहीं हैं जैसे–पहेलियाँ, कह मुकरनियाँ इत्यादि। खुसरों की पहेलियाँ इस बात का प्रमाण है। साहित्य की विधाओं में हास्य–व्यंग्य एक मुख्य विधा है। बाल साहित्य का तो मुख्य उद्देश्य मनोरजन ही रहा है, इसीलिए मनोरंजन को बाल साहित्य का प्राण तत्त्व माना गया है। लोरी हो या बाल कथाएँ या किशोर काव्य, सब कुछ बच्चे को प्रसन्न करने के लिए ही रची गई हैं। बालक भी वही रचना पढ़ना, सुनना पसंद करता है, जिसे पढ़कर, सुनकर उसका मन झूम उठे, वह आनन्द से भर जाये,

प्रफुल्लित हो जाये। बाल साहित्य का आविर्भाव बच्चो के मन को बहलाने के लिए हुआ था। सभी बाल रचनाकारों के सृजन में मनोरंजन तत्व का प्राधान्य रहा है। बाल मन में उतर कर उनकी अनुभूतियों को महसूस करने वाले बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य मनोरंजन से अनुप्राणित हैं, चाहे फिर शिशुगीत हो या बाल एवं किशोर कवितायें, सभी बालक को उल्लास से भर देने में सक्षम है।

'बबन विधाता' गीत बालकों को हँसा हँसा कर लोट–पोट कर देने में सक्षम है, एक तो बारिश का मौसम, उस पर रात का समय, बबन विधाता रात को छाता निकलना, पैर का फिसला जाना, कपड़ों का कीचड़ में सन जाना, इन संदर्भों से जो बिम्ब उभर कर आता हैं, वो श्लाघनीय बन पड़ा है–

'बबन विधाता, लेके छाता, निकल पड़े बरसात में।
फिसले ऐसे, गिरे जोर से, कैसे चलते रात में।
कीचड़ में भर गए थे कपड़े, देखे बबन विधाता।
इसी बीच में उड़ गया उनका, रंग–बिरंगा छाता।'[26]

सर्कस का नाम सुनते ही बच्चे आनंद–विभोर हो उठते है। सर्कस में जानवरों के अजब–गजब करतब देखकर बालक किलकारियाँ भरने को विवश हो जाते हैं। 'जोकर' जिसका आशय ही 'हंसाने वाला' होता है, ऐसे में उस का ठोकर खा कर गिर जाना, इस समूचे दृश्य को पढ़ कर बालक झूमेंगे ही नहीं अपितु हँसी से लोटपोट हो जायेगे।

सर्कस का जोकर, खाता ठोकर
खुद हँसता और हमें हँसाए।
इस के बिना है सर्कस सूना
खुशियों को कर देता दूना।[27]

बन्दर को देखते ही बालक खुशी के मारे उछल पड़ते हैं, उनका मन नाचने लगता है, उसे चिढ़ाने के लिए वे स्वयं तरह–तरह के करतब करने लगते हैं। दीनदयाल शर्मा ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया और बंदर की क्रीडा के साथ जीवन दर्शन 'जो जीता वही सिकन्दर' को जोड़कर लिखते है–

खों–खों करके उछला बंदर
जो जीते कहलाये सिकन्दर।[28]

बारात में जाने, खाने–पीने और नाचने–गाने के आनंद के तो कहने की क्या। बालक यह सब अपने परिवेश के द्वारा धीरे–धीरे जानने व समझने लगता है। वह भी बारात में जाना चाहता

है और सारी–सारी रात मौज–मस्ती करना चाहता है। अपने पापा को बारात में जाने के पूर्व कोट, पेण्ट, टाई देख कर उसका भी मन होता है कि–

कोट, पेन्ट और टाई पहन कर,मैं जाऊँ बारात।
डांस करूँ और चीजें खाऊँ,वहाँ मैं सारी रात।[29]

उपर्युक्त विवेचन के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है दीनदयाल शर्मा के पद्य में बालकों के लिए मनोरंजन तत्व कूट–कूट कर भरा हुआ है। इसी प्रसंग में प्रसिद्ध पत्रकार मनोज गोयल लिखते हैं–'शर्मा की कृतियाँ बच्चों के लिए प्रेरणात्मक होने के साथ–साथ मनोरंजन की दृष्टि से भी उच्च कोटि की है।[30]

3.1.3 मनोविज्ञान

मनोविज्ञान का सरल अर्थ है, मन का विज्ञान। सम्भवतः इसके अंतर्गत मानव मन में आने वाले विचारों, भावों, चिंतन प्रक्रिया, उतार–चढ़ाव आदि को क्रमबद्ध, करके वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन किया जाता है। मानव मन को समझना अत्यन्त जटिल कार्य है। इसी जटिल काम का वैज्ञानिक सदियों से अध्ययन करने का प्रयास कर रहे हैं। जिस शास्त्र में मन का अध्ययन किया जाता है उसे मनोविज्ञान कहा जाता है। मनोविज्ञान शब्द मन और विज्ञान के मेल से बना है। मनोविज्ञान शब्द का अंग्रेजी समानार्थक शब्द Psychology है जो कि यूनानी भाषा दो शब्दों 'Psyche'(साइको) और Logas (लोगास) के मिलने से बना है। शब्द का Psyche अर्थ "आत्मा" और स्वहें शब्द का अर्थ 'अध्ययन' होता है। अतः Psychology का शाब्दिक अर्थ– "आत्मा का अध्ययन। मनोविज्ञान का कोशगत अर्थ है–

सं. (पुं.) वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं और क्रियाओं तथा उसके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।[31]

अनेक दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है।

वाटसन–'मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित या शुद्ध विज्ञान है।'

क्रो एण्ड क्रो–'मनोविज्ञान मानव–व्यवहार और सम्बन्धों का अध्ययन है।'

वुडवर्थ–'मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव व्यवहारों का विज्ञान है।'[32]

उपर्युक्त परिभाषाओं और कोशगत अर्थ के आधार पर कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं, प्रक्रियाओं, प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। मूल रूप से मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है। अपनी दीर्घ यात्रा के पश्चात् सभी विद्वानों एवं दार्शनिकों ने इसे मानव व्यवहार को जानने, परखने, समझने और उसका अध्ययन

करने के रूप में स्वीकार किया है। आरम्भिक युग से ही मनोविज्ञान और साहित्य का अन्तरंग सम्बन्ध रहा है। संसार का हर सृजन मन और ह्रदय से उपजता है, साहित्य तो विशेष रूप से मन से आबद्ध होता है। इस के बिना साहित्य की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। पृथ्वीराज रासो, खुमान रासो, बिहारी सतसई, कबीर ग्रंथावली हो मीरा पदावली या प्रसाद–निराला की रचनाएँ, सब में किसी न किसी रूप में मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का समाहार हुआ है।

'बाल मनोविज्ञान' से तात्पर्य है, बालकों के मन का विज्ञान अर्थात् बच्चों के मन को समझाना। बाल मन तितली की भांति चंचल तथा वित्रित होता है। एक पल में धरती और अगले ही पल हवा में बातें करने लगता है। बालक के मन को समझना अति दुलर्भ कार्य है। किसी वस्तु अथवा दृश्य को देख कर बालक के मन में विचित्र कल्पनाएँ, जिज्ञासाएँ, प्रतिक्रियाएँ जन्म लेती हैं जिसकी हम परिकल्पना भी नहीं कर सकते। बालक में कौतुहल चरम पर होता है। वह दुनिया की हर वस्तु की तह में जाना चाहता है, परत–दर–परत हर रहस्य को पूरे मनोयोग एवं तल्लीनता के साथ जानना चाहता है। उसमें खो जाना चाहता हैं, बेफिक्र और अल्हड़ता में जीना चाहता है। बालक के इस मनोविज्ञान को समझने के लिए रचनाकार को स्वयं बालक बन कर, उसके भीतर उतरना पड़ता है, तभी बालोपयागी सृजन संभव है। यह हूनर बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा में कूट–कूट कर भरा हुआ है, इन को बाल मन की गहरी परख है। इनके बाल काव्य में बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म और सजीव चित्रण मिलता है।

दीनदयाल शर्मा पेशे से पुस्तकालयाध्यक्ष रहने के साथ–साथ निरंतर शिक्षण कार्य भी करते रहने से, सदैव बालकों के बीच रहे हैं। यही कारण है कि ये बाल मन के अनुरूप खूबसूरत बाल काव्य लिख सके। वर्तमान में बस्ते के भारी भरकम बोझ एवं होमवर्क के बाहुल्य से हर बच्चा त्रस्त है। इसके बोझ को उठाते–उठाते उसके छोटे–छोटे कंधे झुक से गए हैं और कमर टेड़ी हो चुकी है, मगर उसकी पीडा सुनने के लिए किसी के पास फुरसत नहीं है। हमारी शिक्षण व्यवस्था और अभिभावकों की अति महत्वाकांक्षाओं ने बालक पर पढ़ाई का इतना भार लाद दिया है कि वह थक कर चूर हो रहा है। उसका मन खेलने–कूदने, नाचने–गाने को मचलता हैं, लेकिन सारा समय होमवर्क करने में व्यतीत हो जाता है। ऐसे में वह चिड़िया को देख कर सोचता है कि काश। वह चिड़िया होता तो उसको न ही बस्ते को उठाना पड़ता और होमवर्क से भी छुट्टी मिल जाती। दीनदयाल शर्मा ने इन भावों को बड़ी कुशलता के उकेरा है–

पापा गर में चिड़िया होता, बिन पेड़ी छत पर चढ़ जाता।
भारी बस्ते के बोझे से, मेरा पीछा भी छुड़ जाता।
होमवर्क ना करना पड़ता,जिससे मैं कितना थक जाता।'[33]

'दिन भर पढ़ना, लगता जेल।डांस करूँ या खेलूं, खेल।'[34]

बस्ता भारी, मन है भारी, कर दो बस्ता हल्का
मन हो जाए फुल्का, कर दो बस्ता हल्का।[35]

चूहा, बिल्ली, हाथी, शेर कुत्ता आदि जानवर बच्चों को बहुत प्रिय होते हैं। बाल साहित्यकारों ने भी इन पर पूरे मनोयोग से रचना–कर्म किया है। बिल्ली के साथ दिल्ली का काफिया बहु प्रचलित है। हवाई जहाज को देख कर एक बालक कैसी–कैसी कल्पनाएँ कर सकता है, इसका मनोरम अंकन प्रस्तुत है–

'हवाई जहाज से करूँ यात्रा, झट मैं पहुंचूं दिल्ली।
चांदनी चौक से खरीद कर लाऊँ, सुन्दर सी इक बिल्ली।'[36]

चाँद–सितारे, सूरज, आसमान, हवा, पानी, धरती, ये सारे संदर्भ बालकों को बहुत लुभाते आये हैं। उनके लिए चाँद और तारे किसी रहस्य से कम नहीं हैं, इनको देख कर बच्चों के मन में अनेक कल्पनाएँ, जिज्ञासाएं जाग्रत होतीं हैं, कई प्रश्न मन में उठते हैं, यथा – आखिर चॉद रात को ही क्यों आता है, दिन में क्यों नहीं। चॉद घटता–बढ़ता क्यों है, सूरज की तरह स्थिर क्यों नहीं रहता। ऐसी अनेक बाल सुलभ उत्सुकताओं को मानो दीनदयाल शर्मा ने बालक के मन से जुड़कर देखा है–

'आसमान में दिखते हो तुम, रात को चंदा मामा।
घटते–बढ़ते रहते हो, क्यूँ करते हो ड्रामा।
सूरज कभी न घटता–बढ़ता, सदा एक सा रहता।
तुम भी सूरज बन जाओ ना, मेरे प्यारे मामा।'[37]

समग्र विश्लेषण से जाहिर है कि रचनाकार ने बालकों के मन को अच्छी तरह पढ़कर बाल मनोनुकूल बाल काव्य की सार्थक रचना की है।

3.1.4 पर्यावरण चेतना

पर्यावरण का सामान्य अर्थ अपने आस–पास के वातावरण से लिया जाता है। यह शब्द 'आवरण' में 'परि' उपसर्ग के योग से बना है। 'परि' का अर्थ–'चारों और' ओर, 'अवरण' का अर्थ, घेरा, चारों ओर से आवृत। इस प्रकार पर्यावरण से तात्पर्य, चारों तरफ से घिरा हुआ परिवेश। हमारे ईद–गिर्द जो कुछ भी हमें दिखाई देता हैं, महसूस होता है, सुनाई देता है, यह सब पर्यावरण के अन्तर्गत आता है, जैसे–जीव–जगत, भौतिक जगत, वनस्पति–जगत, व्यावहारिक–सामाजिक–मानसिक परिवेश, भौगोलिक परिस्थितियाँ इत्यादि। एक वाक्य में कहें तो पर्यावरण प्रकृति का एक घटक है। वर्तमान में बढ़ते भौतिकवाद, कम होते अरण्य, अशिक्षा, मानव की स्वार्थ लिप्सा के साथ अन्य कई कारणों से पर्यावरण का अस्तित्व खतरे में पड़ चुका है। इसीलिए

वर्तमान में सारी दुनिया के समक्ष पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या मुंह बाये खड़ी है। ऐसे में प्रकृति प्रेम के समानान्तर पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने की महती आवश्यकता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निरूपण प्रकृति और पुरूष के संयोग से हुआ है। अनादि काल से प्रकृति एवं मानव का आत्मीय, अन्तरंग और प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा है। अगर यह कहा जाए कि मनुष्य का अस्तित्व ही प्रकृति से हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अनादि काल से मानव जीवन इसकी गोद में ही फलता–फूलता रहा है, कुदरत हमारी पालिका, पोषिका, सहचरि तथा जन्मदात्री है।

स्थूल रूप से प्रकृति से आशय पेड़–पौधे, फल–फूल, तितली, चाँद–सितारे, धूप, सूरज, हवा, जल, बादल, बारिश, पर्वत, नदी, पशु–पक्षी, जीव जंतु, वन–प्रान्तर, जंगल, झील–झरने आदि से है। प्राचीन काल से ही प्रकृति बाल साहित्य का महत्वपूर्ण अंग रही है क्योंकि इन से बच्चों का सहज अनुराग होता है। जन्म के बाद बालक का सबसे पहले प्रकृति से साक्षात्कार होता है। बाल साहित्य में बालकों की जिज्ञासा हो या मनोरंजन या शिक्षा, सभी विधाओं में इन्हें अधिकांशतः प्राकृतिक प्रतीकों, बिम्बों, उपादानों द्वारा ही उद्ध्वरित, वर्णित या चित्रित किया जाता है। पर्यावरण का शब्दकोशगत अर्थ–

सं. (पु.) 1. वातावरण 2. परिस्थिति[38]

'पर्यावरण' शब्द को Environment कहा जाता है जिस का शब्दकोश सम्मत तात्पर्य–n. surrounding, a sorrounding object पड़ौस, आसपास की वस्तु।[39]

'प्रकृति' का शब्दकोशीय अभिप्राय–

1. स्वभाव, मिजाज, 2. वह मूलभाव जिसका परिणाम जगत है 3. माया, 4. परमात्मा, 5. सदा बना रहने वाला, 6. मूल गुण, धर्म, 7. स्त्री, 8. चराचर संसार कृत – वी. – प्रकृति द्वारा बना हुआ[40]

तारसप्तक के प्रणेता, प्रयोगधर्मी कवि अज्ञेय ने प्रकृति को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है– 'मानवेतर ही प्रकृति है–वह सम्पूर्ण परिवेश जिसमें मानव रहता है, जीता है, भोगता है, संस्कार ग्रहण करता है, जो कि इन्द्रियों से परे है – जिसे हम देख सुन व छू सकते हैं, जिसकी गंध पा सकते हैं और जिसका आस्वादन कर सकते हैं।'[41] देव, पितर एवं मानव के चक्षु कहे जाने वाले भारत के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों में पर्यावरण चेतना का भाव कूट–कूट कर भरा हुआ है। इन की उपयोगिता, सार्वभौमिकता और सार्वकालिक है। इसके अधिकांशतः अंगों में प्रकृति के नाना उपादानों पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश, पेड़–पौधो की आराधना, उपासना, स्तुतियाँ की गई हैं। पृथ्वी को माता और मेघों को पिता के संज्ञा से समादृत किया गया है–

'यस्यामन्न द्रीहियवौ यस्या इमाः पज्यकृष्टयः।
भूम्यपर्जन्यपल्ये नमो स्तु वषमेदसे।।'[42]

अर्थात् भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियाँ इस भूमि पर ही उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता तथा मेघ पिता हैं, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बहाकर यह पृथ्वी में गर्भादान करता है। इन्हें हम माता तथा पिता समान आदर दें।

डॉ. बीना शर्मा के अनुसार – 'प्रकृति के संसर्ग से ही मानवीय चेतना और भावों में स्पन्दन होता है जिनसे सम्प्रेषित होकर काव्य सृष्टि संभव हो पाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि प्रकृति काव्य की मूलाधार है, उसकी प्रेरक शक्ति है।'[43]

अतः कहा जा सकता है कि प्रकृति से तात्पर्य, स्वाभाविक एवं नैसर्गिक तत्त्वों से हैं जैसे–स्वभाव, आदि शक्ति, गुण, धर्म, चिरन्तनता, भूमण्डल, नैसर्गिक वातावरण एवं इन्द्रियातीत अनुभूति। जहाँ तक पर्यावरण का प्रश्न है, इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, किन्तु आधुनिक परिवेश में इसका संकुचित अर्थ जल, वायु, ध्वनि, मृदा प्रदूषण के रूप में ग्रहण किया जा रहा है। पर्यावरण एवं प्रकृति से साहित्य का सम्बन्ध अटूट है। प्रारम्भिक युग से ही साहित्य में प्रकृति का वर्णन प्रत्यक्ष रूप के साथ–साथ ही सहचरी, प्रेयसी, माया, नायिका, आलम्बन, प्रतीक, बिम्ब, अलंकार के रूप में होता रहा है। अधिकतर कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति को प्रमुख स्थान दिया है जैसे–विद्यापति, जायसी, तुलसीदास, बिहारी, सूरदास, महादेवी वर्मा, पंत इत्यादि। कवियों का प्रकृति चित्रण अद्वितीय बन पड़ा है। सदैव से ही बाल साहित्य का आधार प्रकृति रही है, 'पंचतंत्र' इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण है। बालक और प्रकृति समानधर्मी कहे जा सकते हैं, क्योंकि बच्चे जल की भांति निश्छल, मासूम, निर्मल, प्रातःकालीन समीर की मानिंद आनन्ददायक, फूलों जैसे कोमल, कुम्बड़बतिया से भी अधिक संवेदनशील बालकों का स्पष्ट, पारदर्शी, प्राकृतिक उपादानों के प्रति सहज अनुराग स्वाभाविक है, फिर चाहे वे झीलें हों, पर्वत हों, नदियाँ हों, चन्द्रमा हो, तारे हों, पशु–पक्षी अथवा पेड़–पौधे हों, बच्चे इन्हें मूर्त रूप से ही नहीं अपितु चित्रों या साहित्य में भी देख कर, पढ़कर खुशी से उछल पड़ते हैं या कहें कि बच्चों को निष्कपट संदर्भ ही लुभाते है।

प्रायः सभी बाल रचनाकारों ने प्रकृति और पर्यावरण को लेकर अत्यन्त सुन्दर सृजन किया है, इसी पंक्ति में बालकों के प्रिय रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने प्रकृति को उत्सव की तरह जिया है एवं अपने गीतों और कविताओं में प्रकृति के उपादानों यथा–पेड़–पोधे, वनस्पति, सूरज, चाँद–सितारे, बादल, ऋतुएं, फूल, तितली, चंदामामा, वर्षा, इन्द्रधनुष जैसे विषयों पर बहुत सुन्दर, भावपूर्ण, सरस, सुमधुर रचनाओं का सृजन किया है। चंदामामा को लेकर कवि शर्मा ने एक

अनुपम गीत की रचना की है जिसमें 'चंदामामा' के लिए नवीन भावबोध उकेरा है, कुछ इस तरह–

'मेरे मामा माँ के मामा, पापा के भी लगते मामा
यह कैसा रिश्ता है मामा, तुम हो सारे जग के मामा।[44]

दीनदयाल शर्मा जानते है कि बालकों को इन्द्रधनुष बहुत लुभाता है। इसको लेकर उनके मन में कई प्रकार की जिज्ञासाएँ जाग्रत होती हैं जैसे– अचानक आकाश के रंग कहाँ से आ जाते हैं, कुछ देर में कहाँ ओझल हो जाते हैं, इन्द्रधनुष सूरज के विपरीत दिशा में ही क्यों खिलता है। इन्ही संदर्भो को लेकर एक गीत–

'बरखा जैसे हो गई बंद, फैली धरा पे सुगंध
सूरज की विपरीत दिशा, खड़ा था सतरंगी पाबन्द।[45]

पेड़ हमारे जीवनदाता हैं, भाग्य–विधाता हैं, इन से ही धरती पर समस्त प्राणी जगत का अस्तित्व है। पेड़ बचेंगे तब ही जीवन बच पायेगा। इसके लिए जरूरी है कि बालकों को प्रारम्भ से ही वृक्ष लगाने, इन का संरक्षण करने की प्रेरणा दी जाये। प्रकृति–प्रेम सिखाया जाये। कवि शर्मा पर्यावरण के प्रति सावचेत है, पेड़ो से प्यार करते हैं, इसीलिए स्वयं पेड़ो के द्वारा मानव से प्रार्थना करवाई है–

हम को तुम मत काटो प्यारे, हम हैं तुम सबके रखवारे।
हम नभ में बदरा लाते हैं, बरखा फिर हम करवाते हैं।
धरती पर फैले हरियाली, खुशियाँ फैले द्वारे–द्वारे।[46]

राजस्थान सरकार द्वारा निर्धारित सरकारी विद्यालयों के पाठ्यक्रम में कक्षा चार की हिंदी विषय पुस्तक में उपर्युक्त भावों को व्यक्त करती एक कविता के अंश प्रस्तुत हैं, जो दीनदयाल शर्मा की रचना से भाव साम्य रखती है–

धरती के श्रृंगार पेड़ हैं,
जीवन के आधार पेड़ हैं।
जहाँ पेड़ हैं, शीतलता है, शीतलता से मेघ बरसते,
सूखी धरती हरियाती है, ताल–तलैया सारे भरते,
धरती के उपहार पेड़ हैं, खुशहाली के द्वार पेड़ हैं।[47]

'पहला सुख निरोगी काया', उक्ति बहुप्रचलित है। स्वस्थ समाज के लिए स्वच्छता एवं पवित्रता अनिवार्य घटक है। कहा भी है कि स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है। सफाई से मानव एवं सभी जीवों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। जिस देश में जितनी अधिक स्वच्छता होती है, वहां के

नागरिक उसी अनुपात में अधिक स्वस्थ रहते हैं और वह राष्ट्र उतना ही उन्नत होता है। इन सभी संदर्भों से दीनदयाल शर्मा भली भांति परिचित हैं, सफाई की महत्ता को स्वीकारते हुए लिखते हैं–

आओ हम सब करें सफाई, रलिमस सारे बहना भाई।
तन की मन की आस–पास की, इधर–उधर की आम खास की
जगह–जगह जो लग गए जाले, उनकी है अब शामत आई।[48]

'बाल प्रहरी' में तनूजा बिष्ट, कक्षा आठ रा.क.उ.प्रा.वि. निंगनाद नैनीताल की छात्रा की रचना पढ़ने का अवसर मिला तो परम हर्ष हुआ कि बालक सफाई को लेकर कितने जागरूक हैं। बाल पत्रिका में बच्चों की रचनाओं को सतत् प्रकाशित करने वाले सम्पादक श्रीमान् उदय किरौला साधुवाद के पात्र हैं। यह है बाल साहित्य की उपयोगिता, शक्ति, अतुल्य योगदान।

गंदगी में होते हैं रोग, इसलिए सब करो सफाई।
अपना गांव साफ रखें, मिलकर बहना भाई।
बिस्कुट, टॉफी, कुरकुरे, भले ही रोज खाओ।
कूडा कूड़ेदान में डालो, इस पर न शरमाओ।[49]

सारांशतः कह सकते हैं कि दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य मे प्रकृति–प्रेम एवं पर्यावरण चेतना के समादृत, सार्थक स्वर मुखरित हुए हैं। रचनाकार ने प्रकृति के समग्र उपादानों को लेकर बड़ी सहजता, तन्मयता व सहजता के साथ व्यक्त किया है। स्वयं रचनाकार को कुदरत से अनन्य प्रेम है तभी इतनी खूबसूरती के साथ वर्णन करने में सक्षम हो सके हैं।

3.1.5 प्रेरणा तत्त्व

प्रेरणा एक ऐसा भाव, कारक, बल, तत्व है जो मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने और लक्ष्य की ओर पूरी तन्मयता के साथ अग्रसर होने का सम्बल प्रदान करती है। प्रेरणा असीम शक्ति, ऊर्जा से आप्लावित होने की क्रिया मानी जा सकती है। यह साधारण आदमी को भी महानता की ओर प्रयाणशील करने के लिए तत्पर कर देती है। किसी के द्वारा कहा गया एक प्रेरक शब्द मानव के जीवन की दिशा ही बदल देता है। प्रेरणा का कोशसम्मत तात्पर्य है– प्रेरणा– सं. (पु.) 1. उत्साहित करना, 2. काम में प्रवृत करना सं. (स्त्री.) 1. काम में लगाना, 2. मन में उत्पन्न भाव, विचार, 3. संकेत (जैसे– अध्यापक की प्रेरणा से जाना) दाता (पु.) प्रेरणा देने वाला व्यक्ति[50]

अंग्रेजी में प्रेरणा का समानार्थक शब्द Inspire है, जिसका शब्दकोश सम्मत आशय– Inspire इन–स्पायर p.i. - to inhale, to infuse supernatural elementintoश्वास लेना, उत्तेजित करना, दैवी भावना उत्पन्न करना।

Inspiring इन स्पायरिंग–adj. infusing, sprit, animating उत्तेजक, प्रेरक स्फुर्तिवर्द्धक[51]

वस्तुतः हर रचना में प्रेरक तत्त्वों का समावेश होता है। लेकिन बाल साहित्य से प्रेरणा का प्रगाढ गहरा सम्बन्ध है। बालक स्वभाव से भोला होता है, जरा सी श्लांघा या एक प्यार भरी थपकी से बाल–मन में उत्साह का संचार हो जाता है और बालक उछल–उछल कर कार्य करने लगता है। यदि बालक को सही प्रेरणास्पद मिल जाये तो उसकी आंतरिक शक्तियां उचित दिशा की ओर अग्रसर हो सकती है तथा वह कुशल नागरिक एवं श्रेष्ठ मानव बन सकता है। यशस्वी बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा इस यथार्थ से परिचित हैं इसीलिए अपने काव्य सृजन में प्रेरक तत्वों का कुशल संयोजन करते हुए प्रेरक गीतों के द्वारा बच्चों को आगे पढ़ने की प्रेरणा देते हैं–

'चल चल चल भई चल चल चल, रूक ना कभी तू चलता चल।
ठहरा जल गंदा हो जाता, उससे भी तू शिक्षा लेले।
चलना ही कहलाता जीवन, कर्म किए जा चलता चल।
चल चल चल भई चल चल चल, इक दिन तुझको मिलेगा फल।'[52]

ऐसी किताब दिला दो मुझको, पढ़कर खुश हो जाऊँ।
अच्छी–अच्छी बातें उसकी, सबको मैं बतलाऊँ। [53]

3.1.6 पारम्परिकता और आधुनिकता

पारम्परिकता

स्वस्थ, सुसंस्कृत, संतुलित और विकसित समाज की संरचना के लिए हमारे पूर्वजों ने कुछ नियम, संस्कार, विधियाँ, मर्यादाएं, विश्वास, पाबंदियाँ, रीतियाँ, अवधारणाएं आदि का निर्धारण किया है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांरित होती रही हैं, जिन्हें आज हम परम्परा, प्रथा, रीति, प्रणाली के नाम से जानते हैं, जैसे–तीज–त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान, उत्सव, शादी–विवाह, राष्ट्रीय समारोह और भी कई। ये परम्पराएँ सदियों से मानव–जीवन को संचालित करती रही हैं और जीवन में रस घोलती आ रही। परम्परा शब्द का शब्दकोशगत तात्पर्य है–

परम्परा – सं. (स्त्री.)

1. चला आता हुआ क्रम, अटूट सिलसिला, 2. प्रथा, प्रणाली, 3. रीति–रिवाज, वाद– (पु.) परम्परा से चले आ रहे सिद्धान्त एवं मत ही ठीक है ऐसा विचार एवं कर्म[54]

अंग्रेजी भाषा में परम्परा का समानार्थी शब्द Tradition है जिसका कोशसम्मत आशय– Tridition ट्रेडिशन–n. an oral account bended down from ancestors to posterityपरम्परा,

कथा, इतिहास, पुराण Tradition (अल)– adj. communicated from father to son. परम्परा प्राप्त, साम्प्रदायिक[55]

हिंदी साहित्य में परम्पराओं का निर्वहन प्रारम्भ से होता आया है क्योंकि साहित्य समाज का अविभाज्य अंग है। लगभग सभी साहित्यकारों ने प्रचलित रीतियों का पालन किया है। प्राचीन ग्रन्थों मे जैसे–महाभारत, रामचरित मानस, पद्मावत, कामायनी से लेकर अद्यतन। इसी क्रम में बाल साहित्यकार भी परम्पराओं का रक्षण पूरी निष्ठा से करते आ रहे है जो अत्यावश्यक भी हैं, क्योंकि बालक अपने अपने साहित्य के द्वारा अपनी संस्कृति, प्रणालियों, रीतियों से परिचित हो सके। वर्तमान के प्रायः सभी बाल रचनाकार किसी न किसी रूप में प्रणालियों से आबद्ध हैं। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा ने भी अपने रचना कर्म में परम्परागत संदर्भों का पूरी तन्मयता से संयोजन किया है। बाल साहित्य के प्रारम्भ से चले आ रहे विषयों पर बालोपयोगी रचनाएँ लिखी हैं। प्राकृतिक उपदानों, पशु–पक्षियों, जीव–जंतुओ, चाँद–सितारों, परिजनों, ऋतुओं, तीज–त्यौहरों, गुड्डा–गुडिया आदि हर बाल सुलभ काव्य का मनमोहक सृजन करके बाल साहित्य को समृद्ध किया है। मुनिया और उसकी गुडिया को लेकर एक भावपूर्ण चित्र–

मुनिया रोती ऊँ ऊँ ऊँ, ना जाने रोती है क्यूँ।
किस ने इसको मारा है, या इसको फटकारा हैं।
रोना अच्छी बात नहीं है, फिर मुनिया रोती है क्यूँ।
गुड़िया इसकी दूर गई, या गुड़िया फिर टूट गई।।'[56]

गुड़िया और मुनिया का नाता शाश्वत है। बचपन में मुन्नी का गुड्डे–गुड़िया बनाना, उन से खेलना, उनका ब्याह रचाना, ये हमारी प्राचीन–काल से चली आ रही परम्परा रही है। बाल्यावस्था में हर बच्ची गुड़ियाओं से खेलती हैं, और इन्हें जरा सी भी चोट आने पर ये रो–रो कर घर को सर पर उठा लेती हैं। आज गुड्डे–गुड़ियाओं ने आधुनिक व्यावसायिक स्वरूप धारण कर लिया है। इन से बाजार सुसज्जित है, एक से एक सुन्दर सजी–धजी गुड़ियायें राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय बाजारों में उपलब्ध हैं, जिन के नाम तक रखे हुए हैं यथा– बार्बी। राजस्थान में तो देवशयनी एकादशी के दिन को 'लाड़ी बुहानी' पर्व के रूप में मनाया जाता है, इस दिन लड़कियाँ अपने द्वारा बनाये गए गुड्डे और गुड़िया को गुड़–धानी के साथ नदियों में प्रवाहित करती हैं।

पशु–पक्षियों से बाल साहित्य का जन्म–जन्मान्तरों का अटूट सम्बन्ध है। साहित्यकार शर्मा ने पशुओं को लेकर अत्यन्त मासूम गीत एवं कवितायें गढ़ी हैं। एक प्यारा सा शिशु गीत–

'मेरा कुत्ता, प्यारा कुत्ता।
गरमी–सरदी, पहने जूता।[57]

रेलगाड़ी बालकों और बाल साहित्यकारों का प्रिय विषय रही है। सम्भवतः हर रचनाकार ने रेल पर भी जरूर रचना की है। बच्चे मिलकर रेल बनाते हैं, आगे का बच्चा इंजन, पीछे का बच्चा गार्ड की भूमिका निभाता है। यह बरसों से बालकों का पसंदीदा खेल रहा है। दीनदयाल शर्मा ने भी इस विषय को गीत में पिरोया हैं–

'जुड़ कर रेल बनायेंगे, गीत खुशी के गायेंगे।
'खेलेगें हम सारे बच्चे, इक दूजे के आगे–पीछे।[58]

बन्दर–भालू के खेल तो गली–गली, मोहल्ले–मोहल्ले होते आये हैं। बच्चों के भी ये पसंदीदा जानवर है। प्रस्तुत उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि शर्मा परम्पराओं को जीने वाले और बालकों को उनसे जोड़ने में कुशल है।

आधुनिकता

परिवर्तन जगत का अखण्ड सत्य है, इसीलिए इतना मनोहारी है, इसी से जीवन में स्पन्दन है। परिवर्तन को समय के स्वरूप में दर्शाने के लिए ही परम्परा, आधुनिकता जैसे शब्दों की व्युत्पत्ति हुई है। आधुनिकता को हम वर्तमान का पर्याय मान सकते हैं। आधुनिक शब्द का शब्दकोश के अनुरूप अर्थ है –

आधुनिकता– सं. (वि.) आजकल का, वर्तमान काल का, नये जमाने का, उपरोक्त अर्थ के अतिरिक्त आधुनिक शब्द के अन्य आशय भी हैं – करण (पु.) आधुनिक रूप देना। अंग्रेजी में आधुनिक शब्द का समानार्थी शब्द Modern है जिसका तात्पर्य –

Modern – मॉडर्न – edj. Of the present times, not ancient आधुनिकता (अर्वाचीन), नवीन (नया)[59] n.pl. people of modern times आजकल के लोग, नवीनता[60]

सामान्य हिंदी साहित्य की भांति बाल साहित्य में भी आधुनिक भावबोध का सुन्दर चित्रांकन हुआ है। सभी बाल साहित्यकारों ने अपने–अपने युगानुरूप सदर्भो को, घटनाओं को, बदलाव को स्वयं जिया और उसे अपनी सृजनात्मकता में उकेरा है, चाहे अमीर खुसरो हो, भारतेन्दु हो, प्रेमचंद हो या डॉ देवसरे हो। सर्वविदित है कि साहित्य और समाज सम्पूरक है। बालकों के प्रिय रचनाकार दीनदयाल शर्मा आज के युग के साहित्यकार हैं। इनके बाल काव्य में परम्परा और आधुनिकता का सम्यक सम्मिश्रण मिलता है। कवि शर्मा का बाल साहित्य यथार्थ के धरातल पर खड़ा हुआ हैं, जिसे कल्पना के रंगों से सज्जित करके, बालकों की रूचि के अनुसार मनोरंजक बना कर व्यक्त किया है। स्वयं दीनदयाल शर्मा ने राजस्थान पत्रिका को दिए गए अपने साक्षात्कार में बताया है–

'आज के बच्चे बहुत प्रबुद्ध हैं। वे अपने लिए रचे जा रहे बाल साहित्य में अपनी जिज्ञासाओं का उत्तर चाहते हैं। परम्परागत लेखन कर उन्हें बाल साहित्य से जोड़ कर नहीं रखा जा सकता है। बाल साहित्य का सृजन मौजूदा परिवेश और बाल इच्छाओं के मुताबिक करना होगा।[61]

वर्तमान समय तकनीक और संचार क्रांति का है। आज का बालक मोबाइल फोन, टी.वी., नेट आदि उपकरणों को खिलौनों की भांति उपयोग करता है। इस प्रसंग में वह बड़ो से दस कदम आगे हैं। आज के दौर में हाल यह है कि दादा के अपने पौते से मोबाइल फोन का संचालन सीखना पड़ता है। साहित्यकार शर्मा ने इन विषयों पर बहुत मनोरंजक और आल्हाद से भरी बाल काव्य की रचना की है। मोबाईल को लेकर बाल हठ प्रस्तुत है–

'माँ मुझ को मोबाईल दिला दो,
मैं भी गेम चलाऊंगा।
नहीं दिलाया मोबाइल, तो
खाना मैं नहीं खाऊंगा।[62]

आज कल माता–पिता बालक के हाथ में मोबाइल इसलिए थमा देते हैं कि ताकि वह उसमें गेम खेलता रहे और उनको तंग नहीं करे। जब बालक दूसरे बच्चे को मोबाईल पर गेम चलाते हुए देखता है तो, वह भी माँ से जिद करने लगता है। यह आधुनिक समय का यथार्थ है। कम्प्यूटर वर्तमान युग की सब से बड़ी आवश्यकता बन गई है। सारी दुनिया का ज्ञान इससे प्राप्त किया जा सकता है। जो भी जानकारी हमें चाहिए कम्प्यूटर में मिल जाती है। इस छोटे से बक्से में सारे संसार का ज्ञान, विज्ञान समाहित है। इसकी वजह से बहुत सी मुश्किलें आसान भी हो गई है। दीनदयाल शर्मा ने कम्प्यूटर इसी शक्ति का अपनी बाल रचना में उल्लेख किया–

'कम्प्यूटर है हम सब पर भारी, 'माउस' इसकी करे सवारी।
दुनिया का इस में है ज्ञान, इसकी ताकत को पहचान।[63]

प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल ने भी इसी संदर्भ में बहुत सुन्दर बालगीत लिखा है–

'कम्प्यूटर जी आ जाओ, होमवर्क निपटा जाओ।
तुम तो माउस वाले हो, सचमुच बड़े निराले हो।।'[64]

बाल साहित्यकार शर्मा नए युग के कवि है। समय सापेक्ष रचना कर्म करने में पारंगत हैं। चीजों को नई दृष्टि से देखते हैं, उस पर मनन करते है, विश्लेषण करते हैं और बाल काव्य में उसको किस प्रकार प्रयोग में लाया जाये, जिससे बालक का मनोरंजन भी हो एवं वह बातों ही

बातों में नई तकनीक से भी परिचित हो जाये। चूहे–बिल्ली की सैंकड़ो कहानियाँ प्राचीन काल से आज तक बाल साहित्य में प्रचलित हैं, जिन को पढ़ कर बच्चे ऊब महसूस करने लगे हैं। उनको अब कुछ नया चाहिए। आज के बाल रचनाकार पुराने विषयों में नई कल्पनाओं के रंग भरकर नए स्वरूप से अभिव्यक्त करने लगे हैं। दीनदयाल शर्मा ने भी ऐसे कई सफल प्रयोग किए हैं, नई तकनीक के साथ–

मूंछ हिलाकर बिल्ली बोली,मुझ से मत घबराओ।
छोड़ टोकरा आम का,मेरे पास तो आओ।
चूहे ने मोबाइल चलाया, उस में कुत्ता भौंका।
दुम दबाकर बिल्ली दौड़ी,लग गया जैसे चौका।[65]

यह है नई तकनीक का कमाल। कवि शर्मा ने सिद्ध कर दिया कि अब चूहे को बिल्ली से डरने की जरूरत नहीं हैं, आज का चूहा स्मार्ट हो चुका है। हर समस्या का समाधान उसके पास है। प्रतीक के द्वारा कवि दीनदयाल शर्मा ने ऐसे कई नवाचार किये हैं, जिनके द्वारा बहुत बड़ी बात यहाँ कह दी हैं कि अब तानाशाही नहीं चलने वाली, यह सब बहुत हो चुका। आज का बालक हर चीज को, हर घटना को अपनी दृष्टि से देखता है, उस पर मनन भी करता है और जहाँ उसे पीड़ा होती है, वह बड़ो से मासूम से सवाल भी करता है। प्रस्तुत है एक करूणा से ओतप्रोत बिम्ब–

'हमें देर हो जाती जिस दिन,
सर जी करते खूब पिटाई।
सर जी देर से आते पापा,
उन की करता कौन खिंचाई।[66]

यह आधुनिक काल की गम्भीर समस्या हैं, जिस की ओर रचनाकार ने सब का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। बालक शाला में होने वाली उसकी पिटाई से बहुत आहत है, पीड़ित है। जिस गलती के लिए उसे सजा दी जाती है, उसी गलती को शिक्षक द्वारा करने पर कौन सजा देता है। बालक के मन में ऐसे सवाल खड़े होने लगे हैं। यह दीनदयाल शर्मा का भोगा हुआ यथार्थ है। यद्यपि अब स्कूल में बालकों को सजा देने पर कानूनन रोक लगा दी गई हैं फिर भी शिक्षक यदा–कदा बालकों पर हाथ उठा लेते हैं। पिटाई के डर से न जाने कितने बच्चे पढ़ने से वंचित हो चुके हैं। दीनदयाल शर्मा ने अपनी कविताओं में परम्पराओं के मनोहारी बिम्ब रचे हैं वहीं आधुनिक संदर्भों को बड़ी तन्मयता से उद्घघाटित किया हैं।

3.1.7 मूल्य

भारतीय संस्कृति मूल्याधारित है, जिस में 'जिओ और जीने दो', 'वसुदेव कुटुम्बकम्', 'अहिंसा परमोधर्म', 'आत्मनि प्रतिकूलानि, 'अतिथि देवो भवः', परेशा न समाचरेत, सत्यं, शिवमं, सुन्दरम् जैसे सूत्र वाक्यों का प्राधान्य रहा है। मूल्य का सामान्य अर्थ वस्तु की कीमत, भाव के संदर्भ में लिया जाता है। लेकिन जीवन के प्रसंग में मूल्य गुण या तत्व के रूप में ग्रहण किए जाते हैं। मूल्यों के कई भेद प्रचलित हैं यथा–जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य, मानव मूल्य, इन सभी का भावार्थ समान हैं। मूल्य वह कारक है, जिनको व्यवहार में लाने पर किसी भी समाज, देश या दुनिया के चरित्र का निर्माण होता है तथा जीवन–पथ पर चलने के लिए ये मूलभूत सिद्धांत हैं। इनका सम्बन्ध आत्मा से होता है। इनको अपनाने से मनुष्य को आत्मिक बल मिलता है, आत्म शक्ति, आत्मविश्वास में श्रीवृद्धि होती है। इनको अपनाने से मन को पवित्रता व सहजता की अनुभूति होती है। मूल्य का शब्दकोश के अनुरूप आशय है –

मूल्य – सं. (पु.) 1. दाम, कीमत (जैसे कपड़े का मूल्य, किताब का मूल्य, 2. भाव (जैसे – सोने, चांदी का मूल्य, 3. तत्व (जैसे चरित्र का मूल्य, मानवत का मूल्य)[67]

अंग्रेजी में मूल्य शब्द का समानार्थक शब्द Value है। इसका शब्दकोष सम्मत अर्थ–

Value - n. worth, price, importance, precise significationमूल्य, दाम, महात्म्य, सारता[68]

मूल्यों के विषय में सुधा जायसवाल ने लिखा है–'किसी भी व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का होना ही धर्म है, नैतिक मूल्यों के अनुरूप आचरण ही उसे चरित्रवान बनाता है। नैतिक मूल्यों का पालन ही सदाचार है, सदाचार व्यक्ति को देवत्व की ओर ले जाता है।'[69]

मनुस्मृति में मनु ने धर्म दस के लक्षण बताए हैं, जो हमारे प्रमुख मूल्य हैं–

धृति क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विध्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[70]

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द मूल्यों के संदर्भ में लिखते हैं– 'साहित्य का प्रयोजन मनोरंजन जरूर है, पर यह मनोरंजन वह है, जिस में हमारी कोमल और पवित्र भावनाओं को प्रोत्साहन मिले, हम में सत्य, निस्वार्थ सेवा, न्याय आदि देवत्व के जो अंश हैं वे जाग्रह हों।'[71]

उपरोक्त परिभाषाओं एवं शब्दकोश के अर्थानुसार नैतिक मूल्य व्यक्ति को सम्यक, सदाचारी बनाते हैं, मानव को देवत्व की ओर अग्रसर करते हैं। अपने देश तथा अपने समाज के युगानुकूल जीवन यथार्थ और उससे निवृत सिद्धांत ही मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। मूल्य

शब्द मूल–यत् से निष्पन्न हुआ है। एक वाक्य में कहें तो मूल्य वो कारक है जो जीवन को मूल्यवान बनाते हैं।

हिंदी साहित्य में मूल्यों को अत्यन्त उच्च स्थान दिया गया है। पूर्ववर्ती रचनाकारों में यथा–कवि बिहारी, रहीम, कबीर दास, नामदेव इत्यादि संतों एवं कवियों के साथ–साथ विद्वानों, रचनाकारों ने अपनी रचनाधर्मिता में मूल्यों को विशेष महत्व दिया है। बाल साहित्य में भी आदि काल से नैतिक मूल्यों पर बहुत अधिक बल दिया गया है। दादा– दादी की कहानियां हों, पंचतंत्र की हों या भारतेंदु का बाल साहित्य, सभी में नैतिक मूल्यों का उल्लेख मिलता है। वर्तमान बाल साहित्य में भी, परम्परावादी एवं आधुनिक साहित्यकार नैतिक मूल्यों को बाल साहित्य का प्राण तत्त्व मानते हैं एवं बाल साहित्य में मूल्यों को सर्वोपरि माना है। वर्तमान युग में जहाँ मूल्यों का ह्रास बड़ी तीव्रता के साथ हो रहा है, ऐसे में मूल्यों की सार्थकता और प्रासंगिक हो जाती है। दीनदयाल शर्मा समाजचेता कवि हैं। इन्होंने ने अपने बाल काव्य में सत्य, अहिंसा, सहयोग, प्रेम, क्षमा, शांति, सहानुभूति, प्रकृति–प्रेम इत्यादि मूल्यों को पर्याप्त महिमा मण्डित किया है, एवं इसके लिए बालकों के द्वारा गांधी बाबा का आव्हान करवाते हैं कि दुनिया वाले प्यार, शांति, सत्य, अहिंसा सब कुछ भूल गए हैं, इन्हें फिर मार्गदर्शक की आवश्यकता है–

'आ जाओ तुम गाँधी बाबा, सुन लो मेरी पुकार।
भूल गए हैं यहाँ लोग सब, प्रेम, मोहब्बत प्यार।
शांति, अमन और सत्य–अहिंसा, पाठ कौन सिखलाए
समय नहीं है पास किसी के, कौन किसे बतियाए।[72]

आगे रचनाकार बच्चों के द्वारा प्रेम के साथ मिलकर रहने की, सभी प्रकार के भेद–भाव भुलाकर, खुशियाँ बांटने की बात करते हैं–

'आपस में हम सब हैं भाई, नहीं करें हम कभी लड़ाई।
प्रेम मधुरता का रस घोले, इक दूजे से मीठा बोलें।
आओ मिलकर बात करें हम, आपस में बांटे खुशियाँ गम।
हम सब बालक जात न जाने, सब जन को हम अपना माने।
भेदभाव की मेटें खाई, इसमें हम सब की भलाई।[73]

पेड़ हमारे जीवन दाता है।दान की महत्ता के लिए इनसे अच्छा कौन शिक्षक हो सकता है भला–

पेड़ हमारे जीवनदाता,
इन से जन्म–जन्म का नाता।

भेदभाव नहीं संग किसी के,
शीतल छाँव लुटाते हैं।[74]

मूल्य भारतीय जीवन पद्धति या कहें संस्कृति के आलोक स्तम्भ हैं, दीनदयाल शर्मा मूल्य–शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध होने के कारण अपनी बाल कविताओं में मूल्यों पर विशेष बल देते हैं–

'अगड़म–बगड़म करें न तिकड़म, सच्चाई पर रहेंगे हरदम।
'साँच को आँच' कभी नहीं आता, जो सच्चा वह नहीं घबराता।[75]

'सत्यमेव जयते' सूत्र वाक्य सर्वप्रचलित है। यहाँ 'साँच को आँच' मुहावरें का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। सच्चाई में अपरम्पार शक्ति होती है। रचनाकार शर्मा ने सच की महिमा की सार्थक अभिव्यक्ति करके बालकों को सच्चाई के मार्ग पर चलने को उदत किया है, जिस की आज सर्वाधिक जरूरत है। इस भांति कवि ने कभी अप्रत्यक्ष रूप से तो कभी प्रतीकों के माध्यम से अपने बाल काव्य में मूल्यों की प्रतिष्ठा बढ़के उच्च स्थान देकर, बालकों को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए, बातों–बातों में बालकों को जीवनापयोगी आदर्शो से परिचित करवा दिया है 'सुगर कोटेडं' दवा की तरह।

3.1.8 राष्ट्र–प्रेम

हमारे यहाँ राष्ट्रीयता की भावना के स्रोत वैदिक साहित्य से ही विद्यमान रहे हैं– 'गते गहि स्वराज्ये' (ऋग्वेद–5, 5, 6) 'आ राष्ट्रे राजन्यः' (यजुर्वेद 28/22), 'राष्ट्रेण वर्द्धाताम' (अथर्ववेद–5, 1, 7)[76]

राष्ट्र–प्रेम युग्म शब्द है जो 'राष्ट्र' एवं 'प्रेम' शब्द के संयोग से बना है, जिस का आशय देश से प्रेम करना है। राष्ट्र का एक पर्याय शब्द देश है जिस का अर्थ है, निर्धारित सीमाओं में आबद्ध एक ऐसा भू भाग जिसके अंतर्गत उसमें निवास करने वाले नागरिक, पशु–पक्षी, जीव–जंतु, पर्वत, नदियाँ, झील–झरने, जंगल, सागर इत्यादि सम्मिलित होते हैं। एक देश के अंतर्गत विभिन्न राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक धारणाओं, मान्यताओं को मानने वाले लोग रहते हैं, जिनके रीति–रिवाज, भाषा–बोलियाँ, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, भोजन, कला संस्कृति, जाति धर्म भिन्न भिन्न होते हैं। इन सभी विविधताओं के मध्य भी भावनात्मक दृष्टि से सभी नागरिकों के हृदय में परस्पर प्रेम, सदभावनाएँ, करूणा, सहानुभूति के भाव लबालब भरे होते हैं। भारत देश विभिन्नताओं के इन्द्रधनुषी रंगों से पगा हुआ है। इस प्रकार अनेकानेक वैविध्य के बाद भी नागरिकों के अन्तस् में निहित भावनात्मक एकता का सौन्दर्य अप्रतिम है। राष्ट्र शब्द का शब्दकोष के अनुरूप आशय–

राष्ट्र– सं. (पु.) देश जैसे– (भारत एक विशाल राष्ट्र है।)

देश को अतिरिक्त निम्नांकित अर्थ भी यहाँ प्रस्तुत हैं–

2. राज्य (जैसे– जैसे सब को राष्ट्र भाषा का सम्मान करना चाहिए)

3. जाति (जैसे– हम एक देश और राष्ट्र के निवासी हैं)

ऋण– (पु.)– राज ऋण, कर्मी (पु.) राजनीतिज्ञ, कुल–(पु.) राष्ट्रमण्डल, गान, गीत (पु.) देशगान, चिन्ह (पु.) राजचिन्ह, तंत्र (पु.) राज्यतंत्र[77]

प्रेम संसार का आधार है। समस्त चराचर जगत प्रेम के चुम्बकीय आकर्षण की शक्ति से चलायमान है। प्रेम एक सुखद, विलक्षण, अनिर्वचनीय, अवर्णनीय, शब्दातीत, अद्‌भुत, अलौकिक, असाधारण, दिव्य, आनंदमूलक अतिसूक्ष्म लोकोत्तर आस्वादमय अनुभूति है। प्रेम का शब्दकोशीय अर्थ–

प्रेम– सं. (पु.) प्रीति, प्यार, 2. माया, लोभ, 3. लगाव (जैसे – साहित्य के प्रति प्रेम)

कथा (स्त्री.) प्रेम–कहानी, कलह (पु.) प्रेम होने वाला झगडा–गविर्ता (स्त्री.) प्रेम पर गर्व करने वाली नायिका, गाथा – (स्त्री.) – प्रेम कहानी, निवेदन (पु.) प्रेम की याचना या प्रार्थना पत्र– (पु.) प्रेम में लिखा गया पत्र, भाव (पु.) प्रेम का भाव, भक्ति (स्त्री.) प्रेम भाव से की गई भक्ति।[78]

अंग्रेजी में प्रेम के लिए 'Love' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

Love 1. To be in love with, to regard with affection, to delight in to edmire, प्रेमासक्त होना, प्रेम करना, प्रसन्न होना, प्रशंसा करना।[79]

डॉ. बहादुर मिश्र ने राष्ट्र को बड़ी सुघड़ता से परिभाषित किया है–

'राष्ट्र' शब्द के प्रबुद्ध चेतन, किन्तु स्वेच्छया एकताबद्ध मानव–समूह और उस का परिवेश दोनों का बोध होता है, दूसरे शब्दों में 'राष्ट्र' वह लोक–समुदाय है, जो एक ही देश में बसता हो या एक ही शासन में रहता हुआ एकता के सूत्र में आबद्ध हो। फलस्वरूप, इसके अंतर्गत भूखंड, पर्वत, वनोपवन, नदी, पेड़–पौधो के अलावा वहाँ के निवासियों की भाषा, पहनावा–ओढ़ावा, संस्कृति इत्यादि के प्रति निर्व्याज्य प्रेम, अभिमान इत्यादि के भाव स्वयमेव समाहित हो जाते हैं।'[80]

उपर्युक्त शब्दकोशगत एवं परिभाषाओं से स्पष्ट है कि राष्ट्रप्रेम का सरल भावार्थ देश से प्रेम करना है। प्रत्येक नागरिक को स्वदेश से अनुराग होता है क्योंकि वह उस की जन्म भूमि होती है, जहाँ खेल–कूद कर वह बड़ा होता है। हिंदी साहित्य में राष्ट्रप्रेम की भावना का चित्रण हर युग में होता आया है। स्वाधीनता संग्राम में देश–प्रेम से ओतप्रोत रचनाओं का सृजन पराकाष्ठा पर था। तत्कालीन रचनाकारों में भारतेंदु हरिश्चन्द्र, रामधारी सिंह दिनकर, मैथिलीशरण

गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रेमचन्द इत्यादि कवियों ने देशप्रेम का शंखनाद किया। माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' कविता राष्ट्र प्रेम की अद्वितीय मिसाल बन चुकी है– चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ......... मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना फेंक....। प्रस्तुत रचनाकारों ने बाल साहित्य को भी देशप्रेम की रचनाओं से सुसमृद्ध किया है। हर युग के बाल साहित्य में राष्ट्र–प्रेम से समन्वित गीतों, कविताओं का आव्हान मिलता है। स्वाधीनता के पूर्व और पश्चात् के कवियों यथा–सुभद्रा कुमारी चौहान, जगदीश चन्द्र शर्मा, राष्ट्रबंधु, डॉ. देवसरे, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', निरंकार देव सेवक, कृष्ण शलभ, मधुसूदन साहा, दिविक रमेश, घमंडी लाल अग्रवाल जैसे बाल साहित्यकारों ने राष्ट्र प्रेम की रचनाओं से बाल साहित्य को सम्पोषित किया है। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य देश प्रेम से अनुप्राणित है, इन्होंने राष्ट्र प्रेम के कई श्रेष्ठ गीतों का सृजन करके बालकों को अपने राष्ट्र से अनुराग रखने की प्रेरणा प्रदान की है एवं राष्ट्रनायकों, जवानों, किसानों, मजदूरों पर भी प्रेरणास्पद कवितायें लिखीं हैं। जवाहर लाल नेहरू पर लिखी पद्य रचना में उनके जन्म, माता–पिता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम देश के आजाद होने, बच्चों द्वारा 'चाचा' का सम्बोधन पाने से लेकर उनके जन्म दिवस को 'बाल दिवस' के रूप में मनाने तक के सभी प्रसंग छोटी सी रचना में उकेर दिए हैं। अर्थात् 'गागर में सागर'।

'माँ स्वरूपरानी थी जिन की, पिता थे मोतीलाल।
इलाहाबाद मे जन्मे थे जो, नाम जवाहर लाल।
अंग्रेजों के अत्याचार से, व्यथित भारतवासी।
राजद्रोही आरोप में जवाहर, बने जेल प्रवासी।
पन्द्रह अगस्त सैंतालीस के दिन, हुआ देश आजाद।
तोड़ गुलामी की जंजीरे, फिर से हुआ आबाद।
बच्चों के प्यारे चाचा तुम, याद सभी को आते।
चौदह नवम्बर के दिन उत्सव, रलिमल सभी जानते।[81]

एक और देश भक्ति से पगी हुई रचना भी रेखांकित करने योग्य है, जिसमें जवानों किसानों सद्भावनाओं, धार्मिक समन्वय के साथ–साथ राष्ट्र नायकों की राष्ट्र भक्ति को बहुत प्रेरक स्वरूप में प्रस्तुत किया है।

जय जवान बोल, जय किसान बोल,
ये है प्यारा देश हमारा, हम इसकी संतान हैं।
सब धर्मों के लोग यहाँ हैं, हम इस पर कुर्बान है।।
जय जवान ....

राजगुरू, सुखदेव, भगतसिंह, सच्ची इनकी शान है।
खतरों से ना डरे कभी ये, निडरता पहचान है।।
जय जवान बोल ....
अन्न उपजाएँ, खुशियाँ लाएँ, हम भारत की आन हैं।
मेहनत से न डरने वाले, हम मजदूर किसान हैं।
जय जवान बोल ....[82]

रचनाकार दीनदयाल शर्मा का देश के प्रति अनुरक्ति, प्रेम देखते ही बनता है। वस्तुतः राष्ट्र के अंतर्गत उसकी निर्धारित सीमा मे ंआने वाला जीव–जगत, वनस्पति–जगत एवं सभी प्राणी समाविष्ट होते हैं। दीनदयाल शर्मा ने इन उपादानों, विषयों पर अनेक बालोपयोगी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं यथा – पशु–पक्षी, प्रकृति, जीव–जंतु, मानव। ये सभी राष्ट्रीयता के भावों से समन्वित रचनाएँ हैं।

3.1.9 समसामयिकता

सामियक शब्द को समय के अनुरूप, वर्तमान समय, वर्तमान से सम्बद्ध, समयबद्ध कार्य, समकालीन, वर्तमान से जुड़ी कोई घटना या कार्य के अर्थ में लिया जाता रहा है। 'समसामियक' में मूल शब्द 'समय' है, जिसमें 'सम' उपसर्ग, 'इक' एवं 'ता' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। स्पष्ट है कि यह शब्द समय का सूचक है। शब्दकोश रफ्तार के अनुसार समसामयिकता से तात्पर्य है –

1.समय अर्थात् परिपाटी के अनुसार होने वाला,   2. अनुबंध के अनुरूप होने वाला

3. ठीक समय पर होने वाला   4. प्रस्तुत या वर्तमान समय का[83]

सामियक–सं. (वि.) 1. समयानुसार होने वाला (जैसे सामयिक कार्यक्रम) 2. वर्तमान समय का (जैसे–सामयिक पत्र)[84]

उपर्युक्त शब्दकोशों के अर्थानुसार समसामयिक शब्द वर्तमान समय, तत्कालीन, समयानुसार का सूचक है। साहित्य समसामयिकता से विशिष्ट रूप से सम्बद्ध है क्यांकि साहित्य तत्कालीन होने वाली घटनाओं का दस्तावेज होता है, इसीलिये साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। प्रत्येक रचनाकार अपने समय को जीता है, भोगता है, अनुभूत करता है और उसकी यही संवेदनाएं उसके रचना कर्म में प्रतिबिम्बित होती हैं। 'रामचरितमानस' इसका ज्वलंत उदाहरण है। संत तुलसीदास ने अपने समय की परिस्थितियों को, संस्कृति को मानस में दर्शाया है। बाल साहित्य में भी समसामयिक घटक सदैव से उजागर होते रहे हैं, चाहे कथासरित्सागर हो या राजा–रानी की कहानियाँ या पौराणिक कथाएँ, इसी के साथ समस्त लोरियाँ, बालगीत भी अपने–अपने समय के साक्षी हैं। समसामयिकता की प्रासंगिकता पर **डॉ. शेषपाल सिंह लिखते हैं–**

'समसामयिकता साहित्य का गुण है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्यकार अपनी दृष्टि से उसे देखता है और अपने ढ़ंग से उसे अपने सृजन में पिरोता है। समाज की तत्कालीन समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना और उनका समुचित समाधान सुझाना साहित्यकार का धर्म एवं कर्तव्य है।[85]

दीनदयाल शर्मा अपने समय के प्रति पूर्णरूपेण सजग एवं प्रतिबद्ध कवि हैं जो समय की नब्ज को पहचानते हुए, अपने परिवेश का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करके अपनी कविताओं का विधान करते हैं, साथ ही आज का बाल क्या पढ़ना चाहता है, किस प्रकार की कवितायें उसका मनोरंजन कर सकती हैं, वर्तमान समय की अपेक्षाओं के सापेक्ष साहित्य रचते है। वर्तमान समय संचार क्रांति का युग है। एकल परिवार का चलन होने से बच्चे दादी, नानी की कहानियों से वंचित हो गए हैं। इनका स्थान 'टी.वी. नानी' ने ले लिया है। रचनाकार शर्मा ने टी.वी. को आधुनिक नानी का उपमान देकर मौलिकता को रेखांकित किया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। प्रस्तुत है सुंदर शिशु गीत–

नानी मेरी प्यारी नानी
नहीं सुनाती कोई कहानी
फिर मैं करता हूँ मनमानी
टीवी बनती मेरी नानी[86]

'कार्य' को हमारी संस्कृति में पूजा के समकक्ष माना गया है। इंग्लिश में भी कहा गया है work is workship. एक साथ मिलकर काम करने से उत्कृष्ट परिणाम आते हैं। एकता में बहुत बड़ी शक्ति निहित होती है। एक–एक मिलकर ग्यारह होते हैं, यह मुहावरा समाज में प्रचलित है। दीनदयाल शर्मा भी चाहते हैं कि बच्चे प्यार से, सहयोग से मिलकर काम करें, ये ही समय की मांग है–

इधर–उधर क्या देख रहे हो,
आओ मिलकर काम करें हम।
झगड़ा बढ़िया बात नहीं हैं,
आओ मिलकर काम करें हम।
काम से कभी न कतराएँ हम,
आओ मिलकर काम करें हम।
काम होगा, नाम भी होगा,
आओ मिलकर काम करें हम।[87]

इन दिनों पक्षियों के लिए परिंड़े बांधने और अपने परिवेश को साफ–सुथरा रखने के लिए नागरिकों को अनुप्रेरित, प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि इस भीषण आतप में पक्षी अपनी क्षुधा शांत कर सकें और इन्हें खुले आसमान में मुक्त उडान भरने दें। इसी के सामानांतर साफ–सफाई के भी लिए अभियान चलाये जा रहे हैं, मीडिया में विज्ञापन भी दिखाए जा रहें, 'स्वच्छ भार' आन्दोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। इन्हीं संदर्भों पर कवि शर्मा लिखते हैं–

चिड़ी–कबूतर मेरे साथी, दाने रोज खिलाती हूँ।
जब ये खा लेते हैं दाने, पानी इन्हें पिलाती हूँ।[88]

गली–गली और गाँव–शहर में,रखेंगे हम रोज सफाई
कूडेदान में डालें कचरा, मच्छरों की फिर शामत आई।[89]

निष्कर्षतः दीनदयाल शर्मा अपने समय के कलमकार हैं, समय के अनुरूप, समय की मांग को देखते हुए श्रेयष्कर बाल काव्य का विधान करते हैं और समसामयिकता के कसौटी पर खरे उतरने वाले कवि हैं। अपने युग के अनुसार रचना कार्य करने वाला साहित्यकार ही सही रूप में सृजनकर्मी कहलाता हैं। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य के आद्योपान्त तात्विक विश्लेषण के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि इनके बाल काव्य में शिशु गीत, बाल कविता एवं किशोर काव्य का सुन्दर रुप दृष्टिगोचर होता है तथा बालकाव्य की लगभग सभी प्रवृतियों का शिद्दत के साथ निरूपण हुआ हैं, जिनमें मनोरंजन के सुमन खिले हैं, तो जीवनोपयोगी सीख की पौध भी लहलहाती है, परम्परा के बीजारोपण हुए है, तो आधुनिकता के अंकुर भी फूटने लगे हैं, मूल्यों की सुसंगति के साथ सरलता, सरसता, सहजता, रोचकता एवं जिज्ञासा का सौन्दर्य दृश्यमान है राष्ट्रप्रेम, सामसामियकता, प्रेरणा, बाल मनोविज्ञान की उद्‌भावना भी यहाँ प्रखरताा के साथ विस्तार पाती है। इसीलिए **सुप्रसिद्ध रचनाकार जनकराज पारीक को कहना पड़ा–**

"श्री शर्मा की कविताओं की स्थितियां बहुत शीघ्रता से बदलती है। वे कभी सतरंगी हो जाती हैं, तो कभी बहुरंगी। कभी कभी उनकी कविता एक खूबसूरत चित्र होती है–खिलते हुए फूल का, चहचहाती हुई चिड़िया का, बच्चे के अधरो पर फैली पवित्र मुस्कान का या उनकी आँखों में अनायास उमड़ आये निर्मल–निर्मल आँसुओं का। दीनदयाल शर्मा इन चित्रों को इतनी कुशलता से उकेरत हैं कि एक बार जब इनके चटक रंग उनके शब्दों से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं देखने वाले की दृष्टि उस आकर्षण के जादू से सहज मुक्त नहीं हो पाती।'[90]

कवि शर्मा के काव्य में सौन्दर्य की छवि सर्वत्र दृष्टव्य है। कभी फूल खिलते हैं तो कभी मोर नाचते हैं, मेघ झूमकर बरसते हैं। रोचकता हर रचना में देखी जा सकती है। बालकों में जिज्ञासा जाग्रत करने एवं उनकी जिज्ञासाओं को पूरी करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। सभी

रचनाएँ सहजता के साथ कही गईं है। मनोरंजन की तो बात ही निराली है। बालकों को खूब हंसाते हैं, 'नाचने को विवश कर देते हैं। बालक किलकारियां भरने लगते हैं।

दीनदयाल शर्मा को बालमनोविज्ञान के ज्ञाता कहा जा सकता है। बालमन क्या चाहता है, क्या नहीं, उसी के अनुरूप इन्होंने काव्य का सृजन किया गया। दीनदयाल शर्मा प्रकृति प्रेम में भी किसी से पीछे नहीं रहे। पर्यावरण के प्रति बच्चों को खूब सचेत किया है। प्रकृति के समस्त उपादानों को समेटते हुए सृजन कर्म किया है, जो बालकों के मन में पुलक भर देता है। बच्चों को प्रेरित करने में रचनाकार शर्मा अग्रणी कहे जा सकते हैं, उन्हें निरंतर चलने की प्रेरणा देता हैं। इसी प्रकार परम्पराओं को खुले मन स्वीकारते हुए आधुनिकता की अनुपालना करते दिखाई देते हैं। ताकि बालक अपने रीति–रिवाजों और वर्तमान संदर्भों से भली भांति परिचित हो सके। बातों–ही–बातों में जीवन मूल्यों और राष्ट्र–प्रेम से भी निरंतर बच्चों को परिचित करवाते चलते हैं। समसामयिक परिवेश को भी बड़ी शिद्दत के साथ प्रसंगानुकूल उजागर किया है। रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में इन्द्रधनुषी रंगों का समाहार करके बाल साहित्य को और भी चित्ताकर्षित, श्रेयस, प्रेयस बना दिया है।

3.2 बाल पहेलियां

पहेलियाँ अन्यान्य विधाओं की तरह ही अत्यंत प्राचीन विधा है जो रोचकता, ज्ञान, जिज्ञासा और स्वस्थ मनोरंजन से भरपूर होने के कारण लोकप्रिय रही है। आदिकाल से ही पहेलियाँ लोक जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। पहेलियाँ लोक व्यवहार में मनोरंजन के संदर्भ में अहम् भूमिका निभाती हैं, चाहे शादी–ब्याह हो, तीज–त्यौहार हो या इसी प्रकार का अन्य समारोह। बिटिया को जंवाई राजा और ससुराल वाले लिवाने आते हैं तब रात को महिलाएं पहले उन में मीठी–मीठी गलियां गाती है तत्पश्चात् उनसे पहेलियाँ पूछती हैं और सही उत्तर नहीं देने पर मीठी सी धमकी भी दी जाती हैं। यह दौर आधी–आधी रात तक चलता रहता है। यह हमारी परम्परा रही है। इसी बहाने जंवाई सा की बुद्धि का परीक्षण भी जाया करता है। पहेलियाँ जीवन में रस ही नहीं घोलती हैं अपितु चिंतन–मनन के अनंत द्वारा भी खोलती है। ये हास्य–विनोद और जिज्ञासा से भरपूर होती हैं इसीलिए बालकों की सबसे प्रिय विधा है पहेलियाँ जहाँ जिज्ञासा जाग्रत करती हैं वहीं बुझा देने पर परम संतुष्टि की अनुभूति भी करवाती हैं, एक बार ये सिलसिला प्रारम्भ होने के बाद निरंतर चलता रहता है क्योंकि पहेलियों का अपना अलग ही महत्व है। पहेलियाँ बच्चों और बड़ों को परम आनंद प्रदान करती हैं, बालकों को उल्लास से भर देती हैं। बालक स्वाभाव से ही सरल, भोले एवं जिज्ञासु होते हैं, अपने परिवेश और प्रकृति की हर छोटी से छोटी चीज को देख कर रोमांच से भर उठते हैं और उसे पूरी गहराई से जान लेना चाहते हैं। क्यों, क्या कैसे अदि सवाल उनके मन में लगातार चलते रहते है जिन्हें वे बड़ों से

पूछते भी है और कितनी बार तो बड़े–बड़े उनका जवाब तक नहीं दे पाते और बगलें झांकने लगते हैं। बालकों की दुनिया कल्पना लोक में विचरती है, जहाँ रोमांच, रहस्य, रोचकता, मनोरंजकता नृत्य करते हैं। शायद इसीलिए उन्हें सबसे जियादा आनंद पहेलियाँ बुझाने में आता है।

पहेली होती ही ऐसी है, जब तक न बुझे बालक उसे नहीं छोड़ पाते। चाहे जितनी भी माथापच्ची करनी पड़े और उत्तर मिलते ही, खुशी से नाच उठते हैं, किलकारियां भरने लगते हैं। हमारी शिक्षा बाल केन्द्रित हैं, नन्हें मुन्हें खेल खेल में, बातों बातों में जितनी जल्दी सीखते हैं उतना किताबों से नहीं। पहेलियाँ जहाँ आनन्द प्रदान करती हैं वहीं ज्ञान में अद्‌भुत रूप से वृद्धि करती है इसलिए बच्चा खेल खेल में बहुत कुछ सीख लेता है। पहेली का विषय कुछ भी हो सकता है यथा–प्रकृति, घरेलू चीजें, खाने–पीने की चीजें, शिक्षा, ज्ञान, शरीर के अंग इत्यादि। कहानी और कविता के बाद पहेलियाँ बच्चों की प्रिय विधा है, कुछ पहेलियाँ तो जैसे जीवन का हिस्सा ही बन गई हैं जैसे–'उल्टा सीधा एक समान तीन अक्षर का मेरा नाम', इस पहेली के कई–कई उत्तर हैं। इस प्रकार –फिल्मी गीत पर आधारित एक पहेली–'तीतर के आगे दो आगे तीतर, तीतर के दो पीछे तीतर, आगे तीतर, पीछे तीतर, बोलो कितने तीतर। (तीन) इसीलिए पं. रामनरेश 'पहेली' शब्द का 'शिक्षार्थी' हिंदी शब्दकोश सम्मत अर्थ–

1. प्रश्नात्मक उक्ति जिसमें बात का लक्षण बतलाते हुए यह कहा जाता है कि बताओ वह कौन सी बात है।

2. कोई गूढ बात जिसका निराकरण सहजपूर्ण हो।[91]

पहेली के साथ 'बुझाना' शब्द जुड़ा हुआ होता है। उपरोक्त शब्द कोश में इसका अर्थ घुमाव–फिराव की बात जिसमें लोग चक्कर में आ जाएँ, निरूपित है। अतः उपर्युक्त संदर्भ के अनुसार पहेली एक ऐसी उक्ति है जिसमें प्रश्नात्मक भाव निहित होता है एवं बात के लक्षण बताते हुए इस प्रकार घुमा–फिरा कर प्रस्तुत किया जाता है कि लोग आसानी से उत्तर नहीं दे सके। इसके लिए उन्हें मानसिक श्रम करना पड़ता है, और कई बार बात को इतनी गूढ़ता से रखा जाता है कि सामने वाला निरूत्तर हो जाता है और वह प्रश्न कर्ता से उत्तर बताने के लिए खुशामद करता है क्योंकि उत्तर जानने की उसकी जिज्ञासा बहुत बलवती हो उठती है। जिज्ञासा उत्पन्न करना पहली की अति विशिष्टता मानी गई है। पहेलियों को लेकर कई मुहावरे भी लोक जीवन में प्रचलित हैं– 'पहेलियाँ मत बुझाओं, 'जीवन एक पहेली हैं'। पहेलियाँ गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों प्रकार की होती हैं, ये लक्षणा शब्द शक्ति से ओतप्रोत होती है। पहेलियाँ आकार–प्रकार, रंग–रूप, स्वभाव, गुण–धर्म, गणित, समान धर्म वाले शब्दों के आधार पर कई प्रकार की हो सकती हैं। पहेली गढ़ना बच्चों का खेल नहीं है इसके लिए बहुत श्रम करना होता

है क्योंकि इसे गढ़ने में उचित भाषा और सशक्त प्रस्तुतीकरण जरूरी है। इसका उत्तर निश्चित होता है। **इसी प्रसंग में मुकेश नादान निरूपमा का कथन है**–'पहेलियाँ ज्ञान को बढ़ाने का एक सरल साधन है। पहेलियाँ हमारे ज्ञान को नहीं बढ़ाती अपितु मनोरंजन भी करती है। स्कूल में, दोस्तों में, पिकनिक पर अथवा छोटी–छोटी पार्टियों में ये पहेलियाँ ज्ञान को बढ़ाने अथवा समय काटने का सबसे अच्छा साधन होती हैं। इनसे एक प्रकार की दिमागी कसरत भी होती है।[92]

पहेलियों को जन्म मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ साथ ही हुआ होगा। खेल ही खेल में इनका सृजन हुआ होगा। किसी एक ने दूसरे व्यक्ति के ज्ञान का परीक्षण करने के भाव से बात को घुमा–फिरा कर या गूढ़ बना कर पूछा होगा, उत्तर नहीं मिलने पर भी और नहीं मिलने पर भी जाहिर है दोनों अन्य लोगों से आनंद लेने के लिए पूछते गए होंगे और यह सिलसिला बनता गया होगा, जिस का आधुनिक स्वरूप आज हमारे समक्ष है।

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' के अनुसार–'वर्तमान में भी पत्र–पत्रिकाओं में बाल पहेलियाँ देखने को मिल जाती हैं। कुछ दैनिक समाचार पत्रों के 'शब्द ज्ञान पहेली' शीर्षक से प्रतिदिन पहेली का प्रकाशन किया जा रहा है जिसे पाठक–गण पूरे मनोयोग से हल करते देखे जा सकते हैं। कहानी और कविता के बाद बच्चों का रूझान पहेलियाँ की ओर ही अग्रसर होता है। यह भी संभव है कि वे सब कुछ छोड़कर सर्वप्रथम पहेलियों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करें और अपनी ध्यान स्थिति का परीक्षण करके आल्हादित हो।[93]

वर्गीकरण की दृष्टि से राधेश्याम प्रगल्भ ने पहेलियों को पांच प्रकार से विभक्त किया हैं–

1. जिन का उत्तर पहेलियों में ही छिपा हो।
2. जिन का उत्तर सरलता से पकड़ में आ जाये।
3. गणितीय शिक्षा में सहायक।
4. शब्द के आदि, मध्य और अंत के लोप पर आधारित पहेलियाँ
5. दो प्रश्नों के एक उत्तर वाली पहेलियाँ।[94]

अन्य विधाओं की भांति पहेलियों का जन्म भी संस्कृत भाषा से हुआ है। संस्कृत में इन्हें 'प्रहेलिका' कहा जाता है। आदि ग्रन्थ ऋग्वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषदों तथा अन्य ग्रंथों में भी इनका उल्लेख मिलता है। विदेशों में भी यह कला पाई गई है। मिश्र, अरब, फ्रांस आदि देशों में प्राचीन काल से पहेलियों का बहुत प्रचलन रहा है। पहेलियों की परम्परा के विषय में पद्म श्री लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने दीनदयाल शर्मा की कृति 'इक्कावन बाल पहेलियाँ की भूमिका में लिखा हैं–

'भारतीय संस्कृति में पहेलियाँ बूझने की परम्परा बहुत प्राचीन हैं। विवाह–शादी, तीज–त्यौहार एवं जंवाई राजा के प्रथम बार ससुराल आगमन पर स्त्रियाँ पहेलियाँ बुझती है।

राजस्थान में तो यह परम्परा और भी सुदृढ़ है। जंवाई राजा के ससुराल में प्रवेश करते समय द्वार छुड़वाने, भोजन करते समय थाल छुड़वाने, सोते समय खाट छुड़वाने के लिए सालियाँ 'आडियां पहेलियाँ बूझती हैं और सही उत्तर मिलने पर ही द्वार लांघने, भोजन करने व सोने की अनुमति देती हैं।[95]

जहाँ तक हिंदी भाषा का प्रश्न है, लगभग सभी विद्वानों और विचारकों ने अमीर खुसरों को हिंदी में पहेलियों का जन्मदाता माना है। बाल साहित्य के आदि समीक्षक निरंकार देव सेवक ने अमीर खुसरों को हिंदी में बच्चों का पहला कवि माना है। आज भी अमीर खुसरो की पहेलियाँ समाज में सर्वाधिक प्रचलित और लोक प्रिय हैं। सामान्यतया किसी भी व्यक्ति से खुसरों की पहेलियों को सुनी और पूछी जा सकती है। अमीर खुसरों की पहेलियों का महत्व साहित्यिक दृष्टि से भी है, भाव, भाषा और प्रस्तुतिकरण उत्तम है। लोक में इनकी सबसे अधिक प्रचलित पहेलियों में से कुछ दृष्टव्य हैं–

'एक थाल मोती से भरा, सबके सर पर औधा गिरा, चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उससे एक न गिरे– (आकाश)

उनकी ही अत्यंत लोकप्रिय 'कह मुकरनी' भी प्रस्तुत हैं–

वो आये तो शादी होय, उन बिन दूजा और न कोय।
मीठे लागें उनके बोल, क्यों सखि साजन, ना सखि ढोल।

रोचकता, मनोरंजन, जिज्ञासा और आनंद से भरपूर ये पहेलियाँ बाल साहित्य की अनमोल थाती है। इस प्रकार अमीर खुसरों से प्रारंभ होकर पहेलियों की यात्रा अनेक रंग–रूपों में आज अनवरत जारी हैं। खुसरो के बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने पहेलियों की परम्परा का आगे बढ़ाया। इन्होंने कह मुकरनियां (पहेलियों का ही एक रूप) लिखी जिन्हें बालकों ने खूब पसंद किया। इसी श्रृंखला में घासीराम, खागीनियां, पंडित घाघ, लाल बुझक्कड़ ने भी पहेलियों की विधा को खूब समृद्ध किया। प्रस्तुत है घासीराम की कुतूहल जाग्रत करने वाली अत्यंत लोकप्रिय एक पहेली–

'कारो है पर कौआ नाहिं, रूख चढ़े पर बंदर नाहिं
मुहं को मोटो बिडवा नाहिं, कमर को पतलो चीता नाहिं।[96](चींटा)

तत्कालीन पत्रिकाओं ने–जैसे–'शिशु' (1915), 'बालसखा' (1917), 'वानर' (1931) 'बालक' (1926), किशोर (1938), बाल बोध (1947) आदि ने भी पहेलियों को स्थान देकर इस विधा को बहुत समृद्ध किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बाल पहेलियों के विकास ने और गति पकड़ी और अन्य विधाओं की ताह पहेलियों में भांति–भांति के नए–नए विषयों का समावेश हुआ। ज्ञान–विज्ञान,

भूगोल, सामाजिक संदर्भ, गणितीय, वर्णनात्मक, पर्यावरण, तकनीक, इंटरनेट, कम्प्यूटर से सम्बंधित पहेलियाँ लिखीं जाने लगी। मूर्धन्य बाल साहित्यकारों ने नए–नए विषयों पर पहेलियां लिख कर बाल साहित्य को परिपुष्ट किया। डॉ. श्री प्रसाद, जयप्रकाश भारती, रामेश्वर दयाल दुबे, गोपीचंद श्रीनागर, घमंडीलाल अग्रवाल, कुलभूषण माखीजा, जगदीश तोमर, महेश सक्सेना, अजय शर्मा, रामबचन सिंह 'आनंद', डॉ. अजय जनमेजय, शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, बाबूलाल शर्मा 'प्रेम', ममता, संकेत, मौ फहीन, डॉ. गणेश दत्त सारस्वत, चाँद मोहम्मद घोसी (वर्ग पहेलियाँ, शब्द ज्ञान पहेलियाँ) आदि ने बाल पहेलियों के संदर्भ में उल्लेखनीय योगदान किया, जो लगातार गतिशील है। वर्तमान में कथा पहेलियां और कविता पहेलियाँ भी लिखी जा रही हैं। **डॉ. घमंडी लाल अग्रवाल की कम्प्यूटर के माउस पर लिखी एक पहेली प्रस्तुत हैं–**

'कम्प्यूटर भी मुझ से चलता, चाहे मुझे गणेश
मैं हूँ नन्हा किन्तु काम का, बोले पूरा देश' (माउस)[97]

पंजाब सौरभ में प्रकाशित अनिल कुमार की पहेली भी ध्यानाकर्षित करती हैं–

एक फूल है काले रंग का, सिर पर सदा सुहाए।
तेज धूप में खिल–खिल जाता, छाया में मुरझाए। (छाता)[98]

पहेलियों के इन दिनों वह मुकरियाँ भी लिखीं जा रही हैं, प्रस्तुत है डॉ. शशि गोयल की एक मुकरी–

नैन चलावे नाच दिखावे, नए रूप धर मोहे रिझावे
बैठे रूप निहारे बीवी, क्यों सखि साजन, न सखि टी.वी.[99]

इसी श्रृंखला में बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा बाल पहेलियाँ की इस श्रृंखला में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। उनकी 'इक्कावन बाल पहेलियाँ' कृति टाबर टोली प्रकाशन से 2009 में प्रकाशित हुई है। देश के जाने–माने बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ने अपनी सद्य प्रकाशित कृति 'श्रेष्ठ बाल पहेलियाँ' में दीनदयाल शर्मा की ग्यारह बाल पहेलियों को रेखांकित करके बाल पहेलीकारों में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित किया है।

3.2.1 विषयवस्तु

बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की बाल पहेलियों की विषयवस्तु वैविध्यमय है। इन्होंने अनेकानेक बालोपयोगी विषयों पर केन्द्रित पहेलियों की सर्जना की है यथा–राष्ट्र–नायक, स्वतंत्रता सेनानी, प्रकृति, पशु–पक्षी, कीट–पतंगे, दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुएं और अन्य।दीनदयाल शर्मा की बाल पहेलियों के विषय में पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चूंडावत ने 'इक्कावन बाल पहेलियाँ' की भूमिका में लिखा है कि 'बाल साहित्य की लुप्त होती इस विधा को श्री दीनदयाल शर्मा ने

'इक्कावन बाल पहेलियाँ' के माध्यम से पुनर्जिवित करने का सार्थक प्रयास किया है। पुस्तक में रोचक, ज्ञानवर्द्धन, एवं सशक्त पहेलियाँ समाहित हैं। ये पहेलियाँ आधुनिक विषयवस्तु लिए हुए हैं तथा बालक का सामान्य ज्ञान बढ़ाती चलती हैं। पशु–पक्षी जैसे प्राकृतिक दृश्य तथा राष्ट्रीय चरित्र इन पहेलियों के विषय हैं, जो बालकों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

राष्ट्र नायकों में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, पंडित जवाहर लाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजाराम मोहनराय शामिल है। ये सभी पहेलियाँ अत्यंत सुरूचिपूर्ण, ज्ञानवर्द्धक और जिज्ञासा से परिपूर्ण हैं तथा इन व्यक्तित्वों की विशेषताओं, इनके द्वारा किये गए कार्यों, पसंद आदि को दर्शाती हैं। बालकों के लिए ये बहुत उपयोगी मानी जा सकती हैं। प्रस्तुत हैं कुछ पहेलियाँ–

तमिलनाडु, दक्षिण भारत के, वैज्ञानिक ने किया कमाल।
अग्नि और पृथ्वी मिसाईल, जिनकी देखो ठोस मिसाल।।[100]
माँ स्वरूप रानी थी जिनकी, पिता थे मोती लाल।
फूल गुलाब का जिन्हें प्रिय था, प्यारे बाल गोपाल।। [101]

प्रकृति विषयक पहेलियों में सूर्य, पेड़, धूप आदि हैं। इन में सूर्य, पेड़, धूप के बारे में रोचक ढंग से जानकारी प्रस्तुत की गई है। पेड़ हमारे जीवनदाता हैं और हमेशा खड़े रहकर हमारी सेवा करते हैं –

खड़ा–खड़ा जो सेवा करता, सबका जीवनदाता।
बिन जिसके ना बादल आएं, बोलो क्या कहलाता? (पेड़)[102]

दीनदयाल शर्मा जानते हैं कि बालकों को पक्षी बहुत लुभाते हैं। इसलिए पक्षियों को विषय बनाकर कई सुन्दर–सुन्दर पहेलियों की रचना की है। इनमें प्रमुख हैं–कोयल, कौवा, हंस, तोता, उल्लू, मोर, मुर्गा आदि। इन पहेलियों में कवि ने इनकी विशिष्टताओं, सौन्दर्य, रंग–रूप, प्रवृतियों, बोली, स्वरूप, स्वभाव, पसंद आदि को भली–भांति दर्शाया है जैसे–मुर्गा अपने रंग–बिरंगे स्वरूप के कारण बालकों को आकर्षित करता है। सुबह पौ–फटने से पहले 'कुकडू–कूं' की बांग लगा कर सब को जगाता है, मानों कहता हो कि जागो, उठो सुबह होने वाली है। कहते हैं कि मुर्गा भोर भये चार बजे बांग लगाता है, जिससे घड़ी मिलाई जा सकती है, इसी वजह से इसे 'गाँव–घड़ी' कहते हैं। दीनदयाल शर्मा ने इसी खूबी को पहेली में प्रयुक्त करके साहित्य जगत में मुर्गा संज्ञा के लिए एक नए समानार्थक शब्द की बढ़ोतरी की है–

कुकडू–कूं जो बोला करता, सबको सुबह जगाता है।
सर पर लाल कलंगी वाला, गाँव घडी कहलाता। (मुर्गा)[103]

अन्य विषयों में दीनदयाल शर्मा ने जूता, चाबी, मकड़ी, फौजी, कुर्सी, शब्द–कोश, मोमबत्ती, अगरबत्ती, रेडियो, कुल्फी, पुस्तक, तिरंगा झंडा आदि अनेक चीजों को अपनी पहेलियों के विषय बनाये हैं। साइकिल बच्चों के लिए बचपन की मित्र होती है। दो तीन साल की उम्र होते ही वह माता–पिता से जिद करके, सबसे पहले साईकिल की सवारी करता है। जिसकी खुशी, बाल्यावस्था में साईकिल चलाने में मिलती है, उतनी सुखद अनुभूति बड़े होने पर शायद हवाई जहाज चलाने में भी नहीं होती। पहेलीकार दीनदयाल शर्मा ने बच्चे के इसी आल्हाद को ध्यान में रखते हुए यह पहेली लिखी होगी–

दुपहिया पतली सी गाड़ी, प्रदूषण से दूर है
तन को कसरत करवाती है, इस पर हमें गरूर है।[104]

साथ ही कीट–पतंगों को लेकर भी दीनदयाल शर्मा ने बहुत खूबसूरत पहेलियों का सृजन किया है। मकड़ी के गुण–धर्म को लेकर लिखी गई पहेली विशेष तौर पर उल्लेखनीय है, मकड़ी को आठ पग वाली नार बताना और उसका जालीदार कपड़े बुनना, दीनदयाल शर्मा का मौलिक प्रयोग है। इस पहेली का उल्लेख 'बाल प्रभा' बाल पत्रिका में किया गया है –

छत से लटकी मिल जाती है, अठ पग वाली नार।
बुने लार से मखमल जैसे, कपड़े जालीदार।[105]

दीनदयाल शर्मा जानते हैं कि बच्चों को तितली से विशेष प्रेम होता है। बचपन में हर बालक तितली पकड़ने की जिद करता है और जब पकड़ में आ जाती है तो परम आनंद अनुभूत करता है। तितली के इन्द्रधनुषी रंग बालकों के लिए सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र होते हैं। तितली भी मानों बच्चों से इतना प्रेम करती है कि उनके हाथों में अपने रंग छोड़ जाती हैं। बालकों के साथ–साथ बड़ों को भी तितली रानी बहुत सुहाती है। इसकी विशेषता है, फूलों से प्यार करना, सब को प्यार बाँटना। इन्हीं सारी खूबियों के साथ एक पहेली –

रंग–रंगीला रूप है जिसका, फूलों पर मंडराती।
पंख हिलाती प्यार बांटती, सब का मन बहलाती।[106]

3.2.2 परिवेश

शब्दकोशानुसार परिवेश से तात्पर्य है–1. वेष्टन, परिधि, 2. सूर्य चन्द्रमा के चारों तरफ कुछ दूरी तक दिखाई देने वाला घेरा, प्रभामंडल, 3. प्रकाश पिंडो के चारों तरफ कुछ दूरी तक दिखाई देने वाला मंडलाकार प्रकाश, प. महापुरूषों, देवी–देवताओं के चित्रों में उनके मुखमंडल के चारों तरफ दिखलाया जाने वाला प्रकाश का घेरा, प्रभामंडल[107]

इस प्रकार परिवेश को समान्य अर्थ में बाहरी दशा, परिस्थिति, वातावरण, इर्द–गिर्द की वस्तुएं, प्रकृति, घेरा आदि के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। मनुष्य का व्यवहार, कार्यप्रणाली, कला, सर्जन, गतिविधियाँ आदि अपने परिवेश से प्रभावित होती हैं। अतएव एक रचनाकार का सृजन भी अपने परिवेश की देन होता है। अपने आसपास के वातावरण से प्राप्त अनुभूतियाँ, संवेदनाएं उस के रचनाकर्म में अभिव्यक्त होती हैं। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की बाल पहेलियाँ भी अपने परिवेश से प्रभावित हैं। बालक का साक्षात्कार सब से पहले प्रकृति के उपादानों है यथा–पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जीव–जंतु, कीट–पतंगे, चाँद–तारे, फूल–पत्तियां को देखता है। धीरे–धीरे उसकी पहचान अपने घर और आस–पास की चीजों से होने लगती है। ये सब उसके प्रिय उपादान होते हैं। जिनके बारे में वह और जानना चाहता है, पढ़ना चाहता है। दीनदयाल शर्मा ने अपनी बाल पहेलियों के विषय का चयन बालक के परिवेश को ध्यान में रखते हुए किया है।

बालक अधोलिखित पहेली को थोड़ी बहुत माथा पच्ची करके बुझा सकता है, आधुनिक समय में जिस वातावरण में बालक का पालन–पोषण होता है, उसमें टी.वी., मोबाइल फोन आवश्यक चीजों में आता है। दो–तीन साल का बालक भी इन उपकरणों को संचालित कर लेता है। माता–पिता बच्चे का मन बहलाने के लिए उसको मोबाइल फोन थमा देते है और टी.वी. तो उसकी दुनिया में जन्म से ही शामिल हो जाता है, लेकिन का प्रचलन धीरे–धीरे कम होने से वह अपरिचित होता है।

टी.वी. से पहले थे जिसके, सारे लोग दिवाने।
हर घर में शोभा थी जिसकी, सुनते खबरें गाने।[108]

दीनदयाल शर्मा ने बाल पहेलियों की रचना करते समय बाल परिवेश का पूरी तरह से ध्यान रखते हुए उन्हीं उपादानों का चयन किया है जो बच्चों के परिचय क्षेत्र में आते हैं, उनकी पसंद के होते है। ऐसे छोटे–छोटे विषय जैसे चींटी, पुस्तक, मोर, पतंग, उल्लू, मोमबत्ती, बन्दर, कुत्ता, साइकिल, चाबी, मेंढ़क, गिलहरी, भालू, मकड़ी, खरगोश, हाथी, गधा, गाय, मकड़ी, भालू, गिलहरी, आदि। इन्हीं से संदर्भित विभिन्न मन भावन कुछ पहेलियाँ –

दिखने में छोटी सी होती, गजब भरा है ज्ञान।
पढ़ इसको बन सकते हम, बहुत बड़े विद्वान्।[109]

दीन दयाल शर्मा ने सारे विषय बच्चे के आस–पास के वातावरण से उठाये हैं। जिससे परिवेश साकार हो रहा है।

3.2.3 प्रश्नोत्तरी

पहेली का जन्म प्रश्न की कोख से हुआ है। बिना प्रश्न के पहेली की कल्पना भी निराधार है। प्रश्नोत्तरी पहेली की आधारशिला होती है, पहेली का आशय, ऐसी प्रश्नात्मक उक्ति से माना गया है, जिसमें बात का लक्षण बताते हुए यह कहा जाता है कि बताओ वह कौन सी बात है। स्पष्ट है कि पहेली और प्रश्न एक सिक्के के दो पहलू हैं। किसी बात को लेकर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से उत्तर की अपेक्षा रखते हुए घुमा–फिरा कर गूढ़ तरीके से प्रश्न पूछता है। इसके पीछे प्रश्नकर्ता का निहितार्थ उत्तरदाता की मानसिक क्षमता का परीक्षण करना होता है। जितना आनंद प्रश्नकर्ता को पहेली पूछने में आता है उतनी ही संतुष्टि सही उत्तर देने पर उत्तरदाता को अनुभूत होती है। कुछ पहेलियां सीधे प्रश्नात्मक होती है तो कुछ में प्रश्न छिपे रहते हैं। दीनदयाल शर्मा की बाल पहेलियां इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। कुछ पहेलियों में प्रश्न प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान हैं तो कुछ में निहित है। सीधे प्रश्नात्मक पहेलियाँ –

सरस्वती की सफेद सवारी, मोती जिनको भाते।
करते अलग दूध से पानी, बोलो कौन कहाते?[110]

इस पहेली में पहेलीकार ने प्रत्यक्ष रूप से उत्तर पूछ लिया है। ये ही इस पहेली की खूबसूरती भी मानी जा सकती है।

ठण्डी–ठण्डी दूध और जल से, जमी है चपटी–गोल।
सारे बालक मचल उठे सुन, इसके मीठे बोल।[111]

3.2.4 मानसिक विकास

पहेलियों का प्रमुख ध्येय मनोरंजन और मानसिक विकास करना माना गया है। इसीलिए पहेलियों को इतनी जटिलता के साथ प्रस्तुत किया जाता है ताकि उत्तर देने वाले को मानसिक कसरत करनी पड़े। वस्तुतः पहेली एक प्रकार की मानसिक क्रीड़ा है। पहेली के सर्जन में रचनाकार को जितनी मेहनत करनी पड़ती है, बुझाने को भी उतना ही मानसिक श्रम करना होता है। कुछ पहेलियों में तो एक–एक शब्द के लिए चिंतन करना होता है, अनेक दृष्टियों से सोचकर उत्तर खोजन पड़ता है। अतः पहेली बूझाने से मानसिक विकास के द्वार खुलते हैं। दीनदयाल शर्मा द्वारा रचित बाल पहेलियां बालकों का मानसिक विकास करने में सक्षम हैं। ये पहेलियाँ बच्चों को सोचने–विचारने के लिए विवश करती हैं। ऐसी एक पहेली, जिसमें बालकों को बहुत अधिक श्रम करना पड़ सकता है।

ढेरों शब्द संजोए जिसमें, सब के अर्थ अनेक।
सब भाषाओं में मिलती है, दुनिया में अतिरेक।[112]

ढेर सारे शब्द संजोए, हर शब्द के अनेक अर्थ, सभी भाषाओं में उपलबध, ऊपर से सारी दुनिया में भी प्रचारित। एक साथ इतनी खूबियाँ, इसे हल करने में बच्चे के मन में जरूर उथल–पुथल होगी, बहुत चिंतन करना पड़ सकता है। काफी मानसिक कसरत इस पहेली से संभव है। पहेलीकार ने केवल पहेलियाँ लिखने के लिए ही नहीं लिखी हैं, अपितु बहुत सोच–समझ कर इन का सृजन किया है। जिससे बालक का बहुमुखी विकास हो सके। ऐसी एक और पहेली–

तिल–तिल करके जलती है जो, फैलाती उजियारा।
उसके मिट जाने से मिटता,भीतर का अँधियारा।[113]

इस पहेली में तिल–तिल कर जलना, उजियारा फैलाना, बालक की समझ के बाहर है, मगर भीतर का अँधियारा, उसकी पहुंच के बाहर की बात है। भीतर के अंधेरे को समझने के लिए बड़े व्यक्तियों से कई प्रश्न कर सकता है। उनके समझाने पर उसे कुछ ज्ञान हो सके या नही। परन्तु इस उलझन से उसके मन की क्षमता अवश्य विकसित हो सकेगी। दीनदयाल शर्मा ने एक पहेली को तो इतनी गूढ़ता से व्यक्त किया है कि बड़ों को भी मानसिक व्यायाम करना पड़ सकता है–

चाय शब्द के भीतर दिखती, और दिखूं बिग बी के साथ
घर का पहरेदार पति है, मेरी आज्ञा से तैनात।।[114]

घर का पहरेदार पति का होना, बहुत उलझन भरा सवाल है, एक छोटे बालक के लिए। इसे हल करने में जाहिर है बालक को बहुत–बहुत माथापच्ची करनी होगी। जितनी कसरत उतना ही विकास। दीनदयाल शर्मा की हर पहेली अपने आप में एक पहेली है, जिसे हल करने से बालकों का मानसिक विकास संभव है।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा की बालोपयोगी पहेलियाँ बालकों का पर्याप्त मनोरंजन करने में सक्षम हैं, इन्हें पढ़ने से बच्चों की प्रज्ञा तीव्र होगी एवं वे अपने परिवेशगत चीजों को बारे में सम्यक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहेलियों की विषयगत विविधता क्या कहने है। बालकों को प्रिय लगने वाली नाना प्रकार की चीजों को रचनाकार ने विषय बनाकर बहुत ही खूबसूरत बाल पहेलियों की सर्जना की है। सच कहा जाए तो इन पहेलियों का जैसे कोई सानी ही नहीं।

♦♦♦♦

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 164
2. कविता की परिभाषा, प्रेमलता चसवाल, 'प्रेमपुष्प' पुष्पराज चसवाल पृ. 19
3. कविता की लोकधर्मिता, डॉ. रमाकांत शर्मा, पृ. 14
4. भारतीय काव्य शास्त्र के सिधांत, डॉ राज किशोर सिंह, पृ. 24
5. भारतीय काव्य शास्त्र के सिधांत, डॉ राज किशोर सिंह, पृ. 22
6. http://radhumanism.wordpress.com
7. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 851
8. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 74
9. वाचस्पत्यम् (हलन्त)–5314, shodhganga.inflibnet.in/bit stream/10603/ 117013/6/06
10. कालीदास व जयशंकर प्रसाद के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. धर्मपाल देशवाल, पृ.16 shodhganga.inflibnet.in/bit stream/10603/ 117013/6/06
11. http:/bharatdiscovery.org/india/05-08-17
12. लोरी सुख, रजनी सिंह, पृ. 13
13. शोध नवनीत सम्पादक, डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, अंक जनवरी–जून–2017, पृ. 113
14. पाश्चात्य–काव्यशास्त्र की परम्परा, नगेन्द्र, पृ. 128
15. लोरी सुख, रजनी सिंह, पृ. 7
16. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', पृ. 83
17. हिन्दी बाल–साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृ. 17
18. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ.18
19. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ.16
20. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ.38
21. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ.18
22. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ.12
23. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 637
24. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 260
25. बाल साहित्यः मेरा चिन्तन, डॉ हरिकृष्ण देवसरे पृ. 30
26. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 29
27. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 19
28. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृ. 20
29. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 14

30. कुछ अनकही बातें..... सम्पादकः दुष्यन्त कुमार, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 106
31. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 638
32. vikipedia.org, 15-03-2017
33. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 12
34. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
35. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
36. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
37. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 29
38. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 488
39. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 74
40. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 526
41. प्रकृति काव्यः काव्य प्रकृति, अज्ञेय, गद्यकोश, पृ. 1
42. पंड़ित श्रीराम शर्मा आचाय, अर्थववेद, संस्कृति संसथान, बरेली पृ. 652
43. मधुमती, जून–2016, सम्पादक रोहित गुप्ता, पृ. 18
44. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 20
45. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 21
46. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 45
47. हिन्दी, कक्षा–पाठ 4 पृ. 18–19
48. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 26
49. बाल प्रहरी, तनूजा बिष्ट, पृ. 10
50. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 553
51. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 74
52. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 23
53. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 53
54. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 475
55. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 920-921
56. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 19
57. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ. 8
58. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
59. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 84
60. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 502
61. राजस्थान पत्रिका, सम्पादकः भुवनेश जैन, पृ. 3, 2004

62. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 16
63. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 27
64. प्रतिनिधि बाल कविताएं, लेखक डॉ परशुराम शुक्ल पृ. 26
65. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 43
66. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 14
67. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 669
68. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 920-921
69. http://sudhajaisal.jagranjunction, com 2015/05/08
70. https://hi.m.wikipedia.org
71. हिन्दी कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. अनिता वर्मा, पृ. 90
72. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 23
73. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
74. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 23
75. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 32
76. चक्रवाक–अक्टूबर–2015 से मार्च–2016, सम्पादकःआचार्य निशांत केतु, पृ. 51
77. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 700
78. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 553
79. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, P. 920-921
80. चक्रवाक, जनवरी–मार्च–2017 सम्पादकः आचार्य निशांत केतु, पृ. 51
81. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 21
82. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 24–25
83. http//shabdkosh.raftaar.in
84. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 822
85. समकालीन हिन्दी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृ. 199
86. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 30
87. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 31
88. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 9
89. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 44
90. कुछ अनकही बाते.... सम्पादकः दुष्यन्त कुमार, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 61
91. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 492
92. pustak.org/books/boodetails/4911
93. बाल साहित्यः सृजन और समीक्षा, डॉ. नागेश पांडेय,'संजय' पृ. 49

94. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' पृ. 94
95. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, भूमिका से, कमलेश शर्मा
96. बाल साहित्यः सृजन और समीक्षा, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' पृ. 51
97. बाल साहित्यः सृजन और समीक्षा, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' पृ. 54
98. पंजाब सौरभ, अप्रैल–2015 अंक 10, सम्पादक : डॅ. वीरपाल कौर, पृ. 71
99. चक्रवाक, संयुक्तांक–35–36, अक्टूबर–295, संपादकः निशांत केतु, पृ. 58
100. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 7
101. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 8
102. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 10
103. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 17
104. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 18
105. बालप्रभा 2013 (वार्षिक), सम्पादकः नागेश पांडेय, 'संजय' पृ. 20
106. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 11
107. शिक्षार्थी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 492
108. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 20
109. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 12
110. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 14
111. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 14
112. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 19
113. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 21
114. इक्कावन बाल पहेलियां, दीनदयाल शर्मा, पृ. 19

चतुर्थ अध्याय

दीनदयाल शर्मा का गद्य

चतुर्थ अध्याय

दीनदयाल शर्मा का गद्य

दीनदयाल शर्मा का गद्य अत्यन्त समृद्ध है। जिसके अन्तर्गत बाल सुलभ चेष्टाओं, क्रियाओं कलाओं व बालमन को उद्घटित किया है। जिसमें दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियां, नाटक एकांकी प्रमुख है, जो मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा भी प्रदान करती है। हिंदी वाग्ङमय के गद्य और पद्य भेद माने गए हैं। जहाँ पद्य प्राचीन विधा है, वहीं गद्य युग का आविर्भाव विद्वानों के अनुसार लगभग उन्नीसवीं शताब्दी, नवजागरण काल में हुआ है जो भारतेन्दु युग में विकसित होकर द्विवेदी युग में परिमार्जित हुआ। हिंदी गद्य के स्वरूप को निखारने में शिव प्रसाद सितारे सिंह, सदल मिश्र, लल्लू लाल, सदासुख लाल, इंशाअल्लाखां, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी, प्रेमचन्द, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, नंददुलारे वाजपेयी, रामकुमार वर्मा, प्रसाद निराला का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जनसामान्य द्वारा परस्पर संवाद एवं वार्तालाप में प्रयुक्त की जाने वाली साधारण भाषा को गद्य कहा जा सकता है, जिस में लय या छंद का कोई बंधन नहीं होता और जो सहज अभिव्यक्ति होती है तथा लिखने–पढ़ने में काम में आती है। विद्वानों ने गद्य को परिभाषित करने हेतु अनेक परिभाषाएं दी हैं–

गद्य सं. (पु.) 1. ऐसी रचना जिस में रस, छंद, तुक आदि का विधान नहीं हो, वचनिका, 2. बनावटहीन रचना एवं भाषा।

काव्य (पु.) ऐसा गद्य जिसमें भावनाएं कवित्तपूर्ण हों– गीत (पु.) ऐसी गद्य रचना जिस में सरस ढंग से विचारों को व्यक्त किया गया हो, नाटक (पु.) जिस गद्य रचना को अभिनय के रूप में खेला जा सके, : भेद (पु.) गद्य के प्रकार : साहित्य (पु:) गद्य के रूप में लिखी गई रचनाएँ (जैसे हिंदी गद्य सहित्य)[1], अंग्रेजी में गद्य का रूपान्तरित शब्द 'Prose' है, जिस का ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में गर्त तात्पर्य –

Prose प्रोज–n. Non- metrical from of language, गद्य।

v.i. to talk in proseगद्य में वार्ता करना।

Proser - n. - a writer of prose गद्य लिखने वाला।

Prose - poem (a prose work in poetical prose) गद्य काव्य।[2]

स्पष्ट है कि गद्य सामान्य नागरिकों की बोलचाल की भाषा है, जिस में वो लिखते हैं, पढ़ते हैं, अपने भावों को अभिव्यक्त करते हैं। साहित्य लेखन में गद्य एक अनुशासित, व्याकरण

सम्मत, सुव्यवस्थित रचना होती है। जिस प्रकार कविता लिखना बच्चों का खेल नहीं होता, उसी प्रकार गद्य लेखन भी बहुत टेढ़ी खीर है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा भी है कि 'गद्य कविनाम कसौटी।' गद्य का विकास विभिन्न विधाओं में हुआ है यथा– कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रा–वृतांत, डायरी, पत्र–साहित्य, हास्य–व्यंग्य, लघु–कथा। इनमें कहानी अत्यन्त लोकप्रिय विधा के रूप में तीव्रता से विकसित हुई।

कहानी– (स्त्री.) 1. मनगढ़ंत बातः, 2. कथा : कार + सं., लेखन + सं. (पु.) कहानी लिखने वाला– संग्रह + सुं. (पु.) कथा– संकलन[3], अंग्रेजी में कहानी का पर्याय शब्द story है।

Story - n. (pl. Stories)- 1. Place between two floors, the history of one's, the account of an incident, a short narrative, Tale, the plot of a drama. मकान का खंड, जीवनी कथा, वृतान्त, कहानी, घर का ऊपरी भाग, कथानक, नाटक की कथा का आधार का ढाँचा।[4]

अनेक विद्वानों में कहानी को विविध परिभाषाएं व्यक्त की हैं।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल" जल–थल मार्गों पर साथ वाह, पोताधिपति एवं सामयिक व्यापारी रात–दित चहल–पहल रखते हैं। टकटक करते तारों से भरी लम्बी रातों में उन के मनोविनोद के लिए अनेक कहानियों की रचना स्वाभाविक थी, जिन से उन्हीं के देशान्तर भ्रमणों का अमृत निचोड़ा जाता था।'[5]

मुंशी प्रेमचंद–"कहानी एक (गल्प) रचना है जिसमें जीवन में किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है।"[6]

अमेरिका के कवि, आलोचक, कथाकार एडगर एलिन पो–"कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए लिखी गई हो।"[7]

गुलाब राय– "प्रकाश डालने वाला व "छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है जिसमें एक लक्ष्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्द्रित घटना या घटनाओं का आवश्यक उत्थान, पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र का वर्णन हो।"[8]

कहानी साहित्य की अत्यन्त प्राचीन विधा है या कहें कि जब मानव ने अपने मनोभाव व्यक्त करना प्रारम्भ किया होगा, तभी से कहानी का प्राकट्य हुआ होगा। संभवतः कहानी और लोरी ही सबसे पहले उद्भूत हुई हैं। कहानी शब्द 'कहने' और 'कहना' शब्द से प्रचलन में आया है। कहानी की यह विधा है, जिसे कहने और सुनने में आनंद आता है। जैसे लोरी सुनते–सुनते बच्चें निंदिया की गोद में चले जाते हैं, वैसे ही कहानी सुनते समय बालकों एवं बड़ों तक को नींद की झपकी आ ही जाती है। संभवत कहानी का जन्म किसी आदमी ने किसी दूसरे व्यक्ति को आप बीती, किस्सों के रूप में सुनाई होगी, धीरे–धीरे इन किस्सों ने कहानी का स्वरूप ले

लिया होगा। इस प्रकार कहानियां किसी घटना, परिस्थिति, व्यक्ति विशेष का कोई रोचक प्रसंग के आधार पर बनी हैं, जिनमें बाद में कल्पना आदि का सम्मिश्रण होने से और रोचक बन गई जैसे, लोककथाएं, दादा—दादी की कहानियां, परी की कथाएं, देवी—देवताओं की कहानियां आदि। कुछ कहानियां बालकों को नैतिक शिक्षा देने के लिये भी रची गई, जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर आदि। हिंदी कहानी का विधिवत आरम्भ उन्नीसवीं सदी से हुआ। सभी विधाओं की तरह पर कहानी भी भारतेन्दु युग की देन है। विद्वानों के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी रचित 'इंदुमती' कहानी का प्रथम कहानी मानी गई है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी इतनी लोकप्रिय हुई कि इसे पढ़ने के लिए आम लोगों ने हिंदी भाषा सीखी। रविन्द्र नाथ टैगौर की 'काबुलीवाला', प्रेमचंद की 'ईदगाह', 'पंच परमेश्वर', 'बूढी काकी', जैनेन्द्र की 'पाजेब' सुदर्शन की 'हार की जीत', यशपाल जैन की 'परदा' सआदत हसन मंटो की 'टोबा टेक सिंह', मोहन राकेश की 'गिरिगट का सपना' फणीश्वर नाथ रेणु की 'तीसरी कसम', गजानंद माधव मुक्तिबोध 'जर्मी और दीमक', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' ज्ञानरंजन की 'घंटा', सदल मिश्र की 'नासिकेतोपाख्यान', इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' आदि कहानियां अमर कृतियां है। इस प्रकार कहानी लेखन की परम्परा अनेक स्वरूप ग्रहण करते हुए निरंतर विकसित, परिमार्जित होती रही।

एक लोक प्रचलित किवदंती है कि कहानी दिन में सुनाने से मामा रास्ता भूल जाता है। शायद यह इसलिए कि बालक दिन में भी कहानी सुनाने की जिद करते होगें तो बड़े लोगों ने उन्हें बहलाने के लिए यह तरकीब निकली होगी क्योंकि दिन में बड़ों के पास इतना वक्त नहीं होता कि बच्चों को कहानी सुनाने बैठ जाएँ और बच्चे भी कहानी सुनते सो जाएँ। कहानी और कविता ही मात्र ही ऐसी विधायें है, जो श्रव्य हैं। यही इनकी लोकप्रियता का प्रमाण भी है साथ ही कहानी ऐसी विधा है जिसे बच्चे—बड़े सभी पूरे चाव से सुनते हैं। बालकों की तो कहानी में जान बसती है। अतः बच्चों को यदि शिक्षित करना है या कुछ भी सिखाना है, तो कहानी से श्रेष्ठ और कोई माध्यम हो ही नहीं सकता। अगर बालकों को सीधे पढ़ाया जाता है तो पढ़ने में उनका मन कम ही रमता है, लेकिन वही बात कहानी से द्वारा समझाई जाय तो बालक पूरी तन्मयता से ग्रहण करते हैं, यह मेरा स्वयं का अनुभव है। यहाँ तक, गणित और विज्ञान जैसे विषयभी कहानियों के माध्यम से पढ़ाये जाएँ तो बहुत अच्छे परिणाम सुनिश्चित हैं। कई शिक्षक इस तरह के प्रयोग कर चुके हैं। एक विज्ञान के प्रोफेसर ने बताया कि उनके कक्षा में प्रवेश के पूर्व ही पढ़ने के नाम से बच्चे के कक्षा में नदारद हो जाते थे। उन्होंने परेशान होकर उनको कहानी सुनाना शुरू कर दिया। जब देखा कि सभी छात्र कहानी को बड़े मनोयोग से सुनते है तो उन्होंने अपने विषय विज्ञान से सम्बन्धित कहानियां बना कर शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया, जिसके अपेक्षा से अधिक उत्तम नतीजे आये।

आदि युग से कथा साहित्य की लम्बी परम्परा रही है। नए दौर में प्रेमचंद, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', यशपाल जैन, जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर आदि प्रमुख है, जिन्होंने कहानी को ऊँचाई तक पहुंचाया। कुछ कहानी का विषयगत फलक व्यापक है। कहानी के विषय पशु–पक्षी, जीव–जंतु, प्रकृति, मानव जीवन के विविध पहलू, समस्याओं से लेकर मोबाईल, कम्प्यूटर तक हो सकते है। धर्म, उपदेश, नैतिक संदर्भ, शौर्य, रोमांस, प्रेम, वीरता, समुद्री यात्रा आदि विषयों पर भी एक से बढ़कर कहानियां लिखी जा चुकी है। अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालती माधव, सोमदेव, शुक्र–सप्तति, व्रत कथाएं आदि इसी श्रेणी में रखी जा सकती हैं। सबसे बड़े आश्चर्य की बात है कि कहानी की लोकप्रियता में अथ से लेकर आज तक कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी पत्र–पत्रिकाओं में सबसे पाठक कहानियों के ही मिलते है। बच्चों को सब से अधिक रूचिकर कथाएं ही लगती है।

कहानी और उपन्यास कथा साहित्य की उपविधाएँ है। इनमें कहानी हिंदी साहित्य की अन्यतम और अद्वितीय विधा है। बाल कहानी का अपना स्वर्णिम इतिहास रहा है। वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, जातक कथाएँ, कथासरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी, पंचतंत्र, हितोपदेश, अलिफ लैला, लाल–बुझक्कड़, राजा–रानी, की कहानियाँ शेखचिल्ली की कहानियाँ, अलादीन का चिराग, मुल्ला नसरूद्दीन की कहानियाँ, अली बाबा चालीस चोर, अनमोल धरोहर है।

बाल कहानी से तात्पर्य–सात वर्ष से बारह वर्ष तक के बालकों के लिए लिखी गई कहानी से है। कहानी बच्चों की सबसे प्रिय विधा है। बाल कहानी के अंतर्गत– शिशु कहानी, बाल कहानी एवं किशोर कहानी आती है। कथा का लयबद्ध, काल्पनिक, मनोरंजक, यथार्थवादी होना बाल कहानियों के पोषक तत्व माने गए हैं। बाल कहानियों में पशु–पक्षी, देवी–देवता, परी कथायें, लोक कथायें, ज्ञान कथायें, पौराणिक, त्यौहारों, व्यक्तियों की कहानियाँ, मुहावरों की कहानियाँ, वैज्ञानिक कहानियाँ, राजा–रानी की कहानियाँ, बाल जीवन की कहानियाँ, साहसिक कहानियाँ, अलौकिक जगत से सम्बन्धित विचित्र कहानियाँ बच्चों को बहुत लुभाती है। बाल कहानी के प्रसंग में विभिन्न बाल रचनाकारों ने अपने मत प्रकट किए हैं।

डॉ. शेषपाल सिंह लिखते है– "बाल साहित्य में कथा साहित्य बालकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस में बालक अपनी कल्पना द्वारा सद्पात्रों से तादात्म्य स्थापित करता है और उनसे सदगुणों की प्रेरणा लेता है। असद पात्रों के माध्यम से भी वह परिस्थितियों से साक्षात्कार करके तथा दूषित परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त कर उन से जूझने के लिए कृत संकल्प होता है।"[9]

डॉ. परशुराम शुक्ल ने माना है– "कहानी कहना, सुनना मानव स्वभाव है। हिंदी बाल साहित्य में बाल कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।"[10]

बाल साहित्य के प्रख्यात हस्ताक्षर डॉ. हरिकृष्ण देवसरे– "कहानियों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना एक मनोवैज्ञानिक ढंग है। हितोपदेश की कहानियों के पीछे यही रहस्य छिपा हुआ है। आज आवश्यकता इस बात कि है कथानक ढंग का हो, बाल पाठक कुछ सीखकर भी यह न जान पाए कि उनके मस्तिष्क पर उपदेश का बोझ लाद दिया गया है। बड़े ही स्वाभाविक ढंग से पड़ने वाला यह प्रभाव बच्चों के मानसिक धरातल पर अधिक समय पर रहता है और उनके में काम करता है।"[11]

विद्वानों एवं बाल साहित्यकारों के उपर्युक्त चिंतन से स्पष्ट है कि बाल कहानियाँ बच्चों के नैतिक एवं स्वस्थ मनोवैज्ञानिक विकास के लिए अत्यावश्यक है। बालक को एक श्रेष्ठ इन्सान बनाने में कहानियों की भूमिका निर्विवाद है।यदि हम चाहते है कि बालक अनुशासन में रहे, सुसंस्कृत बने, आज्ञाकारी बने, सुनागरिक बने, किसी भी संदर्भ में ध्यान केन्द्रित कर सके, सुशिक्षित हो, मन लगाकर पढ़े, तो इसके लिए मात्र एक ही युक्ति कारगर सिद्ध हो सकती है कि उनको कहानियाँ सुनाना, उनका अधिगम कहानियों के माध्यम से करवाना। विज्ञान, गणित जैसे विषयों के बीच–बीच में भी विषय से सम्बन्धित कहानियाँ बनवाना, नई कहानियाँ गढ़ना क्योंकि बालक का मन कहानी में सब से अधिक रमता है, इतना कि पूरी कहानी सुने बिना वह प्यास लगने पर भी नहीं हिलता।

कहानी दुनिया की हर भाषा में, पुरातन काल से ही कही सुनी, लिखी–पढ़ी जा रही है और बहुत पसंद की जाने वाली विधा के रूप में स्वीकृत तथा प्रिय रही है। हिंदी साहित्य में बाल कहानी की वृहद रीति रही है। बालक लोरी सुनते हुए होश संभालता है और होश सम्भालते ही कहानी सुनने का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है। बालक अपने परिजनों, बड़ों–बुजुर्गो से कहानी सुनाने के लिए जिद करता है और बड़े भी बड़े मनोयोग से उन की जिज्ञासा वृति को कहानी के माध्यम से परितृप्त करते आये हैं। दादा–दादी, राजा–रानी, देवी–देवताओं की चमत्कारिक कहानियों से लेकर विज्ञान और तकनीकी की हजारों–हजार कहानियों के कोश तैयार हो चुके हैं।बालक कल्पनालोक में विचरण करता है और कहानी उस की कल्पना और जिज्ञासा को शमन करने के लिए पौष्टिक भोजन का कार्य करती है। कहानी बालक को आदर्श इन्सान बनाती है, आनन्द प्रदान करती है, उस का मनोरंजन करती है, साहस जैसे गुण उत्पन्न करती है, भावी जीवन के लिए सत्पथ बताती है।

मनोरंजन, रोचकता, जिज्ञासा, कौतुहल, सरल भाषा–शैली, सोद्देश्यता, बालकों के चिर–परिचित जगत के विषय, कल्पना इत्यादि बाल कहानी की प्रमुख विशेषताएँ मानी गई हैं। स्वाधीनता के उत्तरकाल के बाल कहानीकारों की लम्बी परम्परा में महान उपन्यासकार, कथाकार मुंशी प्रेमचन्द, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, मनोहर वर्मा, मस्तराम कपूर 'उर्मिल', मालती जोशी, विष्णु प्रभाकर, रामधारी सिंह 'दिनकर' अमृतलाल नागर, शिवानी मृणाल पांडे, प्रकाश मनु, गोविन्द शर्मा,

रामदरश मिश्र, राजीव सक्सेना, भगवती प्रसाद द्विवेदी, मोहम्मद अरशद खान, दर्शन सिंह 'आहट' देवेन्द्र कुमार मुख्य हैं। दीनदयाल शर्मा इसी श्रृंखला के उल्लेखनीय बाल कथाकर हैं। आपने पद्य के समकक्ष बाल गद्य को भी अपने बाल साहित्य सृजन से समृद्ध किया है, जिस के अंतर्गत हिंदी भाषा में बाल कहानी, बाल नाटक, बाल एकांकी, बाल हास्य, बाल संस्मरण लिखें हैं। बाल कहानीकार शर्मा की अब तक हिंदी बाल कहानियों की पांच कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है, जिनका विवरण निम्नानुसार है–

(क) बाल कहानी संग्रह

1. चिंटू–पिन्टू की सूझ (1987)

1. चिंटू–पिन्टू की सूझ 2. लोमड़ी की सूझ 3. मोर की जिद, 4. शंखेश्वर के सींग, 5. साधु का श्राप, 6. कोयल की चालाकी, 7. कौआ काला क्यों

2. बड़ों के बचपन की कहानियाँ (1887)

1. सही न्याय, 2. जिसने मेहनत से जी नहीं चुराया, 3. दृढ़ निश्चय वाला बालक, 4. सच्ची लगन, 5. माँ के गहने, 6. और भालू हार गया, 7. साधु की भविष्यवाणी, 8. जेब खर्च, 9. वास्तविक पूजा।

3. पापा झूठ नहीं बोलते (1999)

1. इनाम और सजा, 2. पश्चाताप के आँसू, 3. आखिरी हथियार, 4. शिवगणेश की चतुराई, 5. अंजू की सीख, 6. पापा झूठ नहीं बोलते।

4. चमत्कारी चूर्ण (2003)

1. चमत्कारी चूर्ण, 2. प्रहेलिका की पहेलियाँ, 3. बरसात, 4. सबसे बड़ी सजा, 5. ठोकर, 6. आजादी का अर्थ।

5. मित्र की मदद (2016)

1. मित्र की मदद, 2. बिबो बकरी की हिम्मत, 3. लालच का फल, 4. मोर राजा का फैसला, 5. दृढ़ संकल्प का चमत्कार, 6. सीख न मानने का सबब।

प्रस्तुत कहानियाँ तात्त्विक दृष्टि से समृद्ध कही जा सकती हैं। इनमें कथावस्तु, संवाद, चरित्र–चित्रण, देशकाल, भाषा–शैली, उद्देश्य का सार्थक संयोजन हुआ है, साथ ही मनोरंजन, जिज्ञासा, रोचकता, कौतुहल का सुन्दर अंकन भी दृष्टव्य है।

इस परिप्रेक्ष्य में सुनील कुमार डीडवानिया कहानीकार शर्मा की कहानियों के लिए लिखते हैं– "साहित्य ऐसा हो जो हमें विचार करने पर बाध्य करें, बच्चों में जिज्ञासा और आत्मविश्वास की वृद्धि करें। श्री शर्मा की लेखनी ऐसी ही अमृत वर्षा करने को आतुर रहती है। आप द्वारा

लिखी गई आधुनिक बाल कहानियाँ बच्चों को भारतीय संस्कृति से न केवल प्रेम करना सिखाती है वरन उनमें नई सोच पैदा करने की क्षमता को भी आगे बढ़ाती है। युवा पीढ़ी को सीख देने वाली रचनाएँ, छोटी बाल कवितायें व संस्कारों से परिपूर्ण बाल कहानियाँ आधुनिक युग की महती आवश्यकताएँ है।"[12] डॉ. दीनदयाल शर्मा की कहानियों की वैशिष्ट्य विविधताओं से युक्त है। प्रमुख विशेषताएं दृष्टव्य है–

4.1 बाल सुलभ जिज्ञासा

बाल कहानियों की प्रमुख विशेषता बालसुलभ जिज्ञासा होती है। **जिज्ञासा** का कोशगत अर्थ–जिज्ञासा–सं. (स्त्री.) 1. जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह, 2. ज्ञान प्राप्त के लिए उत्सुकता, जिज्ञासा, कुल–सं. (वि.) पूछताछ या जानने की चाह से व्याकुल[13,] अंग्रेजी में जिज्ञासा का समानार्थक शब्द Curiosity शब्द है, जिस का कोशसम्मत आशय–

Curiosity- (pl. Curiosities) strangeness, rarity, inquisitiveness अनोखापन, विलक्षणता, कौतुहल। Corioso-n. A curious prason.विलक्षण मनुष्य।

Curious - adj. Singular, strange, suprising, odd, eager to learn। अनोखा, विलक्षण, अद्भुत, जानने की इच्छा रखने वाला (जिज्ञासु)[14]

उपर्युक्त परिभाषानुसार स्पष्ट है कि जिज्ञासा का अर्थ जानने की तीव्रतर इच्छा, आकांक्षा, चाह, ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुकता का भाव, विलक्षणता, वैचित्र्य एवं कौतुहल है। यह एक मनोवृत्ति है, जिस के वशीभूत होकर व्यक्ति किसी भी नई, वस्तु, नवीन विषय, अपरिचित प्रसंग, परिस्थिति अदि के संदर्भ के ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक होता है, व्याकुल रहता है। यह प्रवृत्ति प्रायः सभी मनुष्यों में पाई जाती है। दुनिया के विकास में जिज्ञासा की भूमिका सर्वोपरि रही है। आदमी के चाँद पर पाँव रखने में उस की प्रबल जिज्ञासा का ही हाथ रहा है। बाल्यकाल में यह भाव तीव्रतम होता है। बालक हर चीज की तह तक जाना चाहता है। अपने खिलौने से एक–दो बार खेलने के बाद अक्सर बच्चे उसे तोड़–फोड़ कर उसके भीतर पहुंच जाते हैं। किसी भी नई चीज के विषय में बड़ों से ऐसे–ऐसे प्रश्न करते हैं कि वे निरूतर हो जाते हैं। बाल साहित्य बच्चों के कौतुहल को एक सीमा तक शांत करने में सक्षम रहा है। आगे क्या होगा........... क्या होगा............... ये जानने के लिए बालक एक बार कथा पढ़ना या सुनना प्रारम्भ करने के बाद उसे आद्यांत पढ़ कर या सुन कर ही दम लेता है। जिज्ञासा कहानी की सब से बड़ी विशिष्टता मानी गई है। कौतुहल को बाल कहानी का प्राण तत्व कहा जा सकता है।

बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियों में जिज्ञासा, औत्सुक्य, कौतुहल इस प्रकार समाविष्ट हैं जैसे नीर में क्षीर। कहानी के हर अवतरण के पश्चात् और कहीं–कहीं तो दो–तीन पंक्तियों के बाद आगे क्या होगा.......... यह जानने की लालसा बलवती होती जाती है।

'चमत्कारी चूर्ण', संग्रह की 'चमत्कारी चूर्ण' 'प्रहेलिका की प्रहेलिका', 'सब से बड़ी सजा', 'ठोकर' कहा में अंत तक इस बात का आभास तक नहीं होता कि आगे जाकर कहानी क्या मोड़ लेने वाली है। चमत्कारी चूर्ण कथा में एक साधु स्कूल में चूर्ण बेचने आता है। एक पुड़िया दस रूपए में यह कह देता है कि इस चूर्ण के खाने के बाद पंख आयेंगे और आप उड़ने लगेंगे, यह सुनकर ही बालक हवा में उड़ने लगते हैं, क्योंकि बालकों को चमत्कारों में बड़ा आनंद मिलता है। कई बच्चों के साथ–साथ एक विद्यार्थी जिस का नाम दुष्यन्त है, वह भी चूर्ण खरीदता है और घर आकर अपने दीदी को उस चूर्ण के चमत्कार से अवगत करवाता है और कहता है कि यह बात दस वर्ष से बड़े आदमी को नहीं बतानी है, वरना चूर्ण का प्रभाव समाप्त हो जायेगा। लेकिन उसकी दीदी को विश्वास नहीं होता और कहती है कि साधु झूठा और ढोंगी है, ऐसा नहीं सकता। किन्तु दुष्यंत के बार–बार कहने पर वह उसकी बात मान लेती है और दोनों चुपचाप चूर्ण खा लेते हैं तथा साईकिल से गली के चक्कर लगाने लगते हैं, बार–बार अपनी पीठ को देखते हैं कि पंख आये क्या......। "कुछ देर में देखते क्या हैं कि उनके पंख आ गए हैं और वो किलकारियाँ भरते हुए, अपने शहर के ऊपर इधर–उधर खूब उड़ते हैं। रात भर, एक दूसरे को उड़ता हुआ देखकर, उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता मानों उनके सपनों के पर लग गए हों नहीं दीदी,...........हाँ दीदी कहते–कहते दुष्यंत ने चुपके से अपनी पीठ पर हाथ फिरा कर देखा कि उसके पंख हैं या नहीं। पीठ पर पंख नहीं थे तो क्या ये सपना था?"[15] तभी उन की नींद खुल जाती है, वो देखते है कि ये तो सपना था.......... लेकिन वे सपने में उड़कर भी बहुत प्रसन्न थे। आद्यांत कहानी में कौतुहल, उत्सुकता, जिज्ञासा अनवरत बनी रहती है। चूर्ण खाने से पंख आने की बात सुनते ही जिज्ञासु बाल पाठकों में बच्चों के उड़ने की घटना की प्रबल अभिलाषा जाग्रत होती है और वे अधिक रूचि के साथ कहानी को पढ़ते जाते हैं।

'प्रहेलिका की पहेलियाँ' कहानी पहेलियों पर आधारित होने के कारण स्वतः ही जिज्ञासा जगाने वाली कथा है। इस की नायिका प्रहेलिका एक नन्हीं बालिका हैं जो बहुत चतुर, समझदार और सब की चहेती है। कक्षा छठी में अध्ययनरत है, प्रतिभाशाली है, कक्षा की मोनिटर होने के साथ ही उस की पहेलियों में गहरी रूचि है। एक दिन उसके एक अंकल उसके पापा से मिलने घर आते हैं, लेकिन पापा बाजार गये हुए होने के कारण अंकल उन की प्रतीक्षा में कुछ देर घर ठहर जाते है। प्रहेलिका उनका मन बहलाने के लिए उनसे पहेलियाँ पूछना प्रारम्भ करती है। पहेली इस प्रकार है–

60 भेड़े होती हैं। पहले दिन प्रति भेड़ को 50 पैसे में पानी पिलाया जाता है, दूसरे दिन प्रति भेड़ 30 पैसे में, तो दो दिन में कुछ कितने रूपए का पानी पिलाया। दोनों पहेलियां सुनने में बहुत आसान हैं, उत्तर भी सरल है, और अंकल तपाक से उत्तर दे देते हैं पच्चीस रूपए, जो गलत होता है। यहाँ बाल पाठकों के मन में बहुत तीव्र आतुरता का भाव उत्पन्न होता है कि

आखिर सही उत्तर क्या है और वह बड़े कौतुहल से कहानी को आगे पढ़ते हैं। तब उसे सही जवाब ज्ञात होता है। इसी क्रम में 'ठोकर' कहानी का अंत भी बहुत अप्रत्याशित होता है, जिसका पूर्वानुमान कठिन होता है। 'मित्र की मदद' संग्रह की 'मोर राजा का फैसला' 'सीख न मानने का सबक' कहानियाँ आद्योपांत कौतुहल पैदा करने वाली हैं। कहानी के पात्र जंगली जानवर है, जंगल का राजा मोर है, जो न्याय के लिए प्रसिद्ध है। एक दिन जंगल के सभी पक्षी मोर राजा के पास आकर फरियाद करते हैं कि– महाराज! आये दिन हमारे घोंसले न जाने कौन तोड़ जाता है। मोर उनको आश्वस्त करते हुए कहता है कि वह जल्दी अपराधी का पता लगाएगा। मोर राजा अपने मंत्री मन्नू उल्लू को अपराधी का पता लगाने भेजता है। रास्ते में उसको कल्लू कौआ मिलता है और उल्लू से परेशानी का सबब पूछता है, ज्ञात होने पर बताता है कि यह करतूत तो चिकी कमेड़ी की है। उल्लू उस की बात मान कर मोर को अपराधी का नाम बताता है। मोर अपने सेनापति जम्बो बाज को भेजकर कमेड़ी को गिरफ्तार करवाता है। इसके बाद कुछ दिनों तक जंगल में कोई दुर्घटना नहीं हुई होती। मोर राजा आश्वस्त हो जाता है कि यह अपराध चिकी कमेड़ी का ही है। वह आपात कालीन सभा का आयोजन करता है और सारी घटना का वर्णन करते हुए कमेड़ी को मृत्यु दण्ड की सजा का ऐलान करता है। यह सुनते ही कमेड़ी सिहर जाती है, बार–बार आर्त स्वर में कहती है– महाराज! मैं निर्दोष हूँ, मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है। बिना गवाह एवं सबूत के उसकी पुकार अनसुनी रहती है। जैसे ही जम्बों बाज तलवार से कमेड़ी की गर्दन पर वार करता है– 'ठहरों......' की आवाज से सब चौंक उठते है। चीकू कमेड़ा का प्रवेश होता है, वह कहता है–

"महाराज, मेरा नाम चीकू कमेड़ा है। मैं चिकी कमेड़ी का पति हूँ। इतने दिनों से मैं परदेश गया हुआ था और आज ही लौटा हूँ। गुस्ताखी के लिए क्षमा करें। आज आप एक निर्दोष को मृत्युदण्ड देकर अपने दरबार पर कलंक लगा रहे हैं। आप का मुजरिम तो कल्लू कौआ है महाराज। आपको विश्वास नहीं हो तो अभी अपने सेनापति को भेजकर पता करवा सकते हो।"[16] मोर यथास्थिति का पता करवाता है और कल्लू कौवे को क्या सजा दी जाये, इसके लिए कमेड़े से पूछता है और वह उसे क्षमा करने को कहता है। मोर राजा कौवे को क्षमा करता है किन्तु कौवे को सपरिवार देश निकाला देता है। तभी से कौवे और कमेड़ी में दुश्मनी चली आ रही है, आज भी कौवा कमेड़ी को देखते ही उस पर झपटने लगता है। इस प्रकार अथ से इति तक सम्पूर्ण कथा में निरंतर कौतुहल और जिज्ञासा बनी रहती है। इसी भांति 'पापा झूठ नहीं बोलते' कथा कौतुहल एवं औत्सुक्य से भरपूर है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' कथा में शीर्षक के विपरीत, सुरभि के पापा अपनी बिटियां को खुश करने के लिए झूठ बोलते है। सुरभि पापा से पूछती है कि पापा, लड़की के जन्म पर थाली बजाते हैं ना। प्रत्युत्तर में पापा रूँधे स्वर में कहते हैं– कंचन सच्ची है मैं तुम्हें खुश करने के लिए झूठ बोल रहा था। मुझे माफ कर दो।"[17] सम्पूर्ण कथा

मार्मिक और हृदयस्पर्शी है। बेटे और बेटी के जन्म पर थाली बजाने पर बात पर पापा अपनी बेटी को खुश देखने के लिए झूठ बोलते हैं। 'चिटू–पिंटू की सूझ' कथा संग्रह की कहानियाँ, चिंटू–पिंटू की सूझ, मोर की जिद, शंखेश्वर के सींग, साधु का शाप, कोयल की चालाकी, कौआ काला क्यों, बच्चों के मन को उल्लसित करने एवं कौतुहल जाग्रत करने में सफल है। 'कौआ काला क्यों' शीर्षक ही कौतुहल जगाने वाला है। ऐसे कई प्रश्न बालकों के मन आते रहते हैं। कौवे के काले रंग के रहस्य को बच्चे जरूर जानना चाहते हैं, अतः ये कहानी उनकी तीव्र इच्छा का शमन करने में सफल कहीं जा सकती है। 'चिंटू पिंटू की सूझ' दो बिल्लियों एवं बन्दर वाली पुरानी कहानी है, लेकिन कहानी जैसे–जैसे आगे बढ़ती है जिज्ञासा उतनी ही बढ़ जाती है। कहानी का समापन बड़ा अप्रत्याशित होता है। चिंटू–पिंटू बंदर के बहकावे में नहीं आते और स्वयं न्याय करके सन्तुष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार कहानीकार शर्मा की समग्र कथा साहित्य जिज्ञासा जगाने में सफल कहा जा सकता है।

4.2 मनोरंजन

आदि युग से मनोरंजन और बाल कहानी का शाश्वत सम्बन्ध रहा है। सम्भवतः कहानी का अनुसन्धान बालकों के मन को बहलाने और फुसलाने के लिए ही हुआ है। इसीलिए बाल कहानी का प्रमुख धर्म बालकों का मनोरंजन करना है। बाद में अपरोक्ष रूप से उस में नैतिक तत्त्वों का समावेश किया जाने लगा। राजा–रानी, परी, भूत–प्रेत, चमत्कार, जंगली जानवर, देवी–देवता आदि कथाओं का उद्देश्य मात्र मनोरंजन रहा है।

दीनदयाल शर्मा ने अपनी बाल कहानियों में मनोरंजन तत्त्व का बड़ी सूझ–बूझ एवं कुशलता से समायोजन किया है। सभी कहानियों में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है क्योंकि बालक कहानी से पूरी तरह तभी जुड़ेगा जब पढ़ते समय अनवरत कौतुहल, मनोरंजन उत्सुकता बनी रहेगी, 'मित्र की मदद' संग्रह की कहानी, 'मोर राजा का फैसला' अत्यन्त रोचक और मनोरंजक कथा है। इस कहानी के पात्र जंगली जानवर हैं, इन के नाम ही बालकों का मन बहलाने के लिए पर्याप्त है।, यथा–चिकी कमेड़ी, मन्नू उल्लू, राजा शेर सिंह आदि। जानवरों द्वारा मनुष्य की वाणी में बात करना, बच्चों को आल्हाद से भर देता है। जानवरों का मानवीकरण अपने आप में कहानी को रोचक बना देता है। चमत्कारी चूर्ण' की शीर्षित कथा 'चमत्कारी चूर्ण' में साधू द्वारा विद्यालय में चमत्कारी चूर्ण बेचना, इसके खाने से बालकों के पंख का आना, उन का रात भर आकाश में उड़ते रहना, बच्चों के लिए किसी अजूबे से कम नहीं है। इन सारी घटनाओं को पढ़ते हुए बालके के मन में आनंद हिलोरें लेने लगता है। कहानी कार शर्मा ने बालकों के मन को प्रसन्न करने का कोई अवसर अपने हाथ से नहीं जाने दिया है। इसी पुस्तक की 'प्रहेलिका की पहेलियाँ' कहानी पहेली पर आधारित होने के कारण अपने आप ही मनोरंजन का खजाना है क्योंकि पहेलियाँ बालकों के मन बहलाव के लिए सब से आसान विधा है, जो बच्चों को सर्वप्रिय

है। चिंटू–पिंटू की सूझ' कहानी में झबरी बिल्ली मौसी, उस के चिंटू–पिंटू नटखट बालकों की शरारतें, पेड़ पर बैठा बन्दर मामा......... यह रूपक ही बच्चों को प्रसन्नता से भर देता है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' संग्रह की 'अंजू की सीख' बच्चों को हँसा–हँसा का लोट पोट करने वाली कहानी है। इस की मुख्य पात्र बारह वर्षीय एक चुलबुली और बुद्धिमान बालिका है, जिस का नाम अंजू है। यह पढ़ाई और व्यवहार दोनों में होशियार है। अंजू अपने घर के बाहर खेलती रहती है, तभी उसके स्कूल के सर आते हैं, वह खेलना बंद करके सर से नमस्ते करती है। इस के आगे की घटना बड़ी रोचक है –

"नमस्ते........... तुम्हारे पापा कहाँ हैं, बेटा? सर ने अंजू से पूछा। 'वे तो बाजार गए हैं सर, पी.सी. ओ. से फोन करने।'

– 'कब तक लौटेंगे?' 'पापा कह तो रहे थे कि दस मिनिट में ही आ रहा हूँ, लेकिन वे काफी जल्दी में थे, इस कारण मेरे हिसाब से डेढ़ घंटा तो लग ही जायेगा जी।'

– क्या पैदल गए हैं?

– 'नहीं, पैदल नहीं गए इसीलिए तो देरी से आएंगे सर! मुस्काती हुई अंजू बोली।

– 'क्यों?'

– 'स्कूटर लेकर गए हैं ना इसीलिए। हाथ नाचते हुए अंजू ने कहा। स्कूटर लेकर गए हैं, फिर इतना समय कैसे लग जाएगा, सर ने पूछा।

– 'अंजू बेटे, पहेलिया मत बुझाओ, साफ–साफ बताओ कि ....।[18]

– संवाद और चलता है, जो बहुत मनोरंजक है। इसी प्रकार अंजू के एक मास्टर जी उस के पड़ौस में रहते हैं, जो किराये का घर बदल रहे होते है। ट्रैक्टर चालक कहता है कि यह सामान दो बार में जा सकेगा। लेकिन सर कहते हैं कि मुझे जल्दी है, एक ही बार में भर कर ले चलो। यह सुन कर अंजू कहती है –

'मास्टर जी ज्यादा जल्दी मत करो, नहीं तो देर हो जाएगी।'

जो बालकों को आनंदित करने वाला एक और संवाद, 'शेर राजा बोला – अच्छा! तो ये बात है। शेर गुस्से से दहाड़ा और बोला – 'जाओ जल्दी से चिपकू बंदर को मेरे सामने हाजिर करो।'[19]

उपरोक्त प्रथम प्रसंग में प्रहेलिका द्वारा अंकल को दिए गए उत्तर सरल हैं किन्तु जवाब देने का विनोदपूर्ण तरीका, हाव–भाव, रोचक शैली का प्रयोग बालकों के मन का प्रसन्न करने में समर्थ कहे जा सकता है। दूसरे प्रसंग में भी उत्तर देने का सलीका सुनने में आसान है किन्तु बात 'लाख टके की' कहती है, जैसे कोई भी काम जल्दी करने के चक्कर में अक्सर विलम्ब हो

जाता है। लोक प्रचलित कहावत भी है कि "जल्दी काम शैतान का।" यह उक्ति यहाँ सार्थक हो रही है। तृतीय प्रसंग में 'शेर की रौबदार आवाज और उसमें डांटने का सलीका ही बालकों को बहुत प्रसन्न करेगा क्योंकि बालक ऐसे प्रसंग से डरते नहीं अपितु मजा लेते है।

4.3 आधुनिकता और परम्परा का समन्वय

'साहित्य से परम्परा का वही अन्तर्सम्बन्ध है, जो उसका संस्कृति से है। परम्परा में सातत्य है, निरन्तरता है।यह सतत् विकासशील है। परम्परा समय और स्थिति के अनुरूप अपने में अपरिहार्य परिष्कार, संशोधन और परिवर्तन करके सदा नये धर्म–गुण के साथ प्रकट होती है। वह पुरातन अवगुणों को त्याग करके नवीन अवधारणाओं से सम्बद्ध होती है। परम्परा चैतन्य है, सनातन है और संस्कारित है। उसमें चुनौतियों का सामना करने की अद्‌भुत होती और उसमें क्षमता है सम्पूर्ण जीवन दृष्टि समाहित रहती है। वह प्रत्यभिभूत सत्य है। उसमें अपूर्व प्रत्यवेक्षण ऊर्जा है। परम्परा यौगिक है। सक्रियता, सार्वभौमिकता, सहधर्मिता और समरसता उसकी चेतना का अंतः व्यवहार है। "साहित्य स्वयंभू है, वह अपनी सृष्टि का सृष्टा है। साहित्य और परम्परा सहधर्मी है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। जब कभी भौतिक, सामाजिक इत्यादि सत्ताएं मनुजता पर आक्रमण करती है, तब परम्परा और साहित्य मिलकर उसका सामना करते हैं और उसे जीने के नवीन विश्वास, नवीन चेतना, नवीन अन्तदृष्टि से जोड़ते हैं। यही परम्परा का आधुनिकीकरण है और इसी से सूर, तुलसी, मीरा, रवीन्द्र, निराला, शरत, प्रेमचंद, मुक्तिबोध आदि की परम्परा को सार्थकता संपुष्ट होती है।"[20]

उपर्युक्त कथन का निष्कर्ष है कि साहित्य, आधुनिकता और परम्परा एक दूसरे के सहयोगी हैं, पूरक हैं और परस्पर सम्बल प्रदान करते हैं। इन का सुखद संयोग साहित्य को और उर्जस्वित कर देता है। आधुनिक युग विज्ञान, संचार और तकनीक का है, जो हमें यथार्थ से जोड़कर समयानुरूप जीवन जीने की कला सिखाता है, वहीं परम्पराएँ, संस्कृति, प्रणालियाँ रीति–रिवाजों से सम्पृक्त रहती हैं। साहित्य समय का साक्षी होता है, जो तत्कालीन गतिविधियों का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। बाल साहित्य में परम्परा और आधुनिक भाव बोध का सामंजस्य बालकों को हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं समसामयिक संदर्भों से परिचित करवाता है। आधुनिकता के सम्बन्ध में डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर का चिंतन प्रासंगिक है– "वस्तुतयाः आधुनिकता काल सापेक्ष, स्थान सापेक्ष और स्थिति सापेक्ष है। उसका विरोध परम्परा का अस्वीकार नहीं है, बल्कि परम्परा के नये संस्कार का संबोध ही एक सीमा तक आधुनिकता का संदर्भ है। आधुनिकता पुरातन पोथी का नवीन तथा परिष्कृत संस्करण है।

कमलेश्वर का कहना है– 'आधुनिकता एक ऐसी मानसिकता, बौद्धिक स्थिति है जो अपने परिवेश और समाज की गहनतर समस्याओं से उद्‌भूत होती है और समकालीन जीवन को संस्कार देती

है। जहाँ परम्परा की जड़ें अतीत में फैली होती है, वहाँ आधुनिकता का सम्बन्ध अपने वर्तमान से होता है।"[21]

प्राचीन काल से अद्यतन बाल साहित्य में परम्पराओं की अनुपालना होती रही है एवं तत्समय का चित्रण भी। बाल कहानीकार दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियों में पारम्परिक तत्त्वों और आधुनिक संदर्भो के समन्वय की सुरम्य छवि देखने को मिलती है। कहानीकार शर्मा अपनी कथाओं में जहाँ बच्चों को अपनी रीतियों से, संस्कृति का ज्ञान करवाते हैं, वहीं आधुनिक यथार्थ को भी प्रस्तुत करते चलते हैं। इन कहानियों के अधिकांश पात्र पंचतंत्र की तर्ज पर जंगली जानवर हैं, लेकिन इन के माध्यम से वर्तमान युग की चुनौतियों का, संघर्षों का, बाल सुलभ सौन्दर्य का भी उल्लेख किया है। 'चिटू–पिंटू की सूझ' संग्रह की शीर्षित कथा 'रोटी के टुकडे' के छोटे–बड़े आकार के लिए झगड़ने वाली बिल्लियों की पारम्परिक कहानी पर आधारित है, कहानी की मुख्य पात्र झबरी बिल्ली मौसी के चिंटू–पिंटू दो बच्चे वैसे ही रोटी के लिए झगड़ते हैं, वहीं पेड़ पर बैठा एक चालाक बन्दर उनको मूर्ख बनाना चाहता है, लेकिन अब समय बदल चुका है। यहाँ आकर दीनदयाल शर्मा ने कहानी को जिस प्रकार मोड़ दिया है वह अत्यन्त सराहनीय है और आधुनिक बोध एवं मौलिकता को दर्शाती हैं, कुछ इस प्रकार–"अच्छा तो यह बात है! क्यूँ बन्दर चाचा, हम दोनों भाईयों को तुम ठगने की कोशिा कर रहे थे ना! अब वो जमाना गया चाचा।' चिंटू ने यह कहकर रोटी का एक टुकड़ा पिंटू के हाथ में थमा दिया और वे दोनों भाई अपने घर की तरफ चल दिए। बंदर अपना सा मुंह लेकर रह गया और छलांग लगाता हुआ वापस पेड़ पर चढ़ गया।"[22]

आधुनिक कहानियों के विषय में **प्रसिद्ध बाल साहित्यकार देवेन्द्र मेवाड़ी** का कहना है– "आज के आधुनिक युग में बच्चों को विज्ञान की तर्क संगत वह कहानियां चाहिए जो उन्हें कल्पना लोक में ले जाएँ और जो उनके अपने ज्ञान के तर्क पर सही साबित होती हो।"[23]

"लोमड़ी की सूझ' कथा का कथानक, पात्र, देशकाल, सब परम्परागत हैं, किन्तु झुमरी लोमड़ी जिस प्रकार चीनू मुर्गी के अंडे तोड़ने वाले अपराधी का पता लगाती है, वह आज की सूझ–बूझ को दर्शाती है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ' के लिए **कमल रतन जांगिड़**, जयपुर ने अपनी रचना 'दीनदयाल शर्मा के साहित्य में अनूठे प्रयोग' में लिखा है– "चिंटू–पिंटू की सूझ' वास्तव में एक लाजवाब कृति है। राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत इस कृति की सभी कहानियाँ जहाँ बच्चों को अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा देती हैं, वही उनके व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होने में विशेष योगदान देती हैं।"[24] रचनाकार दीनदयाल शर्मा की कई कहानियाँ इस कसौटी पर खरी उतरती है। उदाहरण के लिए 'इनाम और सजा', 'आखिरी हथियार', आजादी का अर्थ', सबसे बड़ी सजा' आदि। कहानीकार श्री शर्मा की बाल कहानियाँ आधुनिक परिवेश को

उजागर करने में सक्षम हैं। इन कहानियों में विज्ञान व मनोरंजन को सुन्दर तरीके से कथ्य में गूंथा गया है।

'कौवा काला क्यों' कथा परम्परागत स्वरूप लिए है, ब्रह्मा जी अपनी सृष्टि को देखकर, सोचते हैं कि सभी पक्षी सफेद रंग के हैं, क्यों न मैं इन को अपनी–अपनी पसंद का रंग दे दूँ, ताकि इन्हें पहचानने में भी सुविधा रहेगी कथानक प्राचीन है लेकिन इस कथ्य को दीनदयाल शर्मा ने आधुनिक रंग देकर बालकों को रंगों का ज्ञान सहज ही करवा दिया है। अमुख दो रंगों के मेल से कौन सा नया रंग बनता है, कुछ इस प्रकार पीले रंग पर नीला रंग चढ़ते ही कौआ हरे रंग का हो गया। हरा रंग देखकर कौआ बोला, 'भगवन, मुझे तो लाल रंग दे दो, हरा रंग अच्छा नहीं लगता तब उसे लाल रंग दे दिया तो वह बैंगनी रंग का हो गया? इस प्रकार रंग संयोजन की कला भी इन कहानियों में दिखाई देती है। इस पुस्तक की अन्य कहानियों में भी परम्परा और आधुनिकता का समन्वय देखा जा सकता है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' कहानी संग्रह की 'शिव गणेश चतुराई' का प्रारम्भ परम्परागत ढ़र्रे, 'एक था राजा' से होता है। भटेसर के राजा बाणभट्ट के पास शिवगणेश और भोलाशंकर नामक दो भाई नौकरी मांगने आते हैं, राजा बुद्धिमान है, वह पहले परीक्षा लेता है। दोनों को एक–एक बाल्टी मिट्टी देकर कहता है कि इसे बेचकर शाम तक आओ फिर मैं अपना निर्णय बताऊंगा। भोलाशंकर एक गृहणी को बर्तन मांजने के लिए दो रूपये में मिट्टी बेचता है। शिवगणेश एक रेहड़ी से रंग उधार लेकर मिट्टी में मिलाता है और रंग–बिरंगी ढेरियां बनाता है, उन पर अयोध्या, मथुरा, कुरूक्षेत्र की पर्चियां लगाकर, आवाज लगाता है–'ये लो अयोध्या की मिट्टी जिस में राम घुटनों के बल चलते थे, ये मथुरा की मिट्टी जिमें कन्हैया खेला करते थे, केवल एक रूपये की एक तोला बस थोड़ी ही बची, है, माल लुटा दिया........।"[25] इस प्रकार चतुराई से 1000 रूपये में मिट्टी बेचकर आता है, राजा शिवगणेश को दरबार में मंत्री और भोलाशंकर को द्वारपाल का कार्य देता है। वर्तमान समय का यही चलन है कि जो बोलता है, वो बिकता है। चतुराई, बुद्धिमता, कुशलता से ही मनुष्य अभीष्ट को प्राप्त करता हे। 'पापा झूठ नहीं बोलते' कथा में कहानीकार ने पुत्र के जन्म पर थाली बजाने के परम्परागत रिवाज से अवगत करवाते हुए, बड़े तार्किक ढंग से बेटी बचाओ जैसी आधुनिक समस्या को उठाया है। यह कथाकार की तार्किक कौशल एवं मौलिक कथानक कौशल को दर्शाता है। 'अंजू की सीख' बड़ी प्यारी कहानी है। इस की नायिका ग्यारह वर्षीय अंजू नाम की लड़की है जो चतुर, बुद्धिमान, हाज़िर जवाब तत्कालदर्शी एवं भविष्यदर्शी हैं, छठी कक्षा में पढ़ती है। हर प्रश्न का सटीक उत्तर उस के पास होता है। इस कहानी में तीन अंतर्कथाऐं हैं, जिन में अंजू का स्मार्ट, आधुनिक शैली सम्पन्न व्यक्तित्व पाठकों के समक्ष उभर कर आता है। यह नई तकनीक व कथ्य से परिपूर्ण बाल कथा है। मनोरंजन के साथ महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करती है।

'चमत्कारी चूर्ण' नामक कथा यूँ तो एक साधु द्वारा एक पाठशाला में जाकर भोले– भाले बच्चों को साधारण चूर्ण को चमत्कारी बता कर बेचता है। बच्चे उस की बातों में आ जाते हैं एवं चूर्ण खरीद लेते हैं, जिन में दुष्यंत नाम का बालक भी है। वह घर आकर अपनी दीदी ऋतु को सारी बात बताता है। सुनते ही उस की दीदी की जो प्रतिक्रिया सामने आती है, वहाँ कहानी आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है। ऋतु कहती है–'यह चूर्ण की पुड़िया साधु को वापस कर दो। अरे मूर्ख, चूर्ण खाकर भी कोई उड़ सकता है भला? मुझे तो लगता है वह कोई साधु नहीं, जरूर कोई ठग होगा' ऋतु बोली।"[26]

प्रस्तुत विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा की कहानियों में परम्परा एवं आधुनिकता का सुन्दर सामंजस्य बन पड़ा है।

4.4 बाल कहानी और मूल्य

साहित्य में प्रारम्भिक काल से ही मूल्यों की स्थापना पर बल दिया जाता रहा है तथापि बाल साहित्य में मनोरंजन को प्राणतत्व के रूप में मान्यता मिली हुई है। आधुनिक रचनाकार इसी रीति का अनुसरण करते हैं। इस के विपरीत परम्परावादी बाल रचनाकार बाल साहित्य में नैतिक मूल्यों को अनिवार्य मानते हैं, उनका मानना है कि बाल्यावस्था कोमल पौध की तरह होती हैं, उस में जैसी खाद और पानी डाला जायेगा वह वैसी ही विकसित होगी। बचपन में मिले संस्कार बालक के भावी जीवन का निर्धारण करते हैं। इस धारा के संवाहक बाल साहित्यकारों के कथा साहित्य में मूल्यों की अवधारणा बलवती दिखाई देती है। इस प्रसंग में राजेन्द्र कुमार शर्मा का चिंतन प्रासंगिक है।

राजेन्द्र कुमार शर्माः 'परम्परावादी बाल साहित्यकार शाश्वत नैतिक मूल्यों को बाल साहित्य का प्राण तत्त्व मानते हैं। उनका मानना है कि बच्चे मोम के समान होते हैं। अतः उनके विकास के लिए नैतिक मूल्यों की आवश्यकता हैं।'[27]

दीनदयाल शर्मा दोनों विचारधाराओं में समन्वय करते दिखाई देते हैं। कथाकार ने कथा अपने बालक या साहित्य में मनोरंजन को प्रमुख तत्त्व के रूप में अभिव्यक्त करते हुए, अपरोक्ष रूप से शाश्वत मूल्यों को यथोचित स्थान दिया है, मनोरंजन के माध्यम से। कहानीकार शर्मा ने बड़े हल्के–फुल्के रूप से, बातों ही बातों में रोचकता के साथ बच्चों को नैतिक मूल्यों से अवगत करवा दिया है, कहानियों में नैतिक, सामाजिक, मानवीय, सांस्कृतिक आदि शाश्वत मूल्यों को देखा सकता है।'मोर की जिद' कहानी में अनंतः चिकी कमेड़ी की जीत के माध्यम से 'सत्यमेव जयते' मूल्य दर्शाया गया है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ' कथा में झबरी बिल्ली का अपने बच्चों के प्रति अगाध वात्सल्य भाव छलकता है। 'लोमड़ी की सूझ' कहानी में झुमरी लोमड़ी समझदारी से चीनू मुर्गी की सहायता करती है और उसे न्याय दिलाती है। 'साधु का शाप' में पशु–पक्षियों में परस्पर

प्रेम, सद्भावना, सहयोग, भाईचारे के साथ मिलकर रहते हैं। 'कोयल की चालाकी' कहानी खेल खेल में बच्चों मे मैत्री भाव जाग्रत करने वाली सफल कथा है। इसी भांति 'कौवा काला क्यों' कहानी में संतुष्टि भाव का विधान है।

'पापा झूठ नहीं बोलते' कथा संग्रह की कई कहानियाँ जीवन मूल्यों की वाहिका कही जा सकती है। 'पश्चाताप के आंसू' का तानाबना गलती का अहसास और क्षमा के इर्दगिर्द बुना गया है। पाठशाला के सहपाठी कालू और पप्पू प्रतिदिन शाम को अपने मास्टर जी के घर पढ़ने के लिए कहानी की पुस्तक लेने जाते हैं। थोड़ी बातचीत के बाद दोनों बालकों को कहानी की किताब देकर मास्टर जी उनके लिए चाय बनाने के लिए रसोई में जाते हैं। पप्पू पुस्तक पढ़ने लगता है और कालू कमरे में रखी वस्तुओं के साथ छेड़खानी करने लगता है, उसे मेज पर एक रूपये का सिक्का दिखाई देता है, जिसे उठा कर वह अपनी जेब में रख लेता है। उसी समय मास्टर जी चाय लेकर आते हैं, कालू जल्दी–जल्दी चाय पीकर जाने लगता है, उसके हाव–भाव मास्टरजी को कुछ ठीक नहीं लगते। तभी उनकी नज़र मेज पर जाती है, वहाँ एक रूपये का सिक्का नहीं देख कर उन्हे कालू पर संदेह होता है, वे उसे रोकते हैं और बातों ही बातों में कालू से चोरी की बात उगलवा लेते हैं। कालू अपनी गलती मान लेता है और जेब से सिक्का निकालकर मेज पर रखते हुए फूट–फूट कर रोते हुये मास्टर जी से माफी मांगता है कि मुझसे गलती हो गई, आगे कभी भी चोरी नहीं करूँगा। मास्टर जी उसे पुचकारते हुए क्षमा कर देते हैं।

"मैं पैसे कभी नहीं लूँगा गुरूजी, आइन्दा चोरी नहीं करूँगा............ मैं चोरी नहीं करूँगा जी! कालू फफक कर रो पड़ा। गुरूजी ने कालू को अपने गले से लगा लिया......।"[28]

'पश्चाताप के आँसू' कहानी के समकक्ष एक कथा 'नक्शे की कोपी' है। दोनों कहानियों का ताना–बाना जैसे एक ही पृष्ठभूमि पर बुना गया है। 'नक्शे की कोपी' में एक निर्धन परिवार का छात्र महेंद्र के माता–पिता उसे नक्शे की कोपी दिलवाने में असमर्थ होते हैं, महेन्द्र पढाई में पिछड़ जाने के डर से एक सम्पन्न परिवार के बच्चे अभिनव की कोपी चुरा लेता है। कक्षा में अभिनव मास्टर जी को कोपी दिखाने की लिए बस्ता देखता है, लेकिन कोपी नहीं मिलती, वह बहुत दुखी और परेशान हो जाता है, मास्टर जी कहते हैं कि जिसने भी कोपी चुराई है, मुझे चुपचाप बता देना, मैं किसी को नहीं बताऊँगा। महेन्द्र ग्लानि से भर उठता है। शाम को कोपी लेकर गुरूजी के घर जाकर गुरूजी के पैर पकड़ कर रोने लगता है, कहता है– गुरूजी! मुझ माफ कर दो। मैंने ही पढ़ाई में पिछड़ जाने के भय से नक्शे की कोपी चुराई थी। हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण मेरी कोपी नहीं खरीदी जा सकती।

गुरूजी ने महेन्द्र को उठा कर गले से लगाया। समझाते हुए कहा, "बेटा महेन्द्र! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुम्हारी पढ़ाई की जिज्ञासा ने ही तुम्हें कोपी चुराने को विवश किया।

भविष्य में अध्ययन हेतु किसी भी वस्तु की आवश्यकता होतो मुझे बता दिया करो, ऐसे होनहार और पढ़ने में रूचि रखने वाले बालक के प्रति सभी की सहानुभूति रहती है।"[29]

'आखिरी हथियार' कथा भी ऐसी ही पृष्ठभूमि पर आधारित है। कथानक भिन्न है लेकिन उसका समापन भी क्षमा पर ही होता है।कथाकार शर्मा ने 'अंजू की सीख' कहानी में बालकों की धैर्यवान सहनशील बनने की सीख देते हुए आज्ञाकारिता अनुशासन तथा त्याग व सम्मान जैसे मूल्यों को व्यक्त किया है। "मास्टर जी अपनी ऐनक ठीक करते हुए, हाँ भई शर्मा जी, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं और आपकी बेटी अंजू भी सही कहती है। अंजू ने ही मुझे सिखाया है कि जल्दबाजी अच्छी नहीं होती।"[30]

'पापा झूठ नहीं बोलते' में पिता–पुत्री के लाड़–प्यार को रेखांकित करते हुए है बेटे–बेटी का समान महत्त्व देने का प्रश्न की बड़ी कुशलता के साथ उठाया है। 'चमत्कारी चूर्ण' कृति की 'सब से बड़ी सजा' देश भक्ति एवं राष्ट्र प्रेम जैसे भावों से ओतप्रोत कहानी है। संक्षिप्त में, कहानी में स्कूल की प्रार्थना–सभा का दृश्य है, सभी बालक प्रार्थना करने के बाद जैसे ही राष्ट्रगान शुरू करते हैं, प्रांगण में झाडू लगाने वाला चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी श्यामस्वरूप झाडू को छोड़कर राष्ट्रगान के सम्मान में खड़ा हो जाता है। यह देखकर प्रार्थना के बाद हेडमास्टर साहब अपने उद्‌बोधन में कहते हैं–"अपने विद्यालय का सहायक कर्मचारी श्यामस्वरूप भले ही कम पढ़ा–लिखा हो लेकिन राष्ट्र के प्रति उसके दिल में जो सम्मान है, वह उल्लेखनीय है।"[31]

'आजादी का अर्थ' नैतिक मूल्यों की दृष्टि से सशक्त कहानी कही जा सकती है। जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है, इस में स्वाधीनता के भाव का सहज चित्रण प्रस्तुत है। एक भरा–पूरा सुसम्पन्न परिवार है, जिसमें पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त तोता, कुत्ता जैसे पालतू प्राणी भी बसर करते हैं। इस परिवार का अजय नामक बालक पन्द्रह अगस्त को अपने विद्यालय में आजादी पर भाषण पढ़ने से उसे आजादी का महत्त्व समझ में आता है और वह घर आकर तोते को पिंजरे से उड़ा देता है। "अजय तोते से बोला, 'टिल्लू, मैंने इतने दिन तुझे पिंजरे में कैद रखा। मुझे माफ़ कर मेरे दोस्त। आज से तू आज़ाद है। तेरा मन करे तो मिलने आ जाना।"[32] 'बड़ो के बपचन की कहानियाँ' संग्रह की सारी कथाएँ नैतिक मूल्यों का दस्तावेज कही जा सकती हैं। इन में सत्य, ईमानदारी, साहस, दृढ़ निश्चय, न्यायप्रियता, परिश्रम, परोपकार इत्यादि मूल्यों को दर्शाया गया है, जो बालकों के व्यक्तित्व विकास में अत्यन्त सहायक है।

इस प्रकार कथाकार दीनदयाल शर्मा के कथा साहित्य में प्रेम, क्षमा, सहयोग, स्वतंत्रता, सद्‌भावना, वात्सल्य, सहानुभूति परोपकार, सेवा, संतोष, कर्त्तव्यपरायणता आदि शाश्वत नैतिक मूल्यों का सफल संयोजन हुआ है जो स्पृहणीय है।

4.5 समसामयिक संदर्भ

बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा के बाल कथा साहित्य में जहाँ मनोरंजक तत्त्वों का बाहुल्य है, वहीं समसामयिक संदर्भों का यथोचित उल्लेख भी दर्शनीय है, क्योंकि कथाकार यथार्थ एवं विश्वसनीयता के पक्षधर हैं। कथाकार शर्मा ने अपनी कहानियों में समसामयिक घटनाओं, समस्याओं, चिंताओं को बड़े कौशल एवं मनोरंजन के साथ उकेरा है। 'मित्र की मदद' कहानी संग्रह की 'बिबो बकरी की हिम्मत' एक साहसिक बकरी की कथा है, जिस में वह अपने बच्चों का शिकार पागल शेर मोनू द्वारा किये जाने पर उससे बदला लेने का दृढ़ निश्चय करती है और अवसर देखकर अपने तीखे सींगों से शेर का काम तमाम कर के ही दम लेती है। 'अन्याय सहना अन्याय करने के समान हैं ऐसा कहा जाता है। उसकी हिम्मत देखकर कहानी का पात्र चमकू हिरण दंग रह जाता है। वह कहता है–

"तुम महान हो बिबो। तुम्हारी हिम्मत सराहनीय है। तुम ने सिद्ध कर दिया कि हिम्मतवाले के आगे कोई नहीं जीत सकता। काश, हम भी तुम्हारे साथ होते।"[33]

गलत संगति व दिग्भ्रमित होने के कारण बड़ी संख्या में युवा पीढ़ी नशे के गिरफ्त में जा रहे है। इस भयावह समस्या से आज सारे संसार को दो–दो हाथ होना पड़ रहा है। इसके विरूद्ध कई सामाजिक संस्थाओं और सरकार द्वारा अभियान चलाये जा रहे हैं, विज्ञापन दिखाए जा रहे हैं।। दीनदयाल शर्मा की 'दृढ़ संकल्प का चमत्कार' कहानी मदिरापान की इसी गम्भीर, ज्वलंत मुद्दे पर आधारित सार्थक रचना है। कहानी का वातावरण और पात्र जंगल पर आधारित है। कहानी का मुख्य पात्र शेरसिंह के आदेश पर जंगल में शराब की दुकान खोली जाती है, जिसका सभी जानवर खुल कर विरोध करते हैं, मगर शेरसिंह के कुतर्क – "आज का युग विज्ञान का युग हे। अतः हमें अधिक से अधिक आधुनिक चीजों का प्रयोग करना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम दूसरे जंगलवासियों की नजर में पिछड़े हुए कह लायेंगे। उसकी जिद्द के आगे किसी एक नहीं चलती। शराब के कई दुष्परिणाम सामने आते हैं, अन्ततः दुकान बंद करने के सारे हथकंडे अपनाने के पश्चात् सभी जानवर मिलकर निर्णय लेते हैं कि न तो शराब पीयेंगे ना शराब पीने वालों का समर्थन करेंगे–"हमें जरूरत है दृढ़ संकल्प की। हम सब मिलकर संकल्प लें कि ना तो शराब पियेंगे ना ही हम पीने वालों को समर्थन करेंगे।"[35]

कहानीकर शर्मा ने इस प्रकार समयानुसार प्रसंगों पर सुन्दर सृजन किया है। चलती बस अथवा ट्रेन में चढ़ना और उतरना आम बात है, आये दिन असावधानी से घटित होने वाली घटनाएँ समाचार पत्रों में छपती हैं। कथाकार शर्मा ने इस प्रकार समस्या को आधार बनाते हुए के कथानक को बड़ी सुघड़ता से कहानी में पिरोकर प्रस्तुत किया है। 'चमत्कारी चूर्ण' संग्रह की 'सब से बड़ी सजा' कहानी में भालू कंडक्टर के लाख समझाने के बाद भी चिपकू बंदर के चलती स्कूल बस से उतरते समय गिर जाने से उसके पैर पर बस का पहिया चढ़ जाता है, उपचार के

बाद भी उस का पैर पूर्ण रूप से ठीक नहीं हो पाता और वह लंगड़ाते हुए चलता है। बालक बड़ों का अनुसरण करते हैं। चिपकू बंदर अपने मास्टर जी को चलती बस उतरते हुए देखता है, इसीलिए वह भी उन की नकल करता है–'लेकिन चिपकू बंदर अपना घर आने के पहले ही चलती बस से उतर गया........ उसके उतरते ही सबने उस की चीख सुनी। सब ने देखा कि चिपकू का एक पैर बस के नीचे आ गया था।"[36]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियाँ अपने समय का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो एक लेखक के सार्थक सृजन को रेखांकित करती हैं।

4.6 शिक्षा

शिक्षा का सामान्य अर्थ ज्ञान, बोध, विवेक, सीखना–सिखाना, सीख विद्यालयी शिक्षा के रूप में ग्रहण किया जाता है। 'शिक्षा' शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' शब्द में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' का अर्थ सीखना या सिखाना है तथा शिक्षा से तात्पर्य सीखने, सिखाने कि प्रक्रिया से लिया जाता है। शिक्षा शब्द का कोश सम्मत अर्थ–

शिक्षा – सं. (स्त्री.) 1. विद्या, ज्ञान (जैसे धर्म की शिक्षा, भाषा विज्ञान की शिक्षा), 2. नसीहत, उपदेश (जैसे नैतिक शिक्षा, कर्त्तव्य पालन की शिक्षा) 3. पाठ, सबक 4. दंड। क्रम .. (पु.) = शिक्षा प्रणाली, दायक (वी.) शिक्षाप्रद, – दीक्षा (स्त्री.) – चारित्रिक और बौद्धिक विकास के उद्देश्य से दी गई शिक्षा।[37]

अंग्रेजी में शिक्षा समानार्थी शब्द Education है।

Education - n. - systematic instruction.शिक्षा, अध्यापन

Education - Edj. - Pertaining to educaitonशिक्षा सम्बन्धी

Education - edj.- learnedशिक्षित, व्युत्पन्न।[38]

महात्मा गांधी ने अनुसार –'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क या आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।'[39] प्रस्तुत परिभाषाओं के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा से तात्पर्य उस ज्ञान से है, जिस के द्वारा मानव के व्यक्तित्व, मस्तिष्क, आत्मा, मन और तन का समग्र विकास, उन्नयन संभव हो। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा की बाल कहानियाँ शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और सुसंपन्न कही जा सकती हैं, इन में जीवनोपयोगी सीख कूट–कूट कर भर हुई है। वस्तुतः बाल सहित्य का प्रथम तत्त्व मनोरंजन है और दीनदयाम शर्मा ने इस का पूरा–पूरा ध्यान रखा है, शिक्षा तो अपरोक्ष रूप से इनके सम्पूर्ण साहित्य में समाई हुई है, कभी मनोरंजन की चाशनी में लिपटी है, तो कभी–कभी बातों ही बातों

या हँसी–हँसी में रचनाकार बहुत कुछ सिखा देते हैं, जो सोने में सुगंध का कार्य करती है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ' बताती है कि बिना किसी की बातों में आये, अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए। 'मोर की जिद' में अधिक जिद्द करना ठीक नहीं और न ही अपने गुणों पर अभिमान करना चाहिए। इसी प्रकार 'साधु का शाप' में चालाकी नहीं करनी चाहिए अपितु ईमानदारी से कर्तव्य पालन करना चाहिए।'सीख न मानने का सबक' कहानी से शिक्षा मिलती है कि बड़ो की बात मान लेना चाहिए। स्कूल बस से घर लौटते समय कंडक्टर की बात नहीं मान कर चिपकू बंदर बस रूकने से पहले ही उतर जाता है और गिर जाने में उसके पैर में बहुत अधिक चोट लग जाती है और वो हमेशा के लिए लंगड़ा कर चलने को बाध्य हो जाता है। बस कंडक्टर बच्चों को समझाता है कि –'यदि चिपकू मेरी सीख मान लेता को यह दुर्घटना नहीं होती। उसे ऐसा सबक मिला है जिसे वह जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।'[40]'कौआ काला क्यों' कथा में 'संतोष कर लेने में समझदारी हैं', संदेश निहित है। इस प्रकार अन्य समस्त कथा साहित्य में कोई न कोई शिक्षा अपरोक्ष रूप से दी गई है।कहानियों का प्रादुर्भाव ही मनोरंजन एवं सीख देने के लिए हुआ होगा। ऐसी एक कहानी 'कोरी कल्पना' का संदर्भ यहाँ प्रासंगिक है–सागर किनारे एक नारियल पेड़ के नीचे एक खरगोश भोजन करके आराम फरमाने लगा, तभी उनके मन में अकारण डर समा गया और वह कल्पना करने लगा कि यदि धरती फट गई तो मेरा क्या होगा, सोचते–सोचते उसे नींद आ गई, तभी एक धमाका हुआ, वह डर कर सोचने लगा कि धरती फट गई और वह वहाँ से बेतहाशा दौड़ने लगा, उसे दौड़ते हुए देख कर खरगोश ने कारण पूछा, सुनकर वो भी भागने लगे, इस प्रकार धरती फटने की बात सुनकर जंगल के सारे जानवर दौड़ने लगे, अंत में शेर ने यह सब देखा, सारी बात की तहकीकात की और खरगोश को लेकर उसी नारियल के पेड़ के नीचे गया, वहाँ एक नारियल डाली से टूटकर गिरा हुआ था। शेर ने नारियल की ओर इशारा करते हुए कहा – 'हा, हा, हा, हा, देखो इस नारियल के गिरने से नरम मिट्टी पुलट–पुलट हो गई, तुमने सोचा धरती फटने लगी और तुम भागने लगे। तुमने मुड़कर भी नहीं देखा कि असली बात क्या है, कितने बेवकूफ हो।'[41] कहानी बताती है कि कभी नकारात्मक कल्पना मत कीजिए और कोरी कल्पना के आधार पर गलत निर्णय मत लीजिये। कहानी शिक्षा देती है कि काल्पनिक लोक में विचरण करने की अपेक्षा यथार्थ को समझना आवश्यक है।

'बड़ों के बचपन की कहानियाँ' में दीनदयाल शर्मा ने महापुरूषों के बचपन के कुछ प्रेरणात्मक प्रसंगों को कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया है। ये सारे कथा प्रसंग बालोपयोगी शिक्षाओं से ओतप्रोत हैं। इन कथाओं के द्वारा महापुरूषों की बाल्यावस्था की घटनाओं के माध्यम से, दृढ़ निश्चय, सही न्याय, सच्ची लगन, ईमानदारी, मेहनत, साहस जैसी शिक्षाएँ प्राप्त करके बालक अपने जीवन को बहुमूल्य बना सकते है। ये सभी कहानियाँ बालक के सर्वांगीण विकास क लिए उपयोगी व शिक्षाप्रद है। ऐसी एक कहानी का उल्लेख यहाँ प्रासंगिक है। निर्धन परिवार का

एक सीधा–साधा, सरल, होनहार, परिश्रमी बालक है, वह अपनी माँ भगवती देवी से बहुत प्यार करता है, सेवा करता है। किसी समारोह में वह देखता है कि सारी महिलाएँ गहनों से लदी हुई हैं, लेकिन उस की माँ के तन पर एक भी आभूषण नहीं, वह मन ही मन सोचता है कि वह खूब परिश्रम करके माँ के लिए कुछ गहने बनवाएगा। एक रात को माता के पैर दबाते समय अपने मन की बात माँ से कहता है। यह सुनकर माँ का गला भर आता और वह मुस्कुराते हुए कहती है–'बेटा, यदि तुम्हें अपनी माँ से इतना ही प्यार है तो मेरे लिए बस तीन गहने बनवा दो बेटे! इस गाँव में एक भी कायदे का विद्यालय नहीं हैं। एक स्कूल खुलवा दो। मरीजों की दवा–दारू की कोई व्यवस्था नहीं है यहाँ। अतः एक अस्पताल की स्थापना करवा दो। गरीब–अनाथ के रहने–खाने की खातिर एक अनाथालय बनवा दो। बस यही तीन गहने मेरे लिए बनवा देना, बेटा, माँ ने बेटे की पीठ थपथपाते हुए कहा।"[42]आगे चलकर इस बालक ने माँ की तीनों इच्छाएँ पूरी की, ये बालक विद्यासागर नाम से विख्यात हुआ। निष्कर्षतः बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का सम्पूर्ण कथा साहित्य बालोपयोगी कहा जा सकता है। विचारकों, विद्वानों द्वारा निर्धारित कथा–साहित्य के समस्त तत्त्वों पर ये कहानियाँ खरी उतरती प्रतीत होती हैं। जिज्ञासा और मनोरंजन, दो ऐसे तत्त्व हैं जो बाल साहित्य के स्तम्भ कहे जा सकते हैं।

कहानीकार श्री शर्मा का समग्र गद्य साहित्य मनोरंजन की दृष्टि से सुसम्पन्न, सुसमृद्ध है, बालकों को हँसा–हँसा कर लोट–पोट कर देने वाले अनेकानेक प्रसंग प्रस्तुत कथाओं में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं। रोचकता कूट–कूट कर भरी हुई है। बच्चों की जिज्ञासा अथ से इति तक सतत बनी रहती है। इन कहानियों सब को पढ़ते समय मन में ये ही बात आती है कि 'आगे क्या होगा, अब क्या होगा' और रचनाओं को पूरी पढ़े बिना छोड़ नहीं पाते। इन कहानियों में आधुनिकता एवं पारम्परिकता का विलक्षण समन्वय देखते ही बनता है। मानव मूल्यों की बात की जाए तो कथाकार ने प्रायः सभी मूल्यों का समावेश करके बाल साहित्यकार के दायित्व का निष्ठा के साथ निर्वहन किया हे। समसामयिक प्रतिमानों से भी यह गद्य साहित्य परिपुष्ट है। विशेषकर बाल कथाओं में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है, हर कहानी के बाद कहानी सुनाने वाला बालक से पूछता भी है कि बताओं इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिली। मुद्रित कहानियों के बाद में भी अधिकतर कहानी से मिलने वाली सीख का उल्लेख विशेष रूप से किया जाता रहा है। गद्यकार शर्मा ने इस बात का पूरा स्मरण रखते हुए सभी कहानियों में कुछ न कुछ सीख अवश्य प्रदान की है। प्रत्येक कहानी बच्चे को बहुत कुछ सिखाती है, वह भी रोचकता और मनोरंजन के माध्यम से। स्पष्टतः दीनदयाल शर्मा बाल गद्यकार के रूप में सिद्धहस्त रचनाकार कहे जा सकते हैं।

(ख) नाटक और एकांकी

हिंदी साहित्य में नाटक की दीर्घ परम्परा रही है। नाटक हिंदी साहित्य की अन्यतम विधा है। यह अत्यन्त प्राचीन विधा होने के साथ–साथ मनोरंजक, रमणीय, कल्पनाप्रधान, रोचक, सशक्त, प्रभावशाली है, साथ ही श्रव्य की अपेक्षा नाटकों में आकर्षण हृदयग्राहीता, भावाभिव्यंजना, विषय की विविधता, वीर और श्रृंगार रस का प्राधान्य होता है। नाटक का मंचन जनसाधरण के समक्ष किया जाता है। पौराणिक मान्यतानुसार त्रेतायुग में ब्रह्माजी द्वारा देवताओं के मनोरंजन के लिए उन के निवेदन पर चार वेदों के सार को एक साथ मिला कर पांचवें वेद की रचना की गई जो 'पंचमवेद' अर्थात् नाट्यवेद' के नाम से जानी जाती है। संस्कृत भाषा में नाटक को रूपक कहा जाता है जिसके दस भेद बताये गये हैं – नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी, प्रहसन। नाटक इन्हीं में से एक है। काव्य के प्रमुख दो भागों में, दृश्य एवं श्रव्य के अंतर्गत नाटक दृश्य काव्य के रूप में माना गया है, तथापि यह एकमात्र ऐसी विधा है जो दृश्य, श्रव्य होने के साथ पाठ्य भी है। इसलिए नाटक वैदिक काल से अद्यतन` लोकप्रिय रहे हैं। नाट्य शास्त्र के प्रमुख आचार्य भरतमुनि, कालिदास, अश्वघोष, हर्ष, भास, भवभूति, धनंजय, गुणचंद्र रामचंद्र, विश्वनाथ और अभिनव गुप्त हैं। इन सभी के नाटक सम्बन्धी मंतव्य के सारांश स्वरूप कहा जा सकता है कि नाटक अनुकरण एवं कल्पना सामंजस्य है।भारतीय नाट्य परम्परा के प्रमुख आचार्य भरत मुनि उनका नाटक सम्बन्धी 'नाट्यशास्त्र' नामक श्लोक बद्ध विशालकाय ग्रन्थ छतीस अध्यायों में प्राप्त है, जिसमें उन्होंने नाटकों के विषय में विस्तार से प्रतिपादन किया है।

विद्यार्थी हिंदी शब्दकोष के अनुरूप नाटक का आशय–नाटक – सं. (पु.) 1. साहि. रंगमंच पर अभिनय की जा सकने योग्य रचना 2. अभिनय, ड्रामा 3. रूपक, 4. नटकार – (पु.) नाटक लिखने वाला, रचना – (स्त्री.) नाटक लिखना, नाटक बनाना। इसके अतिरिक्त अन्य अर्थ हैं–नाट्य – सं. (पु.) 1. अभिनवकर्म, 2. स्वाँग करनानाट – सं. (पु.) 1. नृत्य, नाच 2. नकल, स्वाँग।[43]

अंग्रेजी में नाटक के समकक्ष शब्द Drama है, जिस का कोशगत तात्पर्य–

Drama - n. a stage play, a theatrical entertainment, dramatic literatureअभिनय, नाटक। Dramatist - n. a play wrightनाटककार, नाटक लिखने वाला।[44]

नाटक के संदर्भ में **डॉ. विनीला सिंह** ने लिखा है –'नाट्य' शब्द रूपक के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। नाट्य शब्द की व्युत्पत्ति 'नट' धातु से स्वीकार की गई है। इसका व्युत्पत्ति लक्ष्य अर्थ है 'नटों का कार्य' वस्तुतः नाट्य नटकर्म कौशल है। रसान्वित इसका चरम उद्देश्य है। संवाद को नाटक का बीज स्वीकार किया है। अभिनय इसका पोषक है।[45]

"काव्यषु रम्यम् नाटकम्' कहकर अन्य विधाओं में नाटकों के अन्यतम स्थान को ही सहज ही अभिव्यक्त किया गया है। नाटक वास्तव में पाठ्य नहीं अपितु अभिनेय विधा है। रंगमंच से सम्बन्धित होने की वजह से इसकी अलग ही शास्त्रीयता है।"

निवेदिता–"कला जीवन की अनुकृति से शुरू होकर अभिनय को सच झूठ करने, होने को कितने कोणों से जाँचा जाँचा, परखा गया है। कोई कला तभी अपनी पूर्णता प्राप्त करता है, जब वह अपने प्रदर्शित रूप में दर्शकों के सामने होता है। नाटक में ये जोखिम सबसे ज्यादा होता है।"[46]

घमण्ड़ी लाल अग्रवाल–"एकांकी नाटक का एक अंग है, जैसा कि नाम से ज्ञात है, इसमें एक अंक अर्थात् एक दृश्य होता है, इसीलिए यह आकार में भी नाटक से छोटा होता है, पात्र भी सीमित होते हैं, अल्प समय में यवनिका भी गिर जाती है। एकांकी में संकलन त्रय (कार्य, स्थान और काल) आवश्यक माना गया है। नाटक का एक बहु प्रचलित प्रकार, 'रेडियो नाटक' के नाम से जाना जाता है। यह नाटक रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं, अतः यह विधा मंचीय नाटकों से थोड़ी भिन्न होती है। लेखक को रेडियो नाटक लिखते समय विशेष बातों का ध्यान होता है।"[47]

उपर्युक्त परिभाषाओं, आचार्यो के चिंतन, शब्दकोशगत अर्थ का सार है कि नाटक एक सुरम्य, मनभावन, लोकोपयोगी, सौन्दर्यसिक्त, रमणीय, हृदयस्पर्शी विधा है, जो दर्शकों को ब्रह्मानन्द की अनुभूति करवाती है। बाल नाटकों की उपयोगिता के संदर्भ में सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने अपने ग्रन्थ 'हिंदी बाल साहित्य का इतिहास' में लिखा है –

साहित्यकार प्रकाश मनु "बच्चे की प्रतिभा के विकास के लिहाज से बाल नाटक का महत्त्व अन्यतम है। इसलिये कि बाल नाटक ही बाल साहित्य की वह विधा है, जो बच्चे को इतनी देर तक अपने आप में तल्लीन रख सकती है कि एक क्षण के लिए भी वहाँ से भटकाव या इधर–उधर ताकने–झाँकने का मौका नहीं देती शायद इसलिए कि बाल नाटकों में बाल साहित्य की अन्य विधाएँ खुद–ब–खुद चली जाती है। बाल नाटकों में अगर बच्चें की कहानी का तत्त्व है, तो बाल कविता की भाषा और भंगिमाएँ भी हैं। इसके अलावा अभिनय और संवाद का जादू तथा आवाज के उतार चढ़ाव और कायिक भाषा का विभिन्न सम्मोहन तो वहाँ है ही, जिसके साथ एक मीठे उपदेश का सजीलापन मिलकर उसे एक समग्र रचना बना देता है।"[48]

4.7 नाटक के पारम्परिक तत्व

विद्वानों ने कहानी के समानान्तर नाटक के विभिन्न सात तत्वों को स्वीकृत किया है–**1. कथावस्तु 2. पात्र 3. देशकाल 4. संवाद या कथोपकथन 5. भाषा–शैली 6. अभिनय, 7. उद्देश्य**

दीनदयाल शर्मा की चार नाट्य कृतियाँ प्रकाशित है – 1. **फैसला** (एकांकी 1987), 2. **फैसला बदल गया** (नाटक 1999), 3. **सपने** (एकांकी 2006), 4. **जंग जारी है** (नाटक संग्रह,

2017)नाटककार शर्मा के नाटकों और एकांकी में उपरोक्त सभी नाटकीय तत्त्वों का यथोचित विधान हुआ है।

कथावस्तु

नाटक का सब से प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व कथावस्तु है क्योंकि नाटक साहित्य का ही अंग है। इसके बिना नाटक का स्वरूप निर्धारण संभव नहीं है। भारतीय नाट्य शास्त्र के अनुरूप। कथावस्तु 'कथ' धातु से निर्मित शब्द है, जिस का अर्थ 'कहना' है, इसे कथ्य भी कहा जा सकता है, अर्थात् नाटक में रचनाकार जो मूल बात कहना चाहता है, उसे कथावस्तु या कथानक कहा जाता है। कथावस्तु के दो प्रकार हैं –पहला आधिकारिक, दूसरा प्रासंगिक, जिन्हें प्रधान कथा और पोषक कथा भी कह सकते हैं। ये कथाएँ पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक हो सकती है। दीनदयाल शर्मा के 'सपने', 'फैसला', 'फैसला बदल गया' कृतियाँ बाल नाटक और एकांकी हैं, तदनुरूप कथानक का संयोजन किया गया है। इनके कथानक सरल, सहज, संक्षिप्त, बालोपयेगी, रोचक, मनोरंजक, मौलिक उद्देश्यपूर्ण हैं। 'फैसला' की कहानी राजा द्वारा तर्कसंगत न्याय पर आधारित है। यह एकांकी जंगल की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस के पात्र जंगल के पशु–पक्षी हैं। नायक जंगल का राजा शेर है और मंत्री चिपकू बंदर अन्य पात्रों में चीनू मुर्गी एवं जंगल के कुछ जानवर हैं। चीनू मुर्गी के अंडे प्रतिदिन रात्रि को कोई जानवर तोड़ जाता है, इस बात से वह अत्यंत दुखी होती है और शेर राजा के पास फरियाद लेकर जाती है। शेर उसे आश्वासन देता है और मंत्री चिपकू बंदर को दोषी का पता लगाने के आदेश देता है तथा स्वयं बुद्धि चातुर्य से दोषी का पता लगाता है। दोषी और कोई नहीं अपितु मंत्री चिपकू बंदर ही निकलता है, राजा उसे उचित दण्ड देकर चीनू मुर्गी के साथ निष्पक्ष न्याय की मिसाल कायम करता है।'सपने' के सदंर्भ में **आर.पी. सिंह (आई.पी.एस., जयपुर)**– "सपने' एकांकी दीनदयाल का श्रेष्ठतम एकांकी कहा जा सकता है। जो इनकी निपुणता को दर्शाता है। यह एकांकी पूर्णतः मनोविज्ञान एवं महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के दर्शन पर आधारित है। बच्चे के अपने सपने होते हैं। 'सपने' बाल एकांकी समाज को एक दिशा प्रदान करता है। सफलता अनुशासन मांगती हैं। इस एकांकी के माध्यम से लेखक ने 'अनुशासन' शब्द की प्रभावी ढंग से व्याख्या की है। मैं उन्हें इस बेशकीमती रचना के लिए बधाई देता हूँ।"[49]

'सपने' एकांकी की कथा विद्यालय के कक्षा–कक्ष से प्रारम्भ होती है। कक्षा के पढ़ने वाले बच्चों की आयु तेरह से सत्रह साल तक की है। कक्षा में अध्यापक प्रकाश के प्रवेश–पूर्व बच्चे शरारते कर रहे होते हैं। प्रकाश कक्षा में प्रवेश करते हैं और शिक्षण कार्य प्रारम्भ करते हैं।, कुछ पंक्तियाँ पढ़ाने के पश्चात् सब बच्चों से एक–एक करके पूछते हैं कि तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो, तुम्हारे सपने क्या हैं? उत्तर में विकास–डॉक्टर, मस्तान सिंह–पायलेट, जागृति अच्छा इन्सान बनने की बात कहती है, इस प्रकार सब बच्चे अपने–अपने सपने अध्यापक जी को बताते

हैं। प्रकाश उन्हें सपने पूरे करने के लिए स्वानुशासन का महत्व बड़े तार्किक ढंग से समझाते हैं, बीच–बीच में प्रकृति की आवश्यकता को दर्शाते हैं, शिक्षण बोझिल नहीं हो, इसलिए यथाप्रसंग विनोद भी किया जाता हैं, चुटकियाँ ली जाती हैं। अंत में छात्रा आशा के सपने के माध्यम से बहुत रोचक ढंग से लड़ाई–झगड़े छोड़ कर प्रेम और शांति से रहने का सन्देश प्रस्तुत किया जाता है। लेखक ने यत्र–तत्र जीवन मूल्यों से विद्यार्थियों को अवगत भी करवाया है। इस भांति 'सपने' अत्यंत रोचक तथा बालोपयोगी नाटक है जो दीनदयाल शर्मा के नाट्य लेखन कौशल को प्रकट करता है।

'फैसला बदल गया' नाटक का शुभारम्भ महाराज दरबार से होता है। राजदरबार सजा हुआ है, महाराज के मुख पर उदासी छाई हुई हैं, जिसे देखकर मंत्री उदासी का कारण पूछते हैं, उत्तर में महाराज कहते हैं कि आज का दिन मेरे लिए अच्छा नहीं है। एक छोटे से प्रदेश के राजा ने मेरी राजकुमारी के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इस पर मंत्री के पूछने पर कि आज आपने सब से पहले किस का मुहँ देखा था? हरखू धोबी का, महाराज उत्तर देते है। यह सुनते ही मंत्री कहता है, महाराज! हरखू मनहूस है, अशुभ है, उसका मुँह देखने से ही आप के साथ यह घटना हुई है। हरखू का जीवित रहना ठीक नही हैं। इस का उपाय पछने पर मंत्री कहता है, महाराज! हरखू को मृत्यु दण्ड दे दिया जाए। महाराज बिना विचारे हरखू को फांसी की सजा देने का ऐलान कर देते है, जिस समय हरखू को दण्ड दिया जाने वाला होता है, तभी राजगुरू का प्रवेश होता है। सारी सच्चाई जानने के बाद वे राजा से कहते हैं, कि राजन! मंत्री अन्धविश्वासी है, हरखू अन्धविश्वास काशिकार है, यदि मिटाना है तो अंधविश्ववास को मिटाइए, इन्हें समूल़ समाप्त कीजिये। यह सुनकर महाराज की आँखें खुलती हैं और उनके हाथों से अन्याय होने से बच जाता है, वह गुरूदेव के प्रति कृतज्ञता दर्शाते है। प्रस्तुत एकांकी में रचनाकार शर्मा ने समाज में प्रचलित अंधविश्वास, भ्रामक अवधारणााओं का खंडन बड़ी कुशलता से किया है।

'जंग जारी है' नाटककार शर्मा की सद्यः प्रकाशित कृति है। इसमें नौ नाटक संग्रहीत हैं– घर की रोशनी, रिश्तों का मोल, मेरा कसूर क्या है? पगली, अपने–अपने सुख, जंग जारी है, अँधेरे की तस्वीर, मुझे माफ कर दो, रिश्ता विश्वास का। इन नाटकों को बालोपयोगी नहीं अपितु किशोरोपयोगी कहा जा सकता है। ये सभी रेडियों नाटक की श्रेणी में आते हैं, जो राजस्थान स्तर पर आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकें हैं। प्रस्तुत नाटक समाज में फैली हुई भ्रांतियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, भौतिकवादी चकाचौंध, कन्याभ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, दरकते रिश्ते आदि ज्वलन्त संदर्भो पर लिखे गए हैं। इनके माध्यम से कुरीतियों से समाज को मुक्त करवा कर नई जाग्रति पैदा करना है।

राजस्थानी और हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार **डॉ. अर्जुनदेव चारण ने लिखा है–** "रेडियो नाटक मंचीय नाटक से थोड़ी भिन्न विधा है। रेडियो नाटक में नाटककार की चुनौती यही होती है कि वह देखने को भी सुनने के माध्यम से प्रस्तुत करें। अर्थात् संवादों में दृश्य आ जाए या दृश्य रचा जाए जिससे उसे सुनने वाले को देखने का आनन्द भी मिलता रहे। श्री दीनदयाल शर्मा ने अपने इन नाटकों में समाज में व्याप्त तत्कालीन कुरीतियाँ पर चोट की है 'जंग जारी है' से तात्पर्य यही है कि समाज में इन बुराईयों के विरूद्ध लड़ाई अभी भी जारी है क्योंकि जब तक समाज की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति इस बात को नहीं समझेगा तब तक ये बुराईयाँ समाप्त नहीं होगी। समाज में व्याप्त कन्या भ्रूण हत्या, एड्स जैसी गंभीर बीमारियों, स्त्रियों के प्रति किये जाने वाले अत्याचार एवं नशे के दुष्प्रभाव के विरूद्ध एक सशक्त आवाज बन कर उभरेंगे।"[50]

आकाशवाणी के वरिष्ठ उदघोषक और शायर राजेश चड्डा के अनुसार" श्री दीनदयाल शर्मा ऐसे लेखक है जो रेडियों के लिए लिखने और विशेष रूप से नाटक लिखने में गर्व का अनुभव करते हैं। श्रव्य माध्यम की बेहतरीन समझ रखने वाले श्री दीनदयाल शर्मा की भाषाई खूबी संवाद में प्रवाह रखती है। श्री दीनदयाल शर्मा का प्रत्येक प्रत्येक नाटक आपको जहाँ चाहे ले जा सकते हैं। श्री शर्मा का प्रत्येक संवाद प्रमाणिक सत्य की तरह लगता है।' श्री दीनदयाल शर्मा अपनी बात कहने का साहस दिखाने के साथ–साथ अपनी भाषा और संवेदना दोनों पर पाठकों तथा श्रोताओं का ध्यान अपनी ओर खींचने में सक्षम है।"[51]

प्रस्तुत पुस्तक के समग्र नाटक समाजिक जागृति का बिगुल बजाने वाले हैं। इनके माध्यम से नाटककार शर्मा ने सामाजिक, तथा पारिवारिक समस्याओं को उठाया है और उनका पुरजोर विरोध दर्ज करते हुए, वर्तमान समय के ज्वलन्त मुद्दों को बड़ी कुशलता के साथ उद्घाटित किया है। पारिवारिक तनाव, कुण्ठा, संत्रास, टूटन, घुटन, दरकते मानवीय सम्बन्ध को दीनदयाल शर्मा ने बहुत शिद्दत से चित्रित किया है। प्रत्येक रात के पश्चात् प्रभात का आगमन सुनिश्चित है। प्रस्तुत नाटकों में नाटककार ने मानवीय मूल्यों के प्रकाश को प्रसारित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है।उपर्युक्त नाटक और एकांकी विषयवस्तु की दृष्टि से उच्च कोटि के कहे जा सकते हैं। इनकी कथावस्तु की रचना बालकों की वय को ध्यान में रख कर दी गई है, जो संक्षिप्त, शिक्षाप्रद, रोचक, मनोरंजक है।

नाटक के पात्र

नाटक का दूसरा मूल तत्त्व पात्र अथवा चरित्र–चित्रण है। नाटक के मुख्य पात्र को 'नायक' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक पात्र होते हैं जो कथावस्तु का संयोजन करते हैं, उसे आगे बढाते हैं। चरित्र–चित्रण के माध्यम से कथानक में सभी खूबियाँ लाई जा सकती है एवं नाटकों में उद्देश्य प्राप्ति में भी चरित्र–चित्रण सहायक होता है। इनके बिना नाटक की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि नाटक ऐसी विधा है जिसमें लेखक को स्वयं कुछ भी कहने छूट नहीं

होती, उसे सब कुछ पात्रों के जरिये ही कहना होता है। बाल–नाटकों के दर्शक अथवा पाठक बालक होते हैं इसलिए इनमें सामान्य नाटकों की तुलना में पात्रों की संख्या अल्प होती है। नाटककार शर्मा के नाटक एवं एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित है। इनके पात्र मानव और मानवोत्तर प्राणी है। ये पात्र अपनी अपनी भूमिका के निर्वहन में सफल कहे जा सकते है। 'फैसला' में मुख्य रूप से मात्र तीन है। 'फैसला बदल गया' में भी प्रमुख पात्र तीन हैं, शेष पात्र सहायक हैं। 'सपने' में पात्रों की संख्या नौ–दस हं जो कथा की मांग के अनुरूप उचित ठहरती है। नायक प्रकाश अध्यापक है, अन्य पात्र आठ–नौ विद्यार्थी हैं।

दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल नाटकों में पात्रों का गठन तथा उनकी भूमिका का संयोजन बड़ी कुशलता के साथ किया है। 'फैसला' का नायक शेर राजा है, जिसका चरित्र–चित्रण राजा के पद की गरिमा के अनुसार किया है, वह दमदार शासक, शक्तिशाली होने के साथ न्यायप्रिय, चतुर, समझदारी, करूणामय, संवेदनशील, बुद्धिमान है। उसे अपनी भाषा से बहुत लगाव हैं, मंत्री द्वारा अंग्रेजी शब्द उच्चारित करने पर वह क्रोधित होकर उसे फटकार लगाते है। मनुष्य के स्वभाव से परिचित होने के कारण उसे मानव जाति से नफरत है, वह मनुष्य का नाम तक सुनना नहीं चाहते। प्रजा का पूरा ध्यान रखते है, उनके दुःख को समझकर उचित न्याय करते है, दोषी को यथोचित दण्ड देते है, जैसे चीनू मुर्गी के अंडे तोड़ने वाले मंत्री बंदर को उचित दण्ड दिया। चीनू मुर्गी ममतामयी माँ, समझदार, सरल, अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाकर दोषी को सजा दिलवाने वाली है। उसका हृदय वात्सल्य का सागर है। मंत्री बन्दर अपने स्वाभावानुसार लम्पट, चालाक, निर्दोष को सताने वाला, उनके अंडे तोड़ने वाला अपराधी है, दो बार शेर राजा के क्षमा करने पर भी नहीं सुधरता। प्रस्तुत शेर के राजसी चरित्र को दर्शाता यह संवाद दृष्टव्य है–

"शेरः चुप रह धोखेबाज......... नमक हराम......... तुझे माफ नहीं करेंगे....... क्योंकि तुम पहले भी दो गलतियाँ कर चुके हो.......... लेकिन बार–बार माफ करना जंगल के कानून के खिलाफ है।"[52]

'फैसला बदल गया' का नायक महाराज है, जो सुनी हुई बात पर आँख मूंद करके विश्वास कर लेते है और निर्दोष को मृत्यु दण्ड की सजा सुना देते है। अन्धविश्वास में विश्वास कर लेते है, अपने विवेक से काम नहीं लेते। मंत्री कुटिल, अन्धविश्वासी, असंवेदनशील और चापलूस है। निर्दोष को दण्ड दिलवाने में तनिक भी नहीं हिचकते। 'हरखू धोबी ईमानदार, परिश्रमी, सच्चा, भोला–भाला, सरल, समझदार, अपनी धुन में रहने वाला नागरिक है, जो अपनी तर्कशक्ति से महाराज को निरुत्तर कर देता है, अपनी बात मानवाने को बाध्य कर देता है। राजगुरू अपने पद की गरिमा के अनुसार ज्ञानी, विवेकी, न्यायप्रिय, करुण हृदय, बुद्धिमान, अन्धविश्वास के कट्टर विरोधी, राजा को सत्य से अवगत करवाने वाले हैं।

'सपने' एकांकी का नायक प्रकाश अध्यापक है। वे अपने पद की गरिमा के अनुरूप चरित्रवान, कुशल, योग्य, छात्रवत्सल, बुद्धिमान हैं तथा विद्यार्थियों से प्रेम करते हैं, शिक्षण कार्य के मध्य सैद्धांतिक ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक विषयों पर भी चर्चा करते हैं, छात्रों से उनके सपने पूछते हैं, उन्हें साकार करने के लिए उन का पथ प्रदर्शन करते हैं। विद्यार्थियों में अंतर्निहित प्रतिभा को उजागर करने का सार्थक प्रयास भी प्रकाश बाबू करते दिखाई देते हैं। सपने पूरे करने के लिए अनुशासन को सर्वाधिक आवश्यक मानते हुए छात्रों को बड़े तर्कसंगत तरीके से प्रकृति का दृष्टान्त देकर अनुशासन को परिभाषित करके, अपने बौद्धिक कौशल का परिचय देते हैं। शिक्षण कार्य के बीच–बीच में विनोद करना नहीं भूलते और पुस्तकों की महत्ता और जीवन मूल्यों का पाठ भी पढ़ा देते हैं। कक्षा के विद्यार्थी अपनी–अपनी उम्र एवं स्वभाव के अनुरूप अलग–अलग चरित्र के धनी हैं, कुछ चंचल, शरारती हैं, तो कुछ जिज्ञासु हैं, प्रतिभावान हैं, बुद्धिमान हैं। कोई सरल है, कोई मानवीय संवेदना से भरपूर है लेकिन सपने देखने में सब समान है। सबके अपने–अपने सपने हैं जिन्हें वे पूरा भी करना चाहते हैं। अध्यापक प्रकाश के द्वारा छात्रों को उत्प्रेरित करने वाला एक संवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

"प्रकाशः.......... नो.........! वैरी बेड.......! हमें सपने जरूर देखने चाहिए। ऊँचे–ऊँचे सपने। हमारे देश के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी बच्चों से आव्हान किया है कि वे जो भी बनना चाहते हैं, पहले उसका सपना देखें और उसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करें।"[53]

"जागृतिः सर, ऐसे तो सभी इंसान हैं, पर मन से इंसान बनना बहुत ही बड़ी बात है। मैं मन कर्मसे इंसान बनने के सपने देखती हूँ सर..........।"[54] 'जंग जारी है' के सभी पात्रों का चरित्र–चित्रण पात्रानुकूल हुआ है, इन सभी नाट्को में पात्रों की संख्या अधिक हैं, क्योंकि ये किशोरों और बड़ो के लिए लिखे गये हैं।निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नाटककार शर्मा ने पात्रों के संयोजन एवं उन के सजीव चरित्र–चित्रण में प्रवीणता का परिचय दिया है जो अत्यंत सराहनीय हैं।

संवाद

संवाद का सरल अर्थ है, बातचीत, वार्तालाप। शिक्षार्थी शब्दकोश के अनुसार–

संवाद – स. (पु.) 1. चर्चा, 2. समाचार, 3. विवरण, वृत्तांत, 4. वार्तालाप संवादात्मक – स. (वी.) संवाद सम्बन्धी।[55]

संवाद को नाटक का मुख्य तत्व है तो अत्युक्ति नहीं होगी। नाटककार को अपनी बात कहने के लिए पात्रों के संवादों पर निर्भर रहना पड़ता है। संवाद नाटक में नाटकीयता उत्पन्न करने में भी महती भूमिका निभाते हैं तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषाताओं का उद्घाटन भी

संवादों से होता है। संवाद जितने छोटे होंगे उतने ही प्रभावी होते है। लम्बे संवाद बोझिल हो जाते हैं, इन से रचनाकार को बचना जरूरी हो जाता है। संवाद का अर्थ बातचीत, कथोपकथन, वार्तालाप कथन है। बाल नाटकों के कथन संक्षिप्त, सरल, सजीव, सहज, बोधगम्य, प्रभावपूर्ण, स्मरणीय, रोचक और पात्रों के अनुकूल होते है।

साहित्यकार नेमीचंद ने लिखा है–"केवल प्रशिक्षण पद्धति के रूप में नहीं, अपने आप में भी नाटक बच्चों के लिए बहुत उपयोगी और सार्थक विधा है। नाटक के प्रदर्शन में काव्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, अभिनय आदि अनेक विधाओं का संगम होने के कारण सौन्दर्य बोध जगाने और विकसित करने के लिए नाटक से अच्छा कोई दूसरा माध्यम नहीं है।"[56] दीनदयाल शर्मा के नाटकों के कथन इस कसौटी पर खरे उतरते है। प्रस्तुत हैं उदाहरणार्थ–

- "शेरः मंत्री जी! बकवास बंद करो। हमें मजाक कतई पसंद नहीं।
- चिपकूः सॉरी महाराज, आई एम् वैरी सॉरी।
- शेरः (गुस्से से) मंत्री जी!
- चिपकूः ये लो .... आ गया महाराज।
- शेरः आ गये, तो ये लो प्रसाद........ प्रसाद, खा लो चिपकू .... सड़ाक......... कैसा लगा? क्यों मीठा हैं न?
- शेरः मीठा ज्यादा खा लिया तो ये ले .... असली बीकानेरी भुजिया भी खा ले .... सड़ाक .... सड़ाक
- 'फैसला बदल गया' नाटक मैं राजगुरू के प्रवेश के समय का एक सजीव और सहज कथोपकथन प्रस्तुत है
- (राजगुरू का प्रवेश)
- महाराजः (हाथ जोड़ते हुए) प्रणाम गुरूदेव।

  (मंत्री, हरखू और प्रजा राजगुरू को प्रणाम करते हैं।)
- राजगुरू : (आशीर्वाद देने के लिए हाथ उठाते हुए) लम्बी उम्र पाओ। खुश रहो। महाराज, एक कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए) यहाँ बिराजें गुरूदेव। (राजगुरू और महाराज बैठते हैं)।"[58]

'जंग जारी है' की रचनाओं के कथन संक्षिप्त, चुटीले, पात्रानुकूल, रोचक, सरल, सहज हैं। पति–पत्नी का एक सहज व प्रभावी संवाद दृष्टव्य है–जिसमें पति–पत्नी के सुमधुर संबंधो का चित्रण प्रस्तुत है–

– अंकित–लेकिन हम तो आपको कुसुम कहेंगें, कुसुम पुकारने पर बोलोगी क्या?

– सुमन–जी

– अंकित–कुसुम

– सुमन–जी

– अंकित–हमारा दिया हुआ नाम कैसा लगा ?

– सुमन–अच्छा है जी।

– अंकित–आज से हम आपको इसी नाम से पुकारेंगे। ठीक है ना?

– सुमन–जी।[59]

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर कहा जा सकता है दीनदयाल शर्मा की नाट्य रचनाओं में सरल, सहज, तर्कपूर्ण, विनोदी, मनोरंजक, रोचक, संक्षिप्त तथा सजीव संवादों का चित्रण हुआ है।

देशकाल

'जैसा देश, वैसा वेश' को हम देशकाल कह सकते हैं। देशकाल नाटक का महत्वपूर्ण तत्त्व है, क्योंकि इसी से नाट्य काव्य में स्वाभाविक प्रभाव उत्पन्न होता है। तत्कालीन परिवेश का यथार्थ चित्रण नाटक को सजीवता प्रदान करता है। जिस की कथावस्तु को नाटक में प्रस्तुत किया जाना हैं, उस परिवेश की सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज, रहन–सहन, वेश–भूषा इत्यादि के अनुरूप मंच की साज–सज्जा होनी आवश्यक है, साथ ही उस काल की राजनैतिक, सामाजिक, भौगोलिक परिस्थितियों का दृश्यांकन भी, जरूरी हुआ तो मूर्ति, संगीत, स्थापत्य कला का भी सहारा लिया जा जाता है, तभी दर्शक नाटक का सम्पूर्ण रसपान करके उसका वास्तविक आनन्द प्राप्त कर सकते है। पात्रों का स्वरूप संयोजन, बनाव श्रृंगार, भाषा शैली, संवाद, वेश–भूषा, हाव–भाव इत्यादि का ध्यान रखना नाटककार का दायित्व है, तभी उसकी रचना में प्रभावोत्पत्ति संभव है। यदि नाटक महाभारत काल के विषय पर आधारित है तो सारा वातावरण वैसा ही निर्मित होना चाहिए।

इस दृष्टि से नाटककार दीनदयाल शर्मा के नाटकों में देशकाल का सफल नियोजन देखने को मिलता है। 'फैसला' एकांकी जंगल की पृष्ठभूमि पर आधारित है। अतः समग्र वातावरण जंगल के अनुरूप है। इसके पात्र शेर, मुर्गी, बंदर इत्यादि हैं। राजा की सभाएँ पीपल के पेड़ के नीचे दिखाई गई हैं, दड़बे हैं। पात्रों के स्वभाव, क्रीडायें, करतब, कानून सब कुछ जंगली जीवों के सदृश्य दर्शाये गए हैं। 'फैसला बदल गया' रियासतकालीन नाटक है, इसलिए तत्कालीन राजसभा का दृश्य है तथा उस काल की प्रचलित कुरीतियों, अंधविश्वासों का चित्रण मिलता है। जनता

तक राजा का आदेश पहुँचाने के लिए ढ़िंढोरा पिटवाया जाता है। राजगुरू की उपस्थिति भी उस काल का प्रतिनिधित्व करती है। प्रस्तुत है एक दृश्य–

"एक आदमी ढोल बजाते हुए ऐलान कर रहा है........ सुनो........ सुनो... सुनो......... सब लोग ध्यान से सुनो.......... कल सुबह छः बजे............ किले के सामने...... अन्नदाता की ओर से"[60] यहाँ ढोल, ऐलान, किला व अन्नदाता शब्द प्रयोग तत्कालीन परिवेश को दर्शाते हैं।

'सपने' एकांकी 1996 के आस–पास का है। इसमें शिक्षण व्यवस्था, कक्षा–कक्ष, शिक्षक की भूमिका, चरित्र चित्रण तथा उसकी शिक्षण–शैली, विद्यार्थियों का चरित्र एवं विचार–धारा एवं सम्पूर्ण परिवेश आधुनिक शैली एवं भावभूमि पर निर्मित हुआ है,जो नाटककार शर्मा की सूझ–बूझ को रेखाकित करता है। 'जंग जारी है' के नाटक देशकाल के यथोचित अंकन की दृष्टि से सार्थक कहे जा सकते हैं।

'जंग जारी है' नाटकों कृति 2017 में प्रकाशित है। नए दौर के नाटक होने के कारण इनका समूचा वातावरण साज–सज्जा, आधुनिक जीवन शैली के अनुरूप हुआ हे। पात्रों के नामकरण भी युग सापेक्ष है। जैसे–रजनी डिसूजा, लोकेश सुरभि, संगीता आदि। भाषा शैली में भी अंग्रेजी शब्दों के बाहुल्य, मुहावरों का प्रचुर मात्रा में उपयोग से जीवन्तता आ गई है। आधुनिक तकनीकी यंत्रों यथा–सेलफोन, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग भी पात्रों के द्वारा करवाया गया है। जो आधुनिक जीवन शैली के अहम् हिस्से हैं। सबसे उल्लेखनीय प्रसंग यह कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी उत्पीड़न घोर समस्या बनी हुई है। कृति के सारे नाटक इन्हीं के इर्द–गिर्द बुने गये हैं। जैसे–भ्रूणहत्या, दहेज, मदिरापान, बांझपन की पीड़ा, अनमेल विवाह, बेटे–बेटी में भेदभाव करना आदि। इस भांति नाटककार शर्मा ने 'जंग जारी है' में देशकाल को साकार कर दिखाया है।

निष्कर्षतः, दीनदयाल शर्मा ने अपने नाट्य साहित्य की संरचना में देशकाल, वातावरण का पूर्ण ध्यान रखा है। इस दृष्टि से ये नाटक एवं एकांकी सफल कहे जा सकते हैं।

भाषा–शैली

भाषा शैली प्रत्येक साहित्यकार की विशिष्ट पहचान होती है। इस दृष्टि से दीनदयाल शर्मा की भाषा विशिष्ट व पात्रानुकूल है। नाटक में भाषा–शैली का महत्व अन्य तत्त्वों के सदृश्य है। नाटक की भाषा पात्रानुकूल, विषयानुरूप, सम्प्रेषण, सरल होनी चाहिए। शैली विषय के अनुरूप व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक, भावात्मक, सहज हो सकती है। बाल नाटकों के लिए विशेष रूप से सरल, सहज, सरस भाषा–शैली का प्रयोग होता है। दीनदयाल शर्मा के नाट्य काव्य की भाषा–शैली अत्यंत सरल, सहज, मनोरंजक, पात्रानुकूल, विषय के सदृश्य है, जिसके बाल पाठक, बाल दर्शक आसानी से समझ सकते हैं। एक प्रसंग–

- "विकास : सर, मेरे पापा घर लौटते वक्त एक अखबार अपने साथ ले आते हैं।

- प्रकाश : वैरी गुड .... अखबार पढ़ना बहुत अच्छी बात है। इस से हमें पूरी दुनिया की जानकारी मिलती है।

सब बच्चे : (एक साथ) यस सर।"[61]

- प्रकाशः सिट डाऊ विकास (अंगुली के इशारे से)। यू ...... मस्तान (खड़ा होकर) सर, मैं मस्तान सिंह सर, मैं बड़ा होकर पायलेट बनना चाहता हूँ।

- चीनू : मैं क्या बताऊं महाराज .... उसने खुद ही बताया था कि वह पहरेदार झबरू कुत्ता है। लेकिन महाराज..... मुझे तो ...... मुझे तो लगता है कोई बंदर आया होगा। अभी जो चीख सुनी थी, वह तो बंदर की ही थी, महाराज।[62]

उपरोक्त उदाहरणों की भाषा एकदम सरल, सहज, बालोपयोगी है। सारे शब्द बालकों के परिचय क्षेत्र के ही हैं। वाक्य विन्यास भी विषयानुकूल हैं। छोटे–छोटे वाक्य हैं, जिन्हें बच्चे आसानी से पढ़ सकते हैं। समझ सकते हैं। संवादात्मक शैली होने से भाषा में रोचकता, आकर्षण पैदा हो गया है। कथाकार शर्मा ने अपने नाटक में अत्यन्त सरल एव सुबोध भाषा–शैली का प्रयोग किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि रचनाकार ने अपने नाटकों एवं एकांकियों में सरल, सहज, सरस, विषयानुकूल, बालोपयोगी भाषा शैली का प्रयोग किया हैं।

अभिनय

अभिनय नाटक की आत्मा हे। नाटक अनुकरण पर आधारित तथा विधा है, यह दृश्य काव्य है, जिसे रंगमंच पर अभिनेता द्वारा अभिनीत किया जाता है। नाटक की सारी सफलता पात्रों के अभिनय पर निर्भर करती है। भारतीय आचार्यों ने अभिनय के आंगिक, वाचिक आहार्य और सात्विक भेद बताये हैं। नाटक का निर्माण सामान्य जन के मन बहलाव और हित के लिए हुआ है। अभिनय नाट्य काव्य का सबसे प्रधान अंग है। नाटक कितना भी श्रेष्ठ लिखा गया हो, लेकिन कलाकार उन पात्रों के तदनुरूप अभिनय नहीं कर सके तो सारा नाटक प्रभावहीन हो सकता हे। नाटक के पात्रों में जान डालने काकार्य अभिनयकर्ता की अभिनय कला पर निर्भर करता है। अभिनय कला के लिए रंगमंच सब से अनिवार्य घटक है। नाटक और रंगमंच का अभिन्न नाता है, जिसके बिना नाटक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। साहित्यकार निवेदिता ने अभिनय और रंगमंच के संदर्भ में लिखा है–

"हमारा विश्वास है कि अच्छा नाटक वह है जो अपने जन के साथ है, जो गलतियों और कमजोरियों को छुपाये बिना अपनी सम्पूर्ण मुक्ति के लिए लोगों में आत्मविश्वास, साहस और संघर्ष का ज़ज्बा पैदा करता है इसलिए नाटक के सामने सबसे बड़ी चुनौती है अपने जन को प्रस्तुत करने की है।"[63]

इस दृष्टि से दीनदयाल शर्मा के बाल नाटक रंगमंचीय दृष्टि से सफल माने जा सकते हैं। इन नाटकों में रंगमंच की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं यथा– पात्रों की कम संख्य, वेशभूषा, देश का चित्रण, मंच की सज्जा आदि। नाटककार शर्मा के कई नाटकों, फैसला, फैसला बदल गया, बेटी आदि का सफल मंचन बालकों द्वारा विद्यालयों में एवं अन्यत्र किया जा चुका है, जो सुखद प्रसंग है।

उद्देश्य

साहित्य प्रयोजनमूलक कला है। प्रत्येक रचनाकार की रचना के पृष्ठभूमि में कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। नाटक एक सोद्देश्य विधा है, जिस का एक शास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आधार होता है। नाटक का मुख्य ध्येय जनसाधारण का मनोरंजक करना है। दीनदयाल शर्मा का नाट्य काव्य सोद्देश्य है। हर नाटक किसी न किसी प्रयोजन पर आधारित है। 'फैसला' नाटक निष्पक्ष न्याय को प्रस्तुत करता है। एक राजा कर्तव्य है कि वह प्रजा की समस्याओं को सुने और उन का निराकरण करे। दोषी को समुचित दण्ड दे।

'फैसला बदल गया' में नाटककार शर्मा ने अंधविश्वास पर करारी चोट की है। जनसाधारण में यह अवधारणा फैली हुई है कि सुबह–सुबह सबसे पहले किस का मुँह देखने मात्र से किसी का दिन अच्छा या बुरा हो सकता है। दीनदयाल शर्मा ने इस नाटक के माध्यम से बड़ी चतुराई से इसका खंडन किया है। 'सपने' का उद्देश्य महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम के युवाओं एवं बच्चों को दिए गए सन्देश पर आधारित है, जिस में उन्होंने सपने देखने का आव्हान किया था। नाटककार शर्मा चाहते हैं कि बच्चों को बड़े–बड़े सपने देखने चाहिए, जिससे उनकी आत्मोन्नति हो सके एवं उच्च–कोटि का जीवन यापन कर सकें। उदाहरणार्थ–"राजगुरू : 'दोनों ही निर्दोष है।........ दोष केवल अन्धविश्वास का है। फांसी दे सको तो अन्धविश्वास को दे दो राजन।[64]

'जंग जारी है' का एक और उद्देश्य पूर्ण कथन –"कमला–वह कहता था बेटा .... बेटी आजकल सब बराबर होते हैं माँ। मैं ही नहीं समझी थी उसकी भावना को। अब मेरे घर की रोशनी तुम हो डॉक्टर बेटा। तुम घर की रोशनी .... तुम हो घर की रोशनी।[65] प्रस्तुत नाटक में बेटी–बेटी एक समान का भाव दर्शाया गया है, यह भाव उक्त संवादों में उद्घाटित हुआ है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि दीनदयाल शर्मा के नाटक एवं एकांकी नाटकीय तत्त्वों की कसौटी पर खरे उतरते हैं। बाल साहित्य में इस दृष्टि से इनका विशिष्ट स्थान है।

4.8 मनोरंजन

बाल साहित्य के मर्मज्ञों एवं चिंतकों ने बाल साहित्य की सभी विधाओं में मनोरंजन को अनिवार्य अंग माना है। नाटक विधा श्रव्य काव्य व दृश्य काव्य होने के कारण इसमें मनोरंजन की

महत्ता और भी बढ़ जाती है। ध्यातव्य है कि प्राचीन काल में जनसाधारण के मन बहलाव का सब से बड़ा माध्यम नाटक रहे हैं। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल नाटकों एवं एकांकी में मनोरंजन का भरपूर ध्यान रखा है। 'फैसला' एक जंगल की पृष्ठभूमि पर आधारित रचना है। नाटक का सम्पूर्ण दृश्य जंगल एवं जंगली जानवरों को प्रस्तुत करता है यथा – नाटक का प्रमुख पात्र शेर है, जो राजा की भूमिका में है। मंत्री बंदर, फरियादी मुर्गी तथा अन्य जानवर हैं। जिन के नाम भी जैसे 'चिपकू', 'चीनू' आदि हैं, जो अत्यन्त रोचक हैं। ये सभी बच्चों को हर्षित करने में पूर्ण रूप से सक्षम कहे जा सकते हैं। मंत्री और शेर का हास्य प्रधान वार्तालाप–

"शेर : यह हमारी नाक का सवाल है। आप जानते हैं। ....

चीनू : हाँ महाराज, यह तो सही है। नाक कट जाने पर आप फिर साँस कैसे लेंगे?

शेर : मंत्री जी! बकवास बंद करो। हमें मजाक कतई पसंद नही।'

एक और मनोरजंक दृश्य –

"शेर – कितनी बार कहा है कि मेरे राज में अंग्रेजी भाषा को काम में न लिया जाए।

चिपकू – क्षमा करें महाराज .... गलती हो गई। 'फ्यूचर' में ऐसा न हीं करूँगा।"[66]

"प्रकाश : (हनीफ की ओर हाथ के इशारे से) सिट डाउन........। (हनीफ स्टूल पर बैठने लग गई, तभी मस्तान सिंह धीरे से उस का स्टूल एक तरफ खिसका देता है और हनीफ नीचे गिर पड़ता है .... बच्चे हँसते है।')"[67] यहाँ भाषा के प्रति अगाध प्रेम व समर्पण भाव तथा हास्य व मनोरंजन करने वाले चुटीले संवाद रचनाकार शर्मा ने अपने नाटकों में प्रयुक्त किये हैं, जो बालकों के मनोविज्ञान के अनुरूप हैं तथा उन्हें प्रभावित करते हैं।

4.9 रसानुभूति

सामान्य अर्थ में रस का शाब्दिक अर्थ निचोड.कर और आनंद माना जाता है। काव्य के संदर्भ में रस से तात्पर्य आनंद से ही है। इसके अतिरिक्त मनोरंजन, भावुकता, आत्मीयता के आशय में भी रस को ग्रहण जाता है। विकिपीडिया के अनुसार– "श्रव्य काव्य के पठन अथवा श्रवण एवं दृश्य काव्य के दर्शन तथा श्रवन से जो अलौकिक आनंद प्राप्त होता है, वही काव्य में रस कहलाता है। रस की अनुभूति ह्रदय से होती है, इसीलिए रस को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' माना गया गया है। रस से जिस भाव की अनुभूति होती है वह रस का स्थायी भाव होता है।"[68]

रस का कोशगत अर्थ

रस– सं. (पु.)–स्वाद, जलीय अंश जूस, साहित्य शृंगार, हास्य, करूण, वीभत्स, रौद्र, भयानक, शांत और अद्भुत, सुखद तत्व (जैसे काव्य रस) यौवन काल में उत्पन्न अनुराग, प्रेम।"[69]

आचार्य भरतमुनि ने रस की परिभाषा– **'विभावविभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्ररस निष्पतिः'**[70]

अर्थात् आचार्य भरतमुनि ने भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी के संयांग से रस की निष्पति मानी है एवं रसों की संख्या आठ बताई है। समग्रतः सभी रस–मर्मज्ञो ने रसों की संख्या नौ मानी है। बाद के विद्वानों ने वात्सल्य और भक्ति को अलग रस के रूप में स्वीकार किया है। वस्तुतः साहित्य में मुख्य रूप में रसों की गणना आज भी नौ ही मानी जाती हैं, इनके नाम हैं– शृंगार, हास्य, करूण, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शांत रस। रसों की अनुभूति में सहायक भूमिका निभाने वाले विभाव कहलाते है। ये दो प्रकार के होते हैं– आलम्बन विभाव, उद्दीपन विभाव। रस निष्पति में जो चेष्टाएँ होती हैं, उन्हें अनुभाव कहते है, जो विभाव के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। संचारी भाव अस्थिर होते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने संचारियों की संख्या 33 मानी है। आचार्य भरतमुनि ने शृंगार को 'रसराज' के रूप में मान्यता प्रदान की है। प्राचीन आचार्यो ने नाटकों में वीर और शृंगार को सर्वाधिक मान्यता प्रदान की है।

उपरोक्त विश्लेषण से आधार पर कहा जा सकता है कि रस नाट्य काव्य की आत्मा हैं, प्राण हैं, जिसके माध्यम से रसिक श्रोता या दर्शक काव्य की रसानुभूति करके अलौकिक आनन्द जिसे आचार्यो ने 'मधुमती भूमिका' के नाम से भी अभिव्यक्त किया है, को आत्मानुभूत करके स्वयं को कृतार्थ करता है। नाटक का रस से अन्तरंग सम्बंध है क्योंकि नाटक, दृश्य, श्रव्य एवं पाठ्य काव्य होने के साथ अभिनेय विधा है। भारतीय आचार्यों ने नाटक में आठ रसों का परिपाक स्वीकार किया है, शांत रस को निषिद्ध माना है। एकांकी तथा नाटक में कई स्थल ऐसे आते हैं, जब दर्शक नाटक के पात्रों के साथ–साथ हँसने, रोने या क्रोध करने लगता है अर्थात् वह उन पात्रों के स्थान पर स्वयं को रख लेता है, ये ही रसोद्रेक की स्थिति है, जिसे रसज्ञ साधारणीकरण कहते हैं। कभी–कभी तो चलचित्र देखते समय दर्शक को किसी पात्र का अभिनय पसंद नहीं आता है, तो वे परदे पर ही चप्पल आदि फेंक देते हैं, वे उस समय आत्मविस्मृत होकर दृश्य को सच मान लेते हैं, तदनुरूप व्यवहारकर बैठते हैं।बाल नाटकों में रसानुभूति प्रारम्भ से ही होती आई है, दीनदयाल शर्मा के नाटकोंव एकांकी में कई स्थल ऐसे हैं, जहाँ रसोद्रेक होता है। बाल श्रोता या दर्शक आपके नाटकों को देखकर आनंदित होते हैं। ऐसा इनके नाटकों के मंचन पर देखा गया है। क्योंकि दीनदयाल शर्मा अनेक नाटक मंचित हो चुके है।

उल्लेखनीय हैं कि नाटककार शर्मा के अधिकतर नाटक रेडियो (सम्पूर्ण राजस्थान में) एवं रंगमंच पर प्रसारित और अभिनीत हो चुके हैं और पुरस्कृत भी। 'फैसला' एकांकी में चीनू मुर्गी के अंडे तोड़े जाने के संदर्भ में जंगल का राजा शेर जब चीनू के दड़बे के पास वाले दड़बे के बारे में पूछते हैं, तब उसका उत्तर सुनकर दर्शक या श्रोता के मन में सहज ही वात्सल्य भाव का उद्रेक हो जाता है, प्रस्तुत है चीनू का उत्तर–

– "शेर : चीनू बहन......... अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारे पास वाली दड़बे में कौन रहता हैं?

– चीनू : रहता नहीं महाराज, रहता था। यानि उस दड़बे में मेरी मौसी शालू मुर्गी रहती थी। बेचारी ने अपने अण्डों के गम में अपनी जान दे दी। उसके अंडे भी रात को कोई तोड़ जाता था।"[71]

इसी एकांकी का हस्य रस प्रधान एक और संवाद प्रस्तुत है–

– "चिपकू : नहीं महाराज ऐसा मत कीजिए।

– शेर : चुप रह बंदर के बच्चे।

– चिपकू : महाराज क्या मैं बंदर का बच्चा हूँ।

– शेर : और नही तो क्या गधे के बच्चे हो! बंदर को बंदर का बच्चा कहना मेरी नजर में कोई बुराई नहीं है।"[72]'सपने' एकांकी में शांत, हास्य, करूण, अद्‌भुत रसों की अनुभूति की जा सकती है। करुण रस का उदाहरण दृष्टव्य है –

– "प्रकाश : आदमी और मशीन में बहुत अंतर है मस्तान आदमी एक जीवित प्राणी है। जिसके भीतर दिल है, दिमाग है, विवेक हैअभिव्यक्ति है संवेदना है .... दया है, करूणा है, क्षमा है... पीड़ा है, प्यार है.........। मशीन तो मशीन। मशीन में यह सब कहाँ?"[73]

रसाभिव्यक्ति के दृष्टि से नाटककार शर्मा का नाट्य रचनाकर्म सफल कहा जा सकता है। ऊपर दिए गए रसों के उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य कई स्थलों पर रसों का उद्‌घाटन हुआ है।

4.10 शिक्षा

नाटककार दीनदयाल शर्मा का नाट्य साहित्य शिक्षाप्रद हैं, जो अपरोक्ष रूप से बालकों को कई प्रकार की सीख देता है, नैतिक मूल्यों से अवगत करवाता है। 'फैसला बदल गया' नाटक के अनुसार सीख मिलती है कि निर्णय अथवा न्याय करने से पूर्व समस्त दुराग्रहों को त्यागकर, सम्पूर्णत स्थितियों पर विवेक एवं निष्पक्ष भाव से सोच–विचार करना चाहिए। जब बात राजा के द्वारा न्याय करने की हो तब तो यह बात और भी प्रासंगिक हो जाती है। समझदारी और बुद्धि चातुर्य से दोषी का पता आसानी से लगाया जा सकता है जैसा कि 'फैसला' एकांकी में शेर राजा चीनू मुर्गी के अंडे तोड़ने वाले अपराधी का पता लगाता है और यथोचित दंड देता है। साथ ही इस में समय के मूल्य को भी रेखाकिंत किया गया है। जिससे यथाप्रसंग बहुत कुछ सीखने को मिलता है। जैसे – पुस्तकों की उपयोगिता कर्म का महत्त्व, अनुशासन में रहना, प्रकृति–प्रेम, जीवन मूल्य की प्रासंगिकता, संवेदनशीलता आदि। 'सपने' एकांकी में अनुशासन का महत्त्व दर्शाया गया है उदाहरणार्थ–

"प्रकाश : (बच्चों को समझाते हुए) अनुशासन शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है........ पढ़ना–लिखना, खेलना–कूदना, खाना–पीना, हँसना–रोना आदि सब क्रियाओं में अनुशासन की अपनी महत्ता है।"[74]

इसी प्रकार मानवीय संवेदनाओं का पाठ पढ़ाती निम्नलिखित पंक्तियां–

"आशा : सर मैं...... (शून्य में देखते हुए)........... दुनिया के बड़े–बड़े लोग मेरे सामने लगी कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।..... मैं उनसे पूछती हूँ (भावावेश में) एक दूसरे से क्यों लड़ते हो? क्या मिलेगा लड़कर? ये हथियार, ये बम! ये मारकाट किसलिए? बोलो........ जवाब दो, कोई अंत नहीं इसका? (सामान्य होकर) सर, जब मैं उनसे ये सवाल पूछती हूँ, तो वे सब अपना सर झुका लेते हैं।"[75] आतंकवाद की विभीषिका पर आधारित यह संवाद समसामयिक संदर्भ व परिस्थितियों को उजागर करते हुए इन्हें छोड़कर सामाजिक सद्भाव, प्रेम व एकता का संदेश देते है।

शिक्षा के दृष्टिकोण से दीनदयाल शर्मा के नाटक और एकांकी बच्चों और बड़ो को बहुत सरल तरीके से जीवनोपयोगी सीख देने में सक्षम हैं। बच्चे बातों ही बातों में, आनंद लेते हुए जीवन मूल्यों से अवगत हो जाते हैं। प्रस्तुत नाटकों की विषयवस्तु बहुत आकर्षक, मौलिक, संक्षिप्त, सहज, सरल, एवं बालकों तथा किशोरों की रूचि के अनुरूप चयनित की गई है। पात्रों के नाम आकर्षक हैं, जो बालकों को लुभाने में पूर्ण रूपेण सफल हैं। संख्या भी सन्तुलित हैं। संवाद सरल, सरल, चुटीले, पात्रानुकूल और प्रभावपूर्ण हैं। बालक इन्हें आसानी से आत्मसात कर सकते हैं। वातावरण का निर्माण नाटकों एवं विषय के अनुरूप सजीव तथा रचनानुसार हुआ है। सभी पात्रों का अभिनय सफल, सजीव, पात्रानुकूल,प्रशंसनीय है। सभी नाटक सोद्देश्य हैं। मनोरंजन करने में समस्त नाटक सफल हुए हैं।रस की अनुभूति की दृष्टि से दीनदयाल शर्मा का समस्त नाट्य कर्म सक्षम है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नाटककार शर्मा का समस्त नाट्य काव्य बालोपयोगी, विनोदपूर्ण, मनोरंजक, शिक्षाप्रद, रस से आप्लावित और उद्देश्य पूर्ण है जो बाल साहित्य के लिए धरोहर है।

♦ ♦ ♦ ♦

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ–206
2. Kamal's Oxford Dictionary. Dr. R.K. Kapoor, Page - 647
3. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ–156
4. Kamal's Oxford Dictionary. Dr. R.K. Kapoor, Page - 844-845
5. हिन्दी बाल पत्रकारिताः उद्भव और विकास, पृष्ठ–26
6. http://baratdiscovery.org/India/07.09.2017
7. http://baratdiscovery.org/India/07.09.2017
8. कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. अनिता वर्मा, पृष्ठ–24
9. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पांडेय, संजय पृष्ठ–148
10. हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ–10
11. बाल साहित्य मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ–11
12. कुछ अनकही बातें ...., सम्पादकः दुष्यन्त कुमार, डॉ. मेघना शर्मा, पृ. 169
13. विद्यार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ–302
14. Kamal's Oxford Dictionary. Dr. R.K. Kapoor, Page - 302
15. दीनदयाल शर्मा, चमत्कारी चूर्ण, पृ. 13
16. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ. 22
17. पापा झूठ नहीं बोलते, दीनदयाल शर्मा, पृ. 17
18. पापा झूठ नहीं जो बोलते, दीनदयाल शर्मा, पृ.31
19. चिंटू–पिटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 13
20. मधुमतीः जनवरी 2017, सम्पादक : रोहित गुप्ता, पृ. 39–40
21. मधुमतीः जनवरी 2017, सम्पादक : रोहित गुप्ता, पृ. 42
22. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 8
23. आजकल, संपादक, फरहत परवीन, पृ. 17
24. टाबर टोली, मार्च–2010 सम्पादक श्रीमती कमलेश शर्मा, पृ. 1
25. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 32

26. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 8
27. परशुराम शुक्ल की बाल कविता : एक अध्ययन, राजेन्द्र कुमार शर्मा, पृ. 35
28. पापा झूठ नहीं बोलते, दीनदयाल शर्मा, पृ. 18
29. ऊँची रखें उड़ान, संपादक : सत्यदेव संवितेन्द्र, ओमदत्त जोशी, पृ.43
30. पापा झूठ नहीं बोलते, दीनदयाल शर्मा, पृ. 35
31. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 27
32. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 27
33. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा पृ. 12
34. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ. 29
35. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ.29
36. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 31
37. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 774
38. Kamal's Oxford Dictionary. Dr. R.K. Kapoor, Page - 244
39. word press.com/2014/09/28
40. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ. 32
41. कोरी कल्पना, शंकर पृ–16
42. बड़ों के बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 16
43. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी पृ. 434
44 Kamal's Oxford Dictionary. Dr. R.K. Kapoor, Page - 233
45. शोध नवनीत, जनवरी–जून–2017, सम्पादक : डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, पृ. 95
46. आजकल – नवम्बर 2016, सम्पादक : फरहत परवीन, पृ. 44
47. नुक्कड़ नाटक, सम्पादक, घमण्डी लाल अग्रवाल, भूमिका से
48. हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास, प्रकाश मनु, पृ. 337
49. सपने, दीनदयाल शर्मा, बच्चों के लिए बेशकीमती रचना है सपने (अपनी बात से) आर. पी. सिंह
50. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, रेडियों नाटक (भूमिका से), डॉ. अर्जुन देवचारण
51. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, अपनी बात, राजेश चड्डा

52. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 29–30

53. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ. 9

54. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ. 18

55. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ.792

56. बाल साहित्य के प्रतिमान, डॉ. नागेश पांडेय, संजय पृ. 197

57. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 31

58. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ.11

59. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृ. 96

60. फैसला बदल गया, दीनदयाल शर्मा, पृ.–7

61. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ–49

62. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ.21

63. आजकल नवम्बर–2016, सम्पादकः फरहत परवीन, पृ. 40

64. फैसला बदल गया, दीनदयाल शर्मा, पृ–13

65. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृ.–19

66. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ.–12

67. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ. – 12

68. http:/hi.wikipeda.org/wiki/21.07.2017

69. शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 694

70. साहित्यिक निबन्ध, राजनाथ शर्मा, पृ. 202

71. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 16

72. फैसला बदल गया, दीनदयाल शर्मा, पृ. 30

73. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 13

74. सपनें, दीनदयाल शर्मा, पृ. 12

75. सपनें, दीनदयाल शर्मा, पृ. 23

पंचम अध्याय

दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं

पंचम अध्याय

दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं

समस्त चराचर जगत में सृजनहार ने कण–कण की अनुपम, असाधारण, अद्वितीय रचना की है। यहाँ तक कि दो प्राणी भी एक समान नहीं मिलेंगे, यही इस समाष्टि के सौन्दर्य का रहस्य है। हर जीव अपने आप में अद्‌भुत रचना है। मनुष्य जाति में भी दो मानव एक जैसे मिल पाना असंभव है, जुड़वा बच्चों में भी कोई न कोई विभिन्नता अवश्य मिलेगी। हर व्यक्ति की पसंद, ख्याल, हाव–भाव, सोचने का ढंग, चाल–ढाल, स्वभाव, बात करने का सलीका, तन की संरचना, मुखमंडल, फिंगर–प्रिंट, रंग–रूप, अभिरूचि, बाल, नैन–नख्श, रक्त समूह यानी सब कुछ अलग–अलग, विशिष्ट। इसीलिए यह संसार इतना विचित्र, रमणीय और खूबसूरत है। यदि हम कल्पना करें कि सब कुछ एक समान होता तो कैसा लगता, बिल्कुल नीरस, कोई आकर्षण नहीं रह जाता। ये विशिष्टता ही है जो इस जगती को इतना आकर्षित, अभिराम सुषुमित बनाये हुए हैं। ये कहें कि विकास का आधार भी विचित्र्य है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। एक उक्ति इस संदर्भ में प्रचलित भी है–'पसंद अपनी–अपनी, ख्याल अपने–अपने' इस भांति हर रचनाकार, कलाकार, अदाकार, संगीतकार, गायक, वास्तुकार अर्थात् सभी कलाओं के ज्ञाताओं की कला कृतियाँ अलग–अलग प्रकार की मिलेंगी। इसी प्रकार प्रत्येक साहित्यकारों का चिंतन, सोचने का ढंग प्रस्तुतिकरण, भाषा, शब्द संरचना, शैली भिन्न–भिन्न होती है, जो उसे दूसरों से अलग दर्शाती है। किसी भी रचना को पढ़कर ही पाठक समझ जाते हैं कि अमुख रचना अमुख रचनाकार की है। बाल साहित्य में भी यही बात चरितार्थ होती है। बाल साहित्य के अधिकतर विषय प्रकृति, पशु–पक्षी, फूल, पेड़–पौधे, चाँद–सितारे, जंगली जानवर, बादल, आकाश इत्यादि रहें हैं। आजकल नई तकनीक से सम्बन्धित कई प्रकार के संदर्भों पर लिखा जा रहा है। प्रायः सभी बाल लेखक इन्हीं विषयों पर लिखते हैं, इसके बाद भी हर रचनाकार की रचना किसी और के जैसी नहीं होती क्योंकि सब के सोचने एवं प्रस्तुतिकरण का तरीका, भाषा शैली अर्थात् सब कुछ भिन्न होता है जो, उसे औरों से विशिष्ट बनाता है। अंग्रेजी की एक उक्ति शिविरा पत्रिका में पढ़ी थी।

अपनी बात कहने का सलीका ही है, जो साहित्यकार को साहित्यकार बनाता है। समाज में होने वाली सभी बातों, घटनाओं, संदर्भों, आयामों, उदाहरणों के बारे में सभी मनुष्य चिंतन–मनन करते हैं, किन्तु साहित्यकार उसे कविता, कहानी, निबन्ध या अन्य किसी भी विधा में प्रस्तुत कर देता है, इसलिए उसे विशिष्ट माना जाता है।'विशेष' अर्थात् असाधारण, जिस में कुछ नई बात हो, जो औरों से अलग हो, दूसरों से कुछ अधिक हो या दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ हो, उन से

भिन्न हो, जिस में मौलिकता और नयापन हो। विशेषता का मूल शब्द 'शेष' है जिस में 'वि' उपसर्ग और 'ता' प्रत्यय लगने से यह शब्द बना है। इस का कोशसम्मत अर्थ–

विशेष – सं. (वि.) 1. असाधारण, असामान्य, विपुल, 2. प्रचुर, 3. अधिक (जैसे–विशेष धन राशि), विचित्र, विलक्षण (जैसे विशेष आकृति)– कर (क्रि.वि.) विशेषत, विशेषतया, खासतौर पर, – ता (स्त्री.) विशेष होने का भाव, (वि.) विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला। विशेषक – स. (पु.) विशिष्टता उत्पन्न करने वाला।[1]

अंग्रेजी में 'विशेष' के लिए Special शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है– Special- adj. particular, not general, extraordinary, chief,excellence, uncommonविशेष, असाधारण, विचित्र., असामान्य, अनोखा, पद

n. something secilliy apointedअसाधारण या विशिष्ट वस्तु, Specialism - n. - devotion to a spcial branch of study kamalविशिष्ट धर्म[2]

इस भाँति कहा जा सकता है कि विशेष वह है, जो दूसरों से हटकर हो, जिसके जैसा अन्यत्र नहीं हो, जिस में कुछ अनोखापन हो, वैचित्र्य हो। प्रत्येक रचनाकार का अपना अलग अंदाज होता है, भिन्न शैली और अनेक प्रकर की विशेषताएँ होती हैं, जो उसे अन्य रचनाकारों से विशिष्ट दर्शाती हैं। ये विशेषताएँ उस की पहचान बन जाती हैं। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा के रचनाकर्म में ऐसी अनेकानेक विशेषताएँ जो उन्हें वैशिष्ट्य प्रदान करती हैं, बाल साहित्य जगत में नई पहचान के साथ रेखांकित करती है, जैसे–बाल संवेदनाएं, मौलिकता, नवीनता, कल्पनाशीलता, नई तकनीक, वस्तु चित्रण आदि।

5.1 बाल संवेदना

संवेदना का अर्थ है, सहानुभूति, दया, करूणा, अनुभूति। संवेदना शब्द वेदना में 'सम' उपसर्ग लगने से निर्मित है। 'वेदना की 'विद' मूल धातु है। जिसमें 'यु' प्रत्यय जोड़ने पर 'यु' के स्थान पर अन आदेश हो गया। फिर 'यु' को गुण करने से वेदना शब्द निष्पन्न हुआ। तत्पश्चात् स्त्रीलिंग में 'टाप' प्रत्यय जुड़ने पर 'वेदना' शब्द बना। वेदना के पूर्व 'सम' उपसर्ग जोड़ने से संवेदना शब्द बना।[3]

मुख्य शब्द 'वेदना' का अर्थ पीड़ा, दर्द, कष्ट है, वहीं 'संवेदना' का अर्थ 'जानना, 'बोध', 'ज्ञान' होता है। संवेदना एक सुंदर सामाजिक भावाभिव्यक्ति है, एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति या प्राणिमात्र की वेदना को अनुभूत करना। वेदना व्यक्तिगत अहसास है, वहीं संवेदना सामाजिक भाव है,जिस का सीधा सम्बन्ध मानवीयता से है। संवेदना जन्मजात अनुभूति है, जो दुनियादारी के बढ़ने के साथ शनैः शनैः कम होता जाती है। संवेदना एक इन्सान को दूसरे से जोड़ती है। सहजता, सादगी, भोलापन, भावुकता जैसे भाव संवेदना से ही अनुप्राणित है, यही इनकी जन्मदात्री

है। दुःख बांटने से कम होता है, खुशी बढ़ जाती है, इसी को संवेदना कह सकते हैं। संवेदना मानव के साथ–साथ मानवेत्तर प्राणियों में भी पाई जाती है। संवेदना का कोशगत तात्पर्य है– संवेदना– सं. (स्त्री.) 1. अनुभूति, 2. सहानुभूति (जैसे हार्दिक संवेदना) संवेदी–सं. (वि.)– संवेदनशील[4]

'संवेदना' के लिए इंग्लिश में Sensation, Sympathy, Sensitivity, Emotivity शब्द का प्रयोग होता है।Sympathy-सहानुभूति, (दयायुक्त) समदुखीSymapathitic - adj. - having common feeling with another, inducing[5]

'संवेदना' को कई विद्वानों ने परिभाषित किया हैः

डॉ. सुरेश सिंह के अनुरूप –"संवेदना से अभिप्राय है कि वह अनुभूति प्रवणता तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है। इस का अर्थ यह भी होता है कि कोई साहित्य किन भावनाओं की प्रतीति हमें करा सकने में समर्थ होता है। भावनाओं के ये स्तर विविध होते हैं। वह आधुनिक बोध भी हो सकता है या मानव अस्तित्व की बुनियादी विशेषताएँ भी। वह व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना भी हो सकती है या यथार्थ के नए तत्त्वों की अन्विति भी।"[6]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवेदना के लिए लिखा है– "संवेदना का अर्थ सुख–दुःखात्मक अनुभूति ही है, उमसें भी दुःखानुभूति से इसका गहरा सम्बन्ध है। संवेदना शब्द अपने वास्तविक या अवास्तविक दुःख पर कष्टानुभव के में आया है। मतलब यह है कि अपनी किसी भी स्थिति को लेकर दुःख का अनुभव करना ही संवेदन है।"[7]

डॉ. रमेश मयंक के अनुसार –"संवेदना मन में होने वाले बोध या अनुभूत अनुभव, किसी को कष्ट में देख कर मन में होने वाला दुःख, सहानुभूति है। संवेदना सुजन का मूल आधार है। जब किसी सृजनधर्मी के मन को परिवेश की विद्रूपताएँ झकझोरती है तो वह उद्वेलित हो उठता है। इस उद्वेलन का प्रवाह इतना प्रबल होता है कि वह अपने मन की अनुभूत पीड़ाओं को शब्द देने के लिए बाध्य हो जाता है, तब उसके मन की संवेदनाएँ गद्य अथवा पद्य की पंक्तियाँ कागज पर उतरने लगती हैं जो साहित्य का रूप ग्रहण करती है। देखे गए दृश्यों, मेलों, पर्वों, घटनाओं के उद्वेलन के परिणाम स्वरूप घर, मोहल्ला, समाज, देश का घटना चक्र, प्राकृतिक, आंतरिक एवं बाह्य संकट, पर्यावरण प्रदूषण, जीवन मूल्यों का क्षरण, अर्थ–लाभ के लिए हमारी प्रतिभाओं का विदेशी पलायन, स्वदेशी वस्तुओं का तिरस्कार व विदेशी वस्तुओं, भाषा–संस्कृति से प्यार इत्यादि विषय वस्तु की अभिव्यक्ति दृष्ट संवेदना के अंतर्गत रखी जा सकती है। भवभूति ने 'एकोरस' करूण' एवं प्रधान कह कर करूण रस की प्रतिष्ठा की है। हृदय संवाद सुंदर, सहृदय श्लाध्य काव्यात्मा जैसी उक्तियाँ वेदना की सम्यक प्रकार से अभिव्यक्ति का नाम ही संवेदना है, संवेदना सृजन का प्राण है, प्रमाणित करती है। 'हिंदी बालकाव्य में संवेदना के विविध आयामों में मनुष्य के

प्रति दया– मैत्री,जीव–जंतुओं, प्रकृति, पेड़, नदी–तालाबों, पर्वतों समूची पर्यावरण के प्रति संवेदना, दया–ममता, करूणा, सहानुभूतिजनित भावों की सृष्टि व दृष्टि प्रमुख है।"[9]

मंजरी गुप्ता– "मानवीय संवेदना की अतुल तथा असीम गहराईयों के अंतःस्थल में विद्यमान करूणा, सहानुभूति एवं स्नेह की उदात्त वृत्तियों तक पूर्ण हो जाती है। लेखक या कवि की भावनाएं उसके ग्रंथ एवं कविता में झलकती हैं तथा एक विशेष रूप को प्राप्त करती है। यही भावनाएँ कभी महाकाव्यों में कभी प्रबंध काव्यों में तथा कभी गद्य व कविताओं में हृदय को मग्न करने वाले गीतों के रूप में साहित्य प्रेमियों को आनन्दित करती है।"[10]

प्रस्तुत परिभाषाओं और कोशगत अर्थ के सार स्वरूप कहा जा सकता है कि संवेदना अंतस की महानुभूति है, जो अति सूक्ष्म प्रभावों को भी आत्मसात कर लेती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवेदना को मुख्यतया दुःख, वेदना के रूप में व्याख्यायित किया है, जो उपयुक्त भी है, वेदना ही संवेदना की जन्म दात्री है। मनुष्य द्वारा दूसरे मानव की पीड़ा, दर्द, कष्ट को महसूस करना ही संवेदना कहलाती है। वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति संवेदना से संपूरित रही है। 'वसुधैवकुटुम्बकम', 'सहअस्तित्व', 'जिओ और जीने दो' आदि सूक्तियाँ इसी भाव की साक्षी है। इतना ही नहीं अपितु भारत में तो अखिल प्रकृति जगत (जड़–चेतन) के प्रति कारूण्य भाव है, जिस के अंतर्गत समस्त जीव–जगत, पेड़–पौधे, वनस्पति, आते हैं। आदिकवि महर्षि वाल्मिकी द्वारा क्रौंच युगल की वेदना को देख कर उनके मन में गहन उद्वेलन हुआ और वह नेत्रों से अविरल अश्रुधारा के रूप में प्रवाहित होकर प्रथम काव्य बना और यहीं से संवेदना का शुभारम्भ माना गया–

'मा निषाद प्रतिष्ठाम्? त्वमगमः शाश्वतीः समाः
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितमः।।[8]

साहित्यकार अत्यन्त संवेदनशील प्राणी होता है, वह अपने परिवेश में घटित होने वाली हर छोटी–बड़ी हलचल को अपने अन्तस् में गहरे तक अनुभूत करता है, बाह्य जगत की स्थितियाँ उसे भीतर तक आलोड़ित कर देती है, यही आत्मनुभूतियाँ शब्दों के माध्यम से साहित्य के रूप मे प्रकट होती है। यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक कलाकार की कला के पृष्ठ में संवेदनशीलता ही कार्य करती है। प्राचीन काल से ही साहित्य का संवेदना से प्रगाढ़ रिश्ता रहा है, प्रत्येक विधा में संवेदना के स्वर मुखरित मिलेंगे। बाल साहित्य का तो संवेदना से क्षीर–नीर का सम्बन्ध रहा है, क्योंकि बाल्यावस्था बेहद संवेदनशील होती है। बालक एक पल में रूदन करने लगता है तो दूसरे ही क्षण हँस पड़ता है। बालक इस कदर मासूम, भोला, सरल, सहज, निश्छल, लोल होता है कि हर स्थिति से, वस्तु से, जीव से, दोस्तों से, परिजनों से, यहाँ तक कि अजीब पदार्थों से भी अन्तरंग, सहज सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा स्वयं अत्यन्त संवेदनशील है, बालकों की तरह भोले, सरल हृदय, सहज मन के स्वामी हैं।

इसके सरल व्यक्तित्व के संदर्भ में **राजेन्द्र कुमार डाल** ने लिखा है–'मंझली कद–काठी, सरल सुग्राही दृष्टि, सामान्य चेहरा लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि के धनी श्री दीनदयाल शर्मा में बच्चों सा उत्साह और उन्हीं सा हठ है। हँसने–हँसाने कोहमेशा आतुर, अति संवेदनशील, जल्दी रूठने–मानने वाले। लम्बे संघर्ष के बाद भी युवकों जैसा जीवट लिए, युवाओं व प्रौढ़ों के मित्र, वृद्धजन के स्नेही और बच्चों के सखा ....।"[11]

दीनदयाल शर्मा के समग्र बाल साहित्य पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि संवेदना इन की सभी विधाओं की रचनाओं में बिखरी पड़ी है। माता और बालक का गर्भ से ही अद्भुत रिश्ता होता। माँ के लिये कुछ भी लिखना या उपमित करना अत्यन्त दुर्लभ कार्य है, क्योंकि माँ का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता और न ही माता का किसी तरह कर्ज चुकाया जा सकता है। माँ की महानता के समक्ष संसार के सारे वैभव छोटे पड़ जाते हैं। फिर भी रचनाकारों ने माँ के लिए एक से एक श्रेष्ठ रचनाओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। बाल रचनाकारों में ने भी माँ के लिए जमकर कमल चलाई है। दीनदयाल शर्मा ने माँ के लिए कई बाल गीत प्रस्तुत किये हैं, जिनमें संवेदनात्मकता कूट कूट कर भरी हुई है। माँ की उपमा ममता रूपी आंगन की फुलवारी से करके रचनाकार ने बहुत बड़ी बात कह दी है, क्योंकि प्रकृति भी माता की भांति हमारी पालिका है, पोषिका है। माँ अगर फुलवारी है ता बालक उसकी किलकारी। वेदों में लिखा भी है **'माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिया'** माँ के प्रति बच्चे की संवेदना को कलमकार दीनदयाल शर्मा ने बड़ी कोमलता से वर्णित किया है–

'माँ तू आंगन मैं किलकारी,माँ ममता की तुम फुलवारी।
सब पर छिड़के जान,माँ तू बहुत महान।
कैसे तेरा कर्ज चुकाऊँ,मैं तो अपना फर्ज़ निभाऊँ।
तुझ पर मैं कुर्बान,माँ तू बहुत महान।[12]

हमारे देश में गाय को 'माता' की पदवी से अलंकृत किया जाता है। गौ माता के प्रति हमारी, सद्भावना, संवेदना, सेवाभाव, श्रृद्धा, सम्मान जग जाहिर है। इसके दूध को अमृत तुल्य माना गया है। गाय बहुत ही भोली, सरल, सहज पशु है। सम्भवतः इसीलिए बालकों को भी गाय बहुत अच्छी व प्यारी लगती है। दीनदयाल शर्मा ने गाय के लिए बालकों की संवेदना के साथ–साथ गाय की विशेषताओं को बड़ी सादगी से अंकित किया है–

'सरल सहज सी गाय हमारी,लगती हमकों सबसे प्यारी।
कई रंगों में होती है यह,गलगंबल की शोभा न्यारी।[13]

आदमी तो हम सभी है, लेंकिन मानवता का भाव कितनी मात्रामें है, महत्व इस बात का है, जिस मानव में संवेदना, सहानुभूति, करूणा, दया, ममता होगी, वही इन्सान कहलाने का

अधिकारी है। 'सपने' एकांकी में शिक्षक प्रकाश के द्वारा पूछने पर कि बच्चों बड़े होकर क्या बनना चाहते हो, तब छात्रा जागृति अत्यन्त भोलेपन के साथ ऐसा उत्तर देती है जो मानवीय संवेदना से ओतप्रोत है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। बात लगने में छोटी है लेकिन सागर सी गहराई और हिमगिरी सी ऊँचाई लिए हुए है। उदाहरण दृष्टव्य है–जागृतिः (खड़ी होकर) मैं मन और कर्म से इन्सान बनने के सपने देखती हूँ, सर। और अपने सद्कर्मों के कारण सबके दिल में बसना चाहती हूँ।"[14]

बालकों को स्वभाव से ही पशु–पक्षियों से बहुत लगाव होता है, जिन्हें वे बाल्यावस्था से दखते हैं, जिनकी क्रीड़ाओं को अनुभूत करते हुए प्रसन्नता से झूम–झूम उठते हैं, उनके साथ खेलना, उन्हें छेड़ने में बालकों को बहुत मजा जाता है और यदि वह जानवर पालतू कुत्ता हो तो कहने ही क्या, बच्चों को उस से बेहद प्रेम होता है, उसके साथ वो खेलते हैं, आनन्दित होते हैं। "मोती कुत्ता जिसका चार फुट कद। घने काले बाल। ऊँचे कान, लम्बी पूंछ मोती दिन भर कोठी में सोया रहता, लेकिन रात होते ही कोठी की चौकीदारी करता इधर–उधर घूमता रहता।[15]

यहाँ रचनाकार ने कुत्ते के स्वरूप का भी भली–भांति चित्रण किया है, यथा उसका कद, उसके घने काले बाल, ऊँचे कान, लम्बी पूँछ इत्यादि। प्रकृति और मनुष्य का नाता सनातनकाल से है। मानव के साथ–साथ सभी जीवधारी प्रकृति पर आश्रित है। जीवन के लिए प्राणवायु वनस्पतियों, पेड़–पौधों से ही मिलती है। यह जानते हुए भी आदमी अपने क्षुद्र स्वार्थ के वशीभूत होकर निरन्तर कुदरत का दोहन कर रहा है, जिसके दुष्परिणाम सामने आने लगे है। निरंतर धरती का तापमान बढ़ना इसका प्रमाण है। आज विश्व पर्यावरण दिवस है, रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने पेड़ो के माध्यम से प्रार्थना करके अपनी बात कहने का प्रयास किया है। लगे हाथों जन्म दिन पर एक दूसरे को उपहार के रूप में पौधे देने की बात सरल भाव से प्रकट कर दी है। इसी के साथ–साथ पेड़ मानव से प्रार्थना करते हैं कि 'हे प्यारे मनुष्य, हमें मत काटो, हम तो तुम्हारे रखवारे हैं, पालक–पोषक व जीवनदाता हैं। यहाँ प्रकृति के प्रति संवेदना का भाव स्वतः प्रवाहित हो उठा है, इस प्रकार–

मुझ को तुम मत काटो प्यारे
हम हैं तुम सब के रखवारे ......
जीवनदाता हम कहलाते
हम से हैं जग के जन सारे।।[16]

मेरा जन्म–दिवस जब आता
बहना पौधो लाती है
लाते ही धरती पर रोपे
सेवा मुझे सिखाती है।[17]

रचनाकार दीनदयाल शर्मा के काव्य के साथ–साथ उनके गद्य में भी अनेकानेक ऐसे प्रसंग हैं जिनमें संवेदन भाव कूट–कूट कर भरा हुआ है। जंगली जानवरों के माध्यम से संवेदित संवाद– "शेर : चीनू बहन, दुखी होने की जरूरत नहीं...... चिंता मत करो चीनू बहन। तुम्हे शीघ्र ही न्याय मिलेगा....... जंगल की सारी प्रजा इस बात को अच्छी तरह जानती है कि मेरे यहाँ न्याय में कुछ देर जरूर है, पर अंधेर नहीं........।"[18]

चिकी कमेड़ी ने जब सुना कि उसे दण्ड मिलने वाला है तो वह भीतर तक सिहर उठी, क्योंकि वह निर्दोष है लेकिन स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिए उसके पास कोई साक्ष्य नहीं था ..... केवल भगवान से विनती करने के अतिरिक्त। 'जंग जारी है' के सभी नाटक सामाजिक संवेदना से ओतप्रोत हैं। 'रिश्तों का मोल' नाटक में बेटे के रूखे व्यवहार से पिता इतने दुखी हो जाते हैं कि उन्हें समझ में नहीं आता कि वह कहाँ जाएँ इस उम्र में। न ही साथ रहते बनता है, न ही कहीं और ठिकाना है। इसके लिए स्वयं को दोषी मानने लगते हैं।

"रामदेई : घर में नहीं रह सकते या बहू–बेटे के साथ?

रामजीदास : ना घर में और ना बहू–बेटे के साथ (झुंझलाकर) कहाँ जाऊं क्या करूँ....... मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता। बेटा का इतना रूखापन....... (ठण्डी साँस) शायद मेरी ही परवरिश में कोई कमी रह गई है।"[19]

इसी संग्रह का एक नाटक 'अपने–अपने सुख' में नाटककार शर्मा ने कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को इंगित किया है। ऐसा करना पाप है, समाज के माथे पर कलंक है, इस का पात्र मुरली नाटक के अंत में अपने इस अपराध के लिए भारी पश्चाताप करता है और अपनी पत्नी देवी से कहता है कि तुम भी इस अमानवीय बुराई के खिलाफ सभी औरतों को जाग्रत करना।

मुरलीः ये लड़कियों की भ्रूण हत्या मानवता के माथे पर कलंक है। ये कलंक धोने से ही शायद हमारा पश्चाताप पूरा हो। तू कहना औरतों से (आत्म संवाद) कि वे अपनी ही जान की दुश्मन न बने।[20]

'बड़ो के बचपन की कहानियाँ में नौ महापुरुषों के बाल्यकाल की घटनाओं, प्रसंगो को कहानी के सूत्र में पिरोकर रचनाकार ने प्रस्तुत किया है। इन सभी कथाओं की सब से प्रमुख विशेषता ही इनकी संवेदनशीलता है। हर कहानी करूणा, सहानुभूति, ममत्व, स्नेह, संवेदन से भरपूर है। सार रूवरूप कहा जा सकता है कि बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा का समग्र बाल साहित्य संवेदना तत्व से ओतप्रोत है, प्रायः सभी गीत, कवितायें एवं गद्य साहित्य में करुणा, दया, सहानुभूति, परस्पर प्रेम, संवेदना, आत्मीयता आदि बाल मन के सुकोमल भावों की महानुभूति से सम्पूरित हैं।

5.2 वस्तु चित्रण

संसार के सभी अनुभूतिजन्य पदार्थ वस्तु की श्रेणी में माने गए हैं। चीज, सामान, दैनिक जीवन में काम आने वाले उपादान या भौतिक जगत में जिन का अस्तित्व होता है, जो वास्तविक होते हैं, उनको वस्तु कह सकते हैं। जीवन का सारा कार्य व्यापार पदार्थों पर ही निर्भर हैं वस्तु का शब्दकोश के अनुरूप अर्थ–

वस्तु– सं. (स्त्री.) 1. गोचर पदार्थ, 2. चीज, 3. विषय, 4. कथावस्तु–निर्माण (पु.)–वस्तु रचना, निष्ठ–(वि.) 1. भौतिक पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला, जो आत्मनिष्ठ न हो, 2. वस्तु परक, ऑब्जेक्टिव,–परक (वि.) वस्तु पर आधारित, वस्तुगत, संकलन–(पु.) 1. वस्तु एकत्र करने वाला, 2. कथावस्तु को तैयार करना, स्थिति–(स्त्री.) 1. वास्तविक स्थिति, 2. परिस्थिति[21]

"किसी भी विषय या वस्तु या चीज का संक्षिप्त और तार्किक वर्णन हैं जो वस्तुओं के मूलभूत विशिष्ट गुण या संकल्पनाओं के अर्थ, अंतर्वस्तु और सीमायें बताता है।"[22]

"अर्थशास्त्र में वस्तु एकमात्र माल है, जो मानवीय चाहों को सन्तुष्ट करता है और उपयोगिता प्रदान करता है। इसका भौतिक जगत से सम्बन्ध है जो पदार्थ हमें दिखाई देते हैं वे सभी वस्तु कहलाते हैं। वस्तु मूर्त सम्पत्ति होते हैं, जो लोगों के लिए उपयोगी हैं।"[23]

साहित्य समाज की, जीवन की छवि को प्रस्तुत करता है, अतः इसमें वस्तु विषयक रचनाओं का अंकन नैसर्गिक है। जो पदार्थ साकार रूप में हमारे समक्ष है, उन पर विपुल मात्रा में लिखा जा रहा है। बाल साहित्य में वस्तु चित्रण की महत्ता स्वतः सिद्ध है क्योंकि बालक का संसार अपने परिवेश के घेरे तक सीमित होता है और उसकी प्रबल जिज्ञासा वृति उसे हर चीज को गहराई से जानने तथा समझने को बाध्य करती है। बालक को वस्तु प्रधान कवितायें, कहानियाँ एवं अन्य रचनाएँ पढ़ने में प्रचुर आनंद मिलता है। लगभग सभी बाल रचनाकारों ने किसी न किसी रूप में वस्तुओं पर सृजन किया है और कर रहे हैं जैसे–पुस्तक, कलम, दूरदर्शन, कुर्सी, मोमबत्ती, घड़ी, गुब्बारा, मोबाइल फोन और इस प्रकार की अनेकानेक वस्तुएं। वस्तु चित्रण यथार्थ के निकट होता है। इस में कल्पना की गुंजाइश कम होती है। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा भली–भांति जानते हैं कि बच्चों को ऐसी रचनाएँ अत्यधिक पसंद आती हैं, अतः इन्होंने वस्तुओं पर बड़ी सुघड़ता और कौशल के साथ लेखन कार्य किया है। साथ ही बालकों को उनके वातावरण के अंतर्गत आने वाले पदार्थों से उन का परिचय करवाना भी इनका उद्देश्य रहा है। रचनाकार शर्मा ने वास्तविक चीजों को अत्यन्त रोचक, मनोरंजक, कुशलता के साथ व्यक्त किया है, जो बालकों को लुभाने में, आकर्षित करने में सक्षम माना जा सकता है। अगरबत्ती, टी.वी., घड़ी, कुर्सी, चाबी, पतंग, किताब जैसी वस्तुओं पर प्रवीणता, निपुणता के साथ कविताएँ, गीत, पहेलियाँ प्रस्तुत की हैं। कुछ उदाहरण जैसे–

सर–सर–सर सर्राटे भरता
फर–फर–फर फर्राटे
आसमान में सबसे न्यारा
रंग–रंगीला पतंग हमारा।[24]

'सारा दिन वह उधम मचाता
खेले गुल्ली–डंडा
परीक्षा में नंबर मिलता
उसको केवल अंडा"[25]

'दिन रात वह चलती रहती,
ना लेती थकने का नाम।
जब भी पूछो समय बताती,
देती बढ़ने का पैगाम।।[26]

रचनाकार शर्मा ने छोटी–छोटी चीजों जैसे पतंग, घड़ी, बस्ता, घर, कुर्सी आदि की महत्ता दर्शायी है, नन्हें मुन्नों को ये प्यारी–प्यारी वस्तुयें बड़ी अच्छी लगती हैं। पतंग बालकों की अत्यन्त प्रिय वस्तु है, चाहे उड़ाना आए न आए, मगर उसके साथ खेलना, उड़ाने का नन्हा प्रयास करना उन्हें बहुत आनंदित करता है। जिस घर पर वे रहते हैं, उससे बच्चों का घनिष्ठ लगाव होना स्वाभाविक है, बालक छोटी–छोटी बातों से डर जाते हैं और नहीं तो कुत्ते–बिल्ली, गाय से ही डर जाते हैं और घर में जाकर छिप जाते हैं, घर उनके लिए सब से सुरक्षित जगह होती है, यही भाव उपर्युक्त कविता में छिपा हुआ है। घड़ी के लिए लिखा है कि वह दिन रात चलती रहती है, थकने का नाम तक नहीं लेती, जब भी पूछो समय बताती है। इस प्रकार कवि ने छोटी–छोटी चीजों की महत्ता दिखाई है। रसगुल्ला सामने हो तो बात ही क्या, बड़े–बड़ो के मुँह में पानी आ जाता है, फिर बालक के तो कहने ही क्या, अहा! कह उठता है, आनंद आ जाता है। फिर चाहे उनका मुँह, कपड़े हाथ रस से सन ही क्यों न हो जाए–

गोल मटोल रसगुल्ला,
रस से भरा रसगुल्ला
मैंने खाया रसगुल्ला
अहा! मीठा रसगुल्ला।।[27]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रचनाकार शर्मा वस्तु के काव्यमय चित्र गढ़ने में भी सिद्धहस्त है, प्रवीण हैं। इन्होंने छोटी–बड़ी सभी वस्तुओं को बड़ी गहराई, सादगी, सरलता

आकर्षक रूप से प्रस्तुत करके बाल साहित्य जगत में अपना लोहा मनवा लिया है। निःसंदेह रचनाकार का वस्तु–चित्रण विशिष्ट है।

5.3 कल्पनाशीलता

'जहाँ न पहुँ रवि, वहाँ पहुँचे कवि' कवि को उसके मन के मुताबिक कल्पना लोक पहुँचाने की शक्ति ही कल्पना है। कल्पना मस्तिष्क एवं मन की एक ऐसी शक्ति, क्षमता, योग्यता को कह सकते हैं, जो उन चीजों, भावों, पदार्थों को निर्मित कर लेती है, जिन का अस्तित्व इस संसार में है ही नहीं, जिन्हें कभी देखा भी नहीं और न ही उनके बारे में थोड़ी भी जानकारी हे। यह अद्भुत, अद्वितीय चिंतन है। कल्पना यथार्थ ने परे का विचार है, जिसका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं होता। कहते हैं कि साहित्यकार, कलाकार कल्पना लोक में जीता है, तभी उस की रचनाएँ रोचक एवं अलौकिक आनंद देने में समर्थ होती हैं।

काव्य के साथ–साथ प्रत्येक कला का जन्म कल्पना की कोख से ही होता है। प्रत्येक कला में कल्पना एवं यथार्थ का समन्वय होता है। काव्य में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। काव्य की सृष्टि कल्पना के बिना कदापि सम्भव नहीं हो सकती। कल्पना अमूर्त को मूर्तता प्रदान करती है। भूत, भविष्य और वर्तमान से साक्षात्कार हम कल्पना के द्वारा ही कर पाते हैं। अतः काव्य में कल्पना की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है। इस प्रकार भाव भी अनुभूति आनंदमयी है। उसी प्रकार कल्पना की झांकी भी मनोहर और आकर्षक होती है। कल्पना पूर्वानुभूत वस्तुओं को नवीन परिधान एवं रंग–रूप में समाज के समक्ष उपस्थित करने की अद्भुत क्षमता रखती है। कल्पना का कोशगत आशय–कल्पना–सं. (स्त्री.) 1. नई बात सोचना, 2. मन की उपज, 3. मान लेना (जैसे शून्य अंक की कल्पना, अधिक कोण, अंश की कल्पना) 4. एक वस्तु से दूसरी वस्तु का आरोप 5. सजाना, लोक – (पु.) खयाली दुनिया, वाद – (पु.) 1. यह मत कि प्रायः सिद्धांत शुद्ध कल्पनाएँ हैं, 2. ऐसा मत जो शक्ति एवं कला को पूर्वानुमान द्वारा प्रस्तुत करे– वादी (वि.) कल्पनावाद को मानने वाला, शक्ति – (स्त्री.) उद्भावना शक्ति[28]

कल्पना का अंग्रेजी रूपान्तरण Imagination है–

Imagination - n. an idea, an imagine in mindभावना, मन की कल्पना

Imagine - t.i. to conceive, to from a metal image of,विचार करना, चिंतन करना[29]

If you imagine something that is not real or true, you think that is exists.[30]

कल्पना और साहित्य का गहरा रिश्ता है। किसी भी वस्तु का भाव सीधा–सपाट वर्णन रचना को रसहीन और उबाऊ बना देता है, जो पाठकों को अधिक समय तक बांध कर नहीं रख सकता। वही रचना कल्पना के अत्यल्प मिश्रण से इतनी आकर्षक, पठनीय बन जाती है कि पाठक या श्रोता उसे एक ही बैठक में पूरी करके दम लेते हैं। आदिकालीन साहित्य के लेकर

आज तक के साहित्य पर दृष्टिपात करने स ज्ञात होता है कि कल्पना साहित्य को बहुत प्रभावी बना देती है। चाहे रामचरितमानव हो, पद्मावत हो, सूर साहित्य हो, कालिदास का मेघदूत या कामायनी, सभी को कल्पना तत्त्व की उपस्थिति ने कालजयी बना दिया है। कृष्ण के बाल सौन्दर्य वर्णन और वाटिका में सीता के अप्रतिम सौन्दर्य वर्णन को कल्पना के अद्वितीय प्रयोग ने शाश्वत बना दिया है। संत तुलसी की यह अर्धाली अद्भुत कल्पना के संयोजन से अमर हो चुकी है।

'स्याम गौर किमी कहौं बखानी'
गिरा अनयन, नयन बिनु बानी'

समस्त वाग्ङमय कल्पना शक्ति से ही पठनीय, लोकप्रिय और चिरस्थायी है। यहाँ तक कि ऐतिहासिक, पौराणिक या सत्य घटनाओं को लेकर लिखे गए साहित्य को आकर्षक, रोचक, मनोरंजक, रसमय बनाने के लिए उसमें कल्पना के रंग समायोजित किये जाते रहे हैं। कल्पना के बिना बाल साहित्य की कल्पना भी अकल्पनीय है। बाल साहित्य का प्रमुख आधार कल्पना कही जा सकती है, क्योंकि बालक कल्पनालोक में, सपनों के संसार में जीता है। कल्पना के पंख लगाकर आनंद के आकाश में विचरण करता हैं। पंचतंत्र, लाल बुझक्कड़, भूत–प्रेतों की कहानियाँ, देवी–देवता की कथाएँ, कथासरित्सागर सभी कल्पनाधारित साहित्य हैं, जो चिरस्थायी हो चुका है। बालक इन्हें पढ़ते और सुनते नहीं थकता। बाल साहित्य जितना काल्पनिक होगा उतना ही सार्थक होगा, बच्चों को तो इसी में आल्हाद मिलता है, और ऐसा साहित्य पढ़कर वे स्वयम् अनेक प्रकार की कल्पनाएँ कर बैठते हैं। इसके विपरीत यथार्थवादी, सपाट तथा उबाऊ रचना की ओरवे देखते भी नहीं। बच्चों को आनेंद और मनोरंजन चाहिए, जो कल्पना ही दे सकती है। क्योंकि वास्तविकता कठोर होती है।

लेखक क्लार्क एलिजबेथ का मानना है कि "जब बच्चे कहानी सुनते हैं तो उसके साथ–साथ उनके मस्तिष्क में उस घटना विशेष का एक काल्पनिक चित्र बनता चलता है। इसके अलावा उससे सम्बद्ध अन्य कोई देखी या अनुभूत बात भी उनके मस्तिष्क में अनजाने ही चलती रहती है। इस तरह बच्चे कहानी सुनते समय अनेक नए–नए सपनों में खोए रहते हैं। इस तरह बच्चे कहानी सुनते समय अनेक नए–नए सपनों में खोए रहते हैं जो उनकी दुनिया की सीमा में ही होता है।"[31]

दीनदयाल शर्मा का बालरचना संसार कल्पना के सौन्दर्य से आप्लावित है। इन की कहानियाँ, नाटक, एकांकी, काव्य में भरपूर कल्पना शक्ति ने चार चाँद लगा दिए हैं। कुछ कल्पनाएँ तो इतनी अनूठी, प्यारी और मासूम है कि बड़े भी भावविभोर हो उठते हैं।'कवि स्वप्न–जीवों होते हैं, कल्पना–लोक में विचरण करते हैं, आदि उक्तियाँ कवियों के लिए सदियों से प्रचलित हैं। दीनदयाल शर्मा ने अपनी कविताओं में कल्पना तत्त्व का सम्मिश्रण बहुत उम्दा तरीके से किया है, प्रस्तुत हैं कुछ ऐसे ही कवितांश–

'अक्कड़–बक्कड़ बोकरी।

बाबाजी की टोकरी।

टोकरी से निकला बंदर

बंदर ने मारी किलकारी

किलकारी से हो गया शोर

शोर मचाते आ गये बच्चे

बच्चे सारे मन के कच्चे

कच्चे–कच्चे खा गये आम"[32]

बाबाजी की टोकरी, उसमें से बंदर का निकलना, किलकारी भरना, किलकारी से शोर का होना और शोर सुनकर बच्चों का इकट्ठा होना, सुरम्य कल्पना।इस कविता को पढ़कर एक प्रचलित कविता स्वतः स्मरण हो आई–'अक्कड़–बक्कड़ बम्बे बो...... अस्सी नब्बे पूरे सौ........।'

'हमने देखा अजीव अचम्मा,

पैर है जैसे कोई खम्भा।[33]

एक और ठोस किन्तु प्यारी कल्पना हाथी के लिए। हाथी की सूंड़, कान या पैरों के लिए रचनाकारों ने अनेक प्रकार की कल्पनाएँ की हैं। यहाँ भी हाथी के पैरों की तुलना खम्भे से की गई है जो सटीक है।

मीठे जल की झारी है,

नारी मेरी न्यारी है।[34]

अहा! क्या तक कल्पना है, एकदम अनूठी है, अकल्पनीय। नानी की तुलना मीठे जल की झारी से करना, आज तक शायद ही किसी रचनाकार ने ऐसे कल्पना की हो। 'झारी' शब्द आजकल प्रचलन में नहीं के बराबर है, क्योंकि अब तो गांवों तक में फ्रिज को चलन हो चुका है। ऐसें में 'झारी का प्रयोग 'न भूतो न भविष्यति। जिस प्रकार गर्मी में मीठे पानी कीझारी आनंदित करती है, सुकून देती हैं, उसकी प्रकार नानी की सान्निध्य, उनकी ममता–दुलार बालक को परमानन्द प्रदान करती है। एक शब्द में कहूँ तो यह उपमा अनुपमेय है।इसी प्रकार बकरी के लिए 'हिरणी की माई' की कल्पना भी अद्वितीय कही जा सकती है। ध्यान से देखने पर हिरणी और बकरी में काफी समानता दिखाई देती है, इस ओर किसी का ध्यान शायद नहीं गया। दीनदयाल शर्मा का गहरी सूझ–बूझ की दाद देनी पड़ेगी, बात को कहाँ से कहाँ से जाते हैं, अति सुंदर–

बकरी आई बकरी आई,

में–में करती बकरी आई।

पतली सी इसकी है काया,
दिखती है हिरणी की माई।।[35]

यहाँ नरेश कुमार मेहता की सुंदर कल्पनाधारित कविता प्रस्तुत है।

'चींचू चूहा चला बाजार
लाया एक सलोनी कार।
बैठ कार में पहुँचा दिल्ली
पीछे पड़ गई पुस्सी बिल्ली।
बिल्ली को बतलाकर धत्ता
चींचूखिसक गया कलकत्ता।
वहाँ कबरिया कुत्ता लपका
तो वह गोहाटी जा टपका।[36]

नाटककार शर्मा के नाट्य काव्य में कल्पना तत्त्व का संयोजन बेजोड़ है। 'फैसला' एकांकी पूरी तरह से कल्पनाधारित है। इसकी पृष्ठभूमि एवं पात्र का कल्पना संसार जंगल है, यथा शेर राजा, चीनू मुर्गी, चिपकू बंदर आदि नाम भी काल्पनिक है, जो बड़े लुभावने हैं। कथानक अवश्य अपने परिवेश से उठाया है जो निष्पक्ष न्याय के मूल्य को उद्घाटित करता है। जानवरों के संवाद, उनकी क्रीड़ाओं का काल्पनिक मानवीकरण अप्रतिम कहा जा सकता है। 'सपने' एकांकी की विषयवस्तु 'बच्चों को सपने देखने चाहिए पर आश्रित है, तथापि अथ से इति तक कल्पना का संयोग ही इसे वरेण्य बनाता है। पात्र संयोजन और कथा के गुम्फन ने नाटककार की कल्पना क्षमता को बेजोड बना दिया है।

अधिकांश कहानियाँ कल्पनाजीवी होती हैं। रचनाकार शर्मा की बाल कथाओं का ताना–बाना काल्पनिकता से ही बुना गया है। घटनाएँ, पात्र इसी संसार के अवश्य हैं, जिन्हें कल्पना के संयोग से बालोपयोगी बना दिया है। उदाहरणार्थ–'चमत्कारी चूर्ण' कहानी अपने परिवेश में रहने वाले ढोंगी बाबाओं से सावधान करती हैं, तथापि काल्पनिक सहयोगी घटना से चमत्कार उत्पन्न करके बालकों का दिल जीत लेती है। दुष्यंत और उसकी दीदी चूर्ण खाकर आकाश में उड़ने लगते हैं, वहाँ से उन्हें चोर चोरी करते हुए दिखाए गए हैं, जिन्हें वे पुलिस को पकड़वाते हैं, जैसे ही आँख खुलती हैं, ये सब सपने में बदल जाता है– नहीं दीदी, हाँ दीदी 'कहते–कहते दुष्यंत ने अपनी पीठ पर हाथ फिराकर देखा कि उसके पंख हैं या नहीं। पीठ पर पंख नहीं थे। तो क्या ये सपना था?[37]

दीनदयाल शर्मा की बाल कविताएँ खूबसूरत, स्वप्नलोक, कल्पनालोक का सृजन करती हैं। इनके विषय कवि ने अपने इर्द–गिर्द के परिवेश से ही लिए हैं, यथा–बंदर, भालू, मोर,

चिड़िया, शेर, बिल्ली, कुत्ता, मुर्गा, माँ, दादी, टी.वी., मोबाइल इत्यादि, जिन्हें कल्पना के सूत्र में पिरोकर अद्‌भुत माला का स्वरूप देकर सुनियोजित ढंग से व्यक्त किया है। पद्य के समानांतर गद्य में भी रचनाकार के कल्पना संयोजनको देखा जा सकता है। प्रायः सभी कथाओं, नाटकों का ताना–बाना कल्पना लोक के कैनवास पर बुना गया है। एक से एक विलक्षण कल्पनाएँ करने में दीनदयाल शर्मा पारंगत कहे जा सकते है।

5.4 नवीन तकनीक का प्रयोग

इक्कीसवीं सदी विज्ञान एवं संचार क्रांति की सदी है। दिन–प्रतिदिन नई–नई तकनीक बाजार आ रही हैं। रोज नए–नए आविष्कार हो रहे हैं। मोबाइल को ही लीजिये प्रति दो–चार दिन में नए फीचर वाला मोबाइल बाजार में आ चुका होता है। बाजारवाद ने घरों पर अधिकार जमा लिया है। हर क्षेत्र में नित नये प्रयोग हो रहे हैं। फ्रिज, वांशिग मशीन, टी.वी., बर्तन साफ करने की मशीन, कूलर, ए.सी. के साथ–साथ हजारों प्रकार के उपकरण बाजार में उपलब्ध हैं। सम्पूर्ण रूप से यह युग तकनीक और विज्ञान युग हैं। तकनीक मशीन नहीं अपितु मशीन बनाने की विधि होती है। तकनीक का आधार ज्ञान, अनुभव, प्रयोग है, इसमें सबसे पहले आंकड़े संचित किये जाते हैं, फिर उन्हें सम्पादित किया जाता है, निष्कर्ष निकालने के पश्चात् प्रयोग किया जाते हैं। यह सतत् विकसित होने वाली प्रक्रिया हैं। यह निगरानी ओर सोच का परिणाम होती है। तकनीक का सर्वप्रथम चीन में आविष्कर हुआ था।नवीन का सामान्यतः आशय नया, नई, नूतन, ताजा, जिसका आर्विभाव अभी–अभी हुआ हो, जो इसके पूर्व नहीं हुआ हो। तकनीक का अर्थ शिल्प, प्रविधि, कला, यंत्र आदि है।

इसका नवीन का शब्दकोशीय आशय–नवीन सं.–(वि.) 1. नया, नूतन 2. पहले पहल बना हुआ (जैसे नवीन आदर्श) 3. अनोखा ता–(स्त्री.)–नयापन, नूतनता–वादी (पु.)–नई बातों का पक्षधर,, प्राप्त – (वि.) – नया मिला हुआ नवीनतम–सं.–(वि.)–बिल्कुल नया[38]

New adj. not existing before, fresh, different, changed, modern, recent नवीन, नया, हाल का, अनभ्यस्त अपरिचित Nesness - n - novelty नवीनता, नयापन[39]

Cambrige Dictionaryमें नवीन का अर्थ अंकित है 1.जो अभी का या थोड़े समय का हो। 2. नूतन 3. प्राचीन का विपर्याय 4. जो पहले – पहल या मूल रूप से बना हो 5. अपूर्व और विचित्र या विलक्षण[40]

शब्दकोश की दृष्टि से तकनीक का अर्थ –तकनीक – (स्त्री.) प्रविधि, शिल्प विज्ञान

तकनीकी– अं. + हिं. (वि.) – प्राविधिक, शिल्पक[41]

अंग्रेजी में तकनीक को Technicका रूपान्तरण शब्द

Technics - n - the doctrine of arts in generalकलाओं का सामान्य सिद्धान्त, कलाओं की विद्याTechnique in. - mechanical art or skillयन्त्र कला।Technological adj. - pertaining to technologyविवरण सम्बन्धी[42]

नवीनता का अर्थ उपरोक्त परिभाषाओं के अनुरूप नया, जिस का उदय हुआ हो, ऐसा पहली बार हो, इसके पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ हो, नूतन, नयापन, अपूर्व, अनोखा, विचित्र, पुराने का विपर्याय आदि। तकनीक का आशय यंत्र कला, कलाओं का सामान्य सिद्धान्त, शिल्प विद्या, प्रविधि, कौशल, प्राविधिक एवं यंत्रों को बनाने की मशीन आदि। नई तकनीक अर्थात् नई प्रविधि, नूतन यंत्र कला, नई शिल्प विद्या, नवीन कला, जिस प्रविधि का अभी–अभी जन्म हुआ हो, ऐसी यंत्र विद्या जैसी पहले कभी नहीं सुनी या देखी हो इत्यादि। हिंदी साहित्य में भी रचनाकारों ने समयानुसार नई तकनीक, नए यंत्रों से सम्बन्धित विधियों को अपनाया है, नये शिल्प का प्रयोग किया है।साहित्य समाज का दर्पण माना गया है, अतः समाज में घटित होने वाले परिवर्तन साहित्य में भी लक्षित होते है। प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, और नई कविता के साथ ही नए–नए प्रयोग प्रारम्भ होने लगे। छोटी–बड़ी चीजों पर साहित्यकारों ने कलम चलाना शुरू किया। जैसे–जैसे तकनीक का विकास होगा गया, साहित्य में भी उसका भरपूर स्वागत किया गया। साहित्यकारों ने ऐसे विषयों पर एक से एक श्रेष्ठ रचनाएँ लिख कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। बाल साहित्यकारों ने भी नए यंत्रों, नई तकनीक, शिल्प विद्या के नए प्रयोग, नवीन आविष्कारों, वैज्ञानिकों पर खूब कलम चलाई। जैसे–जैसे नई चीजें बाजार में आती गई, बाल रचनाकर उन पर रोचक ढंग से गीत, कवितायें, कहानियां, नाटक, वैज्ञानिक की जीवनियाँ आदि लिखने लगे, जिन्हें बालकों ने भी बहुत पसंद किया, क्योंकि आज का बालक और किशोर नई तकनीक से जुड़ चुका है। टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट के युग का बालक इन चीजों को जानता है, पहचानता है, प्रयोग करता है, देखता है। वह बड़े लोगों से भी दो कदम आगे का बालक है। कार्टून फिल्में तो बालकों को सारे विश्व की जानकारी दे रहीं है।

डॉ. शेषपाल का प्रस्तुत कथन यहाँ प्रासंगिक है– "इस समय तक आते–आते बालक और बाल साहित्य पर पर्याप्त ध्यान दिया जाने लगा था। इस समय में मनोविज्ञान, बाल अनुभूति एवं बाल परिवेश पर चिंतन प्रारम्भ हो गया था। बाल साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक एवं बाल जीवनी आदि बाल साहित्य की अनेक विधाओं का विकास होना प्रारम्भ हो गया था। बाल साहित्य में वैज्ञानिक दृष्टि आ गई थी और पर्याप्त मात्रा में वैज्ञानिक विषयों पर बाल साहित्य लिखा जा चुका था।"[43]

"**नाज खान के विचार विचारणीय हैं**– कुछ पौराणिक पात्रों हनुमान, छोटा भीम को भी कार्टून पात्र के रूप में बच्चों तक पहुँचाया जा रहा है। बाल गणेश, माई फेड गणेश, हनुमान, रिर्टन ऑफ हनुमान जैसी फिल्में पहले ही आ चुकी है।"[44] आज का युग विज्ञान का युग है, हम

बालकों को तकनीक से अलग नहीं रख सकते। युगानुरूप साहित्यकार का धर्म होता है कि वह समाज में हो रहे परिवर्तनों का स्वागत करते हुए उसे अपने सृजन में अपनाएं।" कुछ इसी तरह के संदर्भ **बालरचनाकार प्रकाश मनु** ने भी अभिव्यक्त किए हैं– "आज का युग विज्ञान युग' और बिना अच्छे विज्ञान साहित्य के कोई भाषा अपने को मुकम्मल नहीं मान सकती। विज्ञान साहित्य आज की जरूरत है और चुनौती भी लेकिन बच्चों के लिए सहज और रोचक भाषा में विज्ञान साहित्य लिखना कहीं ज्यादा बड़ी चुनौती है। बाल साहित्यकार को रोज इस्तेमाल में आने वाले छोटे–मोटे शब्दों में ही विज्ञान की बड़ी–बड़ी पेचीदा बातों को समेटना है।"[45] उपरोक्त परिभाषाओं और विद्वानों के विचारों के सार है कि अन्यान्य क्षेत्रों की तरह बाल साहित्य में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण पूरी तरह समा चुका है। विज्ञान सम्बन्धी साहित्य आज की महती जरूरत बन चुकी है। लेकिन बाल साहित्य के लिए यह किसी चुनौती से कम नहीं है। सरल एवं रोचक भाषा में बाल साहित्य लिखना अत्यंत दुष्कर कार्य है। आज की तकनीकी युग में बालकों को इसकी शिक्षा देना अनिवार्य हो गया है। इसके बिना शिक्षा अधूरी होगी। वर्तमान युग में विज्ञान विषय और वैज्ञानिकों पर बड़ी मात्रा में बाल साहित्य लिखा जा रहा है। जो उल्लेखनीय कहा जा सकता है। कार्टून फिल्में इसे खूब बढ़ावा दे रही है।

दीनदयाल शर्मा नये युग के रचनाकार हैं, अपने समय के अनुसार चलने वाले हैं, स्वयं नई तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं। हनुमानगढ़ जंक्शन के प्रथम ब्लोगर होने का गौरव इन्हें प्राप्त हुआ है। दीनदयाल शर्मा ने भी तकनीकी उपकरणों पर बहुत ही आकर्षक, सरस, सुरूचिपूर्ण ढंग से लेखनी चलाई है और एक से एक सरस, सरल रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। टी.वी. शीर्षक कीएक सरस सी कविता उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

टी.वी. की है बात निराली,
टी.वी. सबको भाए
जग में कही भी कोई बात हो,
टी.वी. झट दिखलाए।[46]

सचमुच टी.वी. के तो कहने ही क्या, दुनिया भर की सारी खबरें चुटकी बजाते ही घर बैठे दिखा देता है। यह सबको बहुत प्यारा लगता है, विशेषकर बालकों को तो।वर्तमान समय में मोबाइल तो बालक के लिए एक खिलौने से अधिक नहीं है। दो साल बालक मोबाइल को पूरी तरह से चला देता है।आज तकनीक का बोलबाला प्रत्येक क्षेत्र मे है। बरसों से वोट भी मशीन द्वारा पड़ने लगे है। केवल बटन दबावो, वोट पड़ जायेगा–

'पेटी में ना पड़ते वोट,
वोट मशीनों में है बटन
बटन दबावो पड़ गए वोट.......[47]

बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का नई तकनीक और नई सोच को लेकर कोई जवाब नहीं हैं। अनुशासन शब्द का इंगलिश बारहखड़ी के अनुसार जो अनुशासन प्रस्तुत किया है, अपूर्व कहा जा सकता है–

प्रकाश : अब देखो बच्चों........ Aसे लेकर Z तक, 26 अक्षर होते हैं। इन सभी अक्षरों का एक क्रम होताहै जैसे– A का 1, B का 2 और Z का 26। इसी तरह 'डिसिप्लिन' में जो अक्षर जिस स्थान पर हैं, उनके नम्बर लिखिए (ब्लैक बोर्ड पर लिखते हुए) जैसे D4 परI–9 पर, S-19, C-3, I-9, P-16, L-12, I-9, N-14 तथा E-5 पर (बच्चों कि तरफ देखते हुए अब इन सबका योग कीजिए – 4+9+19+3+9+16+12+9+14+5 .... कितने हुए।

जागृतिविकास : (एक साथ) 100 हुए सर।

प्रकाश : (बोर्ड पर लिखते हुए) यस....... यह पूरे 100 अब इस शब्द की गहराई में देखिये (डिसिप्लिन) शब्द के भीतर भी अनुशासन छिपा है।[48]

वर्तमान समय में मोबाइल तो बालक के लिए एक खिलौना से अधिक नहीं है। दो साल बालक मोबाइल को पूरी तरह से चला लेता है। देखिये बालक की मोबाइल को लेकर फरमाइश–

माँ मैं भी मोबाईल लूँगा,
अच्छी अच्छी बात करूँगा
हर मौके पर काम ये आता,
संकट में साथी बन जाता।
होमवर्क पर ध्यान में दूंगा,
पढ़ने में पीछे न रहूंगा।
मेरी खबर चाहे कभी भी लेना,
एम.एम.एस.झट से कर देना।
स्कूल समय में रखूंगा बंद,
सदा रहूंगा मैं पाबंद।[49]

बालक मोबाइल लेने के लिए माँ से किस प्रकार मनुहार करता है, जिसका बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है। बालक माँ से कहता है कि मुझे भी मोबाइल लेना है, क्योंकि हर समय का आने वाली चीज है। मैं इससे अच्छी अच्छी बातें करूंगा साथ ही साथ पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान दूंगा, होमवर्क भी समय पर करूँगा, जब चाहों मेरी खबर भी आप ले सकती हो, मैसेज के द्वारा। और हाँ, स्कूल में बंद रखूंगा, समय का पाबन्द भी रहूंगा। इस प्रकार के भाव से पूरित मदनगोपाल लढ़ा का बालगीत दृष्टव्य है–

पांव पटक पर बोला बंटी,

मम्मी मैं मोबाईल लूँगा

मोबाईल से बातें सस्ती

खट्टी–मिट्ठी अच्छी–अच्छी

मन भावन रिंग टोन लगाऊँ

कालर टोन से सबको लुभाऊँ[50]

'क्षमा शर्मा'– 'आज का युग विज्ञान का है', हम बालकों को तकनीक से अलग नहीं रख सकते। युगानुरूप साहित्यकार का धर्म होता है कि वह समाज में हो रहे परिवर्तनों का स्वागत करते हुए उसे अपने सृजन में अपनाए।आज के समय में बच्चों को तकनीक से अलग नहीं रखा जा सकता।...... तकनीक बच्चे के लिए किसी ईश्वर की तरह है आजकल कुछ इस तरह से बताया जाता है मानो बच्चे की हर समस्या हल हो गई हो.........।[51] बारिश कैसे होती है, इस प्रसंग को लेकर प्रत्येक बच्चे के मन में कई प्रकार के सवाल उठते हैं। वह बड़ो से पूछता है कि बरसात कैसे होती है। रचनाकार शर्मा ने बड़े सरल तरीके से अपनी एक बाल कथा में उसके पात्र दीपू के माध्यम से ही प्रयोग द्वारा सिद्ध किया कि बारिश ऐसे होती है। मैं आपको बरसात की कहानी सुनाता हूँ। 'ठीक है सुनाओ।' अख़बार समेटते हुए दीपू के पापा ने कहा।

'एक बर्तन में गर्म पानी भरते हैं। पापा, वह बर्तन होता है ना,

'वही........ इतना बड़ा सा। दीपू ने अपनी हथेलियों से बर्तन का आकार बनाते हुए कहा।'

हाँ पापा, इतना ही बड़ा होता है। जिस के एक तरफ हाथी की सूंड सी होती है, जिस से चाय बाहर आती है।

'अच्छा–अच्छा....... वह क्या! उसे तो केतली कहते हैं। दीपू के पापा ने बताया।

'हाँ केतली। केतली में गर्म–गर्म पानी डालते है। तो उसके सूंड वाले मुंह से भाप निकलती है। 'हाँ, भाप तो निकलेगी ही, जब पानी गर्म होगा। उसके पापा बोले।'

'केतली के सूंड वाले मुंह के सामने कांच का एक गिलास रख देंगे।'

'फिर? दीपू के पापा ने जिज्ञासा प्रकट की।

'फिर गिलास में बर्फ का एक टुकड़ा डाल देंगे, तब केतली से निकली भाप गिलास से टकरा कर पानी बन जाएगी और यही भाप पानी बनकर नीचे गिरने लगेगी।

'अरे वाह! दीपू तूने तो कमाल कर दिया भई।' दीपू के पापा खुश होकर उसे चूमने लगे।[52]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कह सकते है कि दीनदयाल शर्मा नए युग के रचनाकार हैं, अपने समय के साथ कंधे से कंधा मिलकर चलने वाले साहित्यकार हैं, अपनी रचनाओं में नवीन प्रविधियों का जम कर प्रयोग किया है, वो भी अत्यन्त सहजता और सरलता के साथ।

5.5 पशु–पक्षी और वन्य जीव

पशुओं को दो श्रेणी में विभाजित किया गया है, एक पालतू पशु, दूसरे जंगली पशु। पालतू पशुओं में गाय, बैल, बकरी, ऊँट, कुत्ता, बिल्ली, भैंस, घोडा, गधा आदि तथा वन्य जीवों में शेर, बाघ, हाथी, लोमड़ी, खरगोश, हिरण, चीता, जेबरा, जंगली भैंसे, गेंडा, भालू आदि, पशु–पक्षियों की यूँ तो हजारो प्रजतियाँ हैं, पक्षियों में प्रमुख चिड़िया, मोर उल्लू, कौआ, कोयल, तितर, तोता, कबूतर, बटेर, बगुला, सारस, बतक, मुर्गा आदि इन्हें नभचर, खग, पंछी नाम से जाना जाता है। इसी भाति पशुओं को चौपाया जानवर के नाम से भी पुकारते हैं।शब्दकोश के अनुसार :

पशु से तात्पर्य है–पशु–सं. (पु.) 1. जानवर, चौपाया (जैसे शेर), चर (पु.) पशुओं के चरने हेतु सुरक्षित, 2. जंतु, प्राणी (जैसे पशु मांसाहारी नही) भूमि[53]।

Animal n. edj. an organised being endowed with life and voluntary movement aquadrupedजंतु (प्राणी, पशु, जीवधारी पशु सम्बन्धी Animal kingdom प्राणि वर्ग, A animal pleasurमे विषय सुख[54]

पक्षी से आशय–पक्षी–सं.–(वि.) (पु.) चिड़िया–पालक (वि.)– चिड़िया पालने वाला, विज्ञान (पु.) – वह विज्ञान जिस में पक्षियों के प्रकारों, जातियों, रहन–सहन के ढंगों, उनकी प्रकृति आदि का विवेचन होता है।[55]

Bird-n.a feathered,पक्षी, खग, चिड़िया

वन्य–स. (वि.) 1. वन में उत्पन्न होने वाला, 2. जंगली (जैसे पशु पक्षी)[56]

Forest- n. a large tract of land covered with trees, an extensive woodजंगल वन[57]

इस प्रकार आशय के अनुरूप पशु का अर्थ पैर वाले जानवर, जो धरती पर चलते हैं। पक्षी यानि पंखों वाले प्राणी जो आकाश में उड़ते हैं और वन्य जीव (जिन में पशु और पक्षी दोनों शामिल है।) पशु–पक्षी और वन्य जीव पृथ्वी और पर्यावरण के अहम् कारक है। इनके बिना जीवन कि परिकल्पना भी निराधार है। जलचर, नभचर, थलचर और मानव सभी जीवन के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए सभी जीवों कि उपस्थिति अत्यावश्यक है। मानव की बढ़ती स्वार्थ लिप्सा, शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, भौतिकवाद की अन्धी–दौड़ वश कुदरत का दोहन निरन्तर जारी है। दुष्परिणाम स्वरूप ओजोन परत दिनों–दिन पतली होती जा

रही है। सागरों का जल स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है, बर्फ तेजी से पिघल रहा है, जल के लिए त्राहि–त्राहि मची हुई है। हिम भालू पतले होने लगए गए हैं, जीवों और वनस्पतियों की हजरों प्रजातियाँ समाप्त हो चुकी है। दैनिक भास्कर के परिशिष्ट 'मधुरिमा' के अनुसार'–'पचास हजार जीव व पादप प्रजातियाँ उष्णकटिबंधीय वनों से हर साल विलुप्त होती जा रही है। मतलब 137 प्रजातियाँ रोज।[58] एक सर्वे के अनुसार 250 वर्षों में पेड़ पोधों की 600 प्रजातीय विलुप्त हो गई है।

ऐसे कठिन समय में पशु–पक्षियों, वन्य जीवों का संरक्षण जरूरी हो जाता है। इसके लिए बालकों को बचपन से ही प्रकृति, पशु–पक्षियों, वन्य जीवों से जोड़े रखना, उनसे प्रेम कर सिखाना आवश्यक है। यह कार्य साहित्यकार प्रारम्भ से ही करते आ रहे हैं एवं कर रहे हैं। प्रकृति–चित्रण साहित्य की विशिष्ट विशेषता और तत्त्व माना गया है। अनेक रचनाकारों ने प्रकृति और जीवों का भव्य तथा मधुरिम अंकन किया है। यथा–सूर, तुलसी, बिहारी, रहीम, कबीर, पन्त, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा, जायसी आदि। बाल साहित्यकार की इस विषय में विशिष्ट भूमिका रही है। आदिकाल से ही बाल रचनाकार पशु–पक्षियों, वन्य जीवों पर खूब रचनाएँ लिखते आ रहे हैं, यह क्रम आज भी जारी है। सर्वाधिक प्रकृति सम्बन्धी गीत, कवितायें, कहानियाँ, बाल साहित्य में ही रची गई हैं। पंचतंत्र की कहानियाँ, मोगली धारावाहिक इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने सबसे अधिक बाल गीत, कवितायें, कहनियाँ एवं नाटक में पशु–पक्षियों व वन्य जीवों पर ही लिखी हैं। यह उनकी बहुत बड़ी विशेषता मानी जा सकती है। प्रस्तुत है कुछ उदाहरण–

'बिल्ली बोली।
म्याऊँ–म्याऊँ।
दूध मलाई
डट के खाऊ।[59]

हूँ–हूँ करके
शेर दहाडा।
मंदिर में
बज गया नगाड़ा।[60]

उल्लू होता सबसे न्यारा,
दिखे इसे चाहे अंधियारा।
लक्ष्मी का वाहन कहलाए,
तीन लोक की सैर कराए।।[61]

बोला कबूतर गटर गू,
गटर गू भई गटर गू।[62]
चिड़िया करती चीं–चीं ची,
चूहा करता चूं–चूं–चूं।।[63]

उपरोक्त कवितायें पशु–पक्षियों बोली की चिन्हित करती है, जैसे बिल्ली की म्याऊँ–म्याऊँ, शेर की दहाड़ जैसे कबूतर की गुटर गू–गुटर गू, चूहे की चूं–चूं आदि। प्रस्तुत बाल गीतों में पशु पक्षियों की बोलियों पर आधारित गीत और शिशु गीत है। शिशु बहुत आसानी से पक्षियों की बोलियों पहचान सकते हैं, इन गीतों के माध्यम से। 'उल्लू' गीत भी बहुत अच्छा है, 'तीन लोक की सैर' पंक्ति से करवाने से अर्थ में विस्तार आ गया है और बालकों के मन में जिज्ञासा का भाव भी जाग्रत होगा कि तीन लोक कौन से होते हैं, कैसे होते हैं और उल्लू लक्ष्मी का वाहन होता है, ये भी जान सकेंगे। कुछ और उदाहरण–

घोड़ा जोर से हिनहिनाया।
हमने अनुशासन अपनाया।[64]
ढोलक बाजे ढम ढम ढम
नाचे भालू जी छम छम।

आसमान में बादल आते,
मोर नाचते सबको भाते।
सब का लेता है चित मोर,
कितने सुंदर लगते मोर।[65]

उपर्युक्त 'घोड़ा' शिशु गीत है, इस में घोड़े की आवाज पर विशेष जोर दिया है, बच्चे समझ सकेंगे कि घोड़े की आवाज को 'हिनहिनाना' कहते हैं। 'चिड़िया' भी बहुत सुंदर गीत है। 'भालू' इस गीत ढोलक की आवाज और भालू के छम–छम नाचने की पहचान है। कहते हैं कि जब आसमान में बदल छाते हैं तो मेर अपने पंखों को फैलाकर नृत्य करने लगते है। मोर का नाच देख कर बालक विशेष तौर पर प्रसन्न होते है।

इस प्रकार रचनाकार शर्मा ने पशु–पक्षियों का बहुत सुंदर एवं मनभावन चित्रण किया है,जिन्हें इनकी विशेषताओं, बोलियों, स्वभाव, रंग, बनावट, उनसे मिलने वाली सीख आदि के आधार पर प्रस्तुत किया है, साथ ही बालकों की अपनी सरल, सरस, मासूम भाषा में व्यक्त किया है।

दीनदयाल शर्मा की कहानियों, नाटकों एकांकियों के पात्र भी वन्य जीव हैं, पृष्ठभूमि भी अरण्य की है। इन पात्रों के नाम भी बड़े रोचक है। 'मित्र की मदद' कथा संग्रह की सारी

कहानियां जंगलाराधित हैं। 'मित्र की मदद' के पात्र गिल्लू गिलहरी और टिल्लू तोता है। पूरी कथा इन्हीं पात्रों के इर्द–गिर्द चलती है, कहानी का समापन बहुत संवेदनशील तरीके से किया गया है। इसी प्रकार इस पुस्तक की अन्य कहानियों के सभी पात्र जंगली पशु ही हैं, उनके नाम भी बड़े रोचक हैं। स्वाभावानुसार ही उनके चरित्र दर्शाए गये हैं, जैसे बंदर चालाक होता है, लम्पट भी, नकलची भी तो उसे वैसा ही अभिनय दिया है। कंडक्टर के समझाने के बाद भी –

'भालू कंडक्टर बोला – तुम अभी बच्चे हो। बस में चढ़ने उतरने के नियम नहीं जानते। अतः बस रूकने के बाद ही उतरा करो। सब बच्चों ने कंडक्टर की बात से सहमति जताई। चिपकू ने धीरे से कहा– मैं तो अपने गुरूजनों की तरह चलती बस से ही उतरूंगा।[66]

चिपकू बंदर चलती बस से उतर कर अपने पैर तुड़वा लेता है क्योंकि मास्टर जी की नकल करता है, इन कहानियों के कुछ पात्रों के नाम बिबो बकरी, चमकू हिरण, काली कुतिया, भूरी सुअरी, मोर राजा, मंत्री मन्नू उल्लू, कलुआ कौआ, चिकी कमेड़ा, चीकू कमेड़ा, गबदू भालू मलमल खरगोश, राजा शेरसिंह, हलकू घोडा कंडक्टर भालू आदि।

रचनाकार के अन्य कथा संग्रहों एवं नाटकों के सभी पात्र वन्य प्राणी ही हैं, कुछेक को छोड़कर। बाल नाटक–जैसे–'फैसला' आदि। सभी किताबे सचित्र होने के कारण और भी उपयोगी बन गई है। बच्चे आसानी से इन पशु पक्षियों को पहचान भी सकेंगे।

5.6 सामाजिकता

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अनादिकाल से ही मानव ने एकाकी जीवन से तंग आकर अन्य लोगों के साथ रहना प्रारम्भ किया होगा और इस प्रकार के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई होगी जिसका अति उन्नत स्वरूप हम आज देख रहे हैं। दार्शनिक कहते हैं कि बिना समाज के मानव का जीवन यापन असंभव है, जो सम्पूर्ण रूप से सच भी है। शब्दकोशनुसार समाज से आशय–समाज–सं. (पु.) 1. समुदाय, समूह, 2. सभा (जैसे आर्य समाज, संगीत समाज़, 3. झुंड, गिरोह समूह (जैसे सत्संग समाज, 4. समान कार्यकर्ताओ का समूह (जैसे व्यापारिक का समाज), 5. संघठित संस्था, 6. आयोजन, तैयारी–कार्य (पु.) समाज का काम–गत (वि.) समाज के अंदर की, समाज में आयाहुआ–वाद (पु.) सत्ता का सामूहिक रूप होने का सिद्धांत (जैसे समाजकी व्याख्या) सेवक (पु.) समाज हित में कार्य करने वाला[67] अंग्रेजी में समाज के लिए Social शब्द का प्रयोग किया जाता है– सामाजिक[68]

समाज का फलक अत्यन्त व्यापक है। इसमें मनुष्यों के साथ–साथ समस्त जीवधारी, रिश्ते–नाते, सभ्यता–संस्कृति, जीवन मूल्य, रहन–सहन, खान–पान, नृत्य, संगीत, साहित्य सहित सभी कलाएं, व्यवसाय, एकता, भाईचारा, धर्म, तीज–त्यौहार के साथ अन्य सभी कारक समविष्ट हैं। साहित्य और समाज का रिश्ता आदिकाल से शाश्वत है क्योंकि साहित्य स्वयं समाज का

प्रतिबिम्ब होता है। दोनों परस्पराश्रित हैं। साहित्य की प्रत्येक रचना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाज से जुड़ी होती है, कोई भी रचनाकार समाज से विलग होकर सृजन नहीं कर सकता। यह साहित्य का मर्म है, धर्म है।बाल साहित्य भला समाज से विलग कैसे रह सकता है। सभी बाल सृजन–धर्मियों ने अपने–अपने समय के समाज का चित्रण किसी न किसी रूप में अवश्य किया है। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा स्वभाव से कुछ अधिक ही मिलनसार, हँसमुख, सहयोगी, विनोदी, सबको हँसाने वाले है। इनकी हरेक रचना समाज का दर्पण कही जा सकती। डॉ. **सत्यनारायण 'सत्य'** ने दीनदयाल शर्मा के लिए लिखा भी है–

"उनका सजह निश्छल और सौम्य व्यवहार, नयों के प्रति अपनापन, अपने हम उम्र रचनाकारों के साथ जीवंत आत्मीयता और वरिष्ठ साहित्यकर्मियों को पर्याप्त मान–सम्मान, दीनदयाल जी बहुत अच्छी आदत है। हर बार वहीं निश्चलता प्रेम, अपनापन और हँसी–ठहाकों के बीच मेलजोल दीनदयाल जी बार–बार मिलने को उत्सुकता पैदा करता है।"[69]

"इस शख्स की हाजिरजवाबी कमाल है। आप इस शख्स से मिलकर कभी बोर नहीं हो सकते तो आप भी अगर तनाव, दबाव से जूझ रहे हैं तो इस शख्स से कह सकते हैं। इस शख्स का नाम है श्री दीनदयाल शर्मा। मुझे गर्व है कि पिछले पांच बरस से मैं उनका मित्र हूँ।"[70]

दीनदयाल शर्मा की हरेक रचना समाज का दर्पण कही जा सकती है। पर्व, सद्भाव, सहयोग, परिजन, खेल–तमाशे, स्वच्छता, जीव–जंतु, पशु–पक्षियों के रूप में समाज की झलक स्पष्टतः दर्शनीय है। रचनाकार शर्मा चाहते हैं कि समाज के शांति, सद्भावना, अमन–चैन रहे सत्य, अहिंसा का बोलबाला हो। इसके लिए गांधी जी से गुहार प्रस्तुत हैं–

'शांति, अमन और सत्य–अहिंसा
पाठ कौन सिखलाए,
समय नहीं है पास किसी के,
कौन किसे समझाए
तुम आ जाओ गांधी बाबा,
हो सबका उद्धार[71]

प्रस्तुत कविता में बालक बांधी बाबा से मनुहार करता है कि आप वापस आ जाओ, सत्य, अहिंसा, अमन–चैन का सबक सभी को सिखा जाओ, क्योंकि आज यह सब करने केलिए किसी के पास समय नहीं है।जाति–पाति के भेदभावों से कवि शर्मा कोसों दूर हैं, मिलकर पर्व मनाना, परस्पर खुशियाँ बाँटना, सब से प्रेम करना कुछ ऐसा ही सन्देश देते हैं। चाहे होली हो, दिवाली हो या क्रिसमस या फिर नया साल। प्रस्तुत कविता–

नया साल लेकर आया,
खुशियों का त्यौहार,
इक–दूजे में खुशियाँ बांटे,
समझें हम त्यौहार
जाति–पाति और भेदभाव से,
यह दिन कोसों दूर,
दिन भर बांटे प्रेम–प्यार के,
संदेशे भरपूर।[72]

कवि कहता है कि नया साल खुशियाँ लेकर आया है, आओ हम सारे भेद भाव मिटाकर, मिलकर इसे मनाएं, खुशियाँ, प्रेम, प्यार, बांटे ताकि हमारा पर्व मनाना सार्थक हो।प्रत्येक पशु, पक्षी हमारे सहचर है, मित्र हैं, इन सब से प्यार करना हमारा सामाजिक दायित्व है। देखिये बच्चों का पंसदीदा जानवर हाथी का बाल गीत–

'हाथी आया, हाथी आया,
काला–काला हाथी आया।
सूंड हिलाता हाथी आया,
कान हिलाता हाथी आया।[73]

घर–परिवार में बड़े–बुर्जुगों को चिड़ाने में बालकों का बड़ा मजा आता है। कभी दादा जी के चश्मे को लेकर, तो कभी उनके नकली दांत को लेकर। दादी, नाना, नानी, मौसी, बुआ इस सबको चिड़ा–चिड़ा कर बच्चे किलकारियां भरते हैं, तो कभी मोटे दादाजी के नकली दांत देखकर उनको हाथी का बच्चा कहते हैं, कभी मौसी को बिल्ली कह कर चिढ़ाते हैं, खिल्ली उड़ाते हैं। ये ही है बाल सुलभ भोलापन, प्रस्तुत है कुछ रचनाएँ–

मोटे–ताजे दादाजी,
जब भी नकली दांत दीखते।
सारे बच्चे हाथी कह कर,
हँसते–हँसते उन्हें चिढ़ाते।[74]

चम्पू रोज
उडाता खिल्ली,
मौसी को
कह देता बिल्ली।[75]

किताबों में नानी

कहानी सुनाती है।

पर मेरी नारी रात को

चुपचाप सो जाती है।[76]

प्रस्तुत रचना में बालक को शिकायत है कि सब की नानी रोज रात को कहानी सुनाती है, किन्तु मेरी नानी बिना कहानी सुनाए ही सो जाती है। अब बालक राजा–रानी की कहानी सुन–सुन कर ऊब चुके है, अब वे नानी से कोई नई कहानी सुनाने की जिद करते हैं, क्योंकि आज का बालक नए जमाने का है, बहुत कुछ नया जानना चाहता है। बच्चे भेदभाव से बहुत दूर होते हैं, वे आपस में मिलजुल कर रहते हैं, और खेलते है, इसी भाव का एक गीत है–

खेंलेगे हम सारे बच्चे,

इक दूजे के आगे पीछे

जुड़कर रेल बनायेंगे

गीत खुशी के गायेंगे।[77]

बच्चों द्वारा मिलकर रेल बना कर खेल खेलना, बच्चों का बहुत प्यारा खेल है। सब बालक आगे–पीछे रेल के डिब्बे की भांति जुड़ते हैं, पीछे वाला गार्ड बनता है। इस प्रकार सब बच्चे खुशी मनाते है। यही है बाल्यावस्था का अद्भुत आनंद। सर्कस का जोकर सबको हँसाता है, खुश करता है, इसलिए हर उम्र के व्यक्ति को भाता है। अपनी मर्जी का मालिक जोकर का दीनदयाल शर्मा ने 'जो–कर' कहलाए कहकर बड़ा अच्छा विश्लेषण किया है–

मनमर्जी का मालिक है ये,

'जो–कर' यह कहलाए।

बच्चा बूढ़ा, नर और नारी

सब के मन को भाए।।[78]

भारत देश त्यौहारों का देश है, साल भर में अनगिनत पर्व आते हैं, होली, दिवाली, दशहरा, राखी और भी कई सारे। ये सभी पर्व हमारी सामाजिक व्यवस्था को सुदृद्ध बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दीनदयाल शर्मा ने कई त्यौहारों का जिक्र करते हुए गीतों की रचना की है, एवं हमारे देश में छः ऋतुएं होती है। उन पर भी रचनाकर्म किया है। प्रस्तुत हैं कुछ गीत–

सालों साल दशहरा आता,

पुतला झट बन जाए।

बंधा हुआ रस्सी से रावण,
खड़ा खड़ा मुस्काए।[79]

दीपों का त्यौहार दीवाली,
आओ दीप जलाएं।
भीतर के अंधियारे को हम,
मिलकर दूर भगाएं।
सुंदर सुंदर पहन के पकड़े,
घर–घर मिलने जाएँ।
इक दूजे में खुशियाँ बांटे,
सब अपने बन जाएँ।[80]

हमारे देश में होली, दीवाली, दशहरा और राखी, चार बड़े पवै माने जाते है। बाल साहित्यकारों ने इन त्यौहार पर जमकर रचनाएँ लिखी है। दीनदयाल शर्मा ने भी सभी पर्वो पर अपनी कमल का जाूद चलाया है। दशहरा प्रति वर्ष आता है, हर बार रावण का पुतला बनाया जाता हैं, फिर उसे रस्सी से बांधा जाता है और रावण है कि खड़ा–खड़ा मुस्काता है। इसी के साथ प्रकाश पर्व दीवाली का भी भव्य अंकन किया है। दीवाली हमारे देश का सब से बड़ा त्योहार है, कवि बच्चों से आह्वान करता है कि आओ हम सब मिलकर दीप जलाएं, जिससे अन्तर्मन में बसा भेद–भावों, ऊँच–नीच, जाति–पाति के भेदभाव और अंघकार दूर हो जायें, भीतर उजास छा जाये। पर्व है तो, नए–नए, सुंदर–सुन्दर परिधान धारण करें, घर–घर जाकर सब से मिलें, परस्पर प्यार, खुशियाँ बांटे, मिठाईयाँ खाएं, शुभकामनायें प्रदान करें और सब को अपना बनायें।

रंगो का त्यौहार जब आए,टाबर टोली के मन भाए।
नीला, पीला, लाल, गुलाबी,रंग आपस में खूब रचाए।[81]

सर्दी आई, सर्दी आई,ओढ़े कम्बल और रजाई।
ज्यों–ज्यों सर्दी बदली जाए,कपड़ो की हम करें लढ़ाई।[82]

रंगों का त्यौहार होली बच्चों का सर्वाधिक मन पसंद पर्व है, टाबर–टोली की तो बात ही क्या, परस्पर खूब रंग लगाते है, हुडदंग करते हैं, मस्ती करते है, ये ही तो होली का आनंद है, जिसे बालक भरपूर उठाते हैं।कवि ने सर्द ऋतु का भी बड़ा ही अनुपम वर्णन किया है। सर्दी के आते ही सब कम्बल और रजाई ओढ़ने लगते हैं और ज्यों–ज्यों सर्दी बढ़ती जाती है उसी अनुपात में गर्म कपड़ो की लदाई भी शुरू हो जाती है। खूब खाने एवं खूब कपड़े पहनने में ही शीत का आनंद छिपा है।काव्य के साथ दीनदयाल शर्मा के गद्य में भी सामाजिक चेतना दर्शनीय है। सभी कथाओं और नाटकों में सामाजिक जागृति के भाव कूट–कूट कर भरे हुए है। 'मित्र की

मदद' कथा संग्रह में 'मित्र की मदद' में गिल्लू गिलहरी अपने मित्र टिल्लू तोते को पिंजरे से आजाद करवाती है, इस कहानी में 'मैत्री' जीवन मूल्य की पुष्टि होती है कि आदमी को समाज मे परस्पर सहायता करनी चाहिए एवं जरूरत पड़ने पर लेनी भी चाहिए। "टिल्लू की आजादी देख कर गिल्लू गिलहरी की आँखे भी नम हो आई, वह अपनी नम आँखों से उसे बहुत देर तक देखती रही।"[83]

'बिबो बकरी की हिम्मत' में वात्सल्य भाव की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई। 'लालच का फल' काली कुतिया और भूरी सूअरी की कथा है। इसमें भी ममत्व भाव और लालच बुरी बला है, को दर्शाया गया है। भूरी और काली सहेलियाँ हैं। दोनों भोजन की तलाश में सुबह–सुबह निकलती है, सड़क के बीच में पड़े खाने को खाने लगती है, तभी एक ट्रक आता दिखाई देता है, काली कुतिया कहती है कि भूरी सड़क से दूर हट जाओ, ट्रक आ रहा है लेकिन भूरी कहती है अभी तो बहुत दूर है और कुछ भी देर से धमाका होता है, भूरी सुअरी ट्रक की चपेट में आ जाती है, काली उसे अस्पताल ले जाती है, जहाँ उसका इलाज चलता है। जब तक भूरी ठीक नहीं होती काली उसके बच्चों को भी अपना दूध पिलाती है, और उनका पालन करती है–"काली अपने बच्चो के साथ–साथ भूरी के बच्चों को भी दूध पिलाने लगी।"[84]

'मोर राजा का फैसला' कथा में गलत साक्ष्य के आधार पर मोर राजा चिंकी कमेड़ी को सजा देने ही वाला होता है, तभी परदेश से उसका पति चीकू कमेडा आ जाता है और सही मुजरिम कल्लू कौआ का पता लगाकर उसे सजा दिलवाता है, इस प्रकार मोर राजा द्वारा उचित न्याय किया जाता है। 'दृढ़ संकल्प का चमत्कार' जंगल में शराब की दुकान खुलने की समस्या पर आधारित है। यह समाज की बहुत बड़ी समस्या है। जंगल का राजा शेर सिंह जंगल में शराब की दुकान खुलवाने का ऐलान करता है, पशु पक्षियों के विरोध करने पर उन्हें कुछ दिनों तक मुफ्त में शराब देने का लालच देकर अपनी बात मनवा लेता है। धीरे–धीरे शराब पीने से कई परेशानियाँ अपने लगती है, जानवरों की पत्नियाँ और बच्चे बहुत विरोध करते हैं। अंत में सभी जानवर शराब नहीं पीने का दृढ़ संकल्प करते हैं, कोई दुकान पर पैर भी नहीं रखता और जंगल में फिर से खुशहाली लौट आती है 'और एक दिन शराब की दुकान बंद हो गई। उस दिन का जंगल के सभी जानवरों ने उत्सव की तरह मनाया।"[85]

'चमत्कारी चूर्ण' संग्रह कि प्रथम कथा में ढ़ोंगी बाबाओं द्वारा मासूम बालकों` साथ छल करना, झूठ बोलना तथा उन्हें ठगने जैसी सामाजिक बुराई का कड़ा विरोध किया गया है। 'प्रहेलिका की पहेलियाँ' में कथा की नायिका प्रहेलिका ऐसी गूढ़ पहेलियाँ पूछती है कि बड़े–बड़े लोग भी बगले झाँगने लगते है। 'सब से बड़ी सजा' कहानी राष्ट्र–प्रेम एवं देश भक्ति की भावना आधारित है। इसमें राष्ट्र–गान का सम्मान करने पर बल दिया है। 'ठोकर' में किसी भी जड़ या चेतन को ठोकर नहीं मारना चाहिए, ऐसा भारतीय संस्कृति में माना गया है, इस मुद्दे को उजागर

कियाहै। 'पापा झूठ नहीं बोलते' कथा की 'इनाम और सजा' में अच्छे कार्य के लिए इनाम और गलत कार्य करने पर सजा का प्रावधान है, इस संदर्भ को दीनदयाल शर्मा ने सुदंर तरीके से प्रस्तुत किया हैं।

'पश्चाताप के आंसू' व 'आखरी हथियार' कहानियाँ में गलती होने पर पश्चाताप करने, क्षमा मांगने तथा मुआफ करने जैसे मूल्यों को उठाया गया हैं। 'शिवगणेश की चतुराई' में जो दिखता है वो बिकता है, आज का युग प्रचार–प्रसार का है, जितना विज्ञापन होगा उतना ही सामान बिकेगा, यही मुद्दा इस कथा का मुख्य आधार है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' में लड़के–लड़की में आज भी असमानता की जा रही है। लड़के के जन्म पर थाली बजाने की परम्परा अभी भी कायम है। जब कि कन्या के जन्म पर ऐसा नहीं किया जाता, अपितु परिजन दुखी होते है। इनमें दीनदयाल शर्मा ने बहुत बड़ी सामाजिक बुराई पर करारा प्रहार किया है।

'बड़ों के बचपन की कहानियाँ मे उचित न्याय, दृढ़संकल्प, सच्ची लगन, परिश्रम का फल, कर्म में विश्वास आदि जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया है। 'शंखेश्वर के सींग' संग्रह में कोयल घोसला क्यों नहीं बनाती, मोर के पैर बदरंग क्यों हुए, घोड़ा खड़ा खड़ा क्यों सोता है, कौआ काला कैसे हुआ, आदि विषयों में कहानियाँ गढ़ी गई हैं। घोड़ा खड़ा–खड़ा क्यों सोता है, रचनाकार शर्मा ने इस कहानी के द्वारा बताया कि जंगल में एक साधु होता है, उसे पशु–पक्षियों से अनन्य प्रेम होता है, उसके पास कई पशु–पक्षी होते हैं, उनका वह बड़ी तन्मयता से पालन से पालन करता है। जंगल में पशु–पक्षी कम होते देखकर वह उन्हें शिकारियों से बचाने के लिए चारों दिशाओं में चार जानवरों को रात को पहरेदारी के लिए नियुक्त करता है। पूर्व दिशा मे ंहलकू घोड़े को लगाता है। घोड़ा पहरा देते–देते सो जाता है। साधु निगरानी के लिए आता है, घोड़े को सोता देख कर उसे क्रोध आता है, वह घोड़े से कहता है कि तुम तो सो रहे हो, इस पर घोड़ा कहता है कि मैं कहाँ सो रहा, तब साधु को क्रोध आ जाता है–"उसके झूठ बोलने पर साधु बाबा को गुस्सा आ गया। वे बोले, 'मक्कार, झूठ क्यों बोलता है तू तो अब भी सो रहा था।' उसके झूठ बोलने पर साधु बाबा को जबरदस्त गुस्सा आ गया। वे बोले, एक साधु से झूठ बोलता है। अब तू चला जा मेरे सामने से आज से मेरा शाप है कि तुझे कि तू कभी भी आराम से लेटकर नहीं सो सकेगा। अब नींद आएगी तो खड़े–खड़े ही सोना।'[86]

दीनदयाल शर्मा के नाटकों में भी सामाजिक सदभाव और सामाजिक विद्रूपताओं को सुघड़ तरीके से व्यक्त किया है। 'सपने' एकांकी में बच्चों को सपने देखना चाहिए एवं उन्हें पूरा करने के लिए जी–जान से जुट जाना चाहिए। साथ ही इंसानियत का भाव, प्रकृति प्रेम, श्रेष्ठ आचरण, अनुशासन आदर्श शिक्षक की भूमिका को भी दर्शाया गया है। यह आदर्श सामाजिक मूल्यों में खरा उतरने वाला एकांकी है।

डॉ. दर्शन सिंह'आशट'– "इस बाल एकांकी मे ंजागृति विकास, हनीफ, मस्तान सिंह, डेविड, आशा, विनोद और सपना जैसे छोटी आयु के बच्चों के माध्यम से अभिभावकों के सामने एक गम्भीर प्रश्न रखा गया है कि यदि समाज को एक अच्छे और उत्कृष्ट बनाने की तम्मना दिल में है तो उन्हें बच्चों द्वारा लिए गए सार्थक सपनों को हकीकत में बदलने के लिए प्रयास जुटाने होगे। इस बाल एकांकी 'सपने का पंजाबी' में अनुवाद करके मुझे बेहद खुशी का अनुभव हुआ।"[87]

'फैसला बदल गया' एकांकी में धोबी का मुँह देखने पर राजा का पूरा दिन बुरा जाता है, ऐसा वह मनाता है। सुबह–सुबह सबसे पहले किसी का मुहँ देखने पर दिन खराब हो जाता है। इस सामाजिक अन्धविश्वास पर कहानीकार ने करारी चोटकी है। 'फैसला' में भी सामाजिक सदभाव, प्रेम, सहानुभूति, न्याय, परायणता पर जोर दिया गया है, एक राजा का कर्त्तव्य है की समग्र साक्ष्यों के आधार पर उचित न्याय करें। साथ ही चालाक लोगों से सावधान रहने की बात भी कही गई है।

'फैसला' नाटक के विषय में **कमलेश शर्मा**– 'फैसला नाटक में तीन पात्रों की भूमिका द्वारा लेखक दीनदयाल शर्मा ने जंगल के समाज में तोड़–फोड़ वाला वातावरण उपस्थित कर वर्तमान समाज की दशा को कुरेदने का अच्छा प्रयास किया है, जहाँ रक्षक ही भक्षक बन जाएँ, वहां व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन ही कारगर साबित हो सकता है बालकों के मन में गहरे बैठकर अच्छा सन्देश पहुँचाने में लेखक का प्रयास सुंदर है।'[88]

'जंग जारी है' किशोर नाटक संग्रह है, इस के समस्त नाटक सामाजिक चेतना पर आधारित है। दहेज, प्रथा, नशे की लत, टूटते जीवन मूल्य, पारिवारिक कुंठा, कन्या भ्रूण हत्या रिश्तों में कडुवाहट, टूटते–बिखरते परिवार, संत्रास, टूटन, घुटन आदि कई प्रकार की बुराईयों, अन्घविश्वासों, कुरीतियाों, भ्रामक धारणाओं, अंध परम्पराओं पर बहुत करारा प्रहार किया है।

डॉक्टर : और पता चल जाता कि लड़की होगी ..... तो क्या करते?

कमला : वही करती ...... जो दुनिया करती है। अबोर्शन करवा देती।

कमला : वह कहता था बेटा–बेटी आजकल सब बराबर होते है माँ। मैं नहीं समझी थी उसकी भावना को। अब मेरे घर की रोशनी तुम हो डॉक्टर बेटा....... तुम ही घर की रोशनी।"[89]

सुमन : (व्यंग्य से) दुनिया चल रही है ना भैया...... तभी तो बलात्कार, उत्पीडन और शोषण के समाचार हमें आये दिन पढ़ने–सुनने को मिलते हैं। औरत तो एक पीड़ित और प्रताड़ित वर्ग है भैय .... जिस का हर कोई शोषण करता है...... आज औरत माँ, बहन और बेटी की अपेक्षा एक उपभोग की वस्तु बन कर रह गई है।"[90]उपरोक्त संवादों मे ंकन्या भ्रूण–हत्या के विषय को बहुत ही कारूणिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही बेटे–बेटी समान होते हैं, इस सकारात्मक सन्देश के साथ नाटक की सुखद इतिश्री की है। दूसरे संवाद में नारी उत्पीड़न, शोषण, बलात्कार जैसी तथाकथित सामाजिक समस्याओं को उकेरा गया है जहाँ औरत केवल उपभोग की वस्तु बन

कर रह गई है। आये दिन ऐसी घटनाएँ होती हैं, सब सुनते हैं, पढ़ते हैं, फिर भूल जाते हैं, जैसे कि आम बात हो। दुनिया चल रही है, चलती रहेगी और नारी शोषित होती रहेगी, सुमन के इस व्यंग्य में समाज का कटु सत्य प्रकट हुआ है।

"**राजकुमार** : (गुस्से से) देख सुमन... मेरे सामने बकवास करने की जरूरत नहीं हैं....... शादी के समय तेरे बाप ने मुझे स्कूटर देने का वादा किया था....... समझी।"[91]

प्रस्तुत संवाद में दहेज प्रथा पर करारा प्रहार हुआ है

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रत्येक रचनाकार की अपनी भाषा–शैली होती है, बात कहने का अपना अंदाज होता है, कथ्य का विशेष स्वरूप होता है, जो उसे अन्य साहित्यकारों से विशिष्टता प्रदान करता है, उसकी पहचान बनती है। इसे मौलिकता भी कहा जा सकता है। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा की अपनी भाव सम्पदा है, बात कहने का विलक्षण सलीका है, अपनी अलग भाषा–शैली, मौलिकता है। पुरानी कथाओं को नए स्वरूप में, नये नये रंग रूप में के साथ आधुनिकता से जोड़ कर व्यक्त करना, उनकी अपनी पहचान है। कई प्रकार के नए प्रयोग किए हैं। 'शंखेश्वर के सींग' संग्रह की सभी कहानियों की मौलिकता और नवीनता अनुपमेय है। इनके अन्तर्गत कई बाल सुलभ प्रश्नों के उत्तर कहानीकार ने बड़ी सुघड़ता, रोचक, और निराले ढंग से दिये हैं। यहाँ रचनाकार शर्मा का कुशल संयोजन देखते ही बनता है। बालकों को नई जानकारी के साथ–साथ उत्सुकता और जिज्ञासा को पोषित भी करती है।

दीनदयाल शर्मा बच्चों को प्यारी लगने वाली वस्तुओं को छोटी–छोटी कविताओं तथा गीतों का बहुत मनभावन चित्रण हुआ है। दीनदयाल शर्मा की कल्पनायेंअनूठी और असाधारण हैं कई रचनाओं में। 'चिटू–पिटू की सूझ' की सारी कथाओं के केनवास में संवेदनाओं के रंग–बिरंगे चित्र ही उकेर दिए गए हैं। नई तकनीक, नए संदर्भ में भी रचनाकार शर्मा कहीं पीछे नही। जैसे–'बारिश कैसे होती है' जैसे प्रश्नों के उत्तर घरेलू उपकरणों के द्वारा बहुत सरल विधि से एक बालक द्वारा प्रयोग के साथ दिलवाए गए है। इसके साथ ही तकनीकी उपकरणों को सुंदर गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सामाजिक मूल्यों को दीनदयाल शर्मा ने अत्यन्त कौशल एवं बड़ी गहराई के साथ उकेरा है।अंधविश्वासों, भ्रामकों धारणाओं, विद्रूपताओं, कुरीतियों बुराईयों आदि का खुल कर विरोध दर्ज करवाया है। 'जंग जारी है' रेडियो नाटक कृति का इस विषय में कोई सानी नहीं है।

♦♦♦♦

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 745
2. Kamal's Oxford Dictionary Dr. R.K. Kapoor, page - 745.
3. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/114701chapter%201.pdf
4. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ – 745
5. Kamal's Oxford Dictionary Dr. R.K. Kapoor, page - 849.
6. हिंदी कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प – डॉ. अनिता वर्मा, पृ. 30
7. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 691–92
8. रामायण, बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, वाल्मीकि, श्लोक – 15
9. पूर्वोतर साहित्य विमर्श, जुलाई–दिसम्बर 2016 अंक–7, सम्पादकः हरेराम पाठक, पृ. 17,18,19
10. शोध नवनीत जुलाई–दिसम्बर 2017 सम्पादक : डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, पृ. 51
11. कुछ अनकहीं बाते ......, सम्पादक : दुष्यन्त जोशी, डॉ. मेघना शर्मा,, पृ. 135
12. गोली–गीली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 5–6
13. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा पृ. 10
14. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ. 18
15. चमत्कारी चूर्ण, आजादी का अर्थ, दीनदयाल शर्मा पृ. 24
16. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 45
17. सूरज एक सितारा है, दीनदयाल शर्मा पृ. 17
18. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 10–11
19. जंग जारी है, रिश्तों का मोल, दीनदयााल शर्मा, पृ. 28
20. जंग जारी है, अपने–अपने सुख दीनदयाल शर्मा, पृ–95
21. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ–736
23. http:/wikipedia.org/wiki/13september-2017
24. http:/wikipedia.org/wiki/5febarary-2017
25. सूरज एक सितारा है, दीनदयाल शर्मा, पृ–10

26. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 10

27. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृ–38

28. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पपृ–13

29. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 376

30. http://dictionary.cambridg.org/us/dictionary/english/imagine

31. बाल साहित्यः मेरा चिंतन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृ. 109

32. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ. 15

33. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृ. 14

34. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ. 13

35. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ. 9

36. आँखों में आकाश, रवि पुरोहित, चींचू चूहा, नरेन्द्र कुमार मेहता, पृ. 22

37. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 13

38. शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 431

39. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 524

40. http://dictionary.cambridg.org/us/dictionary/english/imagine

41. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 347

42. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 829

43. समकालीन हिंदी बाल साहित्य, शुचिता सेठ, पृ. 192–193

44. आजकल, नवम्बर–16, सम्पादक ....,फरहत परवीन पृ.17

45. हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, प्रकाश मनु, पृ. 400

46. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृ. 17

47. गिली गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ.16

48. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृ. 16

49. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ–26

50. गुब्बारे, सम्पादन : आर.पी.सिंह, मोबाईल : रामगोपाल लढ़ा, पृ–44

51. आजकल – नवम्बर – 2016, सम्पादक फरहत परवीन, पृ. 6

52. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृ. 18, 19, 20

53. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 490

54. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 305

55. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 465

56. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 733

57. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 305

58. दैनिक भास्कर, मधुरिमा, 6 जून, 218 सम्पादक, आवरण पृष्ठ

59. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृ–9

60. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृ–16

61. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ.30

62. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ. 20

63. चूं–चूं दीनदयाल शर्मा, पृ–8

64. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ–30

65. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ–10

66. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृ–30

67. शिक्षार्थी हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 733

68. Kamal's Oxford Dictionary, Dr. R.K. Kapoor, Page - 305

69. कुछ अनकहीं बातें, सम्पादकः दुष्यंत जोशी, पृ. 166

70. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ–23

71. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ–23

72. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृ–7

73. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृ–8

74. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ–10

75. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ–11

76. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृ–15

77. सूरज एक सितारा है, दीनदयाल शर्मा, पृ–7

78. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 5

79. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 20

80. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 8

81. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 9

82. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृ. 11

83. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ–7

84. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ–15

85. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृ–29

86. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृ–29

87. कुछ अनकही बातें ...., सम्पादक : दुष्यन्त जोशी, पृ– 70

88. कुछ अनकही बातें ...., सम्पादक : दुष्यन्त जोशी, पृ– 38

89. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृ–9–10

90. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृ–104

91. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृ–102

षष्ठ अध्याय

शिल्प सौष्ठव

षष्ठ अध्याय

शिल्प सौष्ठव

शिल्प से तात्पर्य भावाभिव्यक्ति के माध्यम है। साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है। वह अपने परिवेश से अनुभूत सहानुभूतियों, संवेदनाओं, विचारों, अपने मनोभावों, तथ्यों को अपने चिंतन–मनन, कल्पना और दृष्टिकोण से अलंकृत, सुगठित, सारगर्भित, सशक्त, हृदयस्पर्शी, प्रभावोत्पादक, परिमार्जित, सुव्यवस्थित और सुगुम्फित रूप से अपनी लेखनी के द्वारा कागज के कैनवास पर इस प्रकार उतरना चाहता है कि उसका मंतव्य सहृदय पाठकों के अंतःकरण में उसी भाँति उतरे, जिस भाव से उसने रचना की है। इस सम्पूर्ण क्रिया के समन्वित स्वरूप को शिल्प कहा जाता है। शिल्प के अंतर्गत भाषा, शैली, संवाद, कथ्य, शब्द कौशल आदि का समावेश होता है। एक प्रकार से भाव निराकार होते हैं और शिल्प उनका साकार रूप। कोई भी रचना पठनीय, रोचक और अर्थवान शिल्प के द्वारा ही बनती है। कला–पक्ष को सुदृढ़, प्रभावी, सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शिल्प गठन अनिवार्य है। साधारण भाषा में शिल्प का अर्थ निर्माण करना, किसी वस्तु को गढ़ना है।

6.1 शिल्प – परिभाषा व स्वरूप

शिल्प का कोशगत आशय–शिल्प सं. (वि.) हस्त कला, दस्तकारी कला (स्त्री.) दस्तकारी का कौशल, कार (पु.) शिल्पी, कारीगर 2. मकान बनाने वाला, कारी (पु.) शिल्पकार, शिल्पत्व – शिल्प (स्त्री.), शिल्प का भाव या धर्म[1]

'शिल्प' का अंग्रेजी में रूपान्तरण 'Craft' है जिसका तात्पर्य –

Craft – n. Skill, Cunning, Art, Trade a Boat, Vessel

कौशल, धूर्तता, कला (शिल्प), व्यापार, नाव, जहाज

Craftsmanship – n. finished Art of Craftsman, दस्तकारी[2]

कुछ विद्वानों ने शिल्प को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है –

डॉ. धर्मध्वज त्रिपाठी के अनुसार–"किसी भी रचना में प्राणतत्व विषय है तो, शिल्प उसका शरीर है अर्थात् आकार। इस प्रकार शिल्प लेखक की मूल प्रेरणा, दृष्टिकोण, आशय, उद्देश्य, अभिप्रेत आदर्श, विषय आदि की अभिव्यक्ति का साधन है।"[3]

डॉ. ओम शुक्ला के मतानुसार – "कला के रचना के जिन तरीकों, रीतियों और विधियों का उपयोग किया जाता है, वे ही उस कला की शिल्पविधि के नाम से पुकारी जाती है।[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं कोशगत अर्थ के सार स्वरूप कहा जा सकता है कि शिल्प निर्माण का कौशल है, जैसे–दस्तकारी, कारीगरी या किसी भी कला की संरचना करना। साहित्य में शिल्प से तात्पर्य अभिव्यक्ति के माध्यम से है। किसी भी रचनाकार को अपने विषय को सशक्त, सफल, प्रभावी बनाने एवं तथ्यों, भावों आदि को आकारगत रूप प्रदान करने के लिए शिल्प का सहारा लेना होता है। इस प्रकार कथ्य रचना की आत्मा है, तो शिल्प उसका शरीर। शिल्प मनोभावों की अभिव्यक्ति का साकार स्वरूप होता है। रचनाकार स्वानुभूतियों को सशक्त, कलात्मक, सफल एवं समर्थ अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए उसे शिल्प के द्वारा विशिष्ट व प्रभावशाली बनाता है। रचना के तथ्यों, भावों, घटनाओं तथा प्रसंगों को साकार स्वरूप शिल्प के द्वारा ही प्राप्त होता है। रचना को रोचक, सारगर्भित प्रौढ़ और व्यवस्थित बनाने के लिए भी शिल्प की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का शिल्प सौन्दर्य उच्च कोटि का है। आज का युग संचार क्रान्ति का है, तकनीकी एवं विज्ञान के क्षेत्र में नित–नवीन प्रयोग हो रहे हैं। आज का बालक बहुत समझदार है, उसे पूरी दुनिया की जानकारी होती है, इसलिए उस को हर संदर्भ में नवीनता चाहिए। संचार क्रांति के प्रसार से आज का बालक, सभी बाल समस्याओं से परिचित है। ऐसे समय में बाल साहित्य के शिल्प में भी प्रतिदिन नये प्रयोग हो रहे हैं। वैज्ञानिक शब्दावली, नये बिम्ब, नए प्रतीक, नए शब्दों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। भाषा–शैली में काफी बदलाव देखा जा सकता है। बाल साहित्य में नवीन शिल्प सौन्दर्य की प्रतीति हो रही है। रचनाकार शर्मा आज के युग के सजग सृजनहार हैं, इनके शिल्प गठन में नए–नए प्रयोग देखे जा सकते हैं। समय के साथ कदम ताल करते हुए चलते हैं। इसलिए इन्होंने अपने साहित्य के शिल्प सौन्दर्य को सुगठित, सुव्यवस्थित, सुगुम्फित, आकर्षक, बालोपयोगी बनाने के लिए के नूतन प्रयोग किए हैं। सहज, सरस भाषा, अनेक शैलियों का उपयोग, वैज्ञानिक शब्दावली, मौलिक उपमान, मुहावरेदार भाषा, लोकोक्तियाँ, संवादों का सुसंगठन, समृद्ध शब्द विधान आदि का समिश्रण इनका शिल्पगत वैशिष्ट्य है।

6.2 भाषा की विविध भंगिमाएँ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे परस्पर अपने विचार और भावों का विनिमय करना होता है, जिसके लिए सर्वाधिक उत्तम साधन भाषा होती है। समग्र मानव जीवन एवं विकास भाषा पर ही आधारित है। भाषा परिवर्तनशील होती है। सतत् विकसित भी। वैदिक आर्यो की भाषा से संस्कृत, संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से आधुनिक भाषा का विकास हुआ है। कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होना भाषा की प्रकृति है। ऐसा कहा जाता है कि "एक कोस पर पानी बदले, पाँच कोस पर बानी"। संसार में हजारों भाषाएँ प्रचलित हैं। भारत में लगभग 325 भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा के अनेक स्वरूप हैं– राज–भाषा, राष्ट्र–भाषा,

उप–भाषा, क्षेत्रीय–भाषा, मातृ–भाषा, बोलियाँ आदि। भाव एवं भाषा का प्रगाढ़ रिश्ता है। साहित्य के दो पक्ष होते हैं। एक भाव पक्ष, दूसरा कला पक्ष। भावानुसार ही रचनाकार को भाषा गढ़नी होती है। भाषा ही विचारों, भावों की वाहिका होती है। भाषा से ही विचारों, भावों में सबलता, ठोसता आती है, निराकार भावों को आकार मिलता है। ध्वनियों के मेल से स्वर, व्यंजन, स्वर व्यंजनों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्यों से भाषा का निर्माण होता है। इस प्रकार भाषा मुख से उच्चारित होने वाले वाक्यों का समूह है। भाषा और साहित्य का अटूट, अनिवार्य और अविच्छेद सम्बन्ध है। **भाषा का कोशगत आशय–**

भाषा– सं. (स्त्री.) 1. बोली, जबान (जैसे – हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा) 2. बोली (जैसे– पक्षियों की भाषा) 3. देश क्षेत्र आदि में बोली जाने वाली बोली (जैसे– प्रांतीय भाषा, ग्रामीण भाषा), 4. शैली (जैसे – गद्य की भाषा, कवि की भाषा, कुल (पु.) भाषा परिवार– गत (वि.) भाषायी– तत्व (पु.), भाषा विज्ञान – नीति (स्त्री.) भाषा सम्बन्धी सिद्धान्त– विज्ञान (पु.) वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति और विकास आदि का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है – शास्त्र (पु.) भाषा विज्ञान–शास्त्री (पु.) भाषा विज्ञानी।[5]

भाषा की कुछ परिभाषाएँ दृष्टव्य है–

डॉ. भोलानाथ तिवारी– "कभी हम स्फुट शब्दों या वाक्यों द्वारा अपने को प्रकट करते हैं, तो कभी केवल सर हिलाने से हमारा काम चल जाता है। समाज में धनी वर्ग में निमंत्रण देने के लिए पत्र लिखे जाते या छपवाए जाते हैं, तो गरीबों में या कुछ जातियों में हल्दी या सुपारी देना पर्याप्त होता है। स्काउट लोगों का विचार विनियम झंडियों द्वारा होता है तो कवि बिहारी के पात्र 'भरे भवन में करत है, नयन नही सौं बात'। चोर लोग अँधेरे में एक दूसरे का हाथ दबाकर ही अपने को प्रकट कर लिया करते हैं। इसी प्रकार करतल ध्वनि, हाथ हिलाकर संकेत करना (पास बुलाने, दायें बायें हटने या कहीं भेजने आदि के लिए) चुटकी बजाना, आँख दबाना, मुँह दबाना, खाँसना, मुँह बिचकाना या टेड़ी उंगली दिखाना तथा गहरी साँस लेना आदि अनेक प्रकार के साधनों द्वारा हमारे विचार विनियम का कार्य चलता है।"[6]

"भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ व्यक्तियों की वाणी होता है। इस प्रकार व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है, उसे भाषा कहते हैं। भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करता है। भाषा देवी अंश है, जो मनुष्य को ही प्राप्त है। भाषा रूपी ज्योति के बिना संसार अंधकार युक्त होता है।"[7]

महान विचारक एवं पाश्चात्य विद्वान प्लेटो ने भाषा की प्रकृति के संदर्भ में लिखा है– "विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, किन्तु जब वही ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट

होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"[8] **सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक सुनीति कुमार चटर्जी** के अनुसार–"अपने व्यापकतम रूप में भाषा का अर्थ है, हमारे विचारों और मनोभावों को व्यक्त करने वाले ऐसे संकेतों का कुल योग जो देखे या सुने जा सके और जो इच्छानुसार उत्पन्न किए एवं दुहराए जा सके।"[9]

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं विभिन्न भाषा शास्त्रियों के मतों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा मानव के भावों और विचारों को प्रकट करने का सर्वाधिक सशक्त व प्रभावशाली साधन है। इसके बिना मनुष्य तथा समाज का विकास कदापि सम्भव नहीं हो सकता। भाषा मानव व साहित्य के मध्य सेतु का कार्य करती है। भाषा भावों की वाहिनी होती है। साहित्य पूरी तरह से भाषा पर निर्भर है। भाषा जिनती समृद्ध और सशक्त होगी रचना उतनी ही सार्थक और प्रभावोत्पादक होगी। भाषा को समृद्ध, सशक्त, सबल और सम्प्रेषणीय बनाने के लिए इसमें अनेक तत्वों का समावेश होना अनिवार्य है, यथा–बिम्ब, प्रतीक, शब्दविधान अलंकार, छंद, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, चित्रात्मकता, गीतात्मकता, लयात्मकता, प्रवाह आदि। जिस प्रकार यह कहा जाता है कि हर रचना अपनी भाषा स्वयं गढ़ती है, उसी प्रकार प्रत्येक रचनाकार की अपनी भाषा–शैली होती है, जो उसे अन्य सृजनकारों से वैशिष्ट्य प्रदान करती है, साथ ही बड़ों के साहित्य और बाल साहित्य की भाषाशैली में भी भिन्नता होती है क्योंकि बच्चों के लिए प्रौढ़ व कठिन भाषा की जगह अत्यंत सरल, सरस, सहज, मधुर अर्थात् बालोपयोगी भाषा का होना अनिवार्य है, ताकि एक नन्हा बालक सरलता से समझ कर रचना की आनंदानुभूति कर सके। कलम के धनी बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा बालकों की भाषा गढ़ने में सिद्धहस्त है, इसमें उन्हें महारत हासिल है। इन्होंने अपनी रचनाओं में अत्यंत सहज, सरल, बालोपयोगी भाषाशैली का प्रयोग किया है, वहीं बिम्ब, लय, चित्रात्मकता, शब्दविधान लोकोक्ति, मुहावरे, छंद–अलंकार आदि के चित्रण में भी कुशलता का परिचय दिया है। शब्दसौन्दर्य के अन्तर्गत तत्सम, तदभव, देशज, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी शब्दों की भरमार, मुहावरों का बड़ी संख्या में प्रयोग करना, वो भी बाल साहित्य में, हतप्रभ करने जैसा कार्य करके दिखाया है। दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य में प्रयुक्त भाषा के विविध रूपों की विवेचना प्रस्तुत है–

सहजता और सरलता

बाल साहित्य साधक दीनदयाल शर्मा आरम्भ से ही बालकों के लिए लिखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इन्होंने अपनी लेखकीय प्रक्रिया में बालोपयोगी सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया है, जो जल के निर्मल प्रवाह की तरह अविराम बहती जाती है। इनका बाल साहित्य बच्चों की ही भाँति सरल, सहज, सुरूचिपूर्ण, भावपूर्ण, सीधी–साधी बोली में सृजित होने से बालकों के लिए सहज ग्राह्य है। उदाहरणार्थ–

'गबदू भालू गले में ढोल लटकाए जोर–जोर से बजाता जा रहा था...ढम...ढम...ढम...ढम... ढम...ढम...ढम। सुनो–सुनो... सभी जंगलवासियों ध्यान से सुनो– हमारे जंगल में जल्दी ही शराब की बहुत बड़ी दुकान खुलने जा रही है। सभी जानवर ध्यान से सुनो... हमारे जंगल में शराब की बहुत बड़ी दुकान खुलने जा रही है। शहर की तरह अब यहाँ भी सब जानवर जीने का आनन्द ले सकेंगे। गबदू भालू ढोल बजाते हुए आगे बढ़ गया। उसके जाने के बाद पीपल के पेड़ के नीचे अनेक जानवर इकठ्ठे हुए और आपस में विचार विमर्श करने लगे।"[10]

'अजय अपना अधिकांश समय टीलू तोते के साथ ही बिताता। दोनों एक दूसरे को इतना चाहते कि एक साथ खाते–पीते और एक साथ ही सोते। पर एक खास बात यह थी कि अजय ने अपने टीलू तोते को पिंजरे से कभी बाहर नहीं निकाला।"[11]

"श्याम और मोहन दो दोस्त थे। दोनों आठवीं में पढ़ते थे। वे पहली कक्षा से ही साथ पढ़ते आ रहे थे। कक्षा में कभी मोहन प्रथम आता तो कभी श्याम। दोनों में प्रथम आने की होड़–सी लगी रहती।[12]

उक्त प्रसंगो से स्पष्ट है कि दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल लेखन में अत्यन्त सरल व सहज, बालोपयोगी भाषा को ही प्रयुक्त किया है। निष्कर्ष में कहा जा सकता है। बालकों को इसे समझने में तनिक भी कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। यह सीधे–सीधे बच्चों के हृदय को अवश्य स्पर्श करेगी।

ध्वन्यात्मकता

ध्वनि से अभिप्राय आवाज़, नाद, सदा से माना गया है। ध्वनि एक प्रकार का कम्पन्न है, जो मनुष्य को कानों के द्वारा सुनाई देता है, जो किन्हीं ठोस, गैस या द्रव पदार्थों के टकराने से उत्पन्न होता है। ध्वनि तरगों के माध्यम से संचारित होती है। विज्ञान और अध्यात्म के अनुरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संरचना नाद से हुई है। इस भाँति कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण सृष्टि का सर्वाधिक व सबल आधार ध्वनि ही है।साहित्य में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे भाषा की सब से छोटी इकाई माना गया है। ध्वन्यात्मकता भाषा को प्रभावी, कर्णप्रिय व मर्मस्पर्शी बनाती है। भारतीय काव्य शास्त्र के सम्प्रदायों में ध्वनि सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। जिसके जन्मदाता आचार्य आनंदवर्धन हैं, जिन्होंने ध्वनि की उद्‌भावना और प्रतिष्ठा की है एवं ध्वनि को ही काव्य की आत्मा माना है। इस सिद्धांत के पोषक अभिनव गुप्त हैं। काव्य प्रकाश में उद्‌दृत है कि वाच्यार्थ की अपेक्षा जो अन्य अर्थ हृदया आहाल्दक हो, वही ध्वनि है।

बालेन्दु शेखर तिवारी– "ध्वनि भाषा की लघुत्तम इकाई है, जिसे सुना जा सकता है। इसी ध्वनि का लिखित रूप अक्षरों के माध्यम से साकार होता है, जिन्हें देखा और पढ़ा जा सकता है। इसका उपयोग वाचिक और लिखित श्रव्य और दृश्य सभी स्तरों पर होता है। संसार की सभी

भाषाओं में ध्वनियाँ हैं और वर्ण भी। इन्हीं वर्णों से शब्द बनते हैं। शब्द एक ऐसा ध्वनि समूह है जिससे अर्थ बोध होता है।"[13]

उपलिखित परिभाषा के आधार पर ध्वनि काव्य की सार्थक व स्वतंत्र इकाई है, जो एक या अधिक वर्णों के मेल से उत्पन्न होती है। शब्द ध्वनियों का ही समूह है, जिस से किसी अर्थ का बोध होता है। जिस शब्द विशेष से अर्थ फूटता है वह स्फोट है, वह नित्य है। वह पूर्वापर सम्बन्धरहित अखण्ड तथा एकरस है, इस शब्द की अभिव्यक्ति ही ध्वनि है। जिस प्रकार किसी सुन्दरी के अंग अथवा अवयव में अतिरिक्त लावण्य की सत्ता रहती है, इसी प्रकार काव्य में भी चमत्कारोत्पादक प्रतीयमान अर्थ विद्यमान रहता है। ध्वनि से ही ध्वन्यात्मकता शब्द की रचना हुई है। शास्त्रीय दृष्टि से ध्वनि व्यंग्यार्थ में निहित होती है। किन्तु बालकों के काव्य में ध्वनि का विशेष महत्व है क्योंकि कम से कम शिशु तो कितनी ही वस्तुओं को ध्वनि से ही पहचानता है, जैसे–जानवरों की आवाजें, चीजों के टकराने से उत्पन्न निनाद आदि। बालरचनाकार दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में ध्वन्यात्मकता को विशेष महत्ता प्रदान की है, जिससे रचनाओं में विशेष आनन्द और स्पंदन की सृष्टि हुई है। प्रस्तुत है किंचित काव्यांश–

बम–बम भोले, बल–बम भोले
सब मिल बोलो बम – बम भोले।

कड़–कड़–कड़–कड़ कड़के बिजली
गड़–गड़–गड़–गड़ गिरते ओले।[14]

प्रस्तुत कवितांशों में बिजली के कड़कने की ध्वनि से, ओलों के गिरने के नाद से, चटपट वर्षा के होने से उत्पन्न होने वाली नादात्मक सुन्दरता का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

कट–कट लट–पटकाम कर झटपट
चीं चपड़ मत कर, कर मत खटपट[15]

ता–ता थैया–ता–ता–थैया,
नदिया में चलती है नैया।

ता–ता–थैया–ता–ता–थैया
जंगल में चरित है गैया।[16]

ऊपर दिए दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि रचनाकार को स्वर एवं व्यंजनों के संयोग से बने शब्दों के प्रयोग से नाद निष्पन्न करने में दक्षता हासिल है। ऐसी अनेक रचनाएँ ध्वन्यात्मकता से गुंजित मिल जाएँगी। कुछ और गीत –

सर सर सर सर हवाएँ बहतीं
खट खट खट खट करती लकड़ी,

आठ पैर की होती मकड़ी।
चट पट चट पट चने चबाए,
बकरी में में कर मिमयाएँ।[17]

खड़ खड़ खड़ खड़ होता शोर
बादल देख के नाचा मोर
छटपट छटपट बरखा आए
कागज की सब नाव चलाए।[18]

कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा ने खड़–खड़, चटपट–चटपट, ता–ता–थैया, सर–सर, झटपट–खटपट–खटपट आदि शब्दों के प्रचुर प्रयोग से बाल काव्य को ध्वन्यात्मकता और नादात्मकता से अद्वितीय बना दिया है। जो बालकों के लिए मधुर, रमणीय, लव लोकप्रिय बन गये हैं। जो वरेण्य है। प्रस्तुत उदाहरणों के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में ध्वन्यात्मकता के प्रचुर प्रयोग से बच्चों के मन में उत्पन्न उत्स की सृष्टि उन्हें भाव विभोर करती है, जिसमें वर्णों की, शब्दों की पुनरावृति, स्वर और व्यंजनों की ध्वनियों से निर्मित ध्वनि–सौन्दर्य भी दृश्यमान है। अधिकतर ये नाद सौन्दर्य, प्राकृतिक और सामाजिक संदर्भों में उपस्थित हुआ है।

लयात्मकता

यदि ये कहें कि लय ही जीवन है, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। चराचर प्रकृति लय द्वारा संचरित होती है। मानव की सभी गतिविधियाँ लय पर ही चलायमान हैं। समस्त कलाओं में भी एक निश्चित प्रवाह होता है। लय को काव्य के प्रमुख तत्वों में गिना गया है। बाल काव्य में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि नन्हें–नन्हें बालक लयबद्ध रचना ही पढ़ना या सुनना पसंद करते हैं, जिसे दो–चार बार पढ़ने या सुनने पर उन्हें कंठस्थ भी हो जाती है और वे परस्पर सुना कर आनंदानुभूति प्राप्त करते हैं।लय का कोशसम्मत अर्थ–

लय–सं. (स्त्री.) 1. गीत, सामंजस्य (जैसे – एक लय में कविता पढ़ना) 2. गाने का प्रकार (जैसे – मधुर लय में गाना – ताल (पु.) संगीत का सुर ताल – बद्ध (वि.) सुरयुक्त।[19]

"लिखित अथवा उच्चरित भाषा में स्वर की संयोजित गति के प्रवाह को लय कहते हैं। भारतीय आचार्य वामन ने शब्द गुणों के अंतर्गत समधि द्वारा क्रमिकता को ही व्यंजना दी है। समाधि गुण में 'आरोह–अवरोह' अथवा 'अवरोह–आरोह' का क्रम बना रहता है। भारतीय काव्याचार्यों ने काव्यत्व के तत्व 'शय्या' अथवा 'शब्द्पाक' के द्वारा इसी सिद्धांत की पुष्टि की है। इसके अनुसार 'लय' के निर्वाह का एक मात्र आधार है पदों की अन्याय मैत्री अर्थात् वाक्यों में पदों का संयोजन इस क्रम से करना कि पदों का परिवर्तन कर देने से गति अथवा छन्दोमयता

नष्ट हो जाए। क्रमिकता पर आधारित 'लय' केवल पद्य में ही मिलती है।'[20] प्रस्तुत कथन एवं कोशगत आशय के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि आरोह–अवरोह, गति, यति, गीत्ति–तत्व, छंद मिलकर लय की उत्पत्ति करते हैं और स्वरों और व्यंजनों की सुसंगति तथा क्रमिकता इस प्रकार सुनियोजित की जाती है कि अमुख काव्य का पठन करते समय मानव के स्वर तंत्र में तनिक भी अटकन नहीं आने आए। शब्द जल के प्रवाह की तरह प्रवाहित होते हुए बहते जाएँ। दीनदयाल शर्मा के बाल–काव्य इस दृष्टि से समृद्ध एवं सुव्यवस्थित है, जिसमें एक प्रवाह और लय का विशिष्ट संगठन देखने को मिलता है। प्रस्तुत है लयात्मक काव्य के कुछ अंश–

आफत लगती हमें पढ़ाई,
लगता जैसे शामत आई।
पाठ्य पुस्तकें लगती बोर,
हम सब बच्चे करते शोर।[21]

ऊपर वर्णित काव्यांशों में लय की छटा देखते ही बनती हैं। वर्णों का संतुलित क्रम, तुकांत मिलने, शब्दों की पुनरावृति से, झर–झर झरने के नाद से, सरिता के प्रवाहित होते जल सी रवानी निर्मित हो गई है।

आसमान में छाए बादल,
पानी भर–भर लाए बादल।
रिमझिम–रिमझिम वर्षा करते,
सबके मन को भाए बादल।[22]

हरी–हरी मटर, टमाटर लाल–लाल
देखो तुम मम्मी, हमारा कमाल[23]

इन गीतों में भी तुकांत मिलने से लय की उत्पत्ति हुई है, जो काव्य की मूल भावना होती है।

टर–टर–टर–टर–टर मेढक करता, चूहा बिल्ली से डरता[24]

बंदर जी तुम आओ जी, क्यों इतने घबराओ जी

तुम्हें देख बच्चे खुश होते, इनको और हँसाओ जी।[25]

मेरा कुत्ता, प्यारा कुत्ता

सरदी–गरमी, पहने जूता।[26]

कुकड़ू–कू, मुर्गे की बांग

आलस को, खूंटी पर टांग[27]

उक्त उदाहरणों के अनुशीलन के आधार पर कहा जा सकता है कि बालसाहित्य के सृजक दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में लयात्मकता का जोरदार विधान मिलता है, जो बाल साहित्य की जान है। आरोह–अवरोह, वर्णों की क्रमबद्धता, बारम्बारता, पदों की सुसंगति उन की अन्याय मैत्री, यति–गति का सफल निर्वाह अद्भुत है।

चित्रात्मकता

चित्र का सामान्य अर्थ तस्वीर, दृश्य, फोटो, मंजर आदि है। चित्रात्मक अर्थात् चित्र से परिपूर्ण। काव्य की विशेषताओं में चित्रात्मकता का बहुत महत्व है। इसका काव्य में शब्द–चित्र से आशय लिया जाता है। वस्तु, दृश्य या भाव विशेष का इस प्रकार से शब्दिक वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन में उस दृश्य, वस्तु या भाव विशेष का चित्र सा निर्मित हो जाता है अर्थात् जीवंत हो उठता है, जैसे उस के सामने चित्र रख दिया हो। यह काव्य की अति विशिष्ट विशेषताओं में गिनी जाती है। चित्र का कोशगत अर्थ –

चित्र सं. (पु.) 1. तस्वीर (जैसे – चित्र खींचना मना है) 2. आलेख (जैसे सुन्दर चित्र बनाना) कार (पु.) चित्र बनाने वाला, चित्रकारचित्रात्मक–सं. (वि.) चित्रमय–ता (स्त्री.) चित्रमयता, चित्र पूर्ण[28]

नालन्दा विशाल हिन्दी शब्द सागर–चित्र (संज्ञा पु.) सं.– तस्वीर, प्रतिकृति, सजी और विस्तृत रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति, काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती।[29]

उपर्युक्त कोशगत अर्थ के आधार पर कह सकते हैं कि चित्रात्मकता से आशय किसी वस्तु का आकार, तस्वीर, प्रतिकृति या रंगों द्वारा बनाई गई तस्वीर से है। साहित्य में शब्दों द्वारा ऐसे चित्र खींचे जाते हैं, जिन्हें पढ़ते ही पाठक के मन में दृश्य विशेष का चित्र सा उसके नेत्रों के समक्ष उभर आता है। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल साहित्य में बहुत सुंदर शब्द चित्र खींचे हैं। एक से एक चित्ताकर्षक, सजीव व सुन्दर शब्द चित्र इनके साहित्य के सौन्दर्य और लालित्य को दर्शाते हैं। बारिश का वर्णन को ही लें तो ऐसा लगता है मानो पाठक से सामने बरसात का दृश्य उपस्थित हो गया हो। कुछ ऐसे ही शब्द चित्र–

कागज़ की हम नाव चलाएँ
छप–छप नाचें और नचाएँ।[30]

हूँ–हूँ करके, शेर दहाड़ा।
मंदिर में, बज उठा नगाड़ा।[31]

चर–चर करती शोर मचाती
पेड़ों पर चढ़ जाती

काली पट्टियाँ तीन पीठ पर
कुतर–कुतर कर खाती।[32]

ढोलक बाजे ढम ढम ढम, नाचे भालू जी छम छम
दो पैरों पर खड़ा हो गया, ता ता थैया ता तिड़कम।[33]

इसी भाँति शेर के दहाड़ने से मंदिर के घंटे की सुसंगति बैठाना अतुलनीय है, गिलहरी की पहेली में ऐसा चित्र उकेरा है कि बालक एक बार में उत्तर दे सकते हैं। किंचित चित्र और व्यक्त हैं।

"टीलू तोता। अजय के सुख दुःख का साथी। दूसरे साधारण तोतों से शरीर कुछ बड़ा और सबसे न्यारा। हल्का हरा रंग, गले में तीन धारियों की माला। मजबूत चोंच और मीठी–मीठी बातें।"[34]

"ब्रह्मा जी ने नीला रंग दिया तो पीले पर नीला रंग चढ़ते ही कौआ हरे रंग का हो गया। हरा रंग देख कर कौआ बोला, भगवन! मुझे लाल रंग दे दो उसे लाल रंग दिया तो वह बैंगनी रंग को हो गया।"[35]

इस प्रकार बाल मन के पारखी रचनाकार शर्मा के उकेरे गये शब्द–चित्र बाल मन को आकर्षित करते हैं। टीलू तोते की शारीरिक संरचना का अनुपमेय चित्र, ब्रह्मा जी वाले प्रसंग में रंगों के सटीक संयोजन के चित्र भी मनमोहक होने के साथ अंतस में रस घोलने का कार्य भी करते हैं।

6.3 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

6.3.1 मुहावरे

भाषा तथा कथ्य को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। रूढ़, लाक्षणिक प्रयोग होने के कारण मुहावरों में पर्याप्त अभिव्यंजक शक्ति होती है। शैली की दृष्टि से मुहावरे की विशेषता विषयानुकूल प्रयोग से होती है। साधारणतः भावावेश में सजीवता प्रकट करने के लिए, हास्य–व्यंग्य को प्रभावशाली बनाने के लिए तथा अभिव्यंजना में सौन्दर्य लाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों में मूर्तता, सामाजिकता व शक्ति की प्रधानता होती है।

मुहावरा का कोशगत अर्थ–

मुहावरा – अ., (पु.) रूढ़ वाक्यांश

मुहावरेदार– अं.प्रा. (वि.) मुहावरे से युक्त (जैसे – मुहावरेदार भाषा, मुहावरेदार शैली)[36]

मुहावरे की किंचित परिभाषायें–

'किसी एक भाषा में दिखाई पड़ने वाली बात असाधारण शब्द योजना या प्रयोग मुहावरा है।"[37] "मुहावरे का सही–सही अर्थ केवल वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही जाना जा सकता है। मुहावरे में अमूर्तता की अपेक्षा मूर्तता, व्याकरणिक व्यवस्था की अपेक्षा सामाजिकता, तर्क की अपेक्षा शक्ति की प्रधानता होती है। मुहावरे भाषा की यौवन सम्पन्न शक्ति और समर्थता के प्रतीक होते हैं।"[38] इस तरह कहा जा सकता है कि मुहावरे रूढ़ वाक्यांश है, जो भाषा को जीवंतता, समर्थता, सजीवता, गुणक्ता प्रदान करते हैं। सीधी बात न कह कर विलक्षण शक्ति के माध्यम से जो चमत्कार, आकर्षण, उत्पन्न किया जाता है, उनमें मुहावरों की ही भूमिका होती है। मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका सही–सही अर्थ भाषा में प्रयुक्त होने पर ही जाना जा सकता है। दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्य मुहावरों से अत्यंत समृद्ध है, मुहावरों के प्रयोग से सम्पूर्ण बाल काव्य प्रभावी व आकर्षक हो गया है। रचनाकार ने अपने बाल साहित्य में मुहावरों का जम कर प्रयोग किया है, जो विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य है। बाल साहित्य में मुहावरों का प्रयोग करने के लिए बहुत सतर्कता की जरूरत होती है, क्योंकि मुहावरों से भाषा में क्लिष्टता आ सकती है, लेकिन ये कठिन काम लेखक ने बड़ी सहजता से कर दिखाया है। उदाहरणार्थ कुछ मुहावरें प्रस्तुत है –

अपने **मन की गांठें खोलें**[39]

कौन **नींद में खलल** डाल रहा है।[40]

उछले–कूदे **दांत दिखाए**[41]

डर से सबका **बज गया बाजा**।[42]

जन–जन में **अलख जगाई**।[43]

सबकी **आँखों का तारा**।[44]

एक–एक ईंट जोड़कर हमने[45]

जिससे कोई **ना जी चुराए**[46]

रंग लाती है कोशिश इक दिन[47]

वह अपनी **नम आँखों से** उसे बहुत देर तक देखती रही।[48]

गिल्लू **दबे पाँव** पेड़ पर चढ़ गई।[49]

सोनू की बात को सुनकर बिबो का **कलेजा फट पड़ा**।[50]

बचने का अब **कोई चारा नहीं** था।[51]

पलक झपकते ही मोर के दरबार में उपस्थित हो गया।[52]

सब जानवर **अपना सा मुँह लेकर** वापस आ गये।[53]

महाराज! हमारे लिए भी भोजन के **लाले पड़ रहे हैं**।[54]

सभी जानवरों ने मलमल की बात को समर्थन करते हुए **भूरि–भूरि प्रशंसा की**।[55]

अब वो **जमाना लद गया** चाचा।[56]

कहते–कहते चीनू मुर्गी का **गला रूंध गया**।[57]

उस नये जानवर की रौबीली बातें सुनकर सब जानवर एक दूसरे का **मुँह ताकने लगे**।[58]

अब भूल से भी किसी ने मुझे मोटू कहा तो उसका पूरा खानदान **मिट्टी में मिला दूंगा**।[59]

साधू बाबा ने पूछा, 'क्यों हलकू **आँख लग गई** थी क्या?'[60]

ओझल हो जा मेरी आँखों से।[61]

बेटे के मुहँ से इतना सुनते ही माँ की **आँखें भर आई**।[62]

उसी दिन से माँ की इच्छा पूरी करने में **जी–जान सेलग** गया।[63]

मारे **शर्म के वह पानी–पानी** हो गई।[64]

बेचारा नन्हा सा पिल्ला कुं–कुं–कूं–कूं करता हुआ **दुम दबाकर भाग गया**।[65]

आज तो तुमने **आँखें खोल** दी।[66]

गुस्ताखी माफ़ करें महाराज, आज आपका गुस्सा **सातवें आसमान को छू रहा है**।[67]

बीना– माँ जी, **कान खोलकर सुन** लो।[68]

मुरली– और कभी **अपना मुँह मत दिखाना**।[69]

मैडम.... तुम्हारे लिए तो **जान हाजिर है** मेरी जान...।[70]

अंकित–फालतू **जुबान लड़ाती** है।[71]

पहेलिया क्यों बुझा रहे हो कृष्ण।[72]

पूरे मोहल्ले के सामने हमारा **पानी उतार** दिया।[73]

बहू के लिए तो तेरे भीतर भी तो **लड्डू फूट रहे हैं**।[74]

भैया... अब तो **पानी सिर से बहुत ऊपर निकल चुका** है...।[75]

सुनकर **कलेजा मुँह को आता है** सुमन।[76]

ज्यादा **घुमा फिराकर** बात करने की मुझे आदत नहीं हैं।[77]

बड़ी मात्रा में मुहावरों के प्रयोग से दीनदयाल शर्मा के साहित्य में चार चाँद लग गए हैं। असाधारण शब्द योजना और विलक्षण शक्ति के द्वारा बात कहने से भाषा में व्यंजनात्मकता, सार्थकता, सौन्दर्य, सरसता, जीवंतता, समर्थता, चमत्कार और आकर्षण बढ़ गया है। बालक तो इन्हें पढ़कर इनके तात्पर्य को समझ सकेंगे, उनके लिए मुहावरे नई बात होने से वे चमत्कृत, आल्हादित तथा उल्लसित भी होंगे।

6.3.2 लोकोक्तियाँ

एक वाक्य में कहें तो 'लोक' में प्रचलित उक्ति 'लोकोक्ति' कहलाती है। बरसों के ज्ञान और अनुभव को मात्र एक उक्ति में कह देने को लोकोक्ति कह सकते हैं या लम्बी–चौड़ी बात को एक पंक्ति में कह देना। किसी भी व्यक्ति विशेष के सालों के अनुभव और ज्ञान का सार–संक्षेप, केवल एक उक्ति के रूप में लोक प्रचलन के बाद लोकोक्ति का स्वरूप बन जाता है। ऐसा भी कह सकते हैं कि अनुभव के सागर को गागर में भर देना। यह एक सम्पूर्ण एवं स्वतंत्र वाक्य होता है, जिसका भाषा में प्रयोग बिना किसी बदलाव के किया जाता है। लोकोक्तियाँ हर्ष–विषाद में हौसला देती है, उत्साह बढ़ाती है, सांत्वना देती हैं इस के साथ–साथ व्यक्ति को समाज में कैसे उठना–बैठना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए, ये सब बातें भी लोकोक्तियाँ समझाती हैं। लोकोक्तियाँ सभी देशों की सभी भाषाओं में मिलती हैं। प्रारम्भ में लोकोक्तियाँ मौखिक रूप से लोक में पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए, प्रचलित होती रही, तदन्तर ग्रन्थों, किताबों एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रयुक्त होने लगीं और अब रचनाकर कई प्रकार के लोकोक्ति–कोश तैयार कर चुके हैं।

लोकोक्ति का शब्द कोशानुसार तात्पर्य –

सं. (स्त्री.) 1. कहावत, मसला 2. साहित्य में लोकोक्ति के प्रयोग से काव्य में रोचकता उत्पन्न करने वाला एक अलंकार[78]

कई विद्वानों, रचनाकारों ने लोकोक्ति को परिभाषित किया है, कुछ अधोलिखित परिभाषाएँ प्रस्तुत है–

डॉ. भोलानाथ तिवारी – "विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा एतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोकविश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं, जिनका प्रयोग बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य – कथन आदि के लिए किया जाता है।"[79]

सुखपाल गुप्त "लोकोक्ति लोक जीवन की सिद्धियों की अभिव्यक्ति है। इस में वाचक अर्थ की अपेक्षा लक्ष्यार्थ की प्रधानता होती है। यह लोक जीवन के व्यापक अनुभवों को सामान्य शब्दों के माध्यम से प्रकट करती हैं।"[80]

निष्कर्ष में बड़ी बात को अति संक्षेप में कह देना, उसका लोक प्रचलित हो जाना ही लोकोक्ति कहलाता है। 'लोकोक्ति' को 'कहावत' भी कहते हैं। कहावत शब्द का सरल सा आशय कह, कहना, कथन आदि से लगाया जा सकता है। बाल साहित्य में लोकोक्तियों का उपयोग करना बहुत टेड़ी खीर है किन्तु दीनदयाल शर्मा ने यथा प्रसंग इस कार्य को बड़ी सहजता और कुशलतापूर्वक से कर दिखाया है। दृष्टव्य है कुछ कहावतें –

साँच को आँच कभी नहीं आता[81]

आम के आम गुठली के दाम।[82]

अपनी डफली अपना राग।[83]

चलती का नाम गाड़ी।[84]

सौ दिन चोर के तो एक दिन मालिक का।[85]

सीधी अंगुली से घी निकाला है?[86]

रस्सी जल गई पर बट नहीं गई।[87]

पूत कपूत तो क्यों धन संचे ... पूत सपूत तो क्यों धन संचे...।[88]

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।[89]

चट मगनी पट ब्याह।[90]

बंदर के हाथ में आईने ।[91]

दीनदयाल शर्मा ने बड़ी खूबसूरती के साथ लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, जो अत्यंत सराहनीय है। इनके उल्लेख से रचना धर्म समृद्ध हुआ है। वहीं बात तो बढ़ा–चढ़ा कर कहने के बजाए संक्षिप्त में कह देने से कथन में अर्थ गाम्भीर्य, सारगर्भितता, लाक्षणिकता, भावप्रवणता, सजीवता, ग्राह्यता का समाहार हो गया है, जिससे रचनायें अधिक सुरम्य व पठनीय हो गई हैं।

6.4 अलंकार और छन्द

मनुष्य सदैव से ही सौन्दर्य का उपासक रहा है। उसकी यही प्रवृति आभूषणों एवं अलंकारों की जन्मदाता रही है। किसी स्त्री के आभरण धारण करने पर उसकी शोभा में चार चाँद लग जाते हैं, उसी भाँति अलंकारों की सृष्टि से काव्य रूपी कामिनी का सौन्दर्य और सवंर्द्धित हो जाता है। साथ ही इनके प्रयोग से काव्य में चमत्कार अथवा रमणीतया की भी उत्पत्ति होती है। अलंकार का सरल अर्थ सजावट माना गया है। अलंकार तीन प्रकार के होते हैं– अर्थालंकार, शब्दालंकार, उभयालंकार।

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अलंकार की परिभाषा देते हुए लिखा है "काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।"[92]

डॉ. दयाकृष्ण विजय ने लिखा है– "अलंकार काव्य का वह बाह्य तत्व है, जो वस्तु के बाद रसोत्पति का दूसरा माध्यम है। सर्जक का तो यह आंतरिक पक्ष है किन्तु पुस्तक का बाह्य।"[93]
शब्दकोश के अनुरूप अलंकार शब्द का अर्थ–

अलंकार– सं. (पु.) 1. सजावट 2. आभूषण 3. रचनागत विशिष्ट शब्द योजना या अर्थ चमत्कार (जैसे – उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि), मय (वि.) अलंकार युक्त, अलकृत, शास्त्र (पु.) वह शास्त्र, जिस में अलंकारों का वर्णन हो, अलंकृत सं. (वि.) जिससे सजाया गया हो।[94]

उपर्युक्त कथनों और कोशगत अर्थ का सार है कि अलंकार वाणी के विभूषण हैं। काव्य में अलंकारों की उपस्थिति से सौन्दर्य, प्रभविष्णुता, स्पष्टता, माधुर्य, चमत्कार, ध्वन्यात्मकता, अर्थ गाम्भीर्य, लाक्षणिकता उत्पन्न होती है। अलंकार काव्य का बाह्य अंग है, जो रसोत्पत्ति का माध्यम भी है। अलंकार सम्प्रदाय के जन्मदाता आचार्य दंडी अलंकार को ही काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। इतना अवश्य है कि अलंकार काव्य के अनिवार्य अंग हैं। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में अलंकारों की नैसर्गिक प्रयुक्ति प्रसंशसनीय है। इनकी कविताओं एवं गीतों में प्रमुख रूप से अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, विनोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है, इन में भी सर्वाधिक रूप से अनुप्रास दृष्टिगोचर होता है। कुछ प्रमुख अलंकार–

अनुप्रास अलंकार

काव्य में जहाँ पर एक अथवा एक से अधिक वर्णों या वाक्यों की एक ही क्रम में आवृति हो वहाँ 'अनुप्रास' अलंकार होता है। अनुप्रास का अर्थ है, बार–बार वर्णों का न्यास, बारम्बारता या पुनरावृत्ति। अनुप्रास के कई भेद हैं, जिनको दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में प्रयुक्त किया है, यथा–

अन्त्यानुप्रास – किसी भी काव्य पंक्ति के अंत में जहाँ तुक मिलती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है। दीनदयाल शर्मा ने इस अलंकार का समुचित और सर्वाधिक प्रयोग किया है। प्रस्तुत है कुछ प्रसंग –

'बारिश का मौसम है आया,
हम बच्चों के मन को भाया[95]

'बजती जब स्कूल की घंटी
राजू रोज लेट हो जाता
मैं तो सबसे पहले आता
मैडम–सर का प्यार मैं पाता।'[96]

सर्कस का जोकर, खाता ठोकर[97]

लाला औ लाली, बैठो मत खाली

पढ़ो कुछ सीख लो, या बजाओ ताली[98]

उक्त काव्य पंक्तियों में 'आया–भाया', 'आता–पाता', 'लाली–खाली', 'जोकर–ठोकर' में तुक मिलने से अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

वृत्यानुप्रास अलंकार– जहाँ पर समान वर्णों की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो, वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है। दीनदयाल शर्मा ने इस अलंकार का भी सुंदर प्रयोग किया है, यथा–

सर्दी की हम करें विदाई।[99]

गीत को मन ही मन गायें।[100]

खुद न चखती खाती हो तुम,[101]

सब को मैं बतलाऊँ[102]

उक्त काव्यांशों में 'द', 'ग', 'ख', 'ब' की एक से अधिक बार आवृत्ति होने से वृत्यानुप्रास अलंकार की व्याप्ति हुई है।

चपर–चपर चरती है चारा[103]

चूहा चूं–चूं करता है।[104]

में–में कर/बकरी मिमयाई[105]

चीं–चीं–चीं करके चिड़िया चहकी[106]

काँव–काँव करता है कौआ[107]

मटक–मटक कर चलता देखो/कैसे मटकू राम[108]

गुल–गुल गुलगुला/मुझको तू खिला।[109]

च', 'म', 'क', 'ग' की आवृति होने से यहाँ भी वृत्यानुप्रास है। जो इनके अनेक गीतों में मिलता है।

लाटानुप्रास अलंकार –"जिस काव्य पंक्ति में शब्दों या वाक्यों की आवृति हो और उनका अर्थ भी वही रहे, केवल अन्वय करने पर तात्पर्य में परिवर्तन हो वहाँ लाटानुप्रास होता है।"[110]इस प्रकार लाटानुप्रास शब्दों का चमत्कार मात्र है। यथा–

वैद्य–हकीम बताए सारे,[111]

गली–गली और गाँव शहर में,[112]

रंग–बिरंगे न्यारे–न्यारे,[113]

'वैद्य–हकीम', 'गाँव–शहर', रंग–बिरंगा के उपयोग से काव्य में चमत्कार पैदा हुआ है, अतः यहाँ लाटानुप्रास है।

उपमा अलंकार– जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। **विश्वनाथप्रसाद के अनुरूप**–'उपमा का अर्थ है'उप' अर्थात् 'समीप' 'मा' अर्थात् निर्णय करना (तोलना)। इस अलंकार में दो पदार्थ एक स्थान पर रखकर जाँचे जाते हैं। इसी से इसे उपमा कहते हैं।" उपमा के चार अंग होते हैं– उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द। इन चारों तत्वों के होने पर पूर्णोपमा तथा एकाध के अनुपस्थित होने पर लुप्तोतमा अलंकार होता है। मुख्य रूप से जिस काव्य पंक्ति में समतावाचक शब्द जैसे सा, जैसे, ज्यों, सदृश्य, समान, सम का प्रयोग हो जाता है वहाँ उपमा अलंकार होता है। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में यथा स्थान उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है। यथा–

बच्चे हो तो करते रौनक,
किलकारी से गूंजे घर।
बिन बच्चों के मका है केवल,
सूना जैसे हो खँडहर।[114]

लेट जाए धरती पर लटपट,
आए न इसको कोई शरम।
घने बाल ज्यों ओढ़ा कम्बल,
सरदी का इसको ना गम।[115]

हमने देखा एक अचम्भा
पैर है जैसे कोई खम्भा[116]

उक्त कवितांशों में सूने घर से खँडहर की, कम्बल की उपमा घने बालों से, पैर की खम्भे से तुलना की गई है, इसीलिए यहाँ उपमा अलंकार है। दीनदयाल शर्मा के काव्य में उपमा अलंकार का पर्याप्त प्रयोग हुआ है।

अतिशयोक्ति अलंकार– जहाँ पर बढ़ा–चढ़ा कर बात की जाती है वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

देव करोड़ों का ये घर है,
इसको पूजें मिटे बीमारी।[117]

यहाँ पर गाय के संदर्भ में कवि ने कहा है कि गाय के शरीर में करोड़ों देवों का निवास होता है, किन्तु **यह अतिशयोक्ति है, एक मान्यता है।**

बिन पेड़ी छत पर चढ़ जाता।[118]
हो गया उल्टा–पुल्टा इक दिन,
उड़ गया हाथी पंखों के बिन।[119]

बिन पेडी के छत पर चढ़ना और हाथी का उड़ना वो भी बिना पंखों के असंभव है। कवि ने यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न किया है।

विनोक्ति अलंकार– काव्य में जहाँ 'बिना' शब्द का प्रयोग होता है, वहाँ विनोक्ति अलंकार होता है। दीनदयाल शर्मा के काव्य में ऐसे कुछ उदाहरण मिलते हैं–

समझ ना आए कोई पाठ तो
बिना मारे समझाती है।[120]

खुद हँसता और हमें हँसाए
इसके बिना है सर्कस सूना।[121]

उपर्युक्त पंक्तियों में 'बिना' शब्द का प्रयोग हुआ है, अतः यहाँ विनोक्ति अलंकार है। सार स्वरूप कहा जा सकता है कि कवि शर्मा ने अपने बाल काव्य में यथा सम्भव सरल व सहज अलंकारों की प्रयुक्ति करके बाल काव्य में चमत्कार पैदा किया हैं इससे काव्य में अनुपम, अप्रतिम सोन्दर्य उद्घाटित हुआ है।

6.4.2 छन्द

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन, उसकी हर गतिविधि लयबद्ध होती है। लगभग सभी विद्वानों ने काव्य में छन्दों की अनिवार्यता को स्वीकार किया है। छन्द दो प्रकार के होते हैं – मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक में मात्राओं की एवं वर्णिक में वर्णों की गिनती की जाती है। छन्दों से काव्य में अनुशासन, प्रवाह, यति, गति, लय की सृष्टि होती है। इसीलिए कवि कर्म को बहुत दुरूह कहा गया है। यह बात अलग है कि छन्दबद्ध कविता शीघ्र याद भी होती है, लोक की वाणी पर सरलता से चढ़ जाती है और पीढ़ी–दर पीढ़ी हस्तांतरित होती जाती है, यथा–कबीर की वाणी। शास्त्रीय दृष्टि से छंद लय, वर्ण अथवा मात्राओं के व्यवस्थित और सुनियोजित अनुपात का नाम है, जिसके द्वारा काव्य में स्थावित्व, प्रभाव और हृदयहारिता आती है। कविता और छंद का अटूट सम्बन्ध है। वैदिक साहित्य से छन्दो का प्रयोग होने लगा था। आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक छन्दो की अनिवार्यता स्वीकार की जाती रही है। छन्द की मूल आत्मा लय, संगीत्मकता और प्रवाह है। छन्द शास्त्र के प्राचीनतम आचार्य पिंगल मुनि माने गए हैं। 'छंद' का शब्दकोश **गत तात्पर्य**

छन्द सं. (पु.) 1. मात्राओं का निश्चित मान जिसके अनुसार पद्य रचना की जाती है। (जैसे–मात्रिक छन्द, मुक्त छन्द) 2. मात्रा की गणना के अनुसार पद्यबंध 3. वेद 4. कपट 5. मतलब – व्यवस्था (स्त्री.) (काव्य रचना में) छन्द योजना – शास्त्र (पु.) छन्द शास्त्र[122] **।** विभिन्न आचार्यों ने छन्द शब्द को परिभाषित किया है।

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – "छन्दों का प्रसार वैदिक काल से ही है। वैदिक युग में जिन छन्दों का प्रचार था, इधर की कविता में प्रचलित छन्दों से एक प्रकार से अलग है। इसलिए काव्यों में जिन छन्दों का प्रयोग होता है, उन्हें 'लौकिक' कह सकते हैं। इन लौकिक छन्दों में वर्ण और मात्रा के विचार से छन्दों के मोटे–मोटे दो भेद हो सकते हैं। मात्रिक और वर्णिक।"[123]

सुमित्रानंदन पन्त– "कविता तथा छन्द के बीच बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। कविता हमारे प्राणों का संगीत है, छन्द हृत्कम्पन, कविता का स्वभाव ही छन्द में लयमान होना है।"[124]

उक्त परिभाषाओं और विद्वानों के मतानुसार कहा जा सकता है कि मात्राओं की निश्चित गणना के अनुसार काव्य रचना करना ही छन्द कहलाते हैं। जिस प्रकार सरिता के तट अपने बंधन से धारा की गति को सुरक्षित रखते हैं उसी प्रकार छन्द भी अपने नियंत्रण से निर्जीव शब्दों को कोमल, सजल, कलरव भर कर उन्हें सजीव बना देता है। काव्य में छन्दों की उपस्थिति से लय, प्रवाह की उत्पत्ति होती है जिससे पाठक को रचना पढ़ने में आनन्द की प्राप्ति भी होती है और कंठस्थ भी शीध्र हो जाती है।

बाल काव्य में छन्दों की उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। छन्द एवं लय के कारण ऐसी कवितायें बालकों को शीघ्र याद हो जाती है। बच्चों की रचनाओं में प्रायः सीधे, सरल और लघु छन्दों का ही प्रयोग किया जाता है। दीनदयाल शर्मा समय के अनुसार चलने वाले रचनाकार हैं, इनके द्वारा की गई छन्दों की रचना कहीं शास्त्रीय है, तो कहीं स्वतंत्र और मौलिक है। छन्द शास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप इनके काव्य में कुछ छन्दों का प्रयोग हुआ है। अधिकतर लय, यति, गति और प्रवाह का पूरा ध्यान रखते हुए मौलिक, सरल, लघु व स्वतंत्र छन्दों का प्रयोग ही अधिक किया है, साथ ही काव्य पंक्तियों की संख्या का भी कोई क्रम निर्धारित नहीं है। चार पंक्तियों से लेकर तीस पंक्तियों का प्रयोग किया है। रचनाकार शर्मा ने मात्रिक छन्दों का उपयोग किया है, इनमें भी सोलह व चौदह मात्राओं का प्रयोग ही अधिक किया है। चौपाई छन्द का प्रयोग दीनदयाल शर्मा ने अत्यधिक किया हैं उनके द्वारा प्रयुक्त छनद दृष्टव्य है–

चौपाई छन्द – सममात्रिक चौपाई छन्द हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रयुक्त होने वाला छन्द है। इसके चारों चरणों में सोलह–सोलह मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त प्रायः में दो गुरू या दो लघु होते हैं। **डॉ. सुरेन्द्र दुबे** ने चौपाई के विषय में लिखा है कि यह सोलह मात्राओं वाला छन्द है, जिसके अन्त में गुरू होता है। प्रस्तुत है कुछ उदाहरण –

'नानी तू है कैसी नानी, नहीं सुनाती कोई कहानी।
नानी बोली प्यारे नाती, नई कहानी मुझे न आती।[125]

'फूलों में तुम फूल सी प्यारी, सब जीवों में तुम हो न्यारी।
रंग–बिरगी पांख तुम्हारी, तितली तू मुझे लगती प्यारी।[126]

बिल्ली आई बिल्ली आई, पूछँ हिलाती बिल्ली आई।
देखो दीदी! देखो भाई, मूँछ हिलाती बिल्ली आई।[127]

उक्त कविताओं में सोलह–सोलह मात्राओं एंव अंत में दो गुरू होने से चौपाई छन्द है। कुछ कविताओं में सोलह एवं चौदह मात्राओं का प्रयोग भी कवि ने किया है, जिसे ताटंक छन्द कहते हैं। इसमें सोलह और चौदह पर यति होती है।सोलह और चौदह पंक्तियों के छन्द–

आलस को अब दूर भगाओ, सोच रहे क्या तुम गुमसुम।
जो भी होता पास हमारे, उसको भी यह हर लेता।[128]

इस प्रकार दीनदयाल शर्मा ने कुछ मौलिक और कुछ मात्रिक छंदों का प्रयोग किया है तथा अनेक कवितायें मुक्त छन्द में भी रचित हैं। मुक्त छन्द में वर्णों और मात्राओं का कोई बंधन नहीं होता। इन्हें अतुकांत या विषम छन्द भी कहते हैं। इस परम्परा का श्रीगणेश संस्कृत से ही हो चुका था। **डॉ. पुत्तूलाल शुक्ल** ने मुक्त छन्द की परिभाषा देते हुए लिखा है – "विषम छन्द या मुक्त छन्द वह छन्द है, जिसके विकर्ष का लयाधार निश्चित एवं चरणों की संख्या तथा विस्तार अनिश्चित हो।"[129] ध्यातव्य है कि मुक्त छन्द में कवि लय में बद्ध होकर भी स्वतंत्र होता है। चरणों की संख्या का कोई बन्धन नहीं होता। कवि शर्मा ने अपने बाल काव्य में सर्वाधिक रूप से अतुकांत छन्दों का उपयोग किया है, किन्तु प्रवाह का सम्पूर्ण ध्यान रखते हुए। कुछ उदाहरण–

आटा–पाटा
कर तू टाटा
रविवार को
सैर सपाट[130]

ऐसी ग़जब की,हुई दिवाली
किलकारी काशोर मचा था[131]

प्रथम शिशु गीत की पहली दो पंक्तियों में आठ–आठ मात्राएँ हैं वहीं बाद की दो पक्तियाँ सात–सात मात्राओं की है, लेकिन लय फिर भी कायम है। दूसरी कविता के अंश में नौ, सात, आठ–आठ मात्राओं का क्रम है। इस तरह कुछ कविताओं में सात, छः, सात, छः का क्रम है। तो कहीं सोलह, अठ्ठारह मात्राएँ आई हैं। इस के पश्चात् भी लयाधार का निर्वाह कवि ने किया है। समग्र काव्य में लय, प्रवाह, संगीत व्याप्त है, जो बाल काव्य की सर्वाधिक वांछनीयता है, जिसके

होने से काव्य में किसी सरिता की उर्मियों की भाँति अनवरत गतिशीलता का अहसास होता है और पठनीयता में सरसता आती है, जिससे बालकों को इन रचनाओं के पठन से रसास्वादन मिलेगा। रचनाकार दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य छन्दबद्धता एवं मुक्त छन्द की दृष्टि से अलंकृत है।

6.5 गीतात्मकता

खग वृन्दों के कलरव, निर्झर की झर–झर, कोयल की कुहू–कुहू, भ्रमरों की गुंजार, मेघ की घनन–घनन, पवन की सरसराहट आदि से मानव रोमांचित हुआ होगा और उसके कंठ से जो कुछ भी प्रस्फुटित हुआ होगा, वही गीत बना होगा। वैदिक मन्त्रों में भी विधिवत गीत तत्व मिलते हैं। गीत कवि के मन से विस्तृत होने वाली वह मनोहर निर्झरणी है, जिसमें संगीत की लोल–लहरियों की थिरकन और भावों की मुधरिम तरंगावलियों का नर्तन समाविष्ट रहता है। निस्संदेह काव्य कला अपने कोमलतम स्वरूप को लेकर गीतिकाव्य में ही अवतरित हुई है। अंग्रेजी में गीतिकाव्य का पर्याय 'लिरिक' (Lyric) है, जिसका सम्बन्ध वीणा के सदृश्य एक वाद्ययंत्र से है। जब मानव उल्लसित होता है, उमंगित होता है, तो विविध अवसरों पर उसके उद्‌गार लयबद्ध होकर गीत के रूप में फूट पड़ते हैं। गीत वह रचना है, जिसे गाया जा सके, जो लयबद्ध हो, जिसमें स्वर हो, ताल हो, यति हो गति हो, प्रवाह हो। गीत की प्रारम्भिक पंक्तियाँ मुखड़ों, स्थाई या ध्रुव पंक्ति कहलाती है, शेष पंक्तियाँ अन्तरा या बंध कहलाता है। अन्तरे की अन्तिम पंक्ति से मुखड़े की तुक मिलना आवश्यक है। हर अन्तरे के बाद मुखड़ा दोहराया जाता है। गीत का शब्दकोश के अनुरूप तात्पर्य–

गीत सं. (वि.) गाया हुआ, (पु.) 1. छोटी पद्यात्मक रचना 2. प्रशंसा, बढ़ाई 3. कथन, चर्चा कार (पु.) गीत रचना करने वाला,गीतात्मकता सं. (वि.) गतिमय[132]

डॉ. श्याम सुन्दरदास के अनुसार – "गीति काव्य में कवि अपनी अंतरात्मा में प्रवेश करता है। बाह्य जगत को अपने अंतःकरण में ले जाकर उसे अपने भाव में रंजित करता है। उसमें शब्द साधना के साथ स्वर (संगीत) की साधना होती है।"[133]

'वियोगी होगा पहला कवि...' के समानार्थक **अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि शैली** की प्रसिद्ध उक्ति दृष्टव्य है–

'Our Sweetest Songs are those

That tell of saddest thought"[134]

उपर्युक्त विवेचन के बाद कहा जा सकता हैं कि गीति काव्य कवि की सुख–दुःखमयी तीव्र भावानुभूति का कोमल कान्त शब्दावली में संक्षिप्त खण्ड अंकन है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय एवं संगीतात्मक होता है। शास्त्रीय दृष्टि से गीत छन्द शास्त्र के नियमों में आबद्ध रचना

होती है। गीत अत्यन्त पुरातन, लोकप्रिय, लोक प्रचलित विधा है। अनादि काल से आज तक हर उत्सव, शुभ अवसर पर प्रसंगानुसार गीत गाने की परम्परा हमारे देश में प्रचलित है, जैस–वीर गीत, करूण गीत, राष्ट्रीय गीत, वैवाहिक गीत, बधाई गीत, युद्ध गीत, बाल गीत, उपालम्भ गीत, रूपक गीत, हास्य–व्यंग्य गीत इत्यादि। मुख्यतः गीत के लिए भाव प्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौन्दर्य, संगीत, संक्षिप्तता, कोमलकांत पदावली, कल्पना आदि की अनिवार्यता है। गीत से ही जीवन में सुर, लय, ताल, मधुरता का साम्राज्य कायम है।

बालरचनाकर दीनदयाल शर्मा ने बाल कविताओं के साथ–साथ बहुत सुमधुर, सौन्दर्य व माधुर्य से सरोबार, अलंकृत, बालोपयोगी, मनभावन, श्रेष्ठ बाल गीतों की रचना की है–

आओ रलमिल बनाएँ सारे, इक दूजे का अपना घर
घर हो तो हम उड़े आसमां, लग जाते हैं जैसे 'पर'
घर जैसा भीहोता घर, जीवन उसमें करे बसर।
आओ रलिमल बनाएँ घर, इक दूजे का अपना घर।।[135]

चल चल चल भई चल चल चल
रूक ना कभी तू चलता चल
ठहरा जल गंदा हो जाता,
उससे तू भी शिक्षा लेले

चलना ही कहलाता जीवन,
कर्म किए जा चलता चल
चल चल चल भई चल चल चल
रूक ना कभी, तू चलता चल[136]

'सर्दी आई, सर्दी आई, ओढ़ें कम्बल और रजाई।
ज्यों–ज्यों सर्दी बढ़ती जाए, कपड़ों की हम करें लदाई।
मिल जुल सार आग तापते, रात–रात भर करें हथाई।
सर्दी आई, सर्दी आई....[137]

इस प्रकार कवि शर्मा ने गीतों की रचना में शास्त्रीयता एवं लयात्मकता का पूरा ध्यान रखा है और सुन्दर–सुन्दर बालोपयोगी गीत लिखे हैं, जिन्हें गुनगुनाने का मन करता है, ये सभी गीत सहज, सरल व प्रभावी बन पड़े हैं, इन्हें पढ़ते ही मन प्रसन्न हो उठता है। साथ ही ये गीत बालकों के लिए प्रेरणास्पद भी हैं, जैसे 'चल–चल' गीत में सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा है, साथ ही निरन्तर आगे बढ़ने का भी सन्देश कवि ने दिया है। 'सर्दी आई' में मौसम की अनुभूति है कि अब सर्दी आ गई है, हमें रजाई–कम्बल ओढ़ना चाहिए, ऊनी कपड़े पहनने चाहिए, रात्रि को आग

तापना चाहिए आदि। तो एक गीत में मिलकर और सौहाद्र से रहने की प्रस्तुति है, जो उन्हें जीवन का व्यावहारिक ज्ञान व सन्देश भी प्रदान करती है।

6.6 शब्द संयोजन

शब्द ब्रह्म स्वरूप माने गए हैं, इसी से शब्दों की महत्ता स्वतः सिद्ध हो जाती है। किसी भी भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों से मिलकर शब्द संयोजन बनता है। शब्द एक स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि है जो एक या अधिक वर्णों के संयोग से कंठ और तालु आदि के द्वारा उत्पन्न होती है तथा जिससे सुनने वालों को किसी पदार्थ, कार्य अथवा भाव का बोध होता है, उसे 'शब्द' कहा जा सकता है। स्वर और स्वर मिलकर तो कभी स्वर व व्यंजन के योग से शब्दों का निर्माण होता है। शब्दों से वाक्य और वाक्यों से भाषा का निर्मित होती है। 'शब्द' शब्द का कोशगत अर्थ –

शब्द सं (पु.) 1. आवाज़ (ध्वनि) जैसे – क्रोध भरे शब्द में कहना, बच्चे के रोने के शब्द 2. सार्थक ध्वनि, लफ़्ज, वर्ड (जैसे मधुर शब्द, आर्शीर्वाद के दो शब्द कहना) 3. आप्त वचन – कार (वि.) शब्द करने वाला, कोश (पु.) शब्दों के वर्ण विन्यास, अर्थ प्रयोग तथा पर्याप्त आदि से सम्बन्धित ग्रन्थ – कौशल (पु.) शब्द चातुर्य – ब्रह्म (पु.) 1. शब्द निहित अध्यात्म विज्ञान 2. प्रणव, ओंकार–भण्डार (पु.) शब्द सम्पत्ति[138]

हिन्दी सुगम व्याकरण के अनुसार–"'शब्द भाषा वाटिका के सुमन है। इन विभिन्न प्रकार के सुमनों को भाव सूत्र में संजोकर अनुपम काव्य हार का निर्माण हो सकता है... वास्तव में शब्द ही इतिहास है, कला है, विज्ञान है, संस्कृत है, भाषा है, साहित्य है।'[139]

पंतजलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है"लोक व्यवहार में जिस ध्वनि से अर्थ बोध होता है वह शब्द है मुख से उच्चरित, कान श्रुत, बुद्धि से ग्राह्य और प्रयोग से स्फुरित होने वाली आकाशव्यापी ध्वनि शब्द है।"[140] दृष्टव्य है कि शब्द का शाब्दिक आशय सार्थक ध्वनि, नाद, आवाज है, जो मुख से उच्चरित और कर्ण से सुनी जाती हैं। शब्द भाषा की प्रथम इकाई है। शब्द स्वर और व्यंजनों के मेल से निर्मित होते हैं। शब्द से पद और पदों से वाक्य बनते हैं। इस प्रकार शब्द स्वर, व्यंजन, पद और वाक्य का सार्थक स्वरूप है। किसी भी भाषा की शब्द योजना में विभिन्न स्त्रोतों से आए अनेक शब्द होते हैं, जिनसे भाषा विशेष और समृद्ध व सामर्थ्यवान बनती है, लेकिन ऐसे सभी शब्दों का उद्गम स्थल अलग–अलग होता है। ऐसे स्त्रोत तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशक आदि हैं।

1. **तत्सम शब्द**–'तत्सम' का अर्थ है उसके समान। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में ऐसे समस्त संस्कृतमय परम्परागत शब्द श्रृंखला को तत्सम शब्द कहा गया है, जो संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के साथ ग्रहण किए गये हैं।

तत्सम शब्दों को परिभाषित करते हुए **डॉ. श्रीविद्यानिवास मिश्र** ने कहा है–"तत्सम वे शब्द हैं जो जैसे के तैसे संस्कृत से ग्रहण किए जाते हैं। इस प्रकार तत्सम शब्द संस्कृत से आगत होकर और हिन्दी में यथावत व्यवहृत होते हैं।"[141]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि तत्सम शब्द संस्कृत से यथारूप हिन्दी में व्याप्त हो गये हैं। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में तत्सम शब्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है जो रेखांकित करने योग्य है क्योंकि इन शब्दों के प्रयोग से बच्चों को तत्सम शब्दावली का ज्ञान बाल्यकाल से ही होने लगेगा। प्रस्तुत है कुछ उदाहरण –

जीवन के **शृंगार** पेड़ हैं।[142]

दुनिया का **दर्शन** करवाया।[143]

दृढ़ संकल्प हमारे[144]

शान्ति अमन और **सत्य–अहिंसा**।[145]

अग्नि और पृथ्वी मिसाइल[146]

राष्ट्र–पक्षी कहलाए।[147]

नित्य कर्म से जोड़ेंगे नाता[148]

महात्मा जी, मुझ से गलती हो गई, मुझे माफ कर दो।[149]

ब्रह्मा जी ने वहाँ लगे आसन पर अपना स्थान ग्रहण किया।[150]

बार–बार **श्रोताओं** के व्यंग्य–बाण चुभ रहे थे।[151]

प्रार्थना के बाद **राष्ट्र**–गान प्रारम्भ हुआ।[152]

अज्ञान रूपी अंधकार से **ज्ञान** रूपी प्रकाश की ओर ले जाएँ।[153]

मैं तुम सबका भविष्य **उज्ज्वल** देखता हूँ।[154]

बड़े–बड़े **ऋषियों** ने भी पहले मन को नियंत्रित किया है।[155]

अपने **सद्‌कर्मों** के कारण सबके दिलों में बसना चाहती हूँ।[156]

ऋग्वेद में कहा भी गया है कि देवता पुरूषार्थी से प्रेम करते हैं।[157]

चिकी कामेडी बोली – मैं **निर्दोष** हूँ महाराज।[158]

....और आपस में **विचार विमर्श** करने लगे।[159]

सूर्य छिपने से पहले – पहले वे दोनों अपने–अपने घर आतीं।[160]

रामजीदास.... उसका एक–एक बोल मेरे **हृदय** में शूल सा चुभता है।[161]

बाबूलाल—मैनें सुना है कि वह **चरित्र** के मामले में भी सही नहीं है ललिता।[162]

आरम्भ में रात्रि सूचक उदास किन्तु धीमा संगीत।[163]

मुरली..**क्षणिक** अन्तराल के बाद मुरलीधर आत्म संवाद की तरह स्वप्निल होकर बोलते हैं।[164]

विजय ये वायरस उन **श्वेत** कोशिकाओं पर आक्रमण करता है।[165]

2. तद्भव शब्द—संस्कृत के जो शब्द भाषा परिवर्तन की स्वाभाविक प्रक्रिया से गुजरते हुए विकृत होकर हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में आए हैं, उन्हें तद्भव कहा गया है। हिन्दी की सारी क्रियायें और सर्वनाम तथा अधिकांश संज्ञाएँ, विशेषण और क्रिया विशेषण तद्भव ही हैं, यथा—आग, आधा, कपूर, कोयल, मोती, साँझ, गाँव, सूरज आदि। इस विषय में **डॉ. सीताकिशोर** ने तद्भव शब्दों को व्याख्यायित करते हुए लिखा है —"तत' (हलंत) और 'भव' शब्दों का तात्पर्य, 'उससे' उत्पन्न होता है। 'उस' शब्द जिस भाषा की ओर संकेत करता है, वह संस्कृत है। ऐसे शब्द संस्कृत से सीधे न आकर एक लम्बी यात्रा पूरी करके आते हैं। सरलीकरण की प्रवृति इस शब्द समूह में अधिक रहती है।[166] इस प्रकार संस्कृत से सीधे न आकर एक लम्बी यात्रा करके परिवर्तन के साथ हिन्दी में आगत शब्द तद्भव कहलाए। दीनदयाल शर्मा ने तत्सम शब्दों के साथ—साथ तद्भव शब्दों का भी पूरी तन्यमता के साथ उपयोग किया है, जो बालोपयोगी है। ये भी कह सकते हैं कि ये शब्द स्वाभाविक रूप से आए हैं। कुछ ऐसे ही शब्दों के उदाहरण—

जब भी नकली **दांत** दिखाते[167]

सूरज एक सितारा[168]

भंवरे गीत सुनाते हैं[169]

शीतल **छांव** लुटाते हैं[170]

बरखा जब हो जाए बंद[171]

फूलों से रस चूस—चूस कर[172]

नाच तुम्हें दिखलाए[173]

मोती जिनको भाते[174]

इसके **मीठे** बोल[175]

नहाती **मिट्टी** में गौरेया[176]

घी, दही, मक्खन देती भारी[177]

उसका **शाप** सच भी हो सकता है[178]

लोकेश... वह **ससुराल** से अलग रहने लग गई।[179]

कवि शर्मा के द्वारा तद्धव शब्दों का श्रेष्ठ संयोजन किया है। इससे इनके साहित्य में सौन्दर्य की व्याप्ति हुई है। बालक इन शब्दों से भली गया परिचित होते हैं क्योंकि ये शब्द उन्हें अपने परिवेश से प्रतिदिन सुनने को मिलते हैं।

3.देशज शब्द

किसी भी भाषा में प्रचलित ऐसे सभी स्थानीय शब्द देशज होते हैं जिनके उद्‌गम की कहानी आंचिलक परिवेश में ही लुप्त रहती है। हिन्दी में भी ऐसे अनेक शब्द हैं जिनकी व्युत्पति का पता नहीं चलता ओर जिनकी प्रयुक्ति क्षेत्रीय अभिव्यक्ति को साकार करती है, ऐसे शब्द देश विशेष की लोकभाषा से ही निःसृत होते हैं, देशज शब्द कहलाते हैं। यथा–झटपट, चकाचक, झूला आदि।

श्री श्यामचन्द्र कपूर ने देशज शब्दों के संदर्भ में अपना चिंतन प्रकट करते हुए लिखा है– "जो शब्द देश की विभिन्न बोलियों या क्षेत्रों (जनपदीय) बोलियों से हिन्दी में लिए गए हैं।"[180] स्पष्ट है कि विभिन्न बोलियों या जनपदीय बोलियों से लिए गए शब्द ही देशज शब्द कहलाते हैं। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में देशज शब्दों का यथा स्थान उल्लेख किया है।

डांट–डपट के कर देते हैं[181]

अक्कड़–बक्कड़ बोकरी[182]

कुकडू–कू की बांग लगता[183]

खेले **गुल्ली**–डंडा[184]

ढोलक बाजे ढम–ढम[185]

लूएँ चलती आंधी चलती[186]

मजदूर औरतें प्रतिदिन की तरह पत्ते तोड़ने **तड़के–तड़के** निकल गई थी।[187]

मुरली... अरे **बावली** रोने से कुछ नहीं होता...।[188]

मुरली... बेचारी **छोरियाँ** रोटी के एक–एक टुकड़े के लिए तरसती रही...।[189]

लोक जीवन में व्यवहृत होने से देशज शब्द हमारे मन के करीब होते हैं, इनके पठन एवं अध्ययन से अंतर्मन में अपनत्व, सहज जुड़ाव का भाव उदीयमान होता है। दीनदयाल शर्मा के साहित्य में देशज शब्दों का भली प्रकार से उपयोग हुआ है।

4. विदेशज शब्द

विदेशज प्रत्येक भाषा अपने साहश्चर्य में आई विदेशी भाषाओं में समाविष्ट हो जाते हैं। विदेशी मूल के ऐसे ही शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। सभी भारतीय भाषाओं में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, डच, फ्रेंच, तुर्की आदि कई विदेशी भाषाओं से ऐसे शब्दों को स्वीकार गया है। हिन्दी ने भी अनेक विदेशी भाषाओं को अपने में समाहित करके अपने शब्द भण्डार को समृद्ध किया है, कुछ उदाहरण जैसे – तमाशा, दुकान (फारसी), अदालत, फैसला, कीमत (अरबी), रेल, सर्कस, मोटर, पेन (अंग्रेजी), अनानास, बोतल, अलमारी (पुर्तगाली), कैंची, कुली, चम्मच (तुर्की) आदि। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल साहित्य में विदेशी शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। ऐसे शब्दों की संक्षिप्त सूची–

1. अंग्रेजी शब्दावली –

रेल गाड़ी का,**टी.टी.** बोला[190]

कितनी घड़ियाँ और **मोबाइल**[191]

ड्रामा करें कभी **डांस** दिखाएँ[192]

कार्टून फिल्में दिखलाता[193]

कम्प्यूटर है सब पर भारी[194]

कोट–पैंट और **टाई** पहन कर[195]

मैं भी **गेम** चलाऊँगा[196]

टी.वी. सबको भाए[197]

मैडम–सर का प्यार मैं पाता[198]

होमवर्क करवाती है[199]

पॉकेट मनी पाँच रूपइया[200]

दुनिया माने मुझको **हीरो**[201]

अब **हीटर** की बारी आई[202]

'**प्लीज** दीदी, आज... आज मुझे माफ़ कर दो[203]

उसने **फोन** से नम्बर मिलाये[204]

अंकल, एक बात बताओ[205]

जगह–जगह **रेडियो, टी.वी.** और **लाउडस्पीकर** से देश भक्ति के गीत आ रहे थे[206]

डॉक्टर ने उसे भर्ती कर लिया[207]

मौसी हमारी **मम्मी** अभी तक क्यों नहीं आई[208]

नो मेंशन यार[209]

एक दिन बस के **कंडक्टर** भालू भाई बोले – बच्चों बस रूकने पर ही उतरा करो[210]

चीख सुनकर लोमड़ी **ड्राइवर** ने झट से बस रोक दी[211]

आठ मेजें। आठ स्टूल। **ब्लैक बोर्ड**[212]

आज मैं आपको **इंग्लिश** पढ़ाऊँगा[213]

गुड... क्या तुम अख़बार पढ़ते हो[214]

क्या करोगे **पायलेट** बनकर[215]

कमला–इसके **कैरियर** की तू चिंता कर बेटा[216]

रमन–और यदि **बिजनेस** नहीं चला तो...?[217]

रामजीदास–...अब बुढ़ापे में अब **ड्यूटी** भी निभानी है[218]

बलविन्द्र–...**मिसेज** डिसूजा भी कितनी स्मार्ट लग रही थी आज...।[219]

बलविन्द्र–...तुम्हारे पैसों पर मेरा पूरा हक है **डार्लिंग**[220]

बीना–...जिस दिन मैंने कोई **डिसीजन** ले लिया न[221]

मन्जू–नहीं **माई डियर**[222]

राकेश–...बेटे को **फिक्स डिपोजिट** की रकम समझ कर संचित किया... और...[223]

राजकुमार–...यहाँ के एक प्राइवेट स्कूल में टीचर लग गई है[224]

जयदेव–गुडनाइट बेटे ...**गुडनाइट**...[225]

सुषमा–भाई के **रिजल्ट** से पाँच सौ रूपये का क्या संबंध है भई?[226]

अरबी, फारसी मिश्रित शब्द–

आजादी– दिवस को, अकु ने मनाया[227]

रबर, कागज, लकड़ी देते[228]

कैसे तेरा **कर्ज** चुकाऊँ[229]

तुझ पर जाऊँ **कुर्बान**[230]

आँखों में आ गई **खुमारी**[231]

तू क्या मेरा **मुवक्किल** है[232]

भोली **शक्लें** प्यारी–प्यारी[233]

भूल गई करूँ **शिकायत**[234]

इधर–उधर की **आम–खास** की[235]

उसके झूठ बोलने पर साधू बाबा को **जबरदस्त** गुस्सा चढ़ गया।[236]

उसने इधर–उधर **नजरें** दौड़ाई।[237]

फिर उड़ने में कोई **दिक्कत** नहीं होगी।[238]

मंत्री उल्लू **अदब** से झुकते हुए बोला...।[239]

मन्नू बोला, बता दो तो बड़ी **मेहरबानी** होगी।[240]

शेर... तो मंत्री पद से **बर्खास्त** कर दूंगा, हाँ... समझे?[241]

हरकू... मेरा **कसूर** क्या है?[242]

कमला–...**दौलत** है, **शोहरत** है, **इज्जत** है... क्या कमी है।[243]

रामजीदास–...चीज की कमी के लिए कौन **कमबख़्त** रोता है।[244]

रामदेई–...आज अपनी ही बहू के सामने बिना गुनाह किए **जलील** होना पड़ रहा है।[245]

देवी–...उन्हीं के तो आशीष से तो लाडले का मुहँ देखना **नसीब** हुआ।[246]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य में सभी तरह के शब्दों का बहुत बड़ी मात्रा में अंकन करना काबिले–तारीफ़ है। इनके प्रयोग से भाषा – शैली में सौन्दर्य, गुणवत्ता, सार्थकता, सरसता, मिठास, माधुर्य, बोधगम्यता आदि का उत्कर्ष हुआ है।

6.7 शैली

बात कहने की कला ही शैली है। हर व्यक्ति का अपने मनोभावों को व्यक्त करने का विशिष्ट ढंग होता है, जिसे साधारण बोली में लहजा या सलीका भी कहते हैं और ये ही लहजा कभी–कभी बात से भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। **"What you say is not important but how you say is important".** यदि अच्छी बात को सुन्दर ढंग से कहा जाए तो 'सोने में सुगन्ध', किन्तु उसी बात को ग़लत तरीके से प्रतिपादित कर देने से अच्छा मंतव्य भी अप्रिय हो जाता है, वहीं कभी–कभी गलत बात को सही सलीके से प्रस्तुत कर देने से वह बात भी प्रिय बन जाती है। **शैली** से तात्पर्य है "शैली, कार्य–पद्धति, विशेष उपाय"[247]

"कलाक्रम, कारीगरी, दक्षता, उपक्रम, हस्तकर्म, रूप, आकृति, निर्माण, सृष्टि।"[248]

डॉ. प्रत्युष गुलेरी के अनुसार –"शैली किसी भी साहित्यकार कलाकार की सबसे बड़ी शक्ति होती है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिससे लेखक अपने कथ्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसीलिए कहा गया है **'स्टाइल इज द मैन'**। हमारे यहाँ सर्वप्रथम शैली के पर्याय के रूप में रीति शब्द के प्रयोक्ता वामन रहे हैं। भरत मुनितो इसके लिए प्रवृति शब्द को अपनाया। कुंतक ने 'रीति' के स्थान पर 'मार्ग' शब्द की चर्चा की है।"[249]

राधा दीक्षित ने शैली के संदर्भ में कहा है शैली अभिव्यक्ति की विशिष्ट पद्धति है जिसके माध्यम से कोई काम करने अथवा कोई चीज निर्मित, प्रस्तुत या प्रदर्शित करने तथा किसी प्रसंग का प्रस्तुतीकरण, ढंग, अथवा तरीका शैली कहलाती है। रचनाकार अपने भावों व विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, इसके इस विशिष्ट ढंग जिस पर वक्ता या उसके काल, समाज आदि की छाप लगी होती है उसे शैली कहते हैं। एक वक्ता की बोली में अभिव्यक्ति के प्रसंग और उद्देश्य के भेद से दिखलाई देने वाले अंतर को शैली कहते है।[250]

बाबू गुलाबराय–"शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[251]

उपर्युक्त प्राचीन आचार्यों के अतिरिक्त आधुनिक विद्वानों ने भी शैली का आशय और परिभाषा को लेकर अपने–अपने मत प्रकट किये हैं, जिनमें प्रमुख रूप से रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्यामसुन्दर दास, श्री करूणापति त्रिपाठी, शिवदान सिंह चौहान आदि। सभी के मतों का निचोड़ है कि जब किसी विषय को आकर्षक, प्रभावोत्पादक एवं रमणीय अभिव्यक्ति मिलती है, तो साहित्य में उसे शैली कहते हैं। वस्तुतः शैली रचनाकार के जीवन की प्रतिबिम्ब मानी गई है। एक लेखक जितना अधिक से अधिक मार्मिक और प्रभावोत्पादक रूप में अपने मत को प्रकट करता है, वह शैली उतनी ही श्रेष्ठ और अच्छी कही जायेगी। एक वक्ता की बोली में अभिव्यक्ति के प्रसंग और उद्देश्य के भेद से दिखलाई देने वाले अन्तर को शैली कहते हैं। सार रूप में, विशिष्ट ढंग से कहने की कला ही शैली है। कोई भी कथ्य एवं भाव पठनीय, प्रभावशाली, सार्थक, रोचक, आकर्षक, हृदयस्पर्शी शैली के द्वारा ही बनता है।

विभिन्न आचार्यों, मनीषियों, विद्वानों ने शैली को अनेक रूपों में विभाजित किया है, जिनमें प्रमुख रूप से वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, काव्यात्मक, ज्ञानात्मक, व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक, विचारात्मक, चित्रात्मक, पूर्व कथन, पत्र–लेखन, विश्लेषणात्मक, बोधात्मक, विवेचनात्मक, डायरी आदि। बाल साहित्य के लिए यह गौरव की बात है कि वर्तमान में इस साहित्य में भी भाव प्रवणता एवं शैली को लेकर नित अभिनव प्रयोग होने लगे हैं। कई बाल साहित्यकार ऐसे नए प्रयोगों तथा नवीन अंदाज को लेकर प्रतिबद्ध हैं, जैसे – दिविक रमेश, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', निरंकार देव सेवक, भगवती प्रसाद द्विवेदी, गोविन्द भारद्वाज, चक्रधर नलिन, मोहम्मद अरशद खान, दीनदयाल शर्मा इत्यादि।

इस संदर्भ में प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार **दिविक रमेश** का चिन्तन यहाँ प्रासंगिक है – "पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी के बाल साहित्य में जहाँ भाव और भावबोध की दृष्टि से बालक के नए–नए रूप उभर रहे हैं, वहीं रूप तथा भाषा शैली में भी नए–नए अंदाज़ और प्रयोग सम्मिलित हुए हैं।"[252]

हर रचनाकार की अपनी मौलिक, विशिष्ट शैली होती है, जो उसे अन्य कलाकार से भिन्न प्रदर्शित करती है, जिसे पढ़कर या सुनकर पाठक या श्रोता समझ लेते हैं कि यह अमुख साहित्यकार की रचना है। बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का अपनी बात कहने का अपना सलीका है, मुहावरा है, अंदाजे–बयाँ है। निश्चय ही शैलियाँ तो वही हैं, बस प्रत्येक साहित्य साधक का उन्हें प्रयुक्त करने का अपना अनोखा तरीका होता है। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल साहित्य में कई प्रकार की शैलियों को विशेष रूप से काम में लिया है, जैसे–काव्यात्मक वर्णनात्मक, संवादात्मक शैली आदि।

काव्यात्मक शैली

काव्यात्मक शैली में रचनाकार अपनी रचनाओं के बीच–बीच में काव्य पंक्तियों, कवितांशो, श्लोकों, ग़ज़लों के शेर आदि का यथाप्रसंग उल्लेख करता है, जिससे रचना में सौन्दर्य, प्रभावोत्पादकता, मार्मिकता का संवर्द्धन होता है, साथ ही रचना अधिक पठनीय, मननीय, रोचक, सरस व आल्हाद–प्रदारक बन जाती है और जब रचनाकर स्वयं कवि हो तो कहने ही क्या। यह बात बाल रचनाकार शर्मा पर पूरी तरह से खरी उतरती है, क्योंकि वे गद्य और पद्य पर समान अधिकार रखते हैं। उनकी गद्य रचनाओं में यथा संदर्भ काव्यात्मक शैली का सफल प्रयोग हुआ है जैसे'सपने' एकांकी में पुस्तक के महत्त्व का एक प्रसंग आता है, तब एक बालक के द्वारा किताब पर कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की गई हैं, जिसके माध्यम से बालक किताबों की प्रासंगिकता से भली प्रकार परिचित हो सकेंगे। यथा–

सुख–दुःख में साथ,
निभाती रही किताब।
बुझे मन की बाती,
जलाती रही किताब।

अँधेरे में भी राह,
दिखाती रही किताब।
अनगिनत खुशियाँ
लुटाती रही किताब[253]

इसी एकांकी का शुभारम्भ निम्न श्लोक से हुआ है, जिससे रचना के श्रीगणेश में मंगल ध्वनि का उद्रेक हुआ है, जिसके उच्चारण से बच्चों में ईशप्रार्थना और विनयशीलता का भाव भी जाग्रत होगा।

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय।[254]

दीनदयाल शर्मा ने इस रचना में काव्यात्मक शैली का बड़ी गहराई से अंकन किया है। नाटक के अंत में भी खूबसूरत गीत की पंक्तियोंद्वारा बालकों को भाईचारे व सौहार्दभाव बनाये रखने सीख दी है–

इन्सान का इन्सान से हो भाईचारा...
यही पैगाम हमारा...
यही पैगाम हमारा... ।[255]

'जंग जारी है' के नाटकों में भी कई स्थानों पर इस शैली को प्रयुक्त किया गया है। उक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि नाटककार शर्मा ने अपने कवि हृदय होने का अपने गद्य में भरपूर लाभ उठाया है।

वर्णनात्मक शैली

इस शैली के अन्तर्गत किसी स्थान दृश्य, अनुभव, घटना, वस्तु, स्मृति आदि का वर्णन सुन्दर शब्दों में किया जाता है, जिस से कथानक को विस्तार भी मिलता है, पाठक के ज्ञान में बढ़ोतरी भी होती है और रचना की पठनीयता भी बढ़ती है, रोचकता भी आती है। प्रस्तुत शैली कथा साहित्य में बहु प्रचलित है। दीनदयाल शर्मा बाल मन के पारखी हैं, जानते हैं कि बालकों के लिए किस प्रकार व किस संदर्भ में कैसी भाषा–शैली का प्रयोग करना चाहिए। इन्होंने अपने बाल नाटकों एवं कहानियों में इस शैली को यथा स्थान व प्रसंग काम में लिया है। 'फैसला' नाटक के प्रारम्भ में जंगल का सुरम्य, रमणीय और यथार्थ वर्णन किया है। प्रस्तुत है कुछ अंश –

"बच्चों, हजारों वर्ष पहले की बात है। एक जंगल में अनेक पशु–पक्षी आराम से रहते थे। जंगल का राजा एक शेर था। वह शेर सही न्याय के लिए दूर–दूर तक प्रसिद्ध था। राजा शेर पशु–पक्षियों की सुविधा के लिए एक पीपल के पेड़ के नीचे हर सप्ताह एक बैठक का आयोजन करता था। बैठक में अनेक पशु–पक्षी अपना दुखड़ा सुनाते और जंगल का राजा शेर उनका दुखड़ा सुनकर उचित न्याय करता। शेर राजा के न्याय से जंगल की सारी प्रजा खुश थी।"[256]

'चिंटू–पिंटू की सूझ' कथा के प्रारम्भ में बिल्ली व उसके बच्चों की चंचलता के संदर्भ में इस शैली का सुन्दर चित्रण "एक गाँव में एक बिल्ली रहती थी। नाम था उसका झबरी। गाँव के

बच्चे प्यार से उसे मौसी कहते थे। झबरी मौसी के छोटे–छोटे प्यारे से दो बच्चे भी थे। एक का नाम था चिंटू और दूसरे का नाम पिंटू। चिंटू–पिंटू सारा दिन उछल–कूद करते तो झबरी मौसी उन्हें खूब समझाती लेकिन उन पर अपनी माँ की बातों का कोई असर नहीं होता।"[257]

'सबसे बड़ी सजा' कहानी विद्यालय के परिवेश पर आधारित है। इसमें प्रार्थना सभा का मनोरम, स्वाभाविक, जीवंत, सजीव और चित्रात्मक चित्रण बहुत सुन्दर व सहज बन पड़ा है।"सुबह साढ़े दस बजे विद्यालय में प्रार्थना हो रही थी। बच्चे विद्यालय पोशाक पहने अपनी–अपनी पंक्तियों में खड़े बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। एक तरफ अध्यापक गण एवं प्रधानाध्यापक जी खड़े थे। प्रार्थना स्थल के एक ओर दरवाजे के पास चपरासी श्यामस्वरूप झाड़ू लगा रहा था। प्रधानाध्यापक जी खड़े–खड़े सोच रहे थे कि श्यामस्वरूप प्रार्थना से पहले झाड़ू क्यों नहीं लगाता? इसे कितनी बार समझाया है।"[258]

(v) संवादात्मक शैली

संवाद शैली कथा साहित्य का अनिवार्य तत्व है। इनके माध्यम से जहाँ विषय वस्तु आगे बढ़ती है वहीं कथ्य में रोचकता आती है और पात्रों का चरित्र उभर कर आता है और उनकी मनः स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो पाती है। वार्तालाप, बातचीत अथवा संवाद की आधारशिला पर कहानी एवं नाटक रूपी भवन सुदृढ़ता पाते हैं। **डॉ. योगेश गोकुल** के अनुसार "दो या अधिक पात्रों के बीच हुई बातचीत के माध्यम से कथा को प्रस्तुत करना वार्तालाप या संवाद शैली है। कथ्य को गतिशील बनाने तथा चरित्रों के कार्यकलाप का स्पष्ट करने में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद छोटे–बड़े, गम्भीर–रोचक, पात्र–प्रसंग, भाव तथा विषय के अनुरूप कई प्रकार के होते हैं।"[259] जाहिर है कि संवाद कथा साहित्य एवं नाटय काव्य के प्राणतत्व हैं। इनके बिना इन विधाओं की कल्पना भी निराधार है। दीनदयाल शर्मा के कथा साहित्य में संवाद शैली का समुचित प्रयोग दर्शनीय है, इसके बिना कहानी और नाटकों का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। गद्य लेखक शर्मा के संवाद अत्यंत चुटीले, सारगर्भित, सरल, सहज, संक्षिप्त, रोचक, पात्रानुकूल, कथावस्तु के अनुरूप दृष्टिगत हुए हैं। कुछ प्रसंग–

मन्नू उल्लू ने धीरे से कहा "तबीयत तो ठीक है। मगर तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम है?"

लो कर लो बात... तुम्हारा नाम कौन नहीं जानता। कौवे ने फुदकते हुए कहा।

तुम्हारा क्या नाम है? मन्नू उल्लू ने कौवे से पूछा।

कौआ बोला मेरा नाम कलुआ है लेकिन प्यार से मुझे सभी कल्लू कहते हैं।[260]

उक्त वार्तालाप में मन्नू उल्लू और कौआ के संवाद अत्यंत रोचक, चुटीले, सहज, जिज्ञासा जगाने वाले और संक्षिप्त हैं। 'लो कर लो बात' वाक्य का प्रयोग बेहद सहजता से करके नाटककार ने अपनी नाट्य–लेखन कला का कुशल परिचय दे दिया है।

'जंग जारी है' नाट्य रचना के पूर्व प्रस्तावना के रूप में पिता पुत्री के कथोपकथन सरल तथा बालोपयोगी भाषा में उनके परस्पर वात्सल्य भाव की पुष्टि करते हैं, साथ ही नाटक की भूमिका के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। इस प्रसंग से नाटक को सहजता से विस्तार मिल सका है।

सुरभि– पापा, आज आप स्कूल से जल्दी कैसे आ गये?

–लोकेश – बस यूँ ही बेटे।

–सुरभि– यूँ ही क्यों पापा?

–लोकेश – बस यूँ ही... मेरी बेटी से मिलने

–सुरभि– पापा आप मुझे बहुत अच्छे लगते हो।

–लोकेश – तुम भी तो मुझे बहुत अच्छी लगती हो बेटा।[261]

'सपने' नाटक का कथानक सपने देखने पर आधारित है। कक्षा में प्रथम बार प्रवेश करने के बाद प्रकाश शिक्षक सभी बालकों से उनके भावी सपने देखने के संदर्भ में बातचीत करते हैं। उसी का एक अंश नीचे दिया जा रहा है जिसमें कथ्य को विस्तार तो मिलता ही है, साथ ही किताबों की महिमा भी रेखांकित की गई है और काव्य सृजन का उत्स भी नाटककार ने बालकों के भीतर जगाने का सार्थक प्रयास कर दिखाया है।

–जागृति : सर, मेरे पिताजी शहर के गर्ल्स स्कूल में लायब्रेरियन हैं।

–प्रकाश : वैरी गुड... तब तो तुम किताबें खूब पढ़ती हो।

–जागृति : यस सर! किताबें तो मैं पढ़ती ही रहती हूँ, सर।

–विकास : सर, जागृति कवितायें भी लिखती है।

–प्रकाश : गुड... क्यों जागृति कवितायें लिखती हो?

–जागृति : यस सर, कभी–कभी लिख लेती हूँ।

–प्रकाश : तो हमें भी कोई कविता सुनाओ।[262]

इस भाँति सृजनधर्मी शर्मा ने संवादात्मक शैली का उत्तम विन्यास किया है।दीनदयाल शर्मा ने प्रसंगानुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग करके अपने गद्य साहित्य को अधिक रोचक, सार्थक, मनोरंजक, मार्मिक, पठनीय, आकर्षक और प्रभावात्मक स्वरूप प्रदान किया है।

बाल साहित्य के रचनाकार दीनदयाल शर्मा के काव्य के कला–पक्ष के उपर्युक्त अवलोकन, विवेचन और विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इनके बालकाव्य में भाषा सौन्दर्य एवं अन्य काव्यांगों का शास्त्रीय निर्वाह हुआ है। जहाँ भाषा की सहजता, सरलता, सुरम्यता, भावप्रवणता, सुगम्यता बाल चित्त को हर लेती है, वही बाल मनोवृतियों के अनुरूप शिल्प का सुगम नियोजन

भी दृष्टव्य है। चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, लयात्कता के संतुलित निर्वाह से बाल काव्य में चार चाँद लग गये हैं। रचनाकार शर्मा ने एक से एक शब्द चित्र उकेरे हैं, ध्वन्यात्मकता भी अतुलनीय कही जा सकती है। लय तो किसी जल के सहज प्रवाह सी बहती चली जाती है। काव्य में गीति तत्व का उपयोग भी पूरी तन्मयता एवं भाव विभोरता के साथ किया है। गीत के अनिवार्य तत्वों गेयता, अनुभूति, संगीत, ताल, यति, गति, छन्दबद्धता आदि का निरूपण बाल मन को लुभाने में, गुनगुनाने को विवश करने में सक्षम है। मुहावरों और लोकोक्तियों का बाल साहित्य में बहुलता के साथ प्रयोग करना, वो भी इतनी सरलता व सादगी के साथ, जो उल्लेखनीय है। छन्द व अलंकार का अंकन बहुत ही सहजता से किया गया है। बालावस्था को ध्यान में रखते हुए लघु–लघु पंक्तियों का प्रयोग, छन्दो में, चौपाई व ताटंक का प्रयोग अधिक हुआ है। अधिकांश काव्य छन्द मुक्त है, जिसमें लय का पूरा ध्यान रखा गया है। अलंकारों में अनुप्रास, रूपक, अतिशयोक्ति, विनोक्ति आदि का बड़ी स्वाभाविकता से काम में लिया है। दीनदयाल शर्मा शाब्दिक संगठन में पारंगत हैं, बाल रचनाओं में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशक शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करके अपना लोहा मनवा लिया है।

निष्कर्ष में साहित्य सृजक शर्मा ने शैली संयोजन में बहुत प्रवीणता दिखाई है। बालकों की रचनाओं में कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग कर लेना एक सधे हुए रचनाधर्मी का ही काम हो सकता है। इन्होंने संवाद शैली, काव्यात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, का अत्यंत सुघड़ता के साथ प्रणयन किया है। सुनिश्चित ही रचनाकार शर्मा का भाव–पक्ष जितना सुदृढ़ है, कला–पक्ष भी उतना ही जीवंत है। रचनाकार ने भाषा एवं शिल्प के सभी तत्वों का संतुलित संयोजन अतुलनीय, विलक्षण, अनुपम और अप्रतिम बन पड़ा है।

♦♦♦♦

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोष, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 776
2. Kamal"s Oxford Dictionary, R.K. Kapoor, 175
3. डॉ. अनिता वर्मा, शचीन्द्र उपाध्याय के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, पृष्ठ 222
4. हिन्दी उपन्यासों की शिल्प विधि का विकास, डॉ. ओम शुक्ल, पेज 17–18
5. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 618
6. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 1
7. वाक्य पदीय, 1–104 वैवाकर्ण वैयाकरण भात्रिही, हिन्दी भाषा और महाकाव्य, एक अध्ययन, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय विजय, पृष्ठ 9
8. भारत भूषण सरोज एवं कृष्णदेव वर्मा, भाषा विज्ञान, पृष्ठ 1
9. मूल लेखक, सुनीति कुमार चटर्जी, हिन्दी अनुवादक, डॉ. भेलानाथ तिवारी तुलनात्मक भाषा विज्ञान, पृष्ठ 3
10. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 24
11. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25
12. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25
13. हिन्दी शब्द शक्ति और परिभाषित शब्दावली, बालेन्दु शेखर तिवारी भूमिका से
14. गिली गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9
15. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 3
16. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15
17. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 38
18. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 39
19. डॉ. हरदेव बाहरी, शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, पृष्ठ 716
20. राग दरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, राधा दीक्षित, पृष्ठ 70
21. गिली गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27
22. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 20
23. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 28

24. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 38

25. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 40

26. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

27. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 7

28. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 258

29. नालन्दा विशाल हिन्दी शब्द सागर, आदीश कुमार जैन, पृष्ठ 377

30. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

31. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

32. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

33. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 30

34. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

35. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 32

36. डॉ. हरदेव बाहरी, शिक्षाथी हिन्दी शब्द कोश, पृष्ठ 667

37. सुगम हिन्दी व्याकरण तथा रचना, प्रकाशन सुखपाल गुप्ता, पृष्ठ 148

38. राग दरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, राधा दीक्षित, पृष्ठ 223

39. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

40. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

41. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

42. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

43. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

44. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

45. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

46. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 28

47. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 37

48. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 48

49. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 1

50. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

51. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 20

52. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 22

53. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 26

54. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 28

55. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 29

56. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

57. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

58. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

59. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

60. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

61. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 28

62. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 29

63. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

64. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

65. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 31

66. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

67. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

68. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

69. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 91

70. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 33

71. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 62

72. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 68

73. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 90

74. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 79

75. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 102

76. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 106

77. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 122

78. शिक्षाथी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 728

79. वृहद् हिन्दी लोकोक्ति कोश, डॉ. भोलेनाथ तिवारी, पृष्ठ 10

80. सुगम हिन्दी व्याकरण तथा रचना सुखपाल गुप्त, पृष्ठ 148

81. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 32

82. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

83. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

84. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

85. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 29

86. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

87. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 86

88. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 86

89. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 108

90. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 105

91. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 131

92. काव्यांग कौमुदी, तृतीय कल्प, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 75

93. हिन्दी भाषा और महाकाव्य, डॉ. दयाकृष्ण विजय, पृष्ठ 81

94. डॉ. हरदेव बाहरी, हिन्दी शब्द कोश शिक्षार्थी, पृ. 56

95. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

96. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 37

97. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 19

98. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 20

99. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

100. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 26

101. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

102. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 41

103. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9

104. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

105. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

106. चूं–चूं, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 6

107. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 26

108. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 43

109. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 45

110. काव्यांग कौमुदी, तृतीय कला, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 81

111. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

112. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 44

113. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

114. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

115. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 30

116. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

117. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

118. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

119. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

120. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

121. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 19

122. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 273

123. काव्यांग कौमुदी, तृतीय कला, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 218

124. भारतीय काव्य–शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ. राजकिशोर सिंह, पृष्ठ 245

125. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 32

126. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

127. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 6

128. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 19

129. भारतीय काव्य–शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ. राजकिशोर सिंह, पृष्ठ 264

130. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 48

131. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 22

132. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 215

133. भारतीय काव्य–शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ. राजकिशोर सिंह, पृष्ठ 32

134. भारतीय काव्य–शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ. राजकिशोर सिंह, पृष्ठ 321

135. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

136. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

137. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ

138. शिक्षार्थी हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 768

139. सुगम हिन्दी व्याकरण तथा रचना, सुखपाल गुप्ता, पृष्ठ 1

140. हिन्दी शब्द शक्ति और परिभाषित शब्दावली, बालेन्दु शेखर तिवारी, पृष्ठ 1

141. हिन्दी बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. प्रणोति पाटिल, पृष्ठ 159

142. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 20

143. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 5

144. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

145. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

146. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 3

147. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

148. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 26

149. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

150. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 31

151. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

152. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 22

153. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 5

154. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

155. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

156. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

157. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 22

158. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 20

159. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 24

160. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

161. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 29

162. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 73

163. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 85

164. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 86–87

165. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 128

166. बुन्देल खण्ड की रासों रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन, डॉ. मुकेश कुमार श्रीवास्तव, पृष्ठ 70

167. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

168. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

169. सूरज एक सितारा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 4

170. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

171. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

172. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

173. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

174. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

175. इक्कावन बाल पहेलियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

176. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

177. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

178. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

179. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 99

180. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, श्याम चन्द कपूर, पृष्ठ 44

181. नानी तू है कैसी नानी, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

182. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15

183. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

184. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 38

185. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 30

186. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 34

187. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

188. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

189. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 89–90

190. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

191. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

192. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 28

193. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

194. अगड़म–बगड़म, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

195. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

196. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

197. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

198. रसगुल्ला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15

199. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 13

200. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

201. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

202. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 33

203. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

204. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

205. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

206. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

207. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15

208. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15

209. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 19

210. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 30

211. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 31

212. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 5

213. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 7

214. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 10

215. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 11

216. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 15

217. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 16

218. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 23

219. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 33

220. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 34

221. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 34

222. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 122

223. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 91

224. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 98

225. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 118

226. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 119

227. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9

228. कर दो बस्ता हल्का, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

229. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 6

230. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 6

231. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

232. गिली–गिली गप्पा, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

233. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 6

234. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9

235. चिड़िया चहके गीत सुनाए, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 26

236. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 14

237. बड़ो की बचपन की कहानियाँ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 24

238. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9

239. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17

240. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

241. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 9

242. फैसला बदल गया, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 8

243. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 12

244. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 21

245. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 25

246. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 87

247. वृहत् हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस, पृष्ठ 1756

248. वृहत् हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस, पृष्ठ 1334

249. चक्रवाक, जुलाई–सितम्बर–18, सं. निशांत केतु, पृष्ठ 34

250. रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, राधा दीक्षित, पृष्ठ 9

251. हिन्दी आत्मकथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन, डॉ. कमलावति उपाध्याय, पृष्ठ 48

252. बाल वाटिका, दिसम्बर 2016, सं. भैरूलाल गर्ग, पृष्ठ 23

253. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 19

254. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 5

255. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 24

256. फैसला, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 7

257. चिंटू–पिंटू की सूझ, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 5

258. चमत्कारी चूर्ण, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 27

259. अमरकांत का कथाशिल्प : कथ्य एवं शिल्प, डॉ. योगेश गोकुल पाटिल, पृष्ठ 213

260. मित्र की मदद, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 17–18

261. जंग जारी है, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 96

262. सपने, दीनदयाल शर्मा, पृष्ठ 18

सप्तम अध्याय

उपसंहार: निष्कर्ष और उपलब्धियां

सप्तम अध्याय

उपसंहार : निष्कर्ष और उपलब्धियां

संवेदना सृजन का आधार होती है। प्रत्येक मनुष्य अपनी–जीवन यात्रा में पग–पग पर अनुभूतियों से साक्षात्कार करता है और इन अनुभूतियों को विविध रूप में व्यक्त भी करता है। मानव और मनोरंजन का सम्बन्ध शाश्वत रहा है, भले ही उसकी अभिव्यक्ति के तरीके भिन्न हुए होंगे। उसका मन जब प्रसन्न हुआ होगा, तबवह अभिव्यक्ति हेतु आतुर भी हुआ होगा। इसी अभिव्यक्ति की कोख से सृजन के बीज अंकुरित हुए होंगे। मनुष्य जीवन की प्रमुख रूप से चार अवस्थायें मानी गई हैं। बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था है, जिसमें सर्वश्रेष्ठ बचपन होता है क्योंकि बाल–मन उमंगों–तरंगों, उत्सुकता, चंचलता, आतुरता, रोमांच, कल्पना आदि का पर्याय है। ये सभी प्रवृतियाँ सर्वप्रथम दादा–दादी, नाना–नानी, राजा–रानी की कथाओं के साथ लोक कथाओं, दन्त कथाओं, जातक कथाओं और परियों की कहानियों में मिलती हैं। तत्पश्चात् पंचतन्त्र, कथासरित्सागर, हितोपदेश, अकबर–बीरबल, गोपाल भांड, लाल बुझक्कड़ शास्त्री आदि के किस्सों, कहानियों में इनका उल्लेख मिलता है। इन सब में शिक्षाप्रद बातें कही गई हैं, जो मानव मात्र को सही दिशा प्रदान करती हैं। इसी क्रम में बाल साहित्य प्राचीन काल से हब तक विविध रूपों में हमारे समक्ष प्रस्तुत होता रहा हैं। आज समय परिवर्तित हो रहा है। बच्चों के संदर्भ देखा जाये तो बच्चे गम्भीर हो गये हैं। बस्तों का बोझ तले बचपन गुम सा हो गया है। उनकी मासूमियत ट्यूशन और स्कूल के बीच कैद होकर रह गई है। तकनीकी और विकास के युग ने उनके हृदय को भी मशीन के प्रभाव और आकर्षण ने बांध लिया है। कहीं पारिवारिक विवशता बच्चों को काम करने को मजबूर कर रही है। वे बाल मजदूर के रूप में अपने परिवार का सहारा बन रहे हैं। प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में अंकों के मकड़जाल में बचपन उलझ कर रह गया है। किन्तु इन सब के बीच बाल मन तो बाल मन है, समस्यायें अपनी जगह हैं और आनन्द की अनुभूति अपनी जगह है। इसलिए तो बाल हठ प्रसिद्ध है और **'मैं तो यही खिलौना लूँगा', 'मचल गया दीना का लाल', कैसे भूला जा सकता है, बचपन का वह अतुलित आनन्द' और 'मगर मुझको लौटा दो वो बचपन का सावन, वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी'** जैसी काव्य पंक्तियाँ साहित्यकार रचते आये हैं, जो बाल मनोविज्ञान की विविध परतों को खोलता हुआ बालकों के हृदय के करीब हमें पहुँचाता है। बाल साहित्य की शुरूआत विधिवत रूप का कवि चटमल द्वारा रचित 'गौरा बादल की कथा' और सूरदास के बाल–वर्णन से मानी जाती है। तत्पश्चात अमीर खुसरो की पहेलियाँ भी लोक जीवन में रची बसी हैं। कालान्तर से बाल साहित्यकार अपने कवि धर्म का निर्वाह करते हुए बाल पहेलियाँ, बाल कविता, बाल गीत, बाल

नाटक, बाल कहानी, बाल एकांकी, बाल निबन्ध, बाल यात्रावृत बाल संस्मरण रचते आये हैं, जो बालकों को श्रेष्ठ सामाजिक बनाने में महती भूमिका निभाते हैं। तब से अब तक बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है, जिसे नंदन, बालहँस, अक्कड़–बक्कड़, चंदा मामा, हंसती दुनिया, बाल वाणी, देवपुत्र सहित अनेक पत्रिकाओं ने प्रकाशित करते हुए बालकों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इलेक्ट्रोनिक मिडिया द्वारा भी अनेक कार्टून फिल्मों, कार्टून धारावाहिकों जैसे मोटू–पतलू, लिटिल सिंगम, बाल हनुमान, छोटा भीम, चाचा चौधरी, मालगुडी डेज, डोरेमोन, बार्बी आदि का प्रसारण सतत् किया जा रहा है, जो बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय है। किसी समय 'मोगली' धारावाहिक ने बच्चों के बीच खूब–धूम मचाई थी। इस प्रकार बाल साहित्य अपने सामाजिक सरोकारों को निभाता हुआ बाल साहित्य को समृद्ध कर रहा है। प्रमुख रूप से इस दिशा में विष्णु प्रभाकर, गोविन्द भारद्वाज, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, निरंकार देव सेवक, राष्ट्रबंधु, प्रकाष मनु, नागेश पांडेय, डॉ. शेरजंग आदि का नाम बाल साहित्यकार के रूप में उल्लेखनीय हैं। दीनदयाल शर्मा इसी परम्परा के महत्वपूर्ण रचनाकार है। इन्होंने हिन्दी और राजस्थानी भाषा में लगभग चालीस पुस्तकें विभिन्न विधाओं में लिखी हैं और आज भी इनकी लेखनी अनवरत सक्रिय है। रचनाकार शर्मा की हिन्दी बाल साहित्य की कृतियाँ–

चिंटू–पिंटू की सूझ (बाल कहानियाँ, 1987), बड़ों के बचपन की कहानियाँ (1987), फैसला (बाल नाटक, 1988), पापा झूठ नहीं बोलते (बाल कहानियाँ, 1997), कर दो बस्ता हल्का (शिशु गीत, 1998), फैसला बदल गया, (नवसाक्षर साहित्य, 1999) सूरज एक सितारा है (शिशु गीत, 2000), चमत्कारी चूर्ण (बाल कहानियाँ, 2003), सपने (बाल एकांकी, 2007), इक्कावन बाल पहेलियाँ (बाल पहेलियाँ, 2009), चूँ–चूँ (शिशु कवितायें, 2010), नानी तू है कैसी नानी (बाल गीत, 2010), गिली–गिली गप्पा (बाल गीत, 2014), अगड़म–बगड़म (शिशु गीत, 2014), चिड़िया चहके गीत सुनाये,(बाल गीत 2016), रसगुल्ला (शिशु गीत, 2016), मित्र की मदद (बाल कहानियाँ, 2016), जंग जारी है (रेडियो नाटक, 2017), अपनी दुनिया सबसे न्यारी (2018), हम बगिया के फूल (2018)। दीनदयाल शर्मा की प्रखर रचनाधर्मिता से प्रभावित होकर मैंने इनके साहित्य को अपने शोध के विषय का बनाया है। इनकी प्रथम कृति 'चिंटू–पिंटू की सूझ' (1987) में बाल कहानी के रूप में प्रकाशित हुई। तब से लेकर जंग जारी है (रेडियो नाटक 2017) तक दीनदयाल शर्मा ने विविध बाल एवं किशोर समस्याओं को लेकर रचना कर्म का निर्वाह कर रहे हैं। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल साहित्य में मानवीय सरोकारों के विविध पक्षों को उजागर किया है, साथ ही बाल साहित्य की मूल संवेदना के मर्म को भी अभिव्यक्त किया है। इन सभी संदर्भों को समझते हुए मैंने रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करके उसके मर्म को प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है। इसके लिए मैंने अपने शोध कार्य के लिए 'बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन' का विषय

चयन किया है। बाल साहित्य का अर्थ और परिभाषा के अंतर्गत बाल साहित्य की यात्रा के विविध पड़ावों से लेकर वर्तमान तक के बाल साहित्य को आधार बनाते हुये मैंने दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य के मर्म को समझने का प्रयास किया है। दीनदयाल शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व के विविध आयामों पर प्रकाष डालते हुये इनके गद्य, पद्य और बाल साहित्य की विशेषताओं, में इनके बाल गीतों, बाल कविताओं, शिशु गीतों एवं बाल पहेलियों, बाल कहानियों, बाल नाटकों का बाल साहित्य की मुख्य प्रवृतियों—मनोरंजन, बाल मनोविज्ञान, जिज्ञासा, पर्यावरण चेतना, नैतिक मूल्य, राष्ट्र—प्रेम, समसामियकता, शिक्षा, रसानुभूति अभिनय, कल्पनाशीलता, तकनीक, सामाजिकता आदि को आधार बनाकर इनका विवेचन, विश्लेषण, मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। अंत में शिल्प विधान में भाषागत विविध भंगिमाओं, छंद—अलंकार, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लय, गीति तत्व, शब्द विधान को व्यक्त किया गया है।

'चिंटू—पिंटू की सूझ' कथा संग्रह की शीर्षित कहानी में 'चिंटू—पिंटू की सूझ' बंदर—बिल्ली वाली कहानी में मौलिकता दर्शायी है। जंगल का पर्यावरण उल्लेखनीय है। पात्र जंगली जानवर हैं, जो किसी न किसी विषय को लेकर अपने संवादों के माध्यम से बालकों को जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करते हैं। इस कहानी में बंदर वाली पुरानी कहानी को नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है, जिसके अंत में बिल्ली के बच्चों को समझदार दिखाया गया है, अब वे बंदर की चालाकी में नहीं आते। इस प्रकार यहाँ वर्तमान परिवेश को दर्शाया है कि आज का बालक परिपक्क है, स्मार्ट है, समझदार है, वह किसी के बहकाने में अब नहीं आता। इसी प्रकार अन्य कहानियों, नाटकों, शिशु व बाल गीतों, कविताओं के माध्यम से दीनदयाल शर्मा ने बालकों का स्वस्थ मनोरंजन करते हुए बालकों को अपरोक्ष रूप से शिक्षा भी प्रदान की है। वर्तमान समय में बालकों की अनेक समस्याओं को उकेर कर उनके समाधान भी प्रस्तुत किये हैं और कई प्रकार के भ्रांतियों, अंधविश्वासों, बुराइयों, सामाजिक कुरीतियों, तकनीक के दुष्परिणामों, नारी उत्पीड़न आदि का पुरजोर विरोध जताया है।

मानव के स्वस्थ जीवनयापन के लिए मनोरंजन अत्यन्त आवश्यक है। बालकों के लिए विश रूप से मन बहलाव जरूरी है। आधुनिक युग में बच्चों के मनोरंजन के अनेक नये—नये साधन उपलब्ध हैं, जिनमें बाल साहित्य उत्तम साधन माना गया है और वही बालकों की पहुँच से दूर होता जा रहा है। आधुनिक व्यस्त जीवन शैली, पढ़ाई व ट्यूशन का दबाव, माता—पिता के पास बालकों के लिए समयाभाव, प्रतिस्पर्द्धा आदि बच्चों के बचपन को छीन रहे हैं। बालक यंत्रवत हो कर रह गया है। मनोरंजन के नाम पर केवल कार्टून धारावाहिक, फिल्में, मोबाइल आदि का प्रयोग किया जा रहा है। माता—पिता बालक के हाथ में बाल साहित्य देने के बजाए उसे मोबाइल पकड़ा कर पल्ला झाड़ लेता हैं। नन्हा शिशु भी आज मोबाइल पर खेल खेलते हुए बड़ा हो रहा है, जिससे बच्चों का नर्व सिस्टम प्रभावित होता है और मानसिक विकृतियाँ भी जन्म लेती हैं।

बालकों का बालपन गुम सा हो गया है। बालक बाल्यावस्था में ही बड़े होने लगे हैं। ऐसे समय में बालक के सम्यक उत्कर्ष के लिए बाल साहित्य सब से अधिक उपयोगी है। बाल गीत, कवितायें, कहानियाँ बच्चों को आनन्द से प्रफुल्लित कर देती हैं। सभी विद्वानों ने एक स्वर में मनोरंजन को बालसाहित्य का आत्मा माना है। आज के भौतिकवादी दौर में भी दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्य बालकों का मनोरंजन करने में, उन्हें आल्हादित करने में पूर्णतः सक्षम है। रसगुल्ला, अगड़म–बगड़म, गिली–गिली गप्पा, चिड़िया चहके गीत सुनाये, नानी तू है कैसी नानी, चूं–चूं आदि काव्य–संग्रहों की सभी बाल कवितायें बालकों को दिल खोलकर हंसने को विवश करती हैं, उन्हें गुदगुदाती हैं, उनका मन बहलाती है। बाल सौन्दर्य इनमें जीवंत हो उठा है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ', 'चमत्कारी चूर्ण' कहानी संग्रह की कथायें जिज्ञासा प्रधान एवं रोचक होने से बच्चों की पसंदीदा हैं।

वर्तमान समय में अर्थ की लिप्सा दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है, गरीबी, स्वार्थपरता, अशिक्षा, आगे निकलने की होड़, अर्थोपार्जन के वशीभूत आदमी की अंतहीन लिप्सा के चलते पर्यावरण प्रदूषण की गम्भीर समस्या मुँह बाये खड़ी है। अपने स्वार्थ वश आदमी कुदरत का दोहन कर रहा है। दुनिया भर में इसके समाधान के प्रयास जारी हैं। हमारे देश में गन्दगी का साम्राज्य भी कुछ अधिक है। इन दिनों स्वच्छता आन्दोलन प्रमुख रूप से चलाया जा रहा है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि बालकों को बचपन से ही प्रकृति से जोड़ा जाये, सफाई की महत्ता से अवगत करवाया जाये। इस दृष्टि से वर्तमान समय में युगधर्मी दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की प्रासंगिकता का कोई सानी नहीं। अपने बाल गीतों, कविताओं में बालकों को खेल–खेल में ही सफाई का महत्व सिखा दिया है, वहीं प्रकृति का इतना मनोरम चित्रण किया है कि बालक स्वतः ही कुदरत से प्यार करने लगता है और पर्यावरण के प्रति जागरूक रहता है। 'जीवनदाता पेड़', 'मच्छरों की शामत', 'सफाई की सौंगध' कवितायें बालकों को प्रकृति से जोड़ती है। 'पेड़ की प्रार्थना' में स्वयं वृक्ष के द्वारा कवि ने कहलवाया है कि हे मनुष्यों! हमें मत काटो, हमें जीने दो, हम आपके मित्र हैं, आपको फल, फूल, फल, प्राणवायु देते हैं। 'अच्छे काम' कविता में 'जल ही जीवन है' और जल बचाने का सन्देश दिया गया है। 'सफाई की सौगंध' कविता में कवि शर्मा ने बालकों की ओर से पेश किया है कि हमें कचरा कूड़ेदान में डालना चाहिए, ताकि हम बीमारियों से बच सकें। मच्छरों की शामत, पेड़, कौआ और कोयल, चिड़िया, सर्दी आई, गरमी, चिड़िया चहके गीत सुनाये, वर्षा और बच्चे सहित अन्यान्य रचनायें नन्हों–मुन्नों को प्रकृति से जोड़ती है। 'चूं–चूं', 'सूरज एक सितारा है', 'कर दो बस्ता हल्का', शिशु गीत संग्रह हैं, जिसमें बिल्ली, कुत्ता, चिड़िया, मोर, मुर्गा, मेंढक, गधा, घोड़ा, बंदर, चूहा, शेर आदि कई पशु–पक्षियों की आवाजों को, उनके लक्षणों को बेहद सरलता, सुगमता एवं बालकों की अपनी भाषा में व्यक्त किया है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ', 'मित्र की मदद' संग्रह की सभी कथायें जंगल की पृष्ठभूमि पर

रचित हैं, सब के पात्र जंगली एवं पालतू जानवर हैं, जैसे शेर, हाथी, बन्दर, हिरण, मोर, लोमड़ी, भालू, बकरी, कमेडी, सियार, गधा, कौआ, उल्लू आदि जो बालकों के प्रिय हैं।

बालक कल्पनाजीवी होते हैं, जो अधिकांश समय स्वप्लिन लोक में विचरण करते हैं। कल्पना बाल साहित्य का अनिवार्य पहलू है। दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्य कल्पनाओं का पिटारा कहा जा सकता है। समूचा रचनाकर्म कल्पना प्रधान है। 'उल्टा–पुल्टा' कविता में कल्पना की अनूठी उड़ान दर्शनीय है, इसमें हाथी पंखों के बिना आकाश में उड़ने लगता है। कहीं चूहा हवाई जहाज से दिल्ली जाता है तो कहीं टीवी बालक की नानी बन जाती है। एक से एक अद्भुत कल्पनायें बालकों को लुभाती हैं। समग्र कथा साहित्य कल्पना पर आधारित है। सामाजिक सरोकार भी बाल साहित्य के लिए प्रासंगिक माने गऐ हैं। साहित्य धर्मी शर्मा के साहित्य में सभ्यता–संस्कृति, कला–साहित्य, रीति–रिवाज, खान–पान, नाच–गान, पर्व–त्यौहार आदि का समुचित, सुंदर चित्रण मिलता है। दीनदयाल शर्मा समय के साथ कदमताल करने वाले हैं। नित नई–नई तकनीक बाजार में आ रही हैं। आज का बालक इस विषय में बड़ों से अग्रणी है। बच्चों को आधुनिकता से जोड़े रखना रचनाकार का धर्म है। रचनाकार शर्मा ने तकनीकी यंत्रों टीवी, मोबाइल, इंटरनेट, घड़ी, कम्प्यूटर का बहुत आकर्षक, सहज, बालसुलभ चित्रण किया है और इनकी उपयोगिता से भी बच्चों को अवगत करवाया है। आज के समय में इनकी कितनी प्रासांगिकता है, यह बात बालकों को सहजता से बता दी गई है जैसे, 'कम्प्यूटर' कविता में इसे ज्ञान का सागर बताया गया है। इसके द्वारा हम सारी दुनिया की जानकारी घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। 'चालाक चूहा' कविता में बालक मोबाइल से कुत्ते की आवाज निकाल कर बिल्ली को डरा देता है।

आज की शिक्षा प्रणाली ने बस्ते के भार ने बालकों की कमर तोड़ कर रख दी है, जिस से बच्चे की पीठ बचपन से ही झुकने लगी है। दीनदयाल शर्मा ने बच्चों की इस पीड़ा को अनुभूत किया है जो 'बस्ता' कविता में व्यक्त हुई है, 'जेल–खेल' शिशु गीत में भी बालक कहता है कि पढ़ाई के बोझ से घर और स्कूल जेल लगने लगे हैं। होमवर्क के बोझ से बालक को रोज दो चार होना पड़ता है। ऊपर से ट्यूशन अर्थात् 'गरीबी में गीला आटा'। बचपन खेलने–कूदने की उम्र होती है, हर बच्चा जी भर कर इसका आनन्द उठाना चाहता है, जो कि होमवर्क के कारण सम्भव नहीं हो पाता। बालकों के इस दर्द को बाल मनोविज्ञान के जादूगर दीनदयाल शर्मा गहरे तक अनुभूत किया है और बड़ी मासूमियत से बालक के दर्द को प्रस्तुत किया है। 'चिड़िया' गीत में बालक अपने पापा से कहत है कि काश! मैं चिड़िया होता तो कितना अच्छा होता, मुझे भारी बस्ते से छुटकारा मिल जाता और रोज–रोज होमवर्क भी नहीं करना पड़ता। शुरू से ही बालक के सामने गणित विषय को अत्यधिक कठिन बताया जाता रहा है, बालक के लिए गणित एक बड़ी मुसीबत बनी हुई है। जब कि फार्मूलों के द्वारा इसे आसानी से हल किया जा सकता

है। 'अंक गणित' कविता में कवि ने इसी समसया को उठाया है। बालक गणित से घबराता है, घुमा–फिरा कर पूछे गये सवालों से उसका दिमाग जाम हो जाता है। सारे विषय आसान लगते हैं, पर गणित में वह जीरों रह जाता है। इसीलिए दीनदयाल शर्मा को बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता की पदवी प्राप्त है। 'बगिया के फूल' रचना में भी बालक डांस, चित्रकला, ड्रामा करना चाहते हैं। आज के परिवेश में अत्यन्त प्रासंगिक है यह रचना। जीवों पर दया करना, रक्षा करना, मानव धर्म माना गया है। प्राचीन काल से ही चींटियों को चुग्गा डालना, पशुओं को चारा खिलाना, पानी पिलाने की परम्परा रही है। आज 'परिंडे बांधना' अभियान इसी का अंग है। दीनदयाल शर्मा ने अपने शिशु गीतों में यह बात आसानी से उल्लेखित कर दी है। 'चिड़ी कबूतर मेरे साथी' शिशु गीत पक्षियों को पानी पिलाने, दाना डालने पर ही आधारित है। एक शिशु –गीत में जन्म दिन पर एक पौधा उपहार में देने की बात को भी विषय बनाया गया है, जो वर्तमान युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। पेड़ों की उपयोगिता को रेखांकित करने वाली कई रचनायें आज के वातावरण में बेहद प्रासंगिक है।

हमारी संस्कृति मूल्याधारित है लेकिन वर्तमान समय में भौतिकवादी संस्कृति के पनपने से इनका क्षरण जिस तेजी हो रहा है, वह चिंतनीय विषय है। आदमी का नैतिक पतन सारी पराकाष्ठायें लाँघ चुका है। इससे बचपन तक सुरक्षित नहीं है। परिणाम स्वरूप अपराधिक प्रवृतियाँ दिन–ब–दिन बढ़ती–बढ़ती जा रही हैं। आये दिन बाल अपराधियों की खबरें पढ़ने को मिलती है। सामाजिक विसंगतियाँ तेजी से पग पसार रही है। किशोरावस्था में लड़के–लड़कियाँ माता–पिता बनाने लग गये हैं जो आज की भयावह त्रासदी कही जा सकती है। यदि बालक को बालपन से ही सुसंस्कार दिए जाय, नैतिक कहानियाँ सुनाई जाये, संस्कृति से जोड़ा जाये तो, इस चिंताजनक समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इस प्रसंग में बाल साहित्य की सशक्त भूमिका से नकारा नहीं जा सकता। रचनाकार शर्मा ने अपनी गाँधी बाबा, भलाई सबसे प्यारा सच आदि.... रचनाओं में नैतिक मूल्यों को मनोरंजन की चाशनी में लपेट कर अभिव्यक्त किया हैं। प्रेम, भाईचारा, सद्भाव, अहिंसा, शांति, देशप्रेम, सहयोग, सेवा, परोपकार, धैर्य, मैत्री भाव, दया, करूणा, क्षमा, सत्य, सहानुभूति संतोष, कर्तव्यनिष्ठा आदि नैतिक मूल्यों का पाठ अपरोक्ष रूप पढ़ा दिया है। जिसकी आज के संदर्भ में सर्वाधिक जरूरत है। 'बड़ों के बचपन की कहानियाँ' संग्रह की सभी कहानियाँ नैतिक मूल्यों का दस्तावेज कही जा सकती है। इसमें कहानीकार ने महान पुरुषों के बचपन के प्रसंगों के माध्यम से बच्चों को नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता से अवगत करवा दिया है।

जब से विद्यालयी शिक्षा प्रारम्भ हुई है तब पाठशालाओं में शिक्षकों के द्वारा बालकों को तरह–तरह से दण्डित किया जाता रहा है। कुछ बालक तो पिटाई से इतने भयभीत हो जाते हैं कि पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। वर्तमान में बच्चों को दंड देने पर पूर्णतः पाबंदी हैं, इसके चलते भी

शिक्षकों ने बालकों को दंड देना बंद नहीं किया है। इसी विषय पर 'सरजी–मैडमजी' शिशु गीत में बालक अपने पापा से एक बेहद मासूम सवाल करता है कि जब हम देर से स्कूल जाते हैं तो टीचरजी हमारी पिटाई करते हैं, लेकिन जब टीचरजी देर से आते हैं तब उनकी कौन खिंचाई करता है? दीनदयाल शर्मा ने बालकों की पिटाई से खुद इतने आहत है कि समाज के समक्ष एक ज्वलंत प्रश्न खड़ा कर दिया है।

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति के अपने सपने होते हैं जिन्हें जीने का सबको अधिकार है। लेकिन आज माता–पिता अपने सपने बच्चों पर बरबस थोप रहे हैं। जिसके चलते कई बच्चों का कैरियर बर्बाद हो रहा है। कई बच्चे हताशा निराशा, अवसाद में चले जाते हैं। रचनाकार दीनदयाल शर्मा का गद्य काव्य आज के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है। 'सपने' एकांकी बालकों को सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए प्राण–प्रण से जुट जाने के प्रसंग पर आधारित है। इसके लिए माता–पिता को भी उन्हें पूरा करने में मदद करनी चाहिए। रचनाकार शर्मा ने छोटी–छोटी के जिए भी बालकों को सावचेत किया है और समाधान प्रस्तुत किये हैं। 'दृढसंकल्प का चमत्कार' कहानी में शराब पीने के दुष्परिणामों से अवगत करवाने के साथ उनके समाधान भी प्रस्तुत किये हैं कि दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से शराब पीने की बुरी आदत से छुटकारा पाया जा सकता है।

फैसला और फैसला बदल गया, नाट्य कृतियाँ बालकों को सही न्याय करना, अंधविश्वासों से दूर रहने की ओर प्रेरित करते हैं। 'जंग जारी है' किशोरोपयोगी नाटक संग्रह के सारे नाटकों में नाटककार शर्मा ने नानी शोषण, उत्पीड़न, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, शराबपान, बेटे–बेटी में भेदभाव करना, के खिलाफ आवाज बुलंद करने की पुरजोर कोशिश की है। इनके माध्यम से वर्तमान समाज में नारी जीवन की भयानक तस्वीर पेश की है, जो लोगों की मानसिक विकृतियों, स्वार्थ लोलुपता, लोभ की अंतहीन लिप्सा का वीभत्स रूप है और हमारे समाज के माथे पर कलंक। यह नाटक संग्रह आज के परिपेक्ष्य में अत्यधिक प्रासंगिक है।

बाल रचनाकार शर्मा के बाल साहित्य का शिल्प सौन्दर्य अद्वितीय है। चार–चार पंक्तियों के छोटे–छोटे शिशुगीत, छः पंक्तियों से लेकर आठ, दस, चौदह, सोलह, बीस, चौबीस पंक्तियों तक की बहुत सुंदर–सुंदर, शानदर, बेजोड़ बाल कवितायें मन मोह लेती हैं। शाब्दिक सौन्दर्य के अंतर्गत तदभव, तत्सम, देशज, विदेशज शब्दों का प्रसंगानुसार अंकन अभिराम बन पड़ा है। वाक्यों की तरलता भी लुभावनी है। लोकोक्तियों और मुहावरों का अनुपम सुसंगठन सशक्त और प्रभावी होने से रचनाओं में चार चाँद लग गए हैं। लघु–लघु मात्राओं का छंद विधान, आलंकारिक सुषमा, चित्रात्मकता, लयात्मकता, ध्वनि विन्यास, गीति तत्वों का अद्भुत चित्रांकन अप्रतिम है। दीनदयाल शर्मा बालोपयोगी सरल, सहज, सुगम, रोचक, मनोरंजक, विषयानुकूल और प्रवाहमय भाषा–निर्माण

में प्रवीण है। इनके समूचे रचनाकर्म की भाषिक सुन्दरता लाजवाब है, जो बच्चों को आसानी से समझ में आ सकेगी।

साहित्य शिल्पी दीनदयाल शर्मा का हिन्दी बाल साहित्य के उत्कर्ष में उल्लेखनीय योगदान रेखांकित करने योग्य है। इन्होंने बाल साहित्य की प्रायः सभी विधाओं–शिशुगीत, बाल कविता, बाल कहानी, बाल संस्मरण, बाल नाटक, बाल एकांकी, बाल पहेलियाँ में रचनाकर्म किया है, ये सिलसिला अद्यतन जारी है। बालकों के मन में बसने वाले दीनदयाल शर्मा बाल साहित्य लिखते ही नहीं है अपितु उसे ओढ़ते हैं, बिछाते हैं और जीते भी हैं। सब से महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि रचनाकार शर्मा बच्चों और बड़ों को उपहार स्वरूप अपनी किताबें ही भेंट करते हैं, इसलिए इनकी पुस्तकें बाल पाठकों के हाथों में जाती हैं। साहित्यकार शर्मा एक चिंतनशील, विचारवान, सुधि पाठक, बालकों के प्रिय रचनाकर है। वर्तमान में इनका बाल साहित्य सृजन सतत् गतिशील है। बालकों से असीम, सहज, स्नेह करने वाले रचनाकर्मी में अनंत सम्भावनायें निहित है। भविष्य में भी उत्तरोतर बालोपयोगी सर्जना करके बाल साहित्य को सुसमृद्ध, विकसित, सशक्त, सबल करते रहेंगे। इन्होंने अपने साक्षात्कार में बताया भी है कि 'मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि हमेशा – हमेशा बच्चों के लिए लिखता रहूँ। बच्चों के बीच रहकर उन्हें अच्छी–अच्छी बातें बता सकूँ, सिखा सकूँ ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल बने।'

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध बालसाहित्य को समर्पित, प्रबुद्ध बाल रचनाकार, दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य पर प्रथम मौलिक शोध प्रबंध है और नवीनतम कार्य है। अनेक पद्धतियों, प्रणालियों, प्रविधियों द्वारा सम्पन्न शोध, होने से इसकी महता, उपयोगिता, प्रमाणिकता स्वतः सिद्ध होती है। इसके अन्तर्गत सृजक शर्मा का बाल साहित्य में किया गया उल्लेखनीय योगदान, इनकी विचारधारा, समृद्ध साहित्य की जानकारी, सामाजिक एवं वैचारिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू, सहृदय पाठकों, बाल बालको के समक्ष आ सकेंगे, बालकों का स्वस्थ मनोरंजन होगा, उनके व्यक्तित्व के सम्यक विकास में सहायक होगा। बाल साहित्य के शोध प्रबंधों में एक और नया अध्याय जुड़ेगा, शोध साहित्य में यथोचित अभिवृद्धि होगी, गुणावत्ता बढ़ेगी, शोध के नये आयाम खुलेंगे, नया विषय होने से शोधकर्त्ता एवं साहित्य प्रेमी लाभान्वित होंगे, नए विषय सामने आयेंगे तथा पर्याप्त विषय वस्तु मिलेगी। इस शोध कार्य से एक प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार के साहित्य का निष्पक्ष आकलन हुआ है। मैंने अपनी समझ, विवेक और सूझबूझ से बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य पर शोध कार्य करने का विनम्र और लघु प्रयास किया है।

♦♦♦♦

शोध–सारांश

शोध–सारांश

बालक समष्टि की सुन्दरतम् रचना है, इसलिए उसे ईश्वर का स्वरूप भी कहा गया है। उसकी अठखेलियाँ, बाल मनोवृत्तियाँ, चंचल शरारतें, मनोहरी क्रीड़ायें, फूलों सी मुस्कान, निर्झर सी खिलखिलाहट, तितली जैसी चंचलता, जल सी सरलता व निर्मलता, बरबस ही सहृदय का मन मोह लेती है। जब ये अनिर्वचनीय, अद्‌भुत बाल–क्रीड़ायें, संवेदनाएँ किसी कवि–मन का स्पर्श करते हुए अभिव्यक्त होती हैं तब बाल साहित्य का स्वरूप धारण कर लेती हैं। आज का बालक ही भावी कर्णधार होगा, इसके लिए जरूरी है कि बाल्यावस्था से ही उसमें सुसंस्कार के बीज डाले जाएँ, तभी वह कल का सुसभ्य, संवेदनशील और सुसंस्कारित नागरिक बन सकेगा। यह कार्य बाल साहित्य के द्वारा ही संभव है। देखा जाए तो आज समाज की अपेक्षाओं के बोझ तले बचपन छटपटा रहा है, बाल–शोषण चरम पर हैं, बच्चों की मासूमियत खो सी गई है, सदैव से ही बाल–साहित्य का दूसरे दर्जे का माना जाता रहा है। वस्तुतः बाल–साहित्य को नजरअंदाज किया जाना किसी विड़म्बना से कम नहीं है। इस दृष्टि से बाल साहित्य एक उम्मीद की किरण है। इसलिए मैंने अपने शोध कार्य के लिए बाल साहित्य का चयन किया। समकालीन बाल साहित्य में शीर्ष स्थान रखने वाले बाल रचनाकर दीनदयाल शर्मा की साहित्य साधना और बालकों के लिए किया गया उल्लेखनीय सृजन और अभूतपूर्व योगदान हिंदी साहित्य जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीय स्तर पर जब बाल साहित्य सृजन के सन्दर्भ में दृष्टिपात करते हैं तो राजस्थान के मूर्धन्य बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का नाम अपनी विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पहचान के साथ सामने आता है। बचपन को सुरक्षित रखने के लिए इनकी रचनाएँ मील के पत्थर का काम करती है। रचनाकार शर्मा विगत चालीस वर्षो से सम्पूर्ण निष्ठा भाव से केवल और केवल बच्चों के लिए सतत् सृजनरत हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से बालकों और किशोरों की वर्तमान संदर्भो से जुड़ी अनेक समस्याओं को उजागर किया हैं, यथा–बाल मन का अन्तर्द्वन्द्व, स्कूल में शिक्षकों द्वारा बालकों की पिटाई करना व सजा देना, एकाकीपन, आत्मबल की कमी, माता–पिता पास के समयाभाव, दिन–प्रतिदिन बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा, गरीबी, चोरी की आदत, एकल परिवार, अंधी दौड़, बस्ते का बोझ, गृहकार्य का मानसिक दबाव, खेलने–कूदने पर पाबंदी, शाला में सहगामी क्रियाओं का संचालन नहीं होना, माता–पिता की महत्वकांक्षाओं को ढोना, सही मागदर्शन का कमी, जिनको लेकर लेखक शर्मा ने अपने रचनाकर्म के माध्यम से समाज के समक्ष प्रश्न खड़े किए हैं। ये कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि सृजनकर्मी शर्मा एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था के रूप में कार्यरत हैं। बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी दीनदयाल शर्मा ने अपने सृजन में बाल–मन के प्रत्येक कोने का स्पर्श किया हैं, जिसमें बालमन की अठखेलियों, बाल

प्रवृत्तियों, सोच, चिंतन, जिज्ञासा, मनोरंजन एवं बच्चों की अद्‌भुत और कल्पना से परिपूर्ण दुनिया का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इन्हीं सब संदर्भो को केंद्र में रखते हुए मैने अपने शोध–प्रबंध **बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : "एक समालोचनात्मक अध्ययन"** को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय – 'बाल साहित्य का उद्‌भव और विकास' में कोशगत अर्थ और विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं से बालक, साहित्य और बाल साहित्य का अर्थ स्पष्ट किया है। 'बालक' अर्थात् बच्चा, बाल–गोपाल। साहित्य समाज का प्रतिरूप है, साथ ही साहित्य ऐसी लिपिबद्ध रचना है जिसका प्रमुख माध्यम लोकमंगल है, जिस के द्वारा मानव विकारों का परिष्कार होता है, मानव हृदय में अलौकिक आनंद की सृष्टि होती है, वह उच्चतर, सुसभ्य, सुसंस्कृत, उन्नत जीवन जीने की ओर अग्रसर होने लगता है। ऐसा साहित्य, बाल साहित्य कहलाता है जो बालकों को ध्यान में रखते हुए गद्य या पद्य में सृजित किया गया हो, जिससे बालकों का स्वस्थ्य मनोरंजन हो, जिसे पढ़कर या सुनकर बच्चे आनंदित हो सकें, उनके चरित्र निर्माण के साथ व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास भी हो, जिससे वे सुसंस्कृत और श्रेष्ठ नागरिक बन सकें। एक प्रकार से जो साहित्य बच्चों के मन भा जाए वही बाल साहित्य हैं। अधिकांश आलोचकों का मानना है कि बाल साहित्य का प्रमुख ध्येय केवल बालकों का मनोरंजन करना है। बाल साहित्य का प्रादुर्भाव ही बच्चों के मन बहलाव के लिए हुआ है।

बाल साहित्य के उद्‌भव को लेकर कई विचारक, आलोचक एक मत नहीं हैं। बच्चों की प्रिय पत्रिका 'नंदन' के पूर्व संपादक जय प्रकाश भारती का मानना है कि सन् 1623 चटमल द्वारा रचित 'गौरा बादल' की कथा' हिंदी बाल साहित्य की प्रथम कृति है, जब कि कई विद्वान सूरदास के साहित्य से बाल साहित्य का उद्‌भव स्वीकारते हैं। प्राचीन बाल साहित्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि आदि समय में माता की लोरियों, प्रभातियों, तुकबंदियों से ही बाल साहित्य ने स्वरूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया है। तत्पश्चात्, बाल साहित्य दादा–दादी, नाना–नानी, देवी–देवताओं की कथाओं, राजकुमार–राजकुमारी की कहानियों के रूप पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा। इसी श्रृंखला में पंचतन्त्र, कथासरित्सागर, जातक कथाएँ, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी, अमीर खुसरो की पहेलियों के रूप में श्रुति परम्परा से अग्रसर हुआ, जिसका परिष्कृत स्वरूप 'टारजन' 'जंगल बुक्स', 'मोगली', हैरी पॉटर' के रूप में आज हमारे समक्ष है। जब से दुनिया बनी है, तब से आज तक बाल्यावस्था में कोई अंतर नहीं आया हैं, आज भी बालक वैसा ही भोला, मासूम, निश्छल, सद्यः फूल की भॉति कोमलता और ताजगी लिए हुए, चहकता–महकता, रंग–बिरंगा है, लेकिन कई कारणों से बाल साहित्य के स्वरूप में सतत् परिवर्तन होता रहा है, जो स्वाभाविक भी है। इस परिप्रेक्ष्य में अनेक विचारकों ने अपने–अपने मत प्रकट किए, जिन के अनुसार बाल साहित्य को निश्चित स्वरूप में तो नहीं बांधा जा सकता किन्तु

इतना कहा जा सकता है कि बाल साहित्य सरल भाषा में रचित ऐसा साहित्य है जो बालकों को अन्तरंग मित्रवत् लगे, उनके मन की बात को समझे, उन्हें प्रफुल्लित कर दे, उनकी रूचियों, कल्पनाओं में मोरपंखी रंग भर दे, उन्हें जिम्मेदार व संवेदशील नागरिक बनाये, उन्हें उनका जैसा बनाने में सहयोगी बने। बीसवीं सदी में बाल साहित्य के अनेक स्वरूप एवं विधाएँ सामने आई, जैसे – शिशु–साहित्य, बाल–साहित्य, किशोर–साहित्य। विधाओं की दृष्टि से बाल गीत, कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रावृत, नाटक, आत्मकथा, गजल, बाल जीवनी, निबन्ध, पहेलियाँ, चित्र कथाएँ आदि। बालसाहित्य बालक के लिए उतना ही आवश्यक और उपयोगी है, जितना माँ का प्यार–दुलार या माँ का दूध। बालसाहित्य बच्चों को जीवन जीने की कला सिखाता है, उनका मनोरंजन करता है, आनंद प्रदान करता है, इस प्रकार बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता, विशिष्टता को अनेक विद्वानों के मतानुसार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

हिंदी बाल साहित्य का इतिहास बहुत समृद्ध और गौरवशाली रहा है, जिसे विभिन्न बाल साहित्यकारों एवं विद्वानों ने अपने–अपने तरीके से वर्गीकृत किया है। सभी विचारकों के विभाजन को ध्यान में रखते हुए मैंने “हिंदी बाल साहित्य परम्परा और विकास” का अध्ययन आदि युग, (प्रारम्भ 1850 तक) भारतेन्दु युग (1851–1900 तक), स्वाधीनता पूर्व युग (1901–1947 तक) और स्वातंत्र्योत्तर युग (1948 से निरन्तर) का विस्तार से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आदि युग का बाल साहित्य माँ की लोरियों, दादा–दानी, राजा–रानी की कहानियों एवं कुछ तुकबंदियों के रूप में मिलता है। बाद में लोक कथाओं, लोक परम्पराओं, दंत कथाओं, लोक विश्वास आदि बाल साहित्य की सर्जना में सहायक बनते गये। इसी के समानांतर बेताल पच्चीसी, पंचतन्त्र, तेनालीराम के किस्से, गोपाल भांड, लाल बुझक्कड़, अकबर–बीरवल के किस्से शेख चिल्ली की कहानियाँ बाल साहित्य का हिस्सा बनती गई। गौरतलब है कि इस समय बच्चों के लिए अलग से कुछ नहीं लिखा गया, अपितु उपरोक्त साहित्य में जो बच्चों का भाता था, बच्चे उसे पढ़ लेते थे। भारतेन्दु से नये युग का सूत्रपात हुआ, जो सभी दृष्टियों से स्वर्णिम काल रहा। इस युग की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक परिस्थितियों की दृष्टि से यह संक्रमण का काल था। ऐसे में भारतेन्दु का उदय नये भास्कर के रूप में हुआ। बाल साहित्य को अलग विधा के रूप में स्वीकर किया गया एवं नई पहचान मिली। स्वयं भारतेन्दु ने कई बालोपयोगी नाटक और अन्य विधाओं में भी कृतियाँ लिखी यथा – अंधेर नगरी चौपट राजा, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत–दुर्दशा, नीलदेवी, बादशाह दर्पण इत्यादि। ये सभी कृतियाँ बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हुई। भारतेन्दु की प्रेरणा से राधाकृष्ण दास, श्रीनिवास शास्त्री, पं. बालकृष्ण भट्ट, अम्बिकादत्त व्यास आदि रचनाकार भी बाल साहित्य की रचना में प्रवृत्त हुए। जनवरी 1874 में ‘बाल प्रबोधिनी’ पत्रिका का प्रकाशन हुआ, इसी से बाल साहित्य का सूत्रपात हुआ, ऐसा कुछ इतिहास मानते हैं। स्वाधीनता पूर्व युग भी राजनीतिक दृष्टि से अस्थिरता का युग था। पहली बार मौलिक साहित्य का सृजन

प्रारम्भ हुआ जो, इस युग की सबसे बड़ी देन है, साथ ही आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पदार्पण से बाल साहित्य के विकास में अभूतपूर्व योगदान मिला। आचार्य जी ने साहित्य में परिमार्जन का कार्य शुरू किया। द्विवेदी जी के तत्वावधान में 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन से नये युग का शुभारम्भ हुआ, इसमें बाल साहित्य को स्थान दिया जाने लगा। बालकों के मनोरंजन के लिए पाठ्यत्तर पुस्तकों की रचना की जाने लगी। द्विवेदी जी ने स्वयं बालोपयोगी संस्मरण लिखे, जिससे बालसाहित्य को पर्याप्त विस्तार मिलने लगा। इस समय महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ अनेक मूर्धन्य लेखकों ने बालोपयोगी साहित्य की अनेक विधाओं में रचनाकर्म शुरू किया, जिसमें प्रमुख रूप से पं. बदरीनाथ भट्ट, सुदार्शनाचार्य, बालमुकुन्द गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह 'उपाध्याय', शम्भूदयाल सक्सेना, प्रेमचंद, सुभद्राकुमारी चौहान, मन्नन द्विवेदी सहित अन्यान्य, जिनका उनकी कृतियों के साथ शोध ग्रन्थ में उल्लेख किया जा चुका है। वानर, मानीटर, कुमार,, चमचम, बालसखा, छात्र सहोदर, शिशु आदि बाल पत्रिकाओं ने भी बाल साहित्य को अत्यंत समृद्ध किया। इस प्रकार यह युग बाल साहित्य की दृष्टि से अत्यंत गौरवशाली रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विज्ञान और तकनीकी धरातल पर नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ। नवीन धारणाओं, नये विचारों, नए चिंतन, नये स्वर साहित्य के क्षेत्र में मुखरित होने लगे। सामान्य साहित्य की तरह बाल साहित्य में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि बाल साहित्य को अलग से मान्यता और प्रतिष्ठा मिली, शोध कार्य करने की अनुमति प्राप्त होने से बाल साहित्य में शोध कार्य प्रारम्भ हुए। सन् 1968 में डॉ. हरिकृष्ण 'देवसरे' को बाल साहित्य में प्रथम शोध कार्य करने का गौरव प्राप्त हुआ। इस समय कई नई विधाएँ विकसित हुई, बालकों की रूचियों के अनुरूप, सरल,सरस, सुगम, मनोरंजक साहित्य रचा जाने लगा। बालक कल्पनालोक से इतर बदलते परिवेश के यथार्थ–धरातल से परिचित हुए। सूचना, प्रौद्योगिकी, संचार क्रांति और तकनीक के विकास से बाल रचनाकारों ने बालकों के लिए विज्ञान, तकनीक जैसे जटिल विषय पर प्रवीणता के साथ रोचक, मनोरंजक, सरस, बालोपयोगी कविता, कहानी, इंटरव्यू, निबन्ध, नाटक, उपन्यास आदि लिखे। इस युग के महत्त्वपूर्ण बाल रचनाकारों में विष्णु प्रभाकर, रामधारी सिंह 'दिनकर', निरंकार देव सेवक, गोविन्द भारद्वाज, डॉ. नागेश पांडेय, मोहम्मद अरशद खान, निरंकार देव सेवक, डॉ. राष्ट्रबंधु, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. शेरजंग, चक्रधर 'नलिन', प्रकाश मनु, दीनदयाल शर्मा और आदि। इस काल में भी बाल साहित्य के उन्नयन में पत्र–पत्रिकाओं की भी अवर्णनीय भूमिका रही, जिसमें प्रमुख रूप से बाल भारती, नंदन, लोटपोट, बालहंस, बालवाणी, देवपुत्र, सुमन सौरभ, बाल वाटिका, नन्हें सम्राट, साप्ताहिक हिंदुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, अमर उजाला सहित अनेकानेक, जिनका उल्लेख शोध–प्रबंध में सविस्तार से किया गया हैं। इस भाँति स्वतंत्रता प्राप्ति से अद्यतन बाल साहित्य में उत्तरोत्तर प्रगति हुई।

द्वितीय अध्याय–'दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व' के अन्तर्गत व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए रचनाकार शर्मा के जन्म, जन्म स्थान, परिवार, शिक्षा, व्यवसाय एवं इनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को उभारा गया है। व्यक्तित्व व्यक्ति विशेष के गुणों, रूचियों, भावनाओं, तरीको, विचारधाराओं, क्षमताओं का समुच्चय है। दीनदयाल शर्मा का जन्म राजस्थान के जिला हनुमानगढ़ की नोहर तहसील के गांव जसाना में चैत्र सुदी तीज (गणगौर) विक्रम संवत 2013 सन् 1956 में हुआ। इनके पिता श्री प्रयागचंद एवं माता श्रीमती महादेवी की ये पाँचवी संतान है। रचनाकार शर्मा का विवाह सौभाग्यकांक्षिणी श्रीमती कमलेश शर्मा से सन् 12 नवम्बर, 1986 में सम्पन्न हुआ। इन्हें दो पुत्रियों एवं एक पुत्र के पिता होने का सौभाग्य प्राप्त है।

बाल रचनाकार शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा गांव जसाना के सरकारी स्कूल में हुई। सन् 1973–74 में राज.उ.मा.वि. श्री गंगानगर से विज्ञान एवं कृषि से दसवीं व ग्यारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् एम.कॉम. एवं पत्रकारिता में स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा किया। 18 फरवरी, 1983 में इनकी प्रथम नियुक्ति पुस्तकालय अध्यक्ष के पद पर मक्कासर गांव में सैकेण्डरी विद्यालय में हुई। 31 जुलाई, 2016 को जंडावाली, हनुमानगढ़ से सेवानिवृत्ति हुई। दीनदयाल शर्मा के मन में बचपन से ही रचनाकर्म के बीज अंकुरित होने लगे थे। सृजन की विधिवत प्रक्रिया 1975 से प्रारम्भ हुई। बाल साहित्य के पुंज दीनदयाल शर्मा की प्रखर रचनाधर्मिता को नाना प्रकार की संस्थाओं, अकादमियों द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका है।

दीनदयाल शर्मा ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी ख्याति अर्जित की है। कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन ये कर चुके है। 'टाबर टोली' देश का प्रथम बाल अखबार में 2003 से मानद एवं साहित्य संपादन कर रहे है। पूर्व राष्ट्रपति ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब मेरी अंग्रेजी में अनुदित बाल नाट्य कृति 'द ड्रीम' का लोकार्पण कर चुके हैं। दूरदर्शन एवं रेडियों पर इनके नाटक, झलकियाँ, वार्तायें, रचनायें प्रसारित होती रही है।

दीनदयाल शर्मा विराट व्यक्तित्व के स्वामी हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' कहावत इन पर पूरी तरह लागू होती है। ये प्रारम्भ से ही प्रतिभा सम्पन्न एवं तीक्ष्ण बुद्धि के रहे हैं। लोकप्रिय, मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत, सेवाभावी, सहृदय दीनदयाल शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतिव अत्यन्त उच्च कोटि का है।

तृतीय अध्याय –'दीनदयाल शर्मा का पद्य' के अंतर्गत विभिन्न विद्वानों, आचार्यों द्वारा दी गई परिभाषाओं, मंतव्यों एवं कोश सम्मत अर्थ के माध्यम से काव्य का अर्थ और स्वरूप स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। काव्य एक ऐसी छन्दबद्ध रचना है जो रस से परिपूर्ण हो, जिसमें लय, यति, गति, प्रवाह, छंदबद्धता, रसात्मकता, गेयता आदि हो। रचनाकार दीनदयाल की आठ बाल काव्य कृतियाँ प्रकाशित हैं – कर दो बस्ता हल्का, सूरज एक सितारा, नानी तू है कैसी नानी,

चूं–चूं, गिली–गिली गप्पा, अगड़म–बगड़म, रसगुल्ला, चिड़िया चहके गीत सुनाए, जिनका संक्षिप्त परिचय व्यक्त किया गया है। इन सभी पुस्तकों के गीत व कविताओं के विषय चंदामामा, सूरज, पेड़, पक्षी, बंदर, चूहा, मोर, बालदिवस, कम्प्यूटर, टी.वी., पुस्तक, सफाई, शिक्षा की ताकत, जोकर, कौआ, तोता, तितली, घर, पतंग, गुल्ली डंडा, शेर, पढ़ाई, यात्रा, ऊँट, मछली, बारात, चीं–चीं, कुत्ता मटकूराम, आलस छोड़ो इत्यादि हैं। कुछ रचनाएँ पारम्परिक विषयों पर आधारित हैं, वहीं अनेक गीत आधुनिक तकनीक से सम्बन्धित हैं, शिक्षाप्रद भी। बालक और काव्य परस्पर पर्याय कहे जा सकते हैं। दीनदयाल शर्मा का बाल काव्य बालकों ही भॉति सरल, सरस, सहज, रूचिकर, सौन्दर्य से प्लावित है, जिज्ञासा, उत्सुकता, सरलता रोचकता कौतुहल से परिपूर्ण भी। बाल काव्य की प्रमुख विशेषतायें मनोरंजन, बाल मनोविज्ञान, पर्यावरण चेतना, प्रेरणा–तत्व, पारम्परिकता, आधुनिकता, नैतिक मूल्य, राष्ट्र–प्रेम, समसामयिकता मानी गई है। सौन्दर्य अर्थात् प्रति क्षण परिवर्तित होने वाली अतिसूक्ष्म, गंगा की तरह पवित्र, दिव्य, रसमय, सत्य से आप्लावित, कल्याणकारी, अनिर्वचनीय और विराट अनुभूति है। अपनी दुनिया, आठ पैर की होती मकड़ी, वर्षा और बच्चे, मछली, आटा–पाटा, टोकरी, ओ चिड़िया आदि कई बाल गीत बालकों ही भॉति सरल, सरस, सहज, रूचिकर, सौन्दर्यवान है, जिज्ञासा, उत्सुकता, सरलता, रोचकता कौतुहल, बाल सुलभ माधुर्य से अनुप्राणित भी। वर्षा होती है तो बालक खुशी से झूमने लगते हैं, हा..... हा.... हूँ... हूँ .. ही ... ही करते किलकारियाँ मारने लगते हैं, ऐसे में सौन्दर्य मूर्तिमान हो उठता है। यहाँ बालक पुष्प हैं और उनकी हँसी सुरभि। 'पापा मुझे बताओ बात' और 'किससे पूछूँ पापा' गीत में बालक–जिज्ञासा का सौन्दर्य चरम पर है। वह पापा से पूछता है कि दिन–रात कैसे बनते हैं, चाँद–तारे रात को ही क्यों दिखाई देते हैं, इसी प्रकार पक्षियों की आवाजें, बकरी का मिमियाना, चूहे का बिल्ली से डरना, बच्चों को बहुत बहुत रूचिकर लगता है। यहाँ बाल सुलभ सौन्दर्य जीवंत हो उठता है। स्वस्थ मन के लिए मनोरंजन उतना ही आवश्यक जितना स्वस्थ तन के लिए हवा, पानी भोजन। प्राचीन काल से ही मनोरंजन के लिए मानव ने तरह–तरह के खेल–तमाशे, स्वाँग, नृत्य, संगीत, नाटक इतयादि क्रीड़ाओं का आविष्कार किया है।

सभी विद्वानों ने एक मत से मनोरंजन को बाल साहित्य का प्राण तत्त्व माना है। बाल साहित्य का उद्भव ही बालकों के मनोरंजन के लिए हुआ है। बालकों के मन बहलाव के अनेक साधनों में बाल साहित्य उत्तम साधन माना गया है। कोशगत अर्थ के अनुसार मनोरंजन मन बहलाने का साधन है। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य मनोरंजन से लबालब भरा हुआ है। 'बबन विधाता', जोकर, बंदर, बारात, घोडा, मोर, चौकीदारी, बिल्ली, बारिश का मौसम सहित बहुधा कवितायें मनोरंजन से आप्लावित है। 'बबन विधाता' गीत में बारिश का मौसम, रात का समय, बबन विधाता का छाता लेकर घर से निकलना, छाते का उड़ना, बबन का फिसल कर गिराना आदि दृश्य बच्चों को हँसा–हँसा कर लोटपोट कर देते हैं। सर्कस का जोकर तो होता ही हंसाने

के लिए है, बंदर, बारात, बिल्ली, चूहा, रसगुल्ला, शेर, उल्लू आदि रचनाओं में मनोरंजन कूट–कूट कर भरा हुआ है। कोशसम्मत आशय और कई विद्वानों की परिभाषाओं के अनुरूप मनोविज्ञान का अर्थ मन के विज्ञान से है। जिससे मानव–मन की विभिन्न अवस्थाओं, प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। बाल मनोविज्ञान अर्थात् बालकों के मन का विज्ञान। बाल मन तितली की भॉति चंचल होता है, विचित्र कल्पनाओं से भरा हुआ, जिसे समझना अति दुष्कर कार्य है। इस हूनर में कवि शर्मा दक्ष हैं। अधिकांशत समय बच्चों के बीच रहने से बाल मनोविज्ञान को भली–भॉति महसूस कर लेने वाले कवि शर्मा के काव्य में बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म और सजीव चित्रण मिलता है। 'बस्ता', 'जेल–खेल', 'कर दो बस्ता हल्का', 'पान', 'मोबाइल' आदि अनेक कवितायें बाल मनोविज्ञान को दर्शाती हैं। बस्ते के बोझ से दुखी बालक की व्यथा हो या होमवर्क का भार, दिन भर पढ़ना जेल लगना, चाँद का घटना–बढ़ना को बाल मन से जोड़कर कवि ने इनका उल्लेख बहुत सहजता से कुशलता पूर्वक किया है। 'चिड़िया' कविता में बस्ते के बोझ से परेशान बालक चिड़िया होना अधिक पसंद करता है, हवाई जहाज से उड़कर दिल्ली से बिल्ली लाना चाहता है। ये संदर्भ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शर्मा बालकों के मन को भली–भॉति पढ़ना जानते है। पर्यावरण चेतना का भाव सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। वैदिक काल से ही इनकी उपयोगिता द्रष्टव्य है। पृथ्वी, वायु, आकाश, पेड़–पोधे, चाँद–सितारे, जंगल, जल, धूप, तितली, फल–फूल, जीव–जंतु, पशु–पक्षी प्रकृति के अहम् उपादान हैं। बाल साहित्य में प्रारम्भ से ही इन प्राकृतिक उपादानों की अभिव्यक्ति सर्वाधिक रूप में मिलती है। बालक का प्रथम साक्षात्कार पर्यावरण से ही होता है। कवि शर्मा ने पर्यावरण चेतना और प्रकृति को उत्सव की तरह जिया है और अपने गीतों में भरपूर उकेरा भी है। सूरज, चाँद, बादल, मोर, कौवा, फूल, वर्षा, पेड़, इन्द्रधनुष, हाथी, चिड़िया, गाय सहित प्रकृति के सभी कारकों पर बहुत सुंदर कवितायें रचित की हैं। पेड़ो को धरती का श्रृंगार व जीवन का आधार दर्शाया है। सफाई, कचरा कूड़ेदान में डालना जैसी छोटी पर महत्वपूर्ण विषयों पर सुंदर गीत प्रस्तुत किए हैं। प्रेरणा अर्थात् ऐसा भाव जो मनुष्य को सतत बढ़ने को अग्रसर करे। दीनदयाल शर्मा ने बालकों को अपनी कविताओं के द्वारा प्रेरित किया है। 'चल–चल–चल' कविता सदैव आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। कुछ रचनाएँ व गीत बच्चों को पुस्तकें पढ़ने और प्रेरित करने वाली है। परम्परा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय भी कवि शर्मा के काव्य में देखने को मिलता है। परम्परा और आधुनिकता परस्पर सहयोगी है। पहले इनका कोशगत अर्थ प्रस्तुत किया है। रचनाकार शर्मा के पारम्परिक संदर्भों से संयोजित काव्य का सृजन किया है, जिनके पारम्परिक विषय–पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, चाँद–तारे, गुड़िया, त्योहार, परिजन आदि पर आधारित है, वहीं आधुनिक धरातल से जुड़ी सुंदर रचनाओं को भी प्रसंग बनाया है यथा– कम्प्यूटर, मोबाइल, टी.वी., फोटोग्राफर बंदर, मोबाइल आदि, वहीं मोबाइल से कुत्ते की आवाज निकाल कर से बिल्ली को डराना, 'मैडम–सरजी' कविता में उनके

स्कूल में देर से आने पर कौन खिंचाई करे, जैसे बाल मन के सहज, सुलभ और अनुत्तरित प्रश्न भी उठाये गये हैं।

भारतीय संस्कृति मूल्याधारित है। हिंदी साहित्य में मूल्यों को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। बाल साहित्य में भी आदि काल से ही मूल्यों का प्राधान्य रहा है, चाहे दादा–दादी की कहानियाँ हो या पंचतंत्र की। समाजचेता कवि दीनदयाल शर्मा के काव्य में सत्य, अहिंसा, प्रेम, क्षमा, शांति, सहानुभूति, सदाशयता, परोपकार इत्यादि जीवन मूल्यों को पर्याप्त स्थान मिला है। वर्तमान समय के आधुनिक एवं परम्परावादी साहित्यकार भी नैतिक मूल्यों को बाल साहित्य के लिए सर्वोपरि मानने लगे हैं। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ सभी क्षेत्रों में मूल्यों को क्षरण तीव्र गति हो रहा है, जिसका प्रभाव बालकों पर भी लक्षित होने लगा है क्योंकि आज का बालक तकनीक से जुड़ा हुआ है, उसे पूरी दुनिया की जानकारी है। कवि शर्मा ने 'गांधी बाबा' गीत के माध्यम से बच्चों से कहलाया है कि बड़े लोगों के पास इतना समय नहीं है कि वे अपने बच्चों को नैतिक बातें सिखा सकें। ऐसे में बालक गाँधी बाबा से गुहार करते है कि आप वापस आओ और सबको शांति–अंहिसा, प्रेम, अमन का सबक सिखाओ। यहाँ सभी लोग इन्हें भूल चुके हैं। तुम्हारे तीनों बंदर भी मौन बैठे हैं। बच्चे सभी भेद–भावों से कोसों दूर होते हैं, वे केवल प्रेम से मिलकर रहना जानते हैं। 'भलाई' कविता में यही बात कही कि हम बालक जाति–पाति नहीं जानते, हम सब मिलकर रहते हैं और खुशियाँ बांटते हैं।' 'जीवनदाता पेड़' में परोपकार का भाव निहित है। 'सब से प्यारा सच' रचना में भी कवि ने 'सत्यमेव जयते' पर जोर दिया है। हमारे यहाँ राष्ट्रीयता की भावना के स्त्रोत वैदिक काल से ही विद्यमान है। राष्ट्र से आशय निर्धारित सीमा में आबद्ध ऐसा भूखंड जिसके अंतर्गत उसमें निवास करने वाले नागरिक, पशु–पक्षी, जीव–जंतु, पर्वत, नदियाँ, जंगल, सागर, कीट–पतंगे इत्यादि सम्मिलित होते हैं। राष्ट्र–प्रेम अर्थात् देश से प्रेम करना है। दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में देश–प्रेम के स्वर मुखरित है। जिसमें राष्ट्र नायकों, जवानों, किसानों, मजदूरों के लिए सुंदर रचनाएँ व्यक्त की गई हैं। 'बाल दिवस', 'जय जवान', जय किसान' आदि रचनाएँ देश–प्रेम को उजागर करती। दीनदयाल शर्मा अपने समय के प्रति पूर्णरूपेण सजग और प्रतिबद्ध कवि हैं, जिन्होंने अपने परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण करके अपनी रचनाओं का विधान किया है। वर्तमान समय संचार क्रांति का है। एकल परिवार का चलन होने से बच्चे दादा–दादी, नानी की कहानियों से वंचित हो चुके हैं, ऐसे में टीवी को आधुनिक नानी का उपमान देकर कवि ने मौलिकता का भी परिचय दिया है। 'टीवी नानी' शिशु गीत में यही भाव प्रधान है। 'इधर–उधर' कविता में मिलकर काम करने के भाव को इंगित किया है, जो आज की बड़ी आवश्यकता है। 'चिड़ी–कबूतर मेरे साथी' में पक्षियों को दाना डालना और पानी पिलाना, आज के परिण्डे बांधने के अभियान को प्रमुखता से दर्शाता है, वहीं 'मच्छरों की शामत' और 'सफाई की सौगध', 'आजादी' रचनाएँ वर्तमान में चल रहे सफाई के आन्दोलन को और पक्षियों

को आजाद करने के सन्देश से प्रेरित हैं। बाल रचनाकार दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में लगभग सभी बाल प्रवृत्तियों का सुंदर निरूपण हुआ है, जिनमें मनोरंजन के सुमन खिले हैं तो जीवनापयोगी सीख भी लहलहाती है, परम्परा के बीजारोपण हैं तो आधुनिकता के अंकुर भी फूटने लगे हैं। मूल्यों की सुसंगति के साथ सरलता, सरसता, रोचकता एवं जिज्ञासा का सौन्दर्य दृश्यमान है, राष्ट्रप्रेम, समसामयिकता, प्रेरणा, बाल मनोविज्ञान की उद्भावना भी यहाँ प्रखरता के साथ विस्तार पाती है।

दीनदयाल शर्मा की 'इक्कावन बाल पहेलियाँ' पुस्तक भी प्रकाशित है। आदिकाल से ही पहेलियाँ लोक जीवन का हिस्सा रही हैं, जो रोचकता, ज्ञान, मनोरंजन, जिज्ञासा से भरपूर होने के कारण लोकप्रिय विधा भी है। पहेलियों के संक्षिप्त इतिहास के अनुरूप, अमीर खुसरो से प्रारम्भ होकर पहेलियों की यात्रा विविध रंगों में आद्यान्त अनवरत है। कहानी व कविता के बाद पहेलियाँ बालकों की अत्यंत प्रिय विधा रही है। आजकल पहेलियाँ अल्यल्प लिखी जा रही हैं, ऐसे में बाल पहेलियों का महत्व और भी बढ़ जाता है। बाल कहानीकार शर्मा ने पहेलियों के विषय में बालकों के आसपास की वस्तुओं को ही बनाया गया है यथा – राष्ट्र–नायक, पशु–पक्षी, कीट–पतंगे, दैनिक उपयोगी वस्तुएँ, प्रकृति के उपदान आदि। ये पहेलियाँ बालकों के मानसिक विकास में सहायक है, वहीं उनका भरपूर मनोरंजन करती हैं, साथ ही उनकी प्रज्ञा को तीव्र भी। सच कहा जाए तो इन पहेलियों का कोई सानी नहीं है।

चतुर्थ अध्याय–'दीनदयाल शर्मा का गद्य' अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया गया है – प्रथम कहानियाँ, द्वितीय–नाटक और एकांकी। रचनाकार शर्मा के पांच कहानी संग्रह–चमत्कारी चूर्ण, चिंट–पिंटू की सूझ, पापा झूठ नहीं बोलते, मित्र की मदद, बड़ों के बचपन की कहानियाँ हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। गद्य का कोशगत तात्पर्य एवं अनेक विचारकों, समालोचकों द्वारा दी गई परिभाषाओं के अनुसार साहित्य की दृष्टि से गद्य एक अनुशासित, व्याकरण सम्मत, व्याकरणसम्मत, सुव्यवस्थित रचना है। वहीं व्यवहार में जिस भाषा में जन–साधारण लिखते हैं, बात–चीत करते हैं तथा जिसे पढ़ते हैं, वह गद्य है। कहानी ऐसी रचना है, जिसमें जीवन का कोई एक अंग या भाव दर्शाया जाता है, जो पाठक पर समन्वित प्रभाव उत्पन्न करती है। कहानी साहित्य की अन्यतम एवं लोकप्रिय विधा है, वहीं बाल कहानी बच्चों की सब से प्रिय विधा है। बाल कहानी से तात्पर्य लगभग सात वर्ष से बारह वर्ष तक के बच्चों के लिए लिखी गई कहानियों से है। बालक कल्पनालोक में विचरण करता है और कहानी उस की कल्पना और जिज्ञासा का परिशमन काने के लिए सुपौष्टिक भोजन का कार्य करती हैं। कहानी बालक को आदर्श इन्सान बनाती है। मनोरंजन, रोचकता, जिज्ञासा, कौतुहल, काल्पनिकता, सोद्देश्यता बाल–कथा की प्रमुख विशेषताएँ मानी गई हैं, जो कहानीकार शर्मा की कहानियों में सर्वत्र विद्यमान है। जिज्ञासा एक मनोवृति है जिसमें मनुष्य बहुत कुछ जानने की तीव्रतर इच्छा

रखता है। कहानीकार शर्मा की चमत्कारी चूर्ण, प्रहेलिका की पहेलियाँ, सब से बड़ी सजा, ठोकर, मोर राजा का फैसला एवं चिंटू–पिंटू की सूझ की सभी कहानियाँ बच्चों में जिज्ञासा जाग्रत करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। कौवा काला क्यों है?, गधे के सींग क्यों नहीं है?, कोयल घोसला क्यों नहीं बनाती?, मोर के पैर बदरंग कैसे हुए?, यह सब जानने के लिए बच्चे बहुत आतुर रहते हैं। इन्हीं के समाधान कहानियों के अंत में देकर, कहानीकार ने बालकों में प्रारम्भ से ही जिज्ञासा वृति को प्रबल कर दिया है। 'चमत्कारी चूर्ण' बालक दुष्यंत और उसकी दीदी के चूर्ण की पुड़िया खाने के बाद पंख आए कि नहीं, ये जानने की उत्सुकता बाल पाठकों के मन में अंत तक बनी रहती है। 'प्रहेलिका की पहेलियाँ' कहानी तो है ही पहेलियों पर आधारित जो, स्वतः ही कौतुहल से भरी हुई होती हैं।

मनोरंजन बाल साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व माना गया है कथाकार शर्मा के कथा संसार मनोरंजन से पूर्वत समृद्ध है, जिसका बड़ी सूझ–बूझ और कुशलता के साथ संयोजन किया गया है। प्रस्तुत कहानियों में कुछ जंगल की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिनके पात्र जंगली जानवर व पशु पक्षी हैं, जैसे – शेर, हिरण, भालू, लोमड़ी, बंदर, कमेड़ी, कोयल, मोर, सियार, गधा, कौआ आदि। इनके नाम बहुत रोचक है जैसे – चमकू, कल्लू, चीकू, मन्नू, बिबो, झुमकी आदि जो बालकों का मनोरंजन करने में सक्षम है। 'अंजू की सीख' कहानी की पात्र अंजू बालिका द्वारा मास्टर जी के प्रश्नों के दिए गए उत्तर बालकों को जी भर हँसाने में पूर्ण रूपेण सक्षम है। कुछ कहानियाँ सामाजिक चेतना जागृत करने वाली है। 'चमत्कारी चूर्ण' कथा में स्कूल के बच्चों को एक साधु चूर्ण की पुड़िया ये कहकर बेच जाता है कि इसको खाने से पंख आ जायेंगे और तुम उड़ने लगोगे, अंत में इसका विरोध दर्ज कराया गया है। 'दृढ़ संकल्प का चमत्कार' में बड़े रोचक ढंग से शराब पीने के दुष्परिणाम से अवगत करवाया गया है 'मोर राजा का फैसला' में निष्पक्ष न्याय को उजागर किया है। दीनदयाल शर्मा की सभी कहानियों में कौतूहल, जिज्ञासा, ओत्सुक्य इस प्रकार समाविष्ट है कि कहानी के हर अवतरण के बाद आगे क्या होगा? कैसे होगा? यह जानने की लालसा बलवती होती जाती है। 'चमत्कारी चूर्ण, प्रहेलिका की पहेलियाँ, मित्र की मदद, सीख न मानने का सबब, मोर की जिद, साधु का शाप आदि सभी कथायें मन को उल्लसित करने और कौतुहल जगाने में पूर्णतः सफल रही है।। साहित्य में परम्परा का वही अंतर्सम्बंध है, जो साहित्य से है, परम्परा में सातत्य है, निरन्तरता है। आधुनिकता और परम्परा परस्पर सहयोगी एवं पूरक हैं। कहानीकार शर्मा की समग्र कहानियों में दोनों का सुंदर सामंजस्य दृष्टव्य है। मोर राजा का फैसला, दृढ़ संकल्प का चमत्कार, बिबो बकरी की हिम्मत, लोमड़ी की सूझ, साधु का शाप आदि कहानियाँ परम्परानुसार रची गई है, पंचतंत्र की तर्ज पर जंगल पर आधारित, जंगली जानवरों को पात्र बनाकर भी कहानियाँ प्रस्तुत की गई है। बहुधा कहानियों में पारम्परिक तत्वों और आधुनिक संदर्भ के सुंदर समन्वय की छवि दृष्टव्य है। 'चिंटू–पिंटू की सूझ'

का कथानक दो बिल्लियों व बन्दर वाला है, जिसे कथाकार ने आधुनिक स्वरूप प्रदान करते हुए नवीन कथा के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें झबरी बिल्ली के बच्चे वैसे ही रोटी के टुकड़े के लिए झगड़ते है। बंदर यह दृश्य देखकर उनका न्याय करने के लिए आता है, तभी बच्चों को अपनी माँ के द्वारा सुनाई गई 'बंदर–बिल्ली' की कथा याद आ जाती है और वे बंदर से कहते हैं कि क्यों बंदर चाचा, फिर हम दोनों भाईयों को ठगने की कोशिश कर रहे हो, लेकिन अब वह जमाना लद गया। दोनों भाई अपनी–अपनी रोटी खा कर चले जाते हैं। बंदर अपना सा मुँह लेकर रह जाता है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' भी परम्परा से लेकर आज तक चली आ रही समस्या बेटे–बेटी में भेद–भाव को लेकर लिखी गई है। नैतिक मूल्य बाल कहानी के अत्यावश्यक, तत्त्व कहे जा सकते हैं। साहित्य में मूल्यों से तात्पर्य, जिन तत्त्वों को जीवन में अपनाने से जीवन मूल्यवान बनता है, उन्हें नैतिक मूल्य कहते हैं।

कथाकार शर्मा के कथा साहित्य में नैतिक मूल्यों को प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया है। जैसे 'मोर की जिद' में' 'सत्य की जीत' 'चिंटू–पिंटू' की सूझ में वात्सल्य, 'साधु का शाप' में सद्भावना, सहयोग, भाईचारा आदि, 'पश्चताप के 'आँसू में क्षमा, 'सब से बड़ी सजा में' देश प्रेम, 'आजादी का अर्थ' कथा में पक्षियों को पिंजरे में कैद नहीं करना चाहिए, बड़ों के बचपन की कहानियों की सभी कथाओं में न्याय, साहस, परिश्रम, परहित, कर्तव्यनिष्ठा इत्यादि मूल्यों का सराहनीय प्रस्तुतीकरण हुआ है। कहानीकार ने प्रेम, सहयोग, क्षमा, स्वतंत्रता, सद्भावना, वात्सल्य, सहानुभूति, परोपकार, सेवा–भाव, संतोष, कर्तव्यनिष्ठा आदि शाश्वत् नैतिक मूल्यों का सुंदर समन्वय देखा जा सकता है। रचनाकार शर्मा के बाल कथा साहित्य में 'समसामयिक संदर्भ' के अंतर्गत सामायिक घटनाओं, समस्याओं, चिन्ताओं का समसामयिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया गया है। आज बड़ी संख्या में युवा पीढ़ी नशे के जाल में गिरफ्त है। इस भयावह समस्या का समाधान 'दृढ़ निश्चय के चमत्कार' में देखा जा सकता है। यह कहानी इसी गंभीर, ज्वंलत मुद्दे पर आधारित सार्थक रचना है। 'जो दिखता है, वह बिकता है', यह आज की बाजारवादी संस्कृति बन चुकी है। 'शिवगणेश' की चतुराई' कहानी इसी बाजार–नीति को प्रकट करती है। शिक्षा से तात्पर्य ऐसे ज्ञान से है, जिसके द्वारा मानव के व्यक्तित्व, मस्तिष्क, आत्मा, मन और तन का समग्र और सम्यक विकास हो। 'सीख न मानने का सबक' में बड़ों की उचित बात मान 'चमत्कारी चूर्ण' में ढोंगी बाबाओं की बातों में नहीं आना सीख निहित है। इस प्रकार कथाकार ने मनोरंजन की चाशनी में लपेट कर बातों ही बातों में बच्चों को अपरोक्ष रूप से बहुत कुछ सीख प्रदान कर दी है।

प्रस्तुत अध्याय का दूसरा खंड 'नाटक और एकांकी' है। हिंदी साहित्य में नाटक की सुदीर्ध परम्परा रही है। पौराणिक मान्यता के अनुसार त्रेतायुग में ब्रह्मा जी ने देवताओं के मनोरंजन के लिए चारों वेदों के सार को मिला कर 'पंचम वेद' अर्थात् 'नाट्य वेद' की रचना की।

बच्चों के विकास की दृष्टि से बाल नाटकों का महत्व अन्यतम है। इन में बालकों को अन्य कई विधाओं के मिश्रण का आस्वाद एक साथ मिल जाता है। कोशगत अर्थ एवं विद्वानों के मंतव्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि नाटक साहित्य की एक सुरम्य, मनभावन, लोकोपयोगी, रमणीय, सौन्दर्यसिक्त, हृदयस्पर्शी विधा है, जो पाठकों को ब्रह्मानंद में आवागाहन करवाती है। नाटककार शर्मा के चार नाटक संग्रह हैं – 'सपने', 'फैसला', 'फैसला बदल गया' और 'जंग जारी है'। नाटक एवं एकांकी में नाटकीय तत्वों–कथावस्तु, पात्र, देशकाल, संवाद, भाषा–शैली, अभिनय और उद्देश्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं एवं बालकों का भरपूर मनोरंजन करने में भी पूरी तरह से सक्षम हैं। 'सपने' नाटक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब के सपने पर आधारित है, जिसके अनुरूप बालकों को भावी जीवन के लिए सपने जरूर देखने चाहिए, 'फैसला' नाटक ओर 'फैसला बदल गया' एकांकी में उचित न्याय, दोषी की सजा, सुबह–सुबह किसी मनहूस का चेहरा देख लेने से दिन खराब हो जाता है, जैसे अंधविश्वास का खंडन किया गया है। 'जंग जारी है' किशारों के लिए लिखा गया नाटय–संग्रह है, जो बहुत ही सशक्त, शिक्षाप्रद है, ये सभी रेडियों नाटक हैं जो रेडियों पर प्रसारित हो चुके हैं। इन नाटकों में कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बेटी–बेटे में भेद–भाव करना, शराब के दुष्परिणाम, महिला प्रताड़ना, नारी उत्पीड़न, दरकते रिश्ते, सम्बन्धों की टकराहट जैसी सामाजिक बुराईयों, अंधविश्वासों, कुरीतियों के खिलाफ जंग है, जिनमें पारिवारिक तनाव, कुंठा, संत्रास, घुटन का बड़ी शिद्दत के साथ चित्रण करके, उनका पुरजोर विरोध दर्ज कराया गया है। नाटककार शर्मा के नाट्य–साहित्य में 'फैसला' और 'फैसला बदल गया' में मुख्य पात्र तीन–तीन हैं, 'सपने' और 'जंग जारी है' के नाटकों में पात्रों की संख्या आठ–दस तक है। पात्रों की संख्या सीमित भी है, तो विषयानुरूप अधिक पात्रों का भी संयोजन किया गया है। नाटककार शर्मा एक सशक्त रचनाकार हैं, इन्होंने अपने नाटकों में पात्रों एवं उनके चरित्र–चित्रण में प्रवीणता के साथ परिचय दिया है जो अत्यंत प्रसंशनीय है। संवादों को नाटक का प्राण तत्त्व कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। कथानक का विकास और पात्रों का चरित्र–चित्रण संवादों पर निर्भर करता है। संवाद जितने चुटीले और संक्षिप्त होते हैं, उतने ही प्रभावी। दीनदयाल शर्मा के नाटकों में संवाद अत्यंत सरल, सहज, चुटीले, संक्षिप्त, मनोरंजक, रोचक एवं सजीव हैं।

'जैसा देश वैसा वेश' को हम देशकाल कह सकते है। नाटककार शर्मा ने पात्रों के चयन, बनाव–श्रृंगार, भाषा–शैली, वेश–भूषा, हाव–भाव, तत्कालीन संस्कृति , रंग–ढंग, परिवेश, पात्रों के नामकरण, मानव स्वभाव इत्यादि का सम्पूर्ण ध्यान रखते हुए नाटकों की रचना की है। इन नाटकों को पढ़ने व देखने से तत्कालीन समाज की तस्वीर साकार हो उठती है। भाषा–शैली की दृष्टि से दीनदयाल शर्मा के नाट्य–काव्य की शैली अत्यंत, सरल, सहज, सरस, मनोंरजक, पात्रानुकुल, विषयानुरूप है, जिसे बच्चे आसानी से आत्मसात कर सकते हैं। हर नाटक और

एकांकी सोद्देश्य है और मनोरंजक भी। रस नाटक की आत्मा है। नाटककार शर्मा के नाटय साहित्य में हास्य, वात्सल्य, करूण, अद्‌भुत रसों का उद्रेक देखते ही बनता है। शिक्षा की दृष्टि से ये नाटक सफल कहे जा सकते हैं। सार स्वरूप कहा जा सकता है कि दीनदयाल शर्मा समस्त नाटक काव्य बालोपयोगी, विनोदपूर्ण, मनोरंजक, शिक्षाप्रद, रससिक्त और सोद्देश्य हैं, जो बाल साहित्य की अनमोल धरोहर है।

पंचम अध्याय – 'दीनदयाल शर्मा के बाल साहित्य की विशेषताऐं' है। कोशगत अर्थ के अनुसार 'विशेष' से तात्पर्य वह जो दूसरों से हटकर हो, जिस के जैसा अन्यत्र नहीं हो, जिसमें कुछ अनोखापन हो, वैचित्र्य हो। प्रत्येक रचनाकार की भॉति दीनदयाल शर्मा का भी अपनी बात अपना अंदाज है, मुहावरा है जो उन्हें वैशिष्ट्य प्रदान करता है, नई पहचान के साथ रेखांकित करता है। साहित्यकार शर्मा के बालसाहित्य की अपनी अलग विशिष्टताएँ हैं यथा – बाल संवेदना, वस्तु चित्रण, कल्पनाशीलता, नई तकनीक, पशु–पक्षी एवं वन्य जीव और सामाजिक चेतना। संवेदना से तात्पर्य सहानुभूति, करूणा, दया, अंतस की महानुभूति है जो अतिसूक्ष्म प्रभावों को भी आत्मसात कर लेती है। भवभूति तो 'एकोरसः करूण' कह कर करूण रस की बहुत पहले ही प्रतिष्ठा कर चुके हैं। एक मनुष्य द्वारा दूसरे मानव की पीड़ा, दर्द, कष्ट को महसूस करना ही संवेदना कहलाती है। वैदिक काल से भारतीय संस्कृति संवेदना से ओतप्रोत रही है। साहित्य और संवेदना का सम्बन्ध नीर–क्षीर समान रहा है। बालक तो संवेदना की प्रतिमूर्ति होता है। बाल साहित्य और संवेदना परस्पर पूरक कहे जा सकते हैं। बाल रचनाकार शर्मा स्वयं अत्यंत संवेदनशील हैं, जो बालकों की तरह भी भोले, सरल, ह्रदय, सहज मन के स्वामी हैं, इसीलिए इनका साहित्य संवेदना से ओतप्रोत है, जो बालक और माता के वात्सल्य के रूप में, पशु–पक्षियों के प्रति दया व प्रेम के माध्यम से, वनस्पति एवं पेड़ पौधों के प्रति प्रेम स्वरूप व्यक्त हुई है। 'फैसला', 'सपने', 'जंग जारी है', एवं सभी कहानियों और काव्य में सामाजिक संवेदना बिखरी पड़ी है। 'अपने–अपने सुख' नाटक में कन्या भ्रूण हत्या के संदर्भ में संवेदना का चरम देखा जा सकता है। सामाजिक, पारिवारिक सम्बंध प्रायः सभी गीत, कविताएँ एवं गद्य साहित्य करूणा, दया, प्रेम, सहानुभूति, आत्मीयता एवं बाल मन के सुकोमल भावों की अनुभूति से संपूरित है। 'वस्तु चित्रण' में वस्तु से आशय संसार के सभी अनुभूतिजन्य पदार्थ वस्तु की श्रेणी में आते हैं। रचनाकार शर्मा ने नन्हें–मुन्नों को प्यारी लगने वाली वस्तुओं जैसे – पतंग, बस्ता, कुर्सी, घर, गुब्बारा, गुल्ली–डंडा, पुस्तक, मोबाइल, घड़ी, दूरदर्शन, रसगुल्ला, कुल्फी आदि के काव्यमय चित्र सादगी, कुशलता, सरलता तथा आकर्षक रूप से गढ़े है, जिनके यथास्थान संदर्भ दिए गये हैं।

'जहाँ न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि' कवियों के संदर्भ में सार्थक उक्ति सर्व प्रचलित है। कल्पना से कवि का सम्बन्ध नेत्र से ज्योति समान माना जा सकता है। कल्पना मष्तिष्क और मन की ऐसी अद्वितीय, अद्‌भुत शक्ति और योग्यता को कह सकते हैं जो उन चीजों, भावों, पदार्थों को

निर्मित कर लेती है जिनका इस संसार में अस्तित्व ही नहीं है। कल्पना यथार्थ से परे का विचार हैं। बालक स्वप्नजीवी होता है जो अधिकाशतः कल्पना लोक में विचरण करता है। बिना कल्पना के बाल साहित्य की कल्पना ही निराधार है। दीनदयाल शर्मा की कल्पनाएँ अनूठी, अद्‌भुत, अकल्पनीय है। नानी की तुलना मीठे जल की झारी से करना, बकरी को हिरनी की माँ बताना, चूहे का कार से बाजार जाना, कुत्ते का गोवाहटी पहुंचना, टोकरी से बन्दर का निकलना आदि बेजोड़ व अनूठी कल्पनाएँ कही जा सकती हैं। 'सपने' एकांकी का कथ्य तो सपने देखने पर ही आधारित है। प्रायः समग्र बाल साहित्य का ताना–बाना कल्पना लोक के केनवास पर बुना गया है। रचनाकार ने सासांरिक चीजों को भी कल्पना के चमत्कार से विचित्र रूप देकर, सुनियोजित ढंग से एक सूत्र में पिरोकर अद्‌भुत माला के स्वरूप में व्यक्त किया है। इक्कीसवीं सदी संचार क्रांति की है, जहाँ नित नवीन तकनीक बाजार में आ रही है। 'नई तकनीक' के अंतर्गत नई और तकनीक का कोशगत आशय और परिभाषाएँ के सार स्वरूप 'नई' अर्थात् नवीन, नूतन, नयापन, विचित्र, विलक्षण और 'तकनीक' से तात्पर्य प्रविधि, शिल्प विज्ञान, यन्त्र कला आदि से है। आज का युग विज्ञान का युग है, हम बालकों को तकनीक से अलग नहीं रख सकते हैं। दीनदयाल शर्मा नए युग के रचनाकार हैं, इन्होंने अपने बाल–साहित्य में तकनीकी उपकरणों जैसे– मोबाइल, घड़ी, कम्प्यूटर कार सहित अनेक तकनीकी यंत्रों पर आकर्षक, सरस, सुरूचिपूर्ण ढंग से लेखनी चलाई है। 'बरसात' कहानी में बाल नायक दीपू अपने पापा को 'बारिश कैसे होती है', को दो प्रयोग करके समझाता है। पशु–पक्षी और वन्य जीव पर्यावरण के महत्त्वपूर्ण उपादान है। इन्हें पालतू एवं जंगली जानवरों के रूप में जाना जाता है। पशु अर्थात् चार पैरों वाले जानवर, पक्षी अर्थात् नभचर पंखों वालें प्राणी जो आकाश में उड़ते हैं। आदिकाल से लेकर अद्यतन पशु–पक्षियों और वन्य जीवों पर सर्वाधिक बाल–रचनाएँ लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल साहित्य में सबसे अधिक रचनाएँ पशु–पक्षियों और वन्य जीवों पर रचित की हैं जिनमें प्रमुख रूप से चिड़िया, बंदर, तोता, कबूतर, मुर्गा, गाय, बकरी, ऊँट, हाथी, गधा, घोड़ा, शेर, लोमड़ी, भालू, हिरण, लोमड़ी, कुत्ता, बिल्ली, उल्लू, मोर सहित अन्य अनेक। एक से एक मनभावन कवितायें, गीत, कहानियाँ, नाटक, पहेलियाँ चित्रित की गई हैं, जो अद्वितीय बन पड़ी हैं। सभी रचनाएँ सचित्र होने से और भी आकर्षक और अर्थवान हो गई हैं। जिनके यथास्थान उपयुक्त उदाहरण दिए गये हैं।

सामाजिक दृष्टि से भी रचनाकार शर्मा का समग्र बाल साहित्य रचना कर्म विशिष्ट बन पड़ा है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। दार्शनिकों का मानना है कि समाज के बिना समाज के मानव का जीवनयापन असंभव है। समाज का फलक बहुत व्यापक है जिसमें मानव के साथ–साथ समस्त जीवधारी, सभ्यता, संस्कृति, रहन–सहन, व्यवसाय, खान–पान, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, पर्व–त्योहार, जीवन मूल्य, भाईचारा आदि समाहित हैं। साहित्य हो या बाल साहित्य उसका

समाज से अटूट सम्बन्ध रहा है। दीनदयाल शर्मा की समग्र रचनाधर्मिता समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनमें परिवार, पशु–पक्षी, जीवन मूल्यों, खेल तमाशों, सभ्यता–संस्कृति की झलक दर्शनीय है। तमाम भेद–भावों से ऊपर प्रेम, सद्भावना, सहयोग, एकता, भाईचारा जैसे मूल्यों से अनुप्रेरित है। अक्कड़–बक्क्ड़, नया साल, आओ बच्चों, अच्छे काम, पढ़ाई, सफाई की सौगंध, मेरी नानी, अपना घर आदि बाल काव्य सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ है, इनमें जीवन मूल्यों और सामाजिक चेतना का जीवंत चित्रण देखने को मिलता है। इसी प्रकार 'बिबो बकरी की हिम्मत' में वात्सल्य भाव, संवेदना दृष्टव्य है, 'दृढ़ संकल्प का चमत्कार' में शराब से होने वाली हानियों को बताते हुए हुए समाज को दिशा निर्देश प्रदान किया गया है। 'पापा झूठ नहीं बोलते' 'सीख न मानने का सबब', 'चिटू–पिंटू की सूझ' आदि कथाएँ भी सीधे सामाजिक सरोकरों की अभिव्यक्ति हैं। 'फैसला', 'फैसला बदल गया' में समाज के अंधविश्वासों को दर्शाया है, वहीं 'सपने' में बच्चों के सपने पूरे करने में माता–पिता की अहम् भूमिका की ओर इंगित किया है। 'जंग जारी है' के समग्र नाटक समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें समाज में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ जंग दिखाई गई है। सामाजिक मूल्यों को भी अत्यंत कौशल एवं गहराई के साथ उकेरा है। यथा प्रसंग सबके संदर्भ शोध प्रबंध में दिए जा चुके हैं।

षष्ठ अध्याय –'शिल्प सौष्ठव' के अंतर्गत कोशगत अर्थ एवं परिभाषा से स्पष्ट है कि किसी रचना का प्राणतत्व कथ्य है तो शिल्प उसका शरीर माना गया है। शिल्प से तात्पर्य लेखक द्वारा अपने मनोभावों, संवेदनाओं, अनुभवों, विचारों, अनुभूतियों को अभिव्यक्ति के माध्यम से साकार स्वरूप प्रदान करना है। प्रत्येक रचनाकार अपनी बात को सशक्त, प्रभावी, सुदृढ़, सफल तरीके से प्रस्तुत करना चाहता है, इसके लिए उसे शिल्प का सहारा लेना पड़ता है। शिल्प के अंतर्गत भाषा, शैली, संवादों का सुसंगठन, कथ्य, शब्द कौशल आदि का समायोजन होता है। इस प्रकार कला पक्ष को आकर्षक, प्रभावी, अनुपम, विलक्षण बनाने के लिए शिल्प का गठन अनिवार्य है, यह सम्पूर्ण प्रक्रिया शिल्प कहलाती है। दीनदयाल शर्मा का शिल्प सौन्दर्य सशक्त, मंजा हुआ एवं उच्च कोटि का है। सहज भाषा, अनेक शैलियों का प्रयोग, समृद्ध शब्द विधान, लोकोक्तियों का प्रयोग, बालोपयोगी कथानक आदि का सफल संयोग इनका शिल्पगत वैशिष्ट्य है। भाषा का कोशगत तात्पर्य एवं भिन्न–भिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाओं के सारांश स्वरूप, भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ व्यक्तियों की वाणी होता है, साथ ही भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। भाषा देवी अंश है जो मनुष्य को ही प्राप्त है। भाषा मानव के भावों एवं विचारों को प्रकट करने का एक मात्र सबल और प्रभावशाली माध्यम है। भाषा मनुष्य एवं साहित्य के बीच सेतु का काम करती है। इसके माध्यम से ही भावों, विचारों में सबलता, ठोसता आती है, निराकार भावों को आकार मिलता है। भाषा को समृद्ध, सुगम, सम्प्रेषणीय बनाने के लिए अनेक भंगिमाओं

एवं तत्वों का होना अनिवार्य माना गया है यथा – बिम्ब, प्रतीक, शब्द विधान, छंद, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, चित्रात्मकता, गीति–तव, लयात्मकता, प्रवाह आदि। प्रत्येक रचनाकार की अपनी अलग भाषा–शैली होती है, जो उसे वैशिष्ट्य प्रदान करती है। बड़ो के साहित्य और बाल साहित्य की भाषा में भिन्नता होना स्वाभाविक है क्योंकि बालकों के लिए भाषा अति सरल, सरस, माधुर्य युक्त, विषयानुकूल, रोचक, मनोरंजक, प्रवाहशील, चित्रात्मक अर्थात् बालोपयोगी होना अनिवार्य है, जिसे नन्हा बालक आसानी से समझकर उसकी आनंदानुभूति कर सके। दीनदयाल शर्मा बालकों की भाषा गढ़ने से सिद्धहस्त हैं। गद्य–पद्य की सभी रचनओं में सरल, सहज, सुगम, प्रवाहमान, भाषा–शैली का प्रयोग किया है, वहीं ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता, चित्रात्मकता, शब्द–विधान, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, अलंकार आदि का चित्रांकन स्वाभाविकता के साथ दृष्टिगोचर हुआ है। 'ध्वनि' काव्य की सार्थक और स्वतंत्र इकाई है। शब्द ध्वनियों के सार्थक समूह होते हैं। बालकाव्य में ध्वनि का विशेष महत्व होता है। बाल काव्यकार शर्मा के काव्य में ध्वन्यात्मकता विशेष रूप से ध्वनित हुई हैं, जिससे काव्य स्पंदित हो उठा है। 'बम बम भोले', 'वर्षा और बच्चे, 'कर्म', 'सब से प्यारा सच' सहित कई बदल गीतों में कड़–कड़, चट–पट–पट–पट' अगड़म–बगड़म, कड़क–कड़क आदि शब्दों के प्रयोग से ध्वन्यात्मकता की अनुपम छटा देखते ही बनती है। 'चूं–चूं' शिशु गीत संग्रह के सभी गीत कई पशु–पक्षियों की बोलियों पर आधारित होने से ध्वन्यात्मकता स्वतः उत्पन्न हो गई है। चित्रात्मकता काव्य का महत्वपूर्ण अंग है चित्र अर्थात् तस्वीर, दृश्य, मंजर आदि, किन्तु साहित्य में चित्र से तात्पर्य शब्द चित्र से माना गया है। कवि किसी वस्तु या भाव का इस प्रकार शाब्दिक वर्णन करता है कि पाठक के मन उस भाव, वस्तु एवं दृश्य विशेष का चित्र सा खिंच जाता है अर्थात् वह जीवंत हो उठता है। दीनदयाल शर्मा ने अपने बाल काव्य में अत्यंत मनभावन, आकर्षक, विचित्र शब्द चित्र खीचें है, चाहे बारिश का वर्णन हो या भालू का नाच या फिर गिलहरी पर पहेली ही क्यों न हो। ये शब्द–चित्र क्रमशः 'बारिश का मौसम', 'बबन विधाता', 'भालू जी', गिलहरी की पहेली' रचनाओं में देखे जा सकते हैं। काव्य में आरोह–अवरोह, यति गति, छंद, गीति–तत्त्व मिलकर लय उत्पन्न करते हैं। बाल काव्य में लय को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि बालकों की हर क्रीड़ा लय से परिपूर्ण होती है। बालक लयबद्ध रचना ही पढ़ना पसंद करते हैं, जो उन्हें आसानी से कंठस्थ भी हो जाती है। कवि शर्मा ने गीति तत्त्व का उपयोग पूरी तन्मयता और भाव विभोरता के साथ किया है। इनके सम्पूर्ण बाल काव्य में लयबद्धता का पूरा सामंजस्य देखा जा सकता है। 'मुहावरे' रूढ़ वाक्यांश हैं, जो भाषा को जीवंतता, समर्थता प्रदान करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में विलक्षणता, चमत्कार, लाक्षणिकता और आकर्षण उत्पन्न होता है, इनमें पर्याप्त अभिव्यंजक शक्ति होती है। लोकोतियाँ अर्थात् लोक में प्रचलित उक्ति। ये उक्तियाँ बरसों के अनुभव और ज्ञान का सार होती हैं। एक उक्ति दीर्घ समय तक लोक प्रचलन के बाद लोकोक्ति का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। लोकोक्तियाँ को अत्यंत चुटीली, सजीव, संक्षिप्त होने से कारण 'गागर में सागर' कह सकते हैं।

यह एक पूर्णतः स्वतंत्र वाक्य होता है, जिसका भाषा में प्रयोग बिना किसी बदलाव के साथ किया जाता है। बाल साहित्यकार शर्मा ने अपने बाल साहित्य में लोकोक्तियों का प्रयोग बड़ी सहजता एवं कुशलता से कर दिखाया है, जो कि बाल साहित्य के प्रसंग में अत्यंत टेड़ी खीर है। साथ ही मुहावरों के प्रचुर प्रयोग से कवि शर्मा के बाल काव्य की भाषा सौन्दर्य में चार चाँद लग गये हैं।

विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर व्याख्यायित किया जा सकता है कि अलंकार काव्य में सौन्दर्य की उत्पत्ति करने वाले तत्व माने गए हैं, जिन की उपस्थिति से काव्य में माधुर्य, सौन्दर्य, चमत्कार, अर्थ–गाम्भीर्य, लाक्षणिकता उत्पन्न होती है। ये रसोस्पति के भी माध्यम हैं। प्रतिष्ठित रचनाकार दीनदयाल शर्मा के बाल काव्य में अनुप्रास के अनेक भेदों की सुंदर अभिव्यक्ति के साथ उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति आदि सरल अलंकारों की नैसर्गिक सृष्टि हुई है। विद्वानों के मतानुसार निश्चित गणना के आधार पर काव्य रचना करना ही छंद कहलाते हैं। इनकी उपस्थिति से काव्य में लय एवं प्रवाह पैदा होता है। दीनदयाल शर्मा के काव्य में बाल्यावस्था के अनुरूप, लघु, सरल मात्रिक छंदों का प्रयोग मिलता है। कुछ रचनाएँ छंदों की दृष्टि से स्वतंत्र और मौलिक दिखाई देती हैं। गीत अत्यंत प्राचीन और लोकप्रिय विधा है। गीत से तात्पर्य ऐसी रचना से है जिसे गाया जा सके जोख लयबद्ध हो, छन्दबद्ध हो, जिसमें स्वर, ताल, यति, प्रवाह हो। प्रारम्भिक काल से बाल–काव्य में गीतों की रचना होती आई है। कवि दीनदयाल शर्मा ने भी सुंदर गीतों की रचना की है जिनमें 'बम–बम–भोले,' 'अपना घर', 'सर्दी आई' सहित कई गीतों की रचना की है। शब्द ब्रह्म स्वरूप माने गए हैं। शब्द एक स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि है जो एक या अधिक स्वरों, वर्णो के संयोग से कंठ और तालु आदि से द्वारा उत्पन्न होती है, जिससे सुनने वाले को किसी पदार्थ एवं कार्य का बोध होता है। शब्द भाषा की प्रथम इकाई है। किसी भी भाषा में प्रयुक्त किये जाने वाले अनेकानेक शब्दों से मिलकर शब्द संगठन बनता है। ये शब्द अनेक स्त्रोतों से ग्रहण किए जाते हैं, जैसे – तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, जिनसे भाषा समृद्ध व सामर्थ्यवान बनती है। रचनाकार शर्मा का शब्द विधान और भण्डार अनुपम, अप्रतिम तथा अनूठा है और विशाल भी, जिसमें सभी प्रकार के शब्द पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं, जैसे – तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज। विदेशी शब्दों में अंग्रेजी, अरबी–फारसी मिश्रित शब्दावली का प्रयोग बालकों को ध्यान में रखते हुए अत्यधिक सहजता, सरलता एवं अकृत्रिम रूप से किया गया है जो चकित कर देने वाला है। ये सभी शब्द साधारण बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले हैं और व्यवहार में घुलमिल गये हैं। जैसे–देशज में–कुकडू–कू, गुल्ली–डंडा, थुल–थुल, अक्कड़–बक्कड़ आदि अंग्रेजी में मोबाइल, टी.वी., फोन, बस्ता, डांस, गेम इत्यादि, अरबी–फारसी में खुशी, आजादी, कागज, जिंदाबाद, दिक्कत, जवाब इशारा आदि।

अपनी बात को विशिष्ट ढंग से कहने की कला ही शैली है, जो अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा माध्यम भी है। अपनी अनुभूतियों को दर्शाने के लिए प्रत्येक रचनाकार का अपना अलग

लहजा, ढंग, सलीका होता है उसकी सबसे बड़ी शक्ति होती है। एक लेखक जितना अधिक से अधिक मार्मिक, प्रभावी, रमणीय रूप में अपने मत को प्रकट करता है, वह शैली उतनी ही श्रेष्ठ और अच्छी मानी जाती है। हृदयस्पर्शी शैली के द्वारा भाव, कथ्य या विषय पठनीय बनता है। साहित्य जगत में अनेकानेक प्रकार शैलियाँ प्रचलित हैं। पिछले कुछ सालों से बड़ो के साहित्य की भॉति बाल साहित्य की भाषा शैली में भी नये–नये अंदाज और प्रयोग हो रहे हैं। सुप्रसिद्ध साहित्य सृजक दीनदयाल शर्मा एक सधे शब्द शिल्पी हैं, इन्होंने शैली संगठन में बड़ी प्रवीणता दिखाई है। वर्णनात्मक, काव्यात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, संवादात्मक, संस्मरणात्मक और हास्यात्मक शैलियों को अपने साहित्य में अत्यंत सुघड़ता के साथ काम में लिया है। वर्णनात्मक शैली में किसी स्थान, दृश्य, अनुभव, वस्तु, घटना, स्मृति आदि का आकर्षक शब्दों में चित्रण किया जाता है। रचनाकार ने कई कहानियों एवं नाटकों में इसका सुंदर प्रयोग किया है–'फैसला' में जंगल का, 'चिंटू–पिंटू की सूझ' में घटना का 'सबसे बड़ी सजा' में प्रार्थना–सभा का मनोहारी वर्णन, 'आजादी का अर्थ' कथा में जयपुर शहर व वहाँ की एक कोठी का भव्य वर्णन बालापयोगी भाषा में किया है, जो सराहनीय है। काव्यात्मक शैली में लेखक अपनी गद्य रचनाओं के बीच–बीच में काव्य पंक्तियों का यथा प्रसंग उल्लेख करता है, जिस से रचना में सौन्दर्य और रसोस्पति का आस्वाद पाठकों को मिल जाता है। जब रचनाकार स्वयं एक कवि हो तो उसके गद्य साहित्य में काव्य शैली का बहुतायात से प्रयोग होना स्वाभाविक है। 'सपने' एकांकी में लेखक शर्मा ने श्लोकों, कविताओं, गीतों की सार्थक प्रस्तुति करके नाटक को जीवंत कर दिया है। मनोविश्लेषणात्मक शैली में मानव मन की भीतरी तहों को परत–दर–परत खोलते हुए पात्रों की मनःस्थिति, अन्तर्द्वन्द्व, पीड़ा, कुंठा, खुशी आदि का सूक्ष्म अंकन किया जाता है। 'जंग जारी है' के कई नाटकों में इस शैली को काम लिया गया है। रचनाकार शर्मा ने हास्यात्मक शैली का भी भरपूर उपयोग किया है। कई कहानियों के संवाद बालकों को हँसा–हँसा प्रफुल्लित कर देने में सक्षम हैं। नाटकों और कहानियों में संवाद शैली की अभिव्यक्ति भी सर्वत्र एवं प्रचुर मात्रा मात्रा हुई है। 'बड़ों के बचपन की कहानियाँ' की सभी कहानियाँ संस्मरणात्मक शैली में लिखी गई हैं। 'अपने–अपने सुख' नाटक और 'सीख न मानने की जिद' में पूर्व कथन शैली का सुंदर अंकन मिलता है। सार स्वरूप रचनाकार के समग्र सृजनधर्म में भाषा और शिल्प के सभी तत्वों का निरूपण अतुलनीय और अप्रतिम बन पड़ा है।

उपसंहार में सम्पूर्ण शोध का अध्ययन सार प्रस्तुत किया है। बालक संसार की प्रथम इकाई है। उसके स्वस्थ और संपूर्ण विकास से भावी समाज का स्वरूप निर्धारित होता है, इसीलिए मैंने अपने शोध प्रबंध के लिए बाल साहित्य का चयन किया है। राजस्थान प्रदेश में अनेक प्रबुद्ध बाल साहित्यकार इस दिशा में सृजनरत हैं, दीनदयाल शर्मा इसी अजस्त्रधारा के महत्वपूर्ण सृजनकर्मी हैं। मैंने अपनी सुझबूझ और विवेक के अनुसार अपने शोध प्रबंध में ऐसे

कलम के धनी बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा के अतुल्नीय असाधारण योगदान का आद्योपांत निरपेक्ष भाव से विवेचन, विश्लेषण मीमांसा, मूल्यांकन, समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है। परिशिष्ट के अंतर्गत रचनाकार शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व को आधार बनाकर इनका साक्षात्कार लिया है, जिसके अंतर्गत लेखक के द्वारा बाल–साहित्य में किये गये अभूतपूर्व योगदान, जीवन एवं सृजन–कर्म तथा प्रेरणा बिन्दुओं से जुड़े विविध महत्त्वपूर्ण पहलू एवं उल्लेखनीय आयाम उद्घाटित किये गये हैं। इस शोध प्रबंध के द्वारा रचनाकार शर्मा का रचना–कर्म, वैचारिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक अवदान सहृदय पाठकों के समक्ष आ सकेगा, उनका बाल साहित्य के योगदान रेखांकित होगा, शोध के नये आयाम खुलेंगे, नई दिशायें दृष्टिगत होंगी, बाल साहित्य में जहाँ शोध कार्य अत्यल्प हुए हैं, ऐसी स्थिति में शोध कार्य में एक और कड़ी जुड़े सकेगी। साथ ही इनके द्वारा बाल साहित्य में किए गये अभूतपूर्व रचनाकर्म को राष्ट्रीय धरातल पर उजागर करने का भी लघु प्रयत्न किया है। शोध प्रबंध के अंत में आधार पुस्तकों एवं संदर्भ–ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गई।

♦♦♦♦

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क्र.सं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
सहायक पुस्तकें			
1.	दीनदयाल शर्मा	चिंटू–पिंटू की सूझ	महाप्रयाग प्रकाशन बीकानेर, 1887
2.	दीनदयाल शर्मा	बड़ों के बचपन की कहानियां	टाबर टोली प्रकाशन, हनुमानगढ जंक्शन, 1987
3.	दीनदयाल शर्मा	फैसला	टाबर टोली प्रकाशन, हनुमानगढ जंक्शन, 1987
4.	दीनदयाल शर्मा	पापा झूठ नहीं बोलते	सम्पर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़ जंक्शन, 1999
5.	दीनदयाल शर्मा	कर दो बस्ता हल्का	राजस्थान बाल कल्याण परिषद्, हनुमान जंक्शन, 1998
6.	दीनदयाल शर्मा	फैसला बदल गया	टाबर टोली प्रकाशन, हनुमानगढ़ जंक्शन, 1987
7.	दीनदयाल शर्मा	सूरज एक सितारा हैं	राजस्थान बाल कल्याण परिषद्, हनुमानगढ़ जंक्शन, 2000
8.	दीनदयाल शर्मा	चमत्कारी चूर्ण	महाप्रयाग प्रकाशन बीकानेर, 1887
9.	दीनदयाल शर्मा	सपने	बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2006
10	दीनदयाल शर्मा	इक्कावन बाल पहेलियाँ	सम्पर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़ जं., 2009
11.	दीनदयाल शर्मा	चूं चूं	टाबर टोली प्रकाशन, हनुमानगढजंक्शन, 2010
12.	दीनदयाल शर्मा	नानी तू है कैसी नानी	सम्पर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़ जं., 2009
13.	दीनदयाल शर्मा	गिली गिली गप्पा	राजस्थान बाल कल्याण परिषद्, हनुमानगढ़ जंक्शन, 2014
14.	दीनदयाल शर्मा	अगड़म–बगड़म	बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2014
15.	दीनदयाल शर्मा	चिड़िया चहके गीत सुनाए	बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2016
16.	दीनदयाल शर्मा	रसगुल्ला	बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2016

17.	दीनदयाल शर्मा	मित्र की मदद	बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2016
18.	दीनदयाल शर्मा	जंग जारी है	विकास प्रकाशन, बीकानेर, 2017
19.	दीनदयाल शर्मा	अपनी दुनियां सबसे न्यारी	एकता प्रकाशन चुरू, 2018
20.	दीनदयाल शर्मा	हम बगिया के फूल	एकता प्रकाशन चुरू, 2018

सहायक ग्रंथ

21	प्रकाश मनु	हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली–2018
22.	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे	बाल साहित्यः मेरा चिंतन	मेघा बुक्स, दिल्ली, 2002
23.	डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	बाल साहित्य के प्रतिमान	बुनियादीप्रकाशन, लखनऊ, 2012
24.	डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	बाल साहित्य सृजन और समीक्षा	विनायक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 2012
25.	डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	श्रेष्ठ बाल पहेलियाँ	विद्यार्थी प्रकाशन, लखनऊ, 2017
26.	डॉ. परशुराम शुक्ल	हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन	आराधना ब्रदर्स, गोविन्द नगर, कानपुर, 2015
27.	डॉ. परशुराम शुक्ल	प्रतिनिधि बाल कविताएँ	राजश्री प्रकाशन, भोपाल–2015
28.	डॉ. सुरेन्द्र विक्रम	हिन्दी बाल पत्रकारिताः उद्भव और विकास	साहित्य वाणी, इलाहाबाद, 1992
29.	डॉ. सुधा मिश्रा	हिन्दी बाल कविता में नए प्रयोग	जनवाणी प्रकाशन प्रा. लि., विश्वास नगर, दिल्ली, 2015
30.	शुचिता सेठ	समकालीन हिन्दी बाल साहित्य	अंकित पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
31.	डॉ. प्रणोति पाटिल	हिन्दी बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	आशा प्रकाशन, कानपुर, 2018
32.	डॉ. राष्ट्रबन्धु	शिक्षाप्रद बाल कविताएँ	सुयश प्रकाशन, दिल्ली–2008

33.	सुरेन्द्र विक्रम	समकालीन बाल साहित्यः परख और पहचान	काशी प्रकाशन, लखनऊ, 1998
34.	पंड़ित श्रीराम शर्मा आचार्य	अथर्ववेद	संस्कृति संसथान, बरेली, 1992
35.	डॉ.राजकिशोर सिंह	भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धांत	प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ संशोधित संस्करण
36.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, नवां संस्करण, 2000
37.	डॉ. नगेन्द्र	हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में दिल्ली का योगदान	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1995
38.	डॉ. धर्मवीर भारती	मानव मूल्य और साहित्य	भारतीय ज्ञानपीठ, 1999
39.	रामधारी सिंह दिनकर	संस्कृति के चार अध्याय	लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, 2004
40.	डॉ. हरिचरण शर्मा	हिन्दी साहित्य का इतिहास	राजस्थान प्रकाशन, जयपुर (राज.) 2011
41.	डॉ. रमाकान्त शर्मा	कविता की लोक धर्मिता	अरिहंत एजेन्सीज, सरदारपुरा, जोधपुर(राज.)–1999
42.	डॉ. मोतीलाल मेनरिया	राजस्थानी भाषा और साहित्य	राजस्थानी ग्रंथाकार, जोधपुर (राज.) 1999
43.	श्रीमदगोस्वामी तुलसीदास जी	श्रीरामचरित मानस	गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.) संवत–2046, 76 वां संस्करण
44.	डॉ. जगपाल सिंह शर्मा	हिन्दी काव्य में अद्भुत रस	सहयोग प्रकाशन, दिल्ली–2004
45.	डॉ. अनिता वर्मा	हिन्दी कथासाहित्य में संवेदना और शिल्प	बाबा पब्लिकेशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) 2017
46.	डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल	चुने हुए नुक्कड़ नाटक	सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली–2017

47.	डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'	हिन्दी भाषा और महाकाव्यः एक अध्ययन	साहित्यागार, जयपुर (राज.), 2005
48.	डॉ. विदुला	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	सरल प्रकाशन मंदिर, मेरठ
49.	डॉ. मनोहर सर्राफ	प्रतिनिधि बाल कविताएं	रामश्री प्रकाशन, भोपाल, 2015
50.	डॉ. सराय सिंह	अमृतलाल नागर की कथा दृष्टि की समाजशास्त्रीय अध्ययन	राका प्रकाशन, इलाहाबाद–2002
51.	डॉ. राधेश्याम शर्मा	साहित्य संस्कृति और अन्य विधाएं	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 2017
52.	राधा दीक्षित	राग दरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन	साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, 1991
53.	राजेश शर्मा और कपिल शर्मा	आधुनिक हिंदी निबंध	पंकज पुस्तक मंदिर, दिल्ली, 2008
54.	बी.के, तनेजा, अभिषेक अवतंस	हिन्दी शब्द शक्ति और परिभाषा	क्लासिंग पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2005
55.	श्याम सुन्दर कपूर	व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण	प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 1979
56.	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	काव्यांग कौमुदी तृतीय माला	नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी, 1969
57.	डॉ. मंगल देव शास्त्री	भाषा विज्ञान	इंडियन प्रेस, प्रयाग, 1962
58.	डॉ. विद्यानिवास मिश्र (सं.)	भारतीय भाषा शास्त्रीय चिंतन	हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1976
59.	डॉ. राजकिशोर सिंह	भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धांत	प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, संशोधित संस्करण
60.	डॉ. मोतीलाल मेनरिया (प्रकाशक)	साहित्य के मान और मूल्य	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राज.) 1961
61.	शेषपाल सिंह 'शेष'	साठोत्तरी हिंदी बाल साहित्य	समय प्रकाशन, दिल्ली, 2002

62.	रोहिताश अस्थाना	मोनू के गीत	बुनयादी साहित्य प्रकाशन, 1985
63.	डॉ. भोलानाथ तिवारी	भाषा विज्ञान	किताब महल, इलाहाबाद (षष्ठम् संस्करण), 1967
64.	ओमप्रकाश कश्यप	श्रीकृष्ण देवसरे और उनका बाल साहित्य	विजय बुक्स, दिल्ली, 2013
65.	निरंकार देव सेवक	बाल गीत साहित्य	उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्था, लखनऊ, 2013
66.	रामपाल शर्मा	गंगा दादी जिंदाबाद	ग्रंथ अकादमी, दिल्ली, 2014
67.	चाँद मोहम्मद घोसी	बुद्धि की परख	राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 2006
68.	चाँद मोहम्मद घोसी	आओं बनाएं अंकचित्र	राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 2007
69.	ओमशरण आर्य 'चंचल'	अच्छे बच्चे	आधारशिला,प्रकाशन,हल्द्वानी नैनीताल, 2012
70.	महेशचन्द्र त्रिपाठी	जंगल में मंगल	लेकमंगलसाहित्य परिषद्, फतेहपुर (उ.प्र.), 2004
71.	सत्यदेव संवितेन्द्र (संपादक)	ऊँची रखे उड़ान	क्लासनप्रकाशन,बीकानेर, 2004
72.	रजनी सिंह	लोरी सुख	रजनी प्रकाशन, डिबाई, 2016
73.	डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	आसमान की सैर	आधुनिक प्रकाशन, बीकानेर, 2005
74.	रवि पुरोहित, संपादक	आँखों में आकाश	माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर, 2012
75.	गोविन्द शर्मा, संपादक	बगिया के फूल	शिक्षा विभाग, राजस्थान, 2006
76.	हीरालाल शर्मा 'सरोज'	संपादक बालोद्यान	शिक्षा विभाग, राजस्थान, 2006
77.	जगदीशचन्द्र शर्मा	पद्य प्रसंग नेहरू के संग	कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1993

78.	सुखपाल गुप्त (प्र.)	सुगम हिन्दी व्याकरण और रचना	आशा प्रकाशन गृह नई दिल्ली, 1997
79.	शंकर	कोरी कल्पना	चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नेहरू हाउस, नई दिल्ली, 1982
80.	रजनी सिंह	शस्यश्यामला भारत माँ	रजनी प्रकाशन, डिबाई, 2016
81.	मानसी शर्मा	च्युइंगगम	कलासन प्रकाशन, बीकानेर (राज.), 2019
82.	दुष्यन्त जोशी और मेघना शर्मा	संपादन	विकास प्रकाशन, बीकानेर (राज.), 2018
83.	हिन्दी कक्षा–4 पाठ 4	स्ंपादक	राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर (राज.) 2018
84.	कामना सिंह	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल साहित्य	अलिख प्रकाशन, नई दिल्ली
85.	सीताराम गुप्त सं.	बालगंगा	आदर्श प्रकाशन मंदिर, 2000

पत्र–पत्रिकाएँ

1- राजस्थान पत्रिका, संपादक, जयपुर (राज.), राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, कोटा, 02.04.2017

2- टाबर टोली, श्रीमती कमलेश, शर्मा, टाबर टोली प्रकाशन, हनुमानगढ़ जं. (राज.) मार्च–2010

3- दैनिक भास्कर, (मधुरिमा), भोपाल, 06.06.2018

4- मधुमती, रोहित गुप्ता (प्र.अ.), राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, जून–2015

5- आजकल, फरहत परवीन, आजकल प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, नवम्बर–2014

6- शोध नवनीत, डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, स्तुति प्राच्यविद्या समिति, जन.–जून.–2017

7- बाल वाटिका, डॉ. भैरूलाल गर्ग, नंदभवन, भीलवाड़ा (राज.) दिसबंर, 2014

8- बाल प्रहरी, उदय किवौला, अल्मौडा उत्तराचंल, अप्रैल–जून, 2017

9- बाल वाणी, उदय प्रताप सिंह, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, सितम्बर–अक्टूबर, 2014

10- चक्रवाक्, निशांत केतु, सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस आर्गनाइजर, नई दिल्ली, अंक–45, जुलाई–सितम्बर, 2018

11- सृजन कुंज, डॉ. कृष्ण कुमार 'आशु' पुरानी आबदी, श्रीगंगानगर, अंक 14–15, मई सं. अगस्त–2017

12- बाल प्रतिभा, यूसुफ खान साहिल, अंक–8 नोहर, हनुमानगढ़, सितम्बर–नवम्बर, 2016
13- आधारशिला, दिवाकर भट्ट, हल्द्वानी, नैनीताल, 2016
14- साहित्य विमर्श, हरेराम पाठक, पूर्वोत्तर साहित्य विमर्श संस्थान, हिन्दी के भाग डिगबोई (असम) अंक–4, जुलाई–दिसम्बर, 2016
15- शिविरा, सुवालाल, माध्यम शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, सितम्बर–2015
16- पंजाब सौरभ, निदेशक, भाषा विभाग, पंजाब–2015
17- बाल प्रभा, डॉ. नागेश पांडेय, 'संजय', 2013
18- चंपक, विश्वनाथ, दिल्ली प्रेस वितरण प्रा. लिमिटेड अंक–1165, मई (द्वितीय) 2019

शब्दकोश

1. डॉ. हरदेव बाहरी, शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
2. डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, मानक हिन्दी शब्द कोश, अशोक प्रकाशन, दिल्ली–2003
3. हरिवंश तरूण, हिन्दी शब्दकोश, प्रिया साहित्य सदन, दिल्ली–2013
4. अशोक हिन्दी मानक शब्द कोश, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, 2008
5. आदिश कुमार जैन, नालन्दा विशाल शब्द सागर, आदिश बुक डिपो, नई दिल्ली–1999
6. डॉ. भोलानाथ तिवारी, वृहत हिन्दी लोकोक्ति कोश, शब्दकार, आनंद नगर (वेस्ट) दिल्ली–2001
7. विश्वनाथ दिनकर, भारतीय कहावत संग्रह, नरवणे त्रिवेणी संगम, भाषा विभाग, पुणे–1979
8. वेदप्रकाश सोनी, उर्दू हिन्दी शब्द कोश, कला साहित्य संस्थान, दिल्ली
9. डॉ. द्वारका प्रसाद, श्रीमती संतोष प्रसाद, अंग्रेजी
10. हिन्दी व्यावहारिक कोश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
11. वृहत् हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस, पृ. 1750

English Dictionary

1. Dr. R.K. Kapoor, Kamal's Oxford Dictionary
2. www.hindi2dictionary.com
3. www.shabdkosh.raftaar.in
4. www.oxforddictionaries.com
5. www.rekhta.org.urdudictionary
6. www.dictionary.cambridge.org/45

Websites

a. www.gadhykosh.org.//gk
b. www.vikipia.org .27,2017
c. www.inflibnet.in/bitstream/10603/177013/6/06
d. www.shodhganga.inflibnet.in/bitstream/106031
e. www.bharatdiscovery.org/india 5.8.2017
f. www.sudhajaisal.jagranjunction.com
g. www.pustak.org/books/bookdetails/4911
h. www.teacherdarpan.blogspot.com
i. vikasaurmanovigyan.blogspot.com
j. deendayalsharma.blogspot.com
k. www.hforhindi.com

परिशिष्ट
(साक्षात्कार)

परिशिष्ट

(साक्षात्कार)

साहित्य समाज का प्रतिरूप है। रचनाकार समाज एवं अपने परिवेश से ग्रहण की गई स्वानुभुतियों, संवेदनाओं को अपने सृजन में उकेरता है। विविध आयामी प्रतिभा से सम्पन्न दीनदयाल शर्मा देश के जाने–माने बाल साहित्यकार हैं। अपने शोध प्रबन्ध 'बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन' के अन्तर्गत मैंने इनके समग्र बाल साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके बाल साहित्य के मर्म तक पहुँचने का विनम्र प्रयास किया है। ऐसे लोकप्रिय रचनाकार शर्मा के व्यक्तित्व के अनछुए पहलू, सामाजिक सरोकार, प्रेरणा स्रोत, लेखन का मर्म, उद्देश्य, बाल साहित्य की प्रासंगिकता, चयन के आधार पर कृतित्व की बारीकियाँ आदि को जानने–समझने की उत्कट पिपासा अन्तर्मन में जाग्रत हो रही थी। इस प्रसंग में इनके अन्तस की परतें खोलने के लिए एक यात्रा के दौरान बातचीत करते हुए मैंने रचनाकार शर्मा के समक्ष कई प्रश्न रखे, जिनके जवाब इन्होंने बहुत ही सादगी एवं सहजता से देकर मेरी जिज्ञासाओं की पूर्ति की। प्रस्तुत है मेरे प्रश्न और दीनदयान शर्मा के उत्तर ....

कृष्णा कुमारी : आप अपने जन्म स्थान व पारिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में कृपया विस्तार से बतायें?

दीनदयाल शर्मा : मेरा जन्म राजस्थान के जिला हनुमानगढ़ की नोहर तहसील के गाँव जसना में चैत्र सुदी तीज (गणगौर) विक्रम संवत 2013 की प्रातः हुआ। जबकि सरकारी कागजों में मेरी जन्मतिथि 15 जुलाई 1956 दर्ज है। मेरे गाँव में अनेक जाति धर्म के लोग निवास करते हैं। मेरी माँ महादेवी धार्मिक रुचि की महिलाथी। मेरे पिताजी श्री प्रयागचन्द जोशी का विवाह छोटी उम्र में ही हो गया था। वे सातवीं कक्षा तक पढ़े थे। पढ़ाई के साथ–साथ मंचीय नाटकों में उनकी रुचि थी। दुकानदारी के काम के साथ–साथ पिताजी ने भूटानी, मोटिया, मोडी आदि अनेक भाषायें सीख ली थीं। वे जबरदस्त घुड़सवार भी थे। मेरे दादाजी का नाम श्री वीरभान जोशी एवं दादीजी का नाम आसी था। मेरे परिवार में मैं, मेरी पत्नी और दो बेटियाँ तथा एक पुत्र है, सबसे बड़ी बेटी ऋतुप्रिया, बेटा दुष्यन्त जोशी और सबसे छोटी बेटी मानसी है। ऋतुप्रिया और दुष्यन्त का विवाह हो चुका है। दामाद हरीश कुमार शर्मा है। मेरी पुत्र वधु का नाम हर्षिता है। मानसी बिटिया बी.ए. फाइनल कर रही हैं।

कृष्णा कुमारी : आप की शिक्षा कहाँ हुई?

दीनदयाल शर्मा : मेरी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव जसाना के सरकारी स्कूल में हुई। सन् 1973–74 में राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीगंगानगर से विज्ञान और कृषि में दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की। ब.ज. सिरामपुरिया कॉलेज से बी.कॉम. की परीक्षा पास की। श्री जैन (पी.जी.) कॉलेज से एम.कॉम. उत्तीण की। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से सी.लिब. साइंस में किया। इसी कॉलेज से पत्रकारिता में स्नाकोत्तर डिप्लोमा किया। मैंने स्काउट मास्टर का बेसिक कोर्स भी किया है।

कृष्णा कुमारी : अपने कार्यक्षेत्रराजकीय सेवा तथा उससे जुड़े अनुभव के विषय में कृपया बतायें?

दीनदयाल शर्मा : मेरे व्यावसायिक जीवन की शुरूआत संवाददाता के पद से हुई। मैं 1972–74 तक गंगानगर पत्रिका का रावतसर क्षेत्र से संवाददाता के रूप में कार्यरत रहा। इसके बाद दैनिक तेज, दैनिक प्रताप केसरी, दैनिक तेज केसरी के लिए स्तम्भ लिखे। 18 फरवरी 1983 को मेरी प्रथम नियुक्ति पुस्तकालय अध्यक्ष के पद पर मक्कासर गाँव के सैकेण्ड्री स्कूल में हुई। 25 जुलाई, 1986 में रा.मा.वि. हनुमानगढ़ जंक्षन में पुस्तकालय अध्यक्ष के पद पर तबादला हुआ। जुलाई माह सन् 1994 में रा.मा.वि. जंडावाली, हनुमानगढ़ में मेरा स्थानान्तरण हुआ। यहीं से 31 जुलाई 2016 को सेवा निवृत्ति हुई। मेरी सारी नौकरी का समय बहुत अच्छा बीता। मैंने पुस्तकालय अध्यक्ष के साथ अध्यापन कार्य भी किया। विद्यालयों में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को संचालित भी किया। बच्चों के लिए मैंने नाटक व गीत लिखकर उन्हें मंचित भी करवाया इस प्रकार विद्यालय में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आज भी मे बच्चों के बीच अपना अधिकांश समय व्यतीत करता हूँ। साढ़े तैंतीस वर्ष का मेरा कार्यकाल अच्छा रहा। इस प्रकार मेरी सेवा सम्बन्धी यात्रा अति उत्तम रही।

कृष्णा कुमारी : आपकी प्रथम रचना कौन सी थी, किस पत्रिका में, कब प्रकाशित हुई? आप ने कौन–कौन सी विधाओं में सृजन किया, आपकी प्रिय रचना कौन सी रही, अपनी साहित्यिक यात्रा पर कृपया प्रकाश डालें?

दीनदयाल शर्मा : प्रथम रचना तो याद नहीं आ रही। सन् 1987 में प्रकाशित प्रथम कृति 'चिंटू–पिंटू की सूझ' है। जैसे पिता को अपने सभी बच्चे प्यारे लगते हैं, ऐसे ही मुझे भी मेरी सभी रचनायें अच्छी लगती हैं, फिर भी मेरी कविता 'नानी तू है कैसी नानी' मुझे अत्यन्त प्रिय है। मैंने बाल कविता, शिशु गीत, निरर्थक गीत, बाल कहानी, बाल संस्मरण, बाल नाटक, बाल एकांकी, बाल पहेलियाँ, बाल हास्य व्यंग्य, हास्य कथा, नवसाक्षर साहित्य, राजस्थानी बाल साहित्य का इतिहास, रेडियो नाटक, रेडियो रूपक, रेडियो झलकियाँ आदि विधाओं में सृजन किया है और कर रहा हूँ। सन् 1975 से हिन्दी बाल साहित्य का रचनाकार्य का शुभारम्भ हुआ है। जहाँ तक मेरे लेखन के श्रीगणेश का प्रश्न है, बचपन से ही मेरे भीतर सृजन का बीजारोपण हो गया था।

स्कूल में मेरे गुरूजी कहानी सुनाने को कहते थे। मैं अपने मन से कहानियाँ बना कर सुनाता था, जिन्हें बाद में लिख लेता। इस प्रकार मेरी रचना प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। समय के साथ लेखन को गति मिलती गई। बाद में कई पत्र–पत्रिकाओं में जैसे इतवारी पत्रिका, दैनिक ट्रिब्यून, पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रदूत, नंदन, बाल भारती, बालहंस, बाल प्रहरी, दैनिक तेज, दैनिक प्रताप केसरी आदि में मेरी रचनायें छपने लगी। इस तरह बाल साहित्य में मेरी रुचि गहन होती गई। बीकानेर आकाशवाणी से 1979 में बाल नाटक एवं अन्य रचनाओं का प्रसारण प्रारम्भ हुआ। 1981 में मेरे बाल नाटक आकाशवाणी सूरतगढ़ से प्रसारित होने लगे। ये सिलसिला अनवरत चलता रहा। जयपुर आकाशवाणी से भी मेरे अनेक रेडियो नाटक प्रसारित हुए।

कृष्णा कुमारी : आपकी अभी तक कितनी बाल कृतियों का प्रकाशन हुआ है और किस–किस भाषा में? ये भी बताइये की अभी आप की कितनी रचनायें पत्र–पत्रिकाओं में आ चुकी हैं।

दीनदयाल शर्मा : मेरी हिन्दी और राजस्थानी भाषा में चालीस के ऊपर किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। 1987 में मेरी प्रथम पुस्तक हिन्दी कथा संग्रह 'चिन्टू पिन्टू की सूझ' महाप्रयाग प्रकाशन बीकानेर से छपा, जिसे राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर से 'शम्भूदयाल सक्सेना पुरस्कार' प्राप्त हुआ। अभी तक लगभग मेरी हजार से अधिक बाल रचनायें छप चुकी हैं।

कृष्णा कुमारी : आपने प्रौढ़ साहित्य के स्थान पर बाल साहित्य का चयन किया, इसका कोई विशेष कारण रहा या...। आपके प्रेरणा स्रोत कौन रहे? आपकी रचनाओं को अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं, पाठ्य पुस्तकों में आपकी रचनायें हैं, इस संदर्भ में आप कुछ कहना चाहेंगे?

दीनदयाल शर्मा : मेरी नजर में बाल साहित्य दूसरे दर्जे का नहीं अपितु सब से ऊपर है। बच्चों के लिए लिखना उत्कृष्ट कार्य है। सच तो यह है कि बालकों के लिए कुछ भी लिखना सब से कठिन है। इसके लिए बाल मनोविज्ञान को अनुभूत करना होता है, तब ही कोई रचनाकार सार्थक बाल साहित्य रच सकता है। मुझे तो बच्चों के लिए लिखने में आसानी होती है।

कृष्णा कुमारी : आपने कई पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य किया है जो अद्यतन जारी है। आप मानद सम्पादक भी हैं। इस विषय में अपने अनुभव साझा कीजिये।

दीनदयाल शर्मा : मैं टाबर टोली जो कि (पाक्षिक) बच्चों का प्रकाशित होने वाला प्रथम अखबार है, उसका साहित्य सम्पादन 2003 से कर रहा हूँ। यह देश का प्रथम बालकों का समाचार पत्र है। यह पत्र पूरी तरह से बच्चों व बाल साहित्य को समर्पित है। इसमें बाल गीत, बाल कहानियाँ, बाल पहेलियाँ, बाल साहित्यकारों के साक्षात्कार, उनके व्यक्तित्व–कृतित्व के आलेख, सामान्य बालोपयोगी जानकारियाँ प्रकाशित की जाती हैं। यह अखबार इण्टरनेट पर भी उपलब्ध है। 'कानिया मानिया कुर्र' (बच्चों का राजस्थानी अखबार, 2005), पारसमणि (बच्चों की राजस्थानी तिमाही पत्रिका) 2013 के सम्पादन कार्य के साथ कई स्मारिकाओं, बाल कथा संग्रह, बाल साहित्य समीक्षा आदि को भी सम्पादित कर चुका हूँ। जहाँ तक मेरे सम्पादन का अनुभव है, नये लेखकों को सही मार्गदर्शन और प्रेरणा की जरूरत होती है। गर्भ में कोई सीख कर नहीं आता। बड़े रचनाकारों, सम्पादकों को चाहिए कि उन्हें सही मार्गदर्शन प्रदान करे। ताकि नए लेखक सच्चाई के नजदीक रहकर लिख सकें, भवानीप्रसाद मिश्र ने कहा भी है कि 'जैसा दिखे, वैसा लिखें'। बालकों के लिए बच्चों की ही भाषा में लिखें, विद्वता नहीं झाड़ें। सरल होना बहुत कठिन होता हैं सरल भाषा में लिखा हुआ साहित्य दीर्घ समय तक रहता है, जैसे कबीर की वाणी।

सहज व सरल लेखन सीधे मर्म को स्पर्श करता है।

कृष्णा कुमारी : वर्तमान चुनौती भरे समय में बाल साहित्य की प्रासंगिकता क्या है?

दीनदयाल शर्मा : इस विषय में कहना चाहूँगा कि लेखकों को विषय बालकों के बीच से ही उठाने चाहिऐं। परिवेश परिवर्तित हो रहा है, राजा–रानी की कहानियों को नए तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए। आज के समय में बाल साहित्य की ही सर्वाधिक प्रासंगिकता है। बालकों के भावी जीवन रूपी भवन को खूबसूरत एवं सुदृढ़ बनाये रखने के लिए उसकी नींव भी मजबूत होनी चाहिए। ये काम केवल और केवल बाल साहित्य के माध्यम से ही सम्भव है। इसके लिए आवश्यक है बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ा जाये। बड़ों की जिम्मेदारी है कि विज्ञान और तकनीकी के इस युग में बालकों को बाल साहित्य की अच्छी–अच्छी किताबें लाकर दे, उन्हें पढ़ने को प्रेरित करें।

कृष्णा कुमारी : आपकी दृष्टि में प्राचीन और आधुनिक बाल साहित्य में क्या अन्तर आया है?

दीनदयाल शर्मा : प्राचीन समय में बच्चों के मनोरंजन व शिक्षा के लिए लिखित सामग्री नहीं होती थी। लेकिन मौखिक रूप से पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा सरित्सागर आदि में प्रेरणास्पद साहित्य था जो बालकों के लिए शिक्षाप्रद था। परन्तु उनके लिए अलग से साहित्य नहीं रचा गया था। अतः बड़ों को कहानियाँ, गीत आदि बनाकर बालकों को सुनाना एवं समझाना पड़ता था। शिक्षा के प्रसार के बाद भी बड़ों के साहित्य में से बालोपयोगी रचनाऐं बालकों को पढ़नी होती थी। उस समय विधायें भी सीमित थीं। आज के बच्चे बहुत स्मार्ट, बुद्धिमान, होनहार हैं। अब तो तकनीक के क्षेत्र में अत्यन्त समृद्ध हो रहे हैं। अब तो हाल ये है कि बड़ों को कई अच्छी बातें बच्चों से सीखनी चाहिए। जैसे सच बोलना। आज तकनीक के विकास से घर बैठे ही बालक बाल साहित्य से जुड़ सकते हैं। आज कई नई–नई विधाओं में बाल साहित्य रचा जा रहा है, जिसे इण्टरनेट पर भी देखा जा सकता है। आयु के अनुसार शिशु साहित्य, बाल साहित्य, किशोर साहित्य भी उपलब्ध है। एक से बढ़कर एक रंगीन, सचित्र बाल पत्रिकायें, पुस्तकें बाजार में मिलती हैं। बच्चों के लिए सारे साधन हाजिर

हैं। आज उत्कृष्ट बाल साहित्य लिखा जा रहा है। प्रति वर्ष बालकों के लिए हजारों किताबें छप रही है।

कृष्णा कुमारी : बस्ते के बोझ तले दबे बालक के विषय में आप क्या कहना चाहेंगे, आज की शिक्षा प्रणाली में क्या कमियाँ हैं?

दीनदयाल शर्मा : बस्ते का बोझ हल्का होना ही चाहिए। अधिक किताबें होने से बालक के मानसिक विकास पर विपरीत असर पड़ता है। सरकारें, बुद्धिजीवी इस बारे में चिंतन भी कर रहे हैं। विदेशों में भी बस्ते को खत्म करने के संदर्भ में सोचा जा रहा है। जहाँ तक मेरा सोचना है नर्सरी, एल.के.जी., एच.के. जी. में तो बालकों को खेल ही खिलाने चाहिए। मैं तो यह कहूँगा कि इस समिति में बालकों की भी भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। बालकों के पाठ्य क्रम में किताबें कम हों, बहुत रंग–बिरंगी हों, सचित्र हों। छोटे बालकों को खेल–खेल में इस प्रकार पढ़ाया जाये कि उन्हें पता ही नहीं चल सके। वैसे अनेक विद्यालयों में ये प्रयोग किये जा रहे हैं। जहाँ छोटे बच्चों को खेलों के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है।

कृष्णा कुमारी : वर्तमान संदर्भ में बाल साहित्य का भविष्य क्या है?

दीनदयाल शर्मा : बहुत ही बढ़िया है, बहुत उज्ज्वल है। अभी बीकानेर में प्रथम चिल्ड्रन नेशनल फेस्टिवल का आयोजन हो चुका है। विद्वानों द्वारा बच्चों को लेखन की बारीकियाँ बताई जा रही हैं। बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ा जा रहा है।

कृष्णा कुमारी : बाल साहित्य बालक के व्यक्तित्व उन्नयन में कहाँ तक उपयोगी है?

दीनदयाल शर्मा : बालक, बालसाहित्य की किताबों से तो बहुत कुछ सीखते हैं। इनसे बालकों का विकास होता है, मार्ग दर्शन मिलता है। बालक अनुगामी होता है, अनुशासित होता है। जैसा देखता है, सुनता है, पढ़ता है वैसा ही करता है। इसलिए बच्चों के संतुलित विकास में बाल साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका से नकारा नहीं जा सकता। शिक्षकों, अभिभावकों, बड़े लोगों को सोचना चाहिए कि वे बालकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें, ये नहीं हो कि 'गुड़ खाने वाले गुलगुलों से परहेज करें'। यही बाल साहित्यकारों को सोचना चाहिए। बालकों के लिए वर्कशॉप लगाई जाये, उन्हें कुछ भी रचनात्मक कार्य करने या लिखने के प्रेरित किया जाये,

सरकारों को चाहिए कि बाल साहित्यकारों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करें, उनकी पुरस्कार–राशि बढ़ाई जाये। विद्यालयों में नए–नए विषयों पर मौलिक निबन्ध, कहानी, नाटक आदि लिखवायें जायें। जैसे 'मेरा विद्यालय' विषय पर निबन्ध रटा–रटाया नहीं अपितु बालकों को व्यावहारिक रूप से सिखाया और पढ़ाया जाने से पहले अपने विद्यालय का निरीक्षण करवाया जाये, फिर जो वे देख रहे हैं, वैसा ही लिखें। अर्थात् रटन विद्या के बजाऐ बालकों को व्यावहारिकता से सिखाया जाये। वे जो भी करे मन से करें। कभी दस शब्द देकर कहानी लिखवाई जा सकती है। अच्छी–अच्छी बातें बताई जाये। मैंने स्वयं ऐसा करवाया है, और बच्चों ने ऐसा किया भी है। यह मेरा अनुभव है। पहले उनको कोई घटना बताता था, फिर उस पर कहानी लिखवाता था। जिसके अच्छे परिणाम आये।

कृष्णा कुमारी : आज का बाल साहित्य विविधताओं से भरा हुआ है। आप को बाल साहित्य की कौन सी विघा ने सर्वाधिक प्रभावित किया?

दीनदयाल शर्मा : पहले कहानी से प्रभावित रहा, फिर बाल कविता से। अब दोनों में मन रमता है। क्योंकि मैंने तो बाल साहित्य की विविध विधाओं में खूब लिखा है।

कृष्णा कुमारी : विज्ञान और तकनीकी के युग में बाल साहित्य की आपकी दृष्टि में कितनी उपयोगिता है?

दीनदयाल शर्मा : बहुत ज्यादा उपयोगी है। मैं तो ये कहूँगा कि विज्ञान और नई तकनीकी बातें भी बच्चो के माध्यम से आसानी से समझाई जा सकती हैं।

कृष्णा कुमारी : आज के तकनीकी युग में आप के बाल साहित्य में प्राकृतिक परिवेश जीवंत हो उठा है। जंगल की पृष्ठभूमि, जंगली एवं पालतू जानवर, पशु–पक्षियों को विषय बनाकर आपने खूब सृजन किया है? ऐसा क्यों?

दीनदयाल शर्मा : बालकों का प्रकृति से सहज जुड़ाव होता है। उन्हें बचपन में पशु–पक्षी, जीव–जंतु, आकाश, चाँद–सितारे, पेड़–पौधे, नदी–तालाब, जंगल, पर्वत आदि बहुत प्यारे लगते हैं। बच्चे कुदरत की भांति बहुत मासूम होते हैं, प्राकृतिक परिवेश और उसमें रचे–बसे जीव उन्हें सहज आकर्षित करते

हैं। यह बालकों के लिए अद्‌भुत और रोचक संसार भी होता है।

कृष्णा कुमारी : आप को कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं? कृपया इस विषय में बतायें।

दीनदयाल शर्मा : मुझे अभी तक साहित्य अकादमियों, जिला प्रशासन, अनेक साहित्य संस्थाओं द्वारा अनेकानेक सम्मान और कई पुरस्कार मिले हैं, जिनसे और श्रेष्ठ लिखने की प्रेरणा मिलती है। कुछ प्रमुख पुरस्कार बता देता हूँ – राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर से हिन्दी बाल कथा संग्रह 'चिंटू–पिंटू की सूझ' पर डॉ. शम्भूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार (1988–89), नगर परिषद् हनुमानगढ़ से सार्वजनिक सम्मान (1998), राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अकादमी बीकानेर से राजस्थानी बाल नाटक 'शंखेसर रा सींग' पर पं. जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य पुरस्कार (1998–99), केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से राजस्थानी बाल निबन्ध संग्रह 'बालपणै री बातां' पर राजस्थानी बाल साहित्य के राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत (2012), अभी 12 दिसम्बर 2018 में राष्ट्रीय साहित्य पुस्तक मेला समिति, कटनी, (म.प्र.) द्वारा 'डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति बाल साहित्य सम्मान' तथा अन्य कई। पुरस्कार व सम्मान से मेरी सृजनधर्मिता का सम्मान किया गया है।

कृष्णा कुमारी : आपकी रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है, कोर्स में भी आपकी कविता, कहानियाँ पढ़ाई जा रही हैं। इस बारे में जानकारी दीजिये।

दीनदयाल शर्मा : हाँ, अंग्रेजी में 'सपने' नाटक 'द ड्रीम्स' के नाम से एक, पंजाबी में 'सुपणे' नाम से अनुदित हुआ है और मराठी में मेरी बाईस किताबें अनुदित हो चुकी हैं। कई राज्यों के पाठ्‌यक्रम में मेरी कई रचनायें पढ़ाई जा रही हैं, जिनमे से कुछ के बारे में तो पता ही नहीं है। कुछ का पता मित्रों से चला। इन किताबों में मेरी कहानी, कविता, गीत और बाल पहेलियाँ पढ़ाई जा रही हैं। महाराष्ट्र के पाठ्‌यक्रम में 'अक्षर दीपिका हिन्दी पुस्तकमाला–3' मेरी बाल रचना 'जोकर' पढ़ाई जा रही है। इसी प्रकार 2015 से कक्षा 5 की पुस्तक 'बातों की फुलवारी' सहायक पुस्तकमाला में केन्द्रीय साहित्य अकादमी से पुरस्कृत कृति 'बालपणै री बातां' के संस्मरण का हिन्दी अनुवाद 'कब मिली आजादी' पाठ पढ़ाया जा रहा है। 'नंदिनी हिन्दी पाठ्‌यपुस्तक–4' में मेरी बाल पहेलियाँ हैं, जिनके द्वारा बालकों को

सम्बन्धित चित्रों में रंग भरना और उनको पहेलियों से जोड़ना अर्थात् हिन्दी भाषा कौशल सिखाया जा रहा है।

कृष्णा कुमारी : कोई विशिष्ट प्रसंग या उपलब्धि, जो आप बताना चाहते हैं।

दीनदयाल शर्मा : मुझे बीकानेर सम्भाग के प्रथम ब्लोगर होने का गौरव प्राप्त हुआ है। 2018 में प्रकाशित 240 पृष्ठीय 'कुछ अनकही बातें...' ग्रन्थ मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसके अंतर्गत देश भर के 101 विद्वानों, रचनाकारों, बाल साहित्यकारों, सामान्य नागरिकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं मित्रों द्वारा मेरे व्यक्तित्व और कृतित्व पर रचित लेख हैं, जिसे दुष्यंत जोशी और डॉ. मेघना शर्मा ने सम्पादित किया हैं इसमें मेरे बारे में सारी जानकारियाँ भी शामिल हैं, यथा – संक्षिप्त जीवन परिचय, मेरे बचपन से लेकर अभी तक के विशेष अवसरों के रंगीन छायाचित्र, मेरी सभी किताबों की सूची, सम्मान एवं पुरस्कारों का विवरण, जीवन की प्रमुख घटनायें, विशेष उपलब्धियाँ। यह ग्रन्थ मेरे लिए अमूल्य दस्तावेज है।

कृष्णा कुमारी : अंत में आपकी भावी योजनायें जानना चाहती हूँ, इन दिनों आप क्या लिख रहे हैं, कोई नया प्रकाशन हुआ है? आपकी दिनचर्या क्या रहती है?

दीनदयाल शर्मा : हॉ. अभी मेरी तीन किताबों का प्रकाशन हुआ है–'अपनी दुनिया सबसे न्यारी' शिशुगीत, 'हम बगिया के फूल' बाल गीत, 'डांखला वन्स अगेन', आई हैं। एक और किताब ' डांखला रतन' शीर्षक से आने वाली है। मेरी दैनन्दिनी सामान्य है। प्रतिदिन दैनिक कार्यों के साथ अध्ययन, चिंतन–मनन, बाल सृजन करता हूँ। मेरा प्रत्येक रविवार 'टॉफी डे' होता है। इस दिन में कई सारें बच्चो से मिलता हूँ, उन्हें टॉफियाँ बाँटता हूँ, उनके साथ मस्ती करता हूँ, उन्हें दुलारता हूँ, अच्छी–अच्छी बातें सिखाता हूँ, सेल्फी लेता हूँ। घर–परिवार के साथ–साथ पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करता हूँ। मैं कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ। इनमें से कुछ सामाजिक संस्थाओं की स्थापना मैंने की हैं, उनकी भी जिम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। जहाँ तक भविष्य का सवाल है, मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि हमेशा–हमेशा बच्चों के लिए लिखता रहूँ। बच्चों में रहकर उन्हें अच्छी–अच्छी बातें बता सकूँ, सिखा सकूँ ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल बने।

प्रस्तुत साक्षात्कार से बहुआयामी लेखन के धनी दीनदयाल शर्मा के व्यक्तित्व एवं सृजन सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुई। मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सादगी, सहजता एवं मनोयोग से देकर मुझे कृतार्थ किया। इस प्रकार लम्बी बातचीत के बाद धन्यवाद ज्ञापन से इसकी इति हुई। अन्त में मैंने बहुत आत्मीयता एवं स्नेह के साथ पुनः मिलने का आग्रह किया।

♦♦♦♦

प्रकाशित शोध–पत्र

क्र. सं.	शोध–पत्र का शीर्षक	प्रकाशन वर्ष	शोध–पत्रिका /पुस्तक का नाम	ISSN NO.	संस्करण	राष्ट्रीय/ अन्तर्राष्ट्रीय
01	बाल पहेलियाँ : अनवरत	2018	शोध–मीमांसा	2348–4624	हिन्दी विशेषांक जनवरी से मार्च 2018	अन्तर्राष्ट्रीय
02	बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एवं विशिष्टता	2019	चिन्तन	2229.7227	त्रैमासिक शोध–पत्रिका जनवरी सेमार्च 2019	अन्तर्राष्ट्रीय

Approved by UGC
Journal No. 48923
Letter No. : NSL/ISSN/INF/2014/461

ISSN 2348-4624
IIJ Impact Factor No. : 2.695

Śodha Mīmāṁsā

An International Refereed Research Journal

Year-V | Issues-II | January-March, 2018

Editor in Chief

Dr. Rakesh Kumar Maurya

Associate Editor

Dr. Anish Kumar Verma
Dr. Jayant Kumar

Published by :
Kusum Jankalyan Samiti
Deoria, U.P. (INDIA)

उत्तर–प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम पलायन की समस्या एवं उसका प्रभाव 67–68
डॉ0 जितेन्द्र बहादुर पाल
यज्ञीय कर्म की सार्वकालिक उपादेयता 69–70
डॉ0 प्रीति राठौर
समय एवं समाज में मानवीय स्पन्दन 71–72
ऋतुराज रमण
प्रयोगधर्मिता : समकालीन कला के सन्दर्भ में 73–75
हिना यादव
ग्यारहवीं–बारहवीं शताब्दी में सामुदायिक भू–स्वामित्व 76–77
सन्तोष कुमार द्विवेदी
मीमांसादर्शन में शब्दस्वरूप 78–81
कौशलेन्द्र त्रिपाठी
बाल पहेलियाँ : अनवरत 82–84
डॉ0 अनीता वर्मा व कृष्णा कुमारी
मन्नू भण्डारी के आत्मकथा–साहित्य में वेदना के विविध स्वर 85–87
डॉ0 (श्रीमती) कंचना सक्सेना व प्रीति दुबे
पंचायती राज व्यवस्था में महिला सशक्तिकरण 88–89
विनय कुमार
उषा प्रियंवदा के साहित्य में सामाजिक चेतना 90–91
डॉ0 संध्या सिंह
लक्ष्मी शर्मा और उनका कहानी संसार 92–93
अनुराधा गुप्ता
तीन तलाक का समाजशास्त्रीय अध्ययन 94–95
राहुल कुमार तिवारी
प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन के विविध सन्दर्भ 96–98
डॉ0 अमित कुमार सिंह कुशवाहा
हिंदी नवजागरण की चेतना के संवाहक : शिवपूजन सहाय 99–101
डॉ0 संदीप रणभिरकर
प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति की सौंधी महक (सुषम बेदी के साहित्य के विशेष संदर्भ में) 102–104
डॉ0 ममता खांडल
पाणिनीयव्याकरणस्य व्यावहारिकत्वम् 105–106
शैलेन्द्र तिवारी
पूर्वमध्यकाल के वर्ण एवं जाति की स्थिति 107–110
एवर्द राजन
काव्यशास्त्रीय गुणस्वरूपविवेचन परम्परा में आचार्यों के मतभेद का विवेचन 111–113
श्याममोहन मिश्र
प्रारम्भ से गुप्त काल तक की मुद्राओं पर अंकित गज और उसका धार्मिक महत्त्व 114–115
अरविन्द कुमार दूबे
कुल, क्रम, स्पन्द (अन्तः सम्बन्ध एवं साधना प्रक्रिया) 116–121
रमेश चन्द्र नैलवाल
सभी के लिए शिक्षाः एक अध्ययन 122–123
सुश्री रमा सोनी

Śodha Mīmāṁsā - ISSN 2348-4624
Letter No. NSL/ISSN/INF/2014/461
Published by : Kusum Jankalyan Samiti, Deoria, U.P. (INDIA)
UGC Journal No. 48923

IIJ Impact Factor : 2.695
Year : V, Issues-II, January-March, 2018
Page No. : 82-84

बाल पहेलियाँ : अनवरत

डॉ0 अनीता वर्मा* व कृष्णा कुमारी**

*शोध निर्देशिका, सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा
**शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

हरा था मन भरा था, हजार मोती जड़ा था
राजाजी के बाग में, दुशाला ओडे खड़ा था'

(मक्का का भुट्टा)

पहेलियां अन्यान्यं विधाओं की तरह ही अत्यंत प्राचीन विधा है, जो रोचकता, ज्ञान, जिज्ञासा और स्वस्थ मनोरंजन से भरपूर होने के कारण आदिकाल से लोक जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। पहेलियाँ लोक व्यवहार में मनोरंजन के संदर्भ में अहम् भूमिका निभाती हैं, चाहे शादी–ब्याह हो, तीज–त्योहारों हो या इसी प्रकार का अन्य समारोह। बिटिया को जंवाई राजा और ससुराल वाले लिवाने आते हैं, तब रात को महिलाएं पहले उन में मीठी–मीठी गालियां गाती हैं तत्पश्चात उन से पहेलियाँ पूछती हैं और सही उत्तर नहीं देने पर मीठी सी धमकी भी दी जाती है। यह दौर आधी–आधी रात तक चलता रहता है। यह हमारी परम्परा रही है। इसी बहाने जंवाई सा की बुद्धि का परिक्षण भी जाया करता है। विदेशों में भी यह कला पाई गई है द्य डॉ देवसरे ने लिखा है।

'पहेली बूझने की कला को यदि ज्ञानवृद्धि का एक माध्यम या सामान्य ज्ञान को बालोपयोगी परीक्षा कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी द्य वास्तव में यह ऐसा खेल कि इसमें बच्चों को आनंद भी आता है और ज्ञान वर्द्धन भी होता है'।[1]

पहेली साहित्य की ऐसी विधा है जो बालकों को चीजों की विशेषताओं के संदर्भ में जानकारी देती है एवं खेल–खेल में आनन्द और ज्ञान भी प्रदान करती हैं। पहेलियाँ जीवन में रस ही नहीं घोलती हैं अपितु चिंतन–मनन के अनंत द्वार भी खोलती हैं। ये हास्य–विनोद और जिज्ञासा का से भरपूर होती हैं, इसीलिए बालकों की सब से प्रिय विधा है। पहेलियाँ जहाँ जिज्ञासा जाग्रत करती हैं वही बुझा देने पर परम संतुष्टि की अनुभूति भी करवातीं हैं, एक बार ये सिलसिला प्रारम्भ होने के बाद निरंतर चलता रहता है क्योंकि पहेलियों का अपना अलग ही महत्त्व है। पहेलियाँ बच्चों और बड़ों को परम आनंद प्रदान करती हैं, लेकिन बालकों को तो उल्लास से भर देती हैं। बालकों की दुनिया कल्पना लोक में विचरती है, जहाँ रोमांच, रहस्य, रोचकता, मनोरंजन नृत्य करते हैं। शायद इसी लिए उन्हें सब से जियादा आनंद पहेलियाँ बुझाने में आता है।

पहेली होती ही ऐसी है जब तक न बुझे बालक उसे नहीं छोड़ पाते। चाहे जितनी भी माथापच्ची करनी पड़े और उत्तर मिलते ही, खुशी से नाच उठते हैं। किलकारियां भरने लगते हैं।

कहानी और कविता के बाद पहेलियाँ बच्चों की प्रिय विधा है, कुछ पहेलियाँ तो जैसे जीवन का हिस्सा ही बन गई हैं जैसे– 'उल्टा सीधा एक समान तीन अक्षर का मेरा नाम', इस पहेली के कई–कई उत्तर हैं। इसी प्रकार एक पहेली पर आधारित एक प्रचलित फिल्मी गीत। 'तीतर के दो आगे तीतर, तीतर के दो पीछे तीतर, आगे तीतर, पीछे तीतर, बोलो कितने तीतर'। (तीन) इसीलिए पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने पहेलियों को 'बुद्धि का खेल' बताया है।

'न जाने किस युग से चली आ रही ज्ञान की घुमावदार नदी को अभी तक लोग आगे ही बहाए लिए जा रहे हैं, उसे उन्होंने सूखने नहीं दिया है।'[2]

'पहेली' शब्द का 'शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश' सम्मत अर्थ है।

1. प्रश्नात्मक उक्ति जिसमें बात का लक्षण बतलाते हुए यह कहा जाता है कि बताओ वह कौन सी बात है।
2. कोई गूढ़ बात जिसका निराकरण सहजपूर्ण हो।[3]

अतः उपर्युक्त संदर्भ के अनुसार पहेली एक ऐसी उक्ति है जिस में प्रश्नात्मक भाव निहित होता है एवं बात के लक्षण बताते हुए इस प्रकार घुमा–फिरा कर प्रस्तुत किया जाता है कि लोग आसानी से उत्तर नहीं दे सकें। इस के लिए उन्हें मानसिक श्रम करना पड़ता है और कई बार तो बात को इतनी गूढ़ता के रखा जाता है कि सामने वाला निरुत्तर हो जाता है और वह प्रश्न कर्ता से उत्तर बताने के लिए खुशामद करता है क्योंकि उत्तर जानने की उस की जिज्ञासा बहुत बलवती हो उठती है। जिज्ञासा उत्पन्न करना पहेली की अति विशिष्टता मानी गई है। पहेलियों को लेकर कई मुहावरे भी लोक जीवन में प्रचलित हैं। 'पहेलियाँ मत बुझाओं', 'जीवन एक पहेली है' आदि। पहेलियाँ गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों प्रकार की होती हैं और यह लक्षणा शब्द शक्ति से ओतप्रोत होती है। पहेलियाँ आकार–प्रकार, रंग–रूप, स्वभाव, गुण–धर्म, गणित, समान धर्म वाले शब्दों के आधार पर कई प्रकार की हो सकती हैं। पहेली का विषय कुछ भी हो सकता है यथा– प्रकृति, घरेलू चीजें, खाने–पीने की चीजें, शिक्षा–ज्ञान, शारीर के अंग आदि आदि। पहेली गढ़ना बच्चों का खेल नहीं है इस के लिए बहुत श्रम करना होता है, क्योंकि इसे गढ़ने में उचित भाषा और सशक्त प्रस्तुतीकरण जरुरी है। हाँ, इनका उत्तर निश्चित होता है।

सुनिश्चित, पहेलियों का जन्म भी मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ साथ ही हुआ होगा। खेल ही खेल में इन का सृजन हुआ होगा। किसी एक ने दूसरे व्यक्ति के ज्ञान का परिक्षण करने के भाव से बात को घुमा . फिरा कर या गूढ़ बना कर पूछा होगा, उत्तर मिलने पर भी और नहीं मिलने पर भी, दोनों व्यक्ति अन्य लोगों से आनंद लेने के लिए पूछते गए होंगे और यह क्रम बनता गया होगा, जिस का आधुनिक स्वरुप आज हमारे समक्ष है। डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' के अनुसार–

'वर्तमान में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बाल पहेलियाँ प्राय देखने को मिल जाती हैं। कहना अनुचित न होगा कि पहेलियाँ किसी सफल बाल पत्रिका का महत्वपूर्ण घटक हैं। कहानी और

कविता के बाद बच्चों का रुझान पहेलियों की ओर ही अग्रसर होता होता है। यह भी संभव है कि वे सब कुछ छोड़कर सर्वप्रथम पहेलियों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करें और अपनी घ्यान स्थिति का परिक्षण करके आल्हादित हों।''[4]

वर्गीकरण की दृष्टि से राधेश्याम प्रगल्भ ने पहेलियों को पांच प्रकार से विभक्त किया है .

1. जिन का उत्तर पहेलियों में ही छिपा हो।
2. जिन का उत्तर सरलता से पकड में आ जाये।
3. गणितीय शिक्षा में सहायकं
4. शब्द के आदि, मध्य और अंत के लोप पर आधारित पहेलियाँ।
5. दो प्रशनों के एक उत्तर वाली पहेलियाँ।'[5]

अन्य विधाओं की भाति पहेलियों का जन्म भी संस्कृत भाषा से हुआ है द्य संस्कृत में इन्हें प्रहेलिका कहा जाता है। आदि ग्रन्थ ऋग्वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषदों तथा अन्य ग्रंथों में भी इन का उल्लेख मिलता है। विदेशों में भी यह कला पाई गई है। देवसरे जी ने इस संदर्भ में लिखा है।

''मिश्र में इस का बहुत प्रचलन था। अरब और फारस में भी काफी पुरानी पहेलियाँ मिलती हैं। फांस में अठारहवीं शताब्दी में एक ऐसा संग्रह मिला है जिसमें डेढ़ हजार पहेलियाँ संग्रहीत हैं।''

जहाँ तक हिंदी भाषा का प्रश्न है, लगभग सभी विद्वानों और विचारकों ने अमीर खुसरो को हिंदी में पहेलियों का जन्मदाता माना है। बाल साहित्य के आदि समीक्षक निरंकार देव सेवक ने तो अमीर खुसरो को हिंदी में बच्चों का पहला कवि माना है।

आज भी अमीर खुसरों की पहेलियाँ समाज में सर्वाधिक प्रचलित और लोक प्रिय हैं। सामान्यतया किसी भी व्यक्ति से खुसरो की पहेलियों को सुनी और पूछजा सकती हैं। अमीर खुसरो की पहेलियों का महत्व साहित्यिक दृष्टि से भी है, भाव, भाषा और प्रस्तुतिकरण उत्तम है। इन की सब से अधिक प्रचलित पहेलियों में से कुछ दृष्टव्य है –

'एक थाल मोती से भरा, सब के सर पर औंधा धरा चारों ओर वह थाली फिरे , मोती उससे एक न गिरे' (आकाश) एक अत्यंत लोक प्रिय 'कह मुकरनी' जो पहेली का ही रूप है –

वो आये तो शादी होय, उन बिन दूजा और न कोय

मीठे लागें उन के बोल, क्यों सखि सजन, ना सखि ढ़ोल'

डॉ0 भोला नाथ तिवारी ने अमीर खुसरो के पहेलियों के निम्न रूप निर्धारित किये हैं–

1. इन का उत्तर पहेली में हो।
2. जिन का उत्तर पहेली में न हो।

रोचकता, मनोरंजन, जिज्ञासा और आनंद से भरपूर ये पहेलियाँ बाल साहित्य की अनमोल थाती हैं। बाल पहेलियों की उपयोगिता के संदर्भ मे पद्मश्री लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने दीन दयाल शर्मा की कृति 'इक्कावन बाल पहेलियाँ' की भूमिका में लिखा है–

'पहेलियाँ केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करती वरन उन में जिज्ञासा भी जगाती हैं। पहेलियाँ बच्चों की स्मरण शक्ति बढाती है द्य ज्ञान बढाती है। अपने परिवेश को सीखने–समझने का अवसर प्रदान करती है। बौद्धिक क्षमता बढाती है तथा बच्चों को तर्कशील बनाती हैं द्य इसलिए ये विधा बालोपयोगी मानी जाती है।''

इस प्रकार अमीर खुसरो से प्रारंभ होकर पहेलियों की यात्रा अनेक रंग–रूपों में आज अनवरत जारी है। खुसरो के बाद भारतेंदु हरिश्चचंद्र ने पहेलियों की परम्परा को आगे बदाया। इन्होनें 'कह मुकरनियाँ' (पहेलियों का ही एक रूप) लिखीं जिन्हें बालकों ने खूब पसंद किया। ऐसी एक कह मुकरनी प्रस्तुत है–

'सतएं–अठएं मा घर आवे, तरह–तरह की बात सुनावै घर बैठे ही जोड़े तार, क्यों सखि सज्जन, नहिं अखबार'[8]

इसी श्रृखंला में घासीराम, खागीनियां, पंडित ने भी पहेलियों की विधा को खूब समृद्ध किया। प्रस्तुत है घासीराम की कौतुहल जाग्रत करने वाली अत्यंत लोकप्रिय एक पहेली–

'कारो है पर कौआ नाहिं, रुख चढ़े पर बंदर नाहिं मुहं को मोटो बिडवा नाहिं, कमर को पतलो चीता नाहिं '(चींटा)[9]

स्वाधीनता के पूर्व प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं ने जैसे – 'शिशु' (1915), 'बालसखा' (1917), 'वानर' (1931) 'बालक' (1926), किशोर' (1938), 'बाल बोध' (1947) आदि ने भी पहेलियों को स्थान देकर इस विधा को बहुत समृद्ध किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बाल पहेलियों के विकास ने और गति पकड़ी और अन्य विधाओं की पहेलियों में भाति–भाति के नए–नए विषयों का समावेश हुआ। ज्ञान–विज्ञानं, भूगो , सामाजिक संदर्भ, धर्म, गणितीय, वर्णनात्मक, पर्यावरण, तकनीक, इंटरनेट, कम्प्यूटर से सम्बंधित पहेलियाँ लिखीं जाने लगीं। मूर्धन्य बाल साहित्यकारों ने नए–नए विषयों पर पहेलियां लिख कर बाल साहित्य को परिपुष्ट किया। डॉ श्री प्रसाद, जय प्रकाश भारती, रामेश्वर दयाल दुबे, गोपीचंद श्रीनागर, घमंडीलाल अग्रवाल, कुलभूषण माखीजा, जगदीश तोमर, महेश सक्सेना, अजय शर्मा, राम वचन सिंह 'आनंद', डॉ अजय जनमेजय, शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, बाबूलाल शर्मा 'प्रेम', ममता, संकेत, मौ फहीन, डॉ0 गणेश दत्त सारस्वत, दीनदयाल शर्मा, चाँद मोहम्मद घोसी (वर्ग पहेलियाँ, शब्द ज्ञान पहेलियाँ) (आदि ने बाल पहेलियों के संदर्भ में उल्लेखनीय योगदान किया, जो अनवरत जारी है। वर्तमान में कथा पहेलियां और कविता पहेलियाँ भी लिखी जा रही हैं।

कुछ दैनिक समाचार–पत्रों में 'शब्द ज्ञान पहेली' शीर्षक से प्रतिदिन पहेली का प्रकाशन किया जा रहा है जिसे पाठकगण पूरे मनोयोग से हल करते देखे जा सकते हैं। डॉ घमंडीलाल अग्रवाल की कम्प्यूटर के माउस पर लिखी एक पहेली प्रस्तुत है–

'कम्प्यूटर भी मुझ से चलता, चाहे मुझे गणेश
मैं हूँ नन्हा किन्तु काम का, बोले पूरा देश' (माउस)[10]

पंजाब सौरभ में प्रकाशित अनिल कुमार की कुछ पहेलियाँ–

तीन अक्षर का मेरा नाम'
आता हूँ लिखने के काम।
आदि कटे हाथी बन जाऊँ,
अंत कटे कौआ कहलाऊँ द्य (कागज)[11]

बालहंस में प्रकाशित एक पहेली जो बालकों को 'अंगूर खट्टे हैं' मुहावरे से भी परिचित करवाती है–

गोल–गोल से छोटे फल हम,
जो भी खाए वो जाने।
खाने लगो, ढेर से खा जाओ,
स्वाद बस लोमड़ी जाने।'[12] (अंगूर)

पहेली के साथ वर्तमान काल में कह मुकरनियाँ भी लिखीं जा रही हैं, प्रस्तुत है डॉ शशि गोयल की एक कह मुकरनी–

नैन चलावे नाच दिखावे
नए रूप धर मोहे रिझावे
बैठे रूप निहारे बीवी
क्यों सखि साजन, ना सखि टी. वी.[13]

'बाल साहित्य की लुप्त होती इस विधा को श्री दीनदयाल शर्मा ने 'इक्कावन बाल पहेलियाँ' के माध्यम से पुन जीवित करने का सार्थक प्रयास किया है राष्ट्र नायकों, घरेलु चीजों, पशु–पक्षियों, जीव–जंतुओं पर अनेक सुन्दर पहेलियों का सृजन किया है। प्रस्तुत हैं एक पहेली–

माँ स्वरुप रानी थी जिनकी,
पिता थे मोतीलाल।
फूल गुलाब का जिन्हें प्रिय था,
प्यारे बाल गोपाल। (जवाहरलाल नेहरू)[14]

पहेलियां हमारी संस्कृति, लोक जीवन, साहित्य का अहम् हिस्सा रही हैं, जो आनंद, मनोरंजन देने के साथ साथ बुद्धि का परिक्षण करते हुए ज्ञान के वातायन खोलती हैं।

सन्दर्भ :

1. डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य मेरा चिन्तन, पृ0 187
2. डॉ हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य मेरा चिंतन, पृ0 89
3. डॉ हरदेव बाहरी, शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, पृ0 485
4. डॉ नागेश पांडेय 'सजल', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ0 49
5. डॉ नागेश पांडेय 'संजय', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ0 94
6. डॉ हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य मेरा चिंतन, पृ0 188
7. दीन दयाल शर्मा, इक्कावन बाल पहेलियाँ, कमलेश शर्मा की भूमिका से
8. डॉ0 नागेश पांडेय 'सजल', बाल साहित्यरू सृजन और समीक्षा, पृ0 51
9. डॉ नागेश पांडेय 'सजल', बाल साहित्यरू सृजन और समीक्षा, पृ0 51
10. डॉ नागेश पांडेय 'सजल', बाल साहित्यरू सृजन और समीक्षा, पृ0 54
11. अनिल कुमार, पंजाब सौरभ (मासिक पत्रिका), पृ0 71
12. सम्पादक, बालहंस, (पाक्षिक), पृ0 31
13. शशि गोयल, चक्रवाक, पृ0 58
14. दीनदयाल शर्मा, इक्कावन बाल पहेलियाँ, पृ0 8

♦♦♦

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यतेमहि स्वराज्ये

website : www.chintanresearchjournal.com ISSN : 2229-7227

Impact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 9 अंक : 33

विक्रमी सम्वत् : 2076

जनवरी-मार्च 2019

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

© आचार्य अकादमी, रोहतक

लेजर टाईप सैटिंग
संजू चावला व रिंकू चावला
'वैब साईट कम्प्यूटर्स' थर्ड गेट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
ई-मेल sanjuchawla01@gmail.com
मो॰ 9896434679, 8053540001

मुद्रण
लाट प्रिंटिंग प्रैस
प्रताप चौंक, रोहतक
मो॰ 09255128677

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक आचार्य शीलक राम द्वारा लाट प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक से मुद्रित करवाकर आचार्य अकादमी, ग्रा.+पत्रालय चुलियाणा रोहज, जिला-रोहतक, हरियाणा (भारत) से प्रकाशित। प्रकाशन तिथि : 5 मार्च, 2019
सम्पादक : आचार्य (डॉ॰) शीलक राम
चलभास : 9813013065, 8222913065
ISSN : 2229-7227

1. **'चिंतन'** त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल में छपे शोध-लेखों में प्रस्तुत दृष्टिकोण, सिद्धांत एवं विचारों से संपादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस हेतु शोधार्थी स्वयं जिम्मेवार होंगे।
2. **'चिंतन'** त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल से संबंधित सभी पद अवैतनिक हैं।
3. **'चिंतन'** त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल से संबंधित सभी विवाद केवल रोहतक न्यायालय के अधीन होंगे।
4. मंगवाये गये प्रारूप के अनुसार शोध-पत्र न भेजने पर शोध-पत्र के प्रकाशन में हुई त्रुटि के लिए शोधार्थी / लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
5. **'चिंतन'** त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल में प्रकाशित शोध-पत्र की किसी विश्वविद्यालय या संस्थान द्वारा स्वीकृति या अस्वीकृति के संबंध में प्रकाशक/संपादक की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

International Refereed
UGC List No.41243
Impact Factor : 4.012
'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 9, अंक 33 (पृ.सं. 862-865)
विक्रमी सम्वत्: 2076 (जनवरी-मार्च 2019)

बाल साहित्य की आवश्यकता, उपयोगिता एवं विशिष्टता

डॉ. अनीता वर्मा
शोध निर्देशिका
सह - आचार्य
राज.कला महाविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

कृष्णा कुमारी
शोधार्थी
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

शोध-आलेख सार

बाल साहित्य इस से थोडा भिन्न होता है । सम्पूर्ण वांडमय का आधार बाल साहित्य माना गया है । बाल साहित्य अर्थात बच्चों का साहित्य जो बालक के लिए रचा जाता है, बालक को आनंद चाहिए, मनोरंजन चाहिए, इस प्रकार बाल साहित्य का अर्थ हुआ 'गद्य -पद्य में लिखी गई ऐसी रचनाएँ जिन्हें पढ़कर बालक आनादित हो उठें, उल्लसित हो जाये, उन की कल्पनाओं को पंख लग जाएँ । इसी के साथ बालक के सम्यक उन्नयन, सर्वांगीण विकास में सहायक हो, उसे सुसभ्य, सुसंस्कृत, चरित्रवान, सुनागरिक बनाने में अहम् भूमिका निभाये, उस में विश्वबंधुत्व, मानवीय संवेदना का भाव जाग्रत करे तथा उस के भावी जीवन के लिए पाथेय सिद्ध हो ।

मुख्य-शब्द : बाल साहित्य, अन्त्यानुप्रास ।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है । आदमी को इन्सान बनाने की प्रक्रिया में साहित्य का महत्त्पूर्ण भूमिका है । इस के द्वारा मानव के विकारों का परिष्कार होता है और वह उच्चतर जीवन जीने की ओर अग्रसर होने लगता है । साहित्य मनुष्य को सुसंसकृत बनाते हुए सभ्यता से भी जोड़े रखता है ।

बाल साहित्य इस से थोडा भिन्न होता है । सम्पूर्ण वांडमय का आधार बाल साहित्य माना गया है । बाल साहित्य अर्थात बच्चों का साहित्य जो बालक के लिए रचा जाता है, बालक को आनंद चाहिए, मनोरंजन चाहिए, इस प्रकार बाल साहित्य का अर्थ हुआ 'गद्य -पद्य में लिखी गई ऐसी रचनाएँ जिन्हें पढ़कर बालक आनादित हो उठें , उल्लसित हो जाये, उन की कल्पनाओं को पंख लग जाएँ । इसी के साथ बालक के सम्यक उन्नयन, सर्वांगीण विकास में सहायक हो, उसे सुसभ्य, सुसंस्कृत, चरित्रवान, सुनागरिक बनाने में अहम् भूमिका निभाये, उस में विश्वबंधुत्व, मानवीय संवेदना का भाव जाग्रत करे तथा उस के भावी जीवन के लिए पाथेय सिद्ध हो ।

निरंकार देव सेवक

'बाल साहित्य बच्चों के मनोभावों,जिज्ञासाओं और कल्पनाओं के अनुरूप हों जो बच्चों का मनोरंजन कर सके और मनोरंजन भी वह जो स्वस्थ और स्वाभाविक हो, जो बच्चों को बड़ों जैसा बनाने के लिए नहीं, अपने अनुसार बनाने में सहायक होने के लिए रचा गया हो ।'[1]

बाल साहित्य की आवश्यकता

बाल साहित्य, साहित्य का ही महत्त्वपूर्ण अंश है और जो बालक के सम्यक उन्नयन की आधारशिला

तैयार करता है । उसे प्रकृति से जोड़ता है,बातों ही बातों में प्रेम, सहयोग, करुणा, सत्य, सद्भावना, संवेदना, साहस आदि मानवीय गुणों से बालक का साक्षात्कार करवाता है, मूलत, बाल साहित्य बच्चों को जीने की कला सिखाता है,चीजों को देखने –परखने की नई दृष्टि देता है ।

डॉ नागेश पांडेय ने बाल साहित्य की आवश्यकता को व्यक्त करते हुए लिखा है–'बच्चों को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने की दिशा में बाल साहित्य की अवर्णनीय भूमिका है । आज जब विश्व के समग्र राष्ट्रों में एक प्रतियोगीता का वातावरण है और विकास की आपाधापी में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, ऐसे में बालक को एक सफल नागरिक के रूप में तैयार करने हेतु बाल साहित्य की आवाश्यकता विशेष रूप से बढ़ गई है ।'[2]

इसी परिपेक्ष्य में प्रख्यात बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे का मानना है ---

'बाल साहित्य की तुलना माँ के दूध से की जा सकती है । जैसे बच्चा अपना पहला आहार माँ के दूध के रूप में लेता है वैसे ही उस का पहला बौद्धिक आहार माँ के मुहं से सुनी लोरी के रूप में बाल साहित्य होता है द्य जैसे बच्चे के स्वस्थ शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध आवश्यक होता है वैसे ही उस के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए बाल साहित्य ।[3] मूर्धन्य आलोचक डॉ नगेन्द्र ने माना है–

पहले समाज में बालक का अस्तित्व खिलौने के रूप में था । उनको प्यार– दुलार तो मिलाता था लेकिन उसे समाज का एक अभिन्न अंग नहीं समझा जाता था । लेकिन आज के बालक की आवश्यकताओं में एक आवश्यकता बाल साहित्य की भी है ।'[4]

अर्थात बाल साहित्य में माँ के दुलार को महती जितना आवश्ययकता है क्योंकि इस का पाठक एक बच्चा होता है और बच्चे को सर्व प्रथम माँ का प्यार, दुलार ही चाहिए ।

'श्री नाथ सहाय ने बाल साहित्य की आवश्यकता को बताते हुए लिखा है ...

'बालक देश की आधारशिला है । इस की समुचित शिक्षा, संवेगिक व बौद्धिक विकास पर ही देश का विकास संभव है । प्रारम्भ से ही इन्हें राष्ट्रीय, जनतान्त्रिक मूल्य आधारित शिक्षा देने की आवश्यकता पड़ती है, जिससे एक जागरुक नागरिक के रूप में इन का उत्तरोत्तर विकास हो । इस दिशा में बाल – साहित्य की महत्तपूर्ण भूमिका है, जिस के द्वारा बालकों में स्वस्थ संस्कार प्रस्तिस्थापित हो सकें। अनुशासन, मर्यादा,व्यवस्था की नींव बचपन में ही उचित बाल साहित्य द्वारा निर्मित की जा सकती है ।[5]

उपर्युक्त संदर्भो एवं विद्वानों के मतानुसार बाल साहित्य बच्चों के लिए अत्यावश्यक है । यह एक पथ प्रदर्शक की भाति काम करता है, बालकों के लिए अत्यंन्त उपयोगी है । डॉ देवसरे के अनुसार बाल साहित्य बच्चों के लिए माँ के दूध जितना उपयोगी है द्य डॉ नागेश पाण्डेय ने इसे बच्चों को सुनागरिक बनाने के लिए जरुरी माना है, वहीँ श्री नाथ सहाय ने बच्चों के समुचित विकास और नैतिक मूल्यों से जुड़ने के लिए बाल साहित्य की अहम् भूमिका को स्वीकार किया है । डॉ नगेन्द्र इसे बच्चो के लिए प्रमुख आवश्यकता मानते हैं ।

बालक किसी भी समाज के लिए आत्म स्वरुप होता है । इस नन्हें पौधे को जैसे खाद – पानी से सिंचित किया जायेगा, वो वैसा ही पल्लवित, पुष्पित और फलित होगा । वस्तुत बाल साहित्य बच्चों का मनोरंजन करने के साथ साथ उन्हें आनंद प्रदान करता है, उन का ज्ञानवर्द्धन करता है, उन की कल्पनाओं, जिज्ञासाओं का शमन करता है, स्मरण शक्ति में एवं तर्क क्षमता में वृद्धि करता है । बौद्धिकता का विकास करके प्रकृति और पर्यावरण प्रेम भी जाग्रत करता है। बाल रचनाओं के द्वारा बालक अपने परिवेश को, चीजों को, सामाजिक गतिविधियों को, रिश्तों को बारीकी से जानने लगता है । बाल साहित्य उनकी प्रज्ञा को तीव्र करता है । वहीँ नई वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़े रखता है

सब से महत्त्पूर्ण बात कि बालकों का साहित्य एकल परिवारों में दादा–दादी, नाना–नानी की कमी को पूरी करते हुए, बच्चों के एकाकीपन को दूर करता है द्य बाल बालकों को जीवन जीने की कला

सिखाता है ।

बाल साहित्य बच्चों के साथ-साथ प्रोढ़ों, नवसाक्षरों और इन से जुड़े अन्य व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक माना गया है, जैसे दादा - दादी, नाना -नानी, माता - पिता, शिक्षक आदि । तभी तो वे अपने बालकों को कवितायेँ, कहानियां सुना सकेंगे और उन से जुड़ कर उन का प्यार पा सकेंगे । डॉ नागेश पाण्डेय ने इस परिपेक्ष्य में लिखा भी है -

'बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए ही नहीं, प्रोढ़ों, नवसाक्षरों के लिए भी सामन रूप से अपनी महत्ता सिद्ध करता है । वास्तविकता तो ये है कि बच्चे से जुड़े हर व्यक्ति के लिए बाल साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है ।[6]

समग्रत सनातन काल से बाल साहित्य की आवश्यकता रही है और हमेशा रहेगी ।

बाल साहित्य की उपयोगिता

बाल साहित्य बालकों के लिए जितना आवश्यक है उतना ही उपयोगी भी । इस संदर्भ में डॉ राष्ट्र बंधु का मानना है -

'हमें चाहिये कि हम बाल साहित्य की उपयोगिया से समाज को परिचित कराएँद्य आंगनबाड़ी में बच्चों को पहेलियाँ, लोरियां और कहानियों का प्रवेश क्रमबद्धता से नहीं है । शिक्षा में जे . टी. सी .,बी . टी., सी.,बी. एड ., एम् . एड .और पुस्तकालयों के लिए बाल साहित्य का ज्ञान,शिक्षा को सामाजिकता से जोड़ सकता है। अत बाल साहित्य में जो मनोविज्ञान है उस से मनोचिकित्सा की सफलता सरलता से हो सकती है । स्वास्थ्य और चिकित्सा में भी बाल साहित्य का उपयोग चमत्कारी प्रभाव दिखा सकता है । 7

उपयोगिता निम्नांकित बिन्दुओं से स्पष्ट है -

- बाल साहित्य बच्चों को खुशियों से भर देता है
- इस से बालकों की कल्पना शक्ति का विस्तार होता है ।
- बाल साहित्य पढ़ने, देखने और सुनने से बच्चे कई प्रकार की कई कलाओं से सहज रूप से जुड़ जाते है। साथ ही बाल साहित्य लिखना भी सीख जाते है ।
- बाल साहित्य से बालकों की क्रियात्मक क्षमता और सृजनशीलता में वृद्धि होती है ।
- बाल साहित्य से बच्चों के अतिरिक्त समय का बहुत अच्छा सदुपयोग होता है।
- इस के पढ़ने से बलकों में स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता,अनुशासन, दृढता , साहस, मैत्री-भाव, सहयोग की भावना,प्रेम आदि भाव स्वत ही जाग्रत हो जाते हैं ।
- कहानियों, कविताओं, पहेलियों आदि के पठन - पाठन से बालको की स्मरण शक्ति बढती है।
- कहानी सुन कर मित्रों को या किसी और को सुनाने से उन की वाक कला, वाक चातुर्य में संवर्द्धन होता है ।
- नाटकों के पठन और मंचन से अभिनय कला का विकास भी होता है ।
- बाल- साहित्य को आत्मसात करने से बच्चे व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करते हैं ।
- बाल पहेलियाँ सुनने और हल करने से बच्चो का मानसिक विकास होता है, संतुष्टि मिलती हैं, चिंतन
- मनन से द्वार खुलते हैं ।

बाल साहित्य की विशिष्टता

बाल साहित्य की प्रथम विशिष्टता ये ही है कि वह बालकों के लिए होता है, क्योंकि बाल साहित्य सम्पूर्ण वांग्मय का अति महत्त्पूर्ण अंग है । बालक अपने आप में ही इस सृष्टि की विशिष्ट ईकाई है । बाल साहित्य बड़ों के साहित्य से अनेक प्रकार से भिन्न है, जो इस की विशेषताओं के फल स्वरुप ही है । इस संदर्भ में डॉ नागेश पाण्डेय "संजय" का कथन प्रस्तुत है -

'बाल साहित्य सामान्य साहित्य का अंग होता हुए भी उस से सर्वथा पृथक है द्यभाषा – शैली, शिल्प, उद्धेश्य, संवेदना, मनोवि ज्ञान और महत्त्व इत्यादि अनेकानेक दृष्टियों से दोनों में मूलभूत अंतर है । [8]

इसी परिपेक्ष्य में डॉ श्रीप्रसाद के अनुसार –

'बड़े और बच्चों की कविता में मूल अंतर संवेदना का है ।[9]

स्पष्ट है, बाल साहित्य की भाव – पक्ष और कला पक्ष के आधार पर अपनी अलग विशेषताएं है क्योंकि बालक और बड़ों की दुनिया हर दृष्टि से भिन्न होती है जहाँ बच्चा कल्पनाओं के आकाश में विचरण करते नहीं थकता वहीँ बड़ों को यथार्थ के कठोर धरातल पर चलना पड़ता है ।

बाल साहित्य रस से परिपूर्ण, सहज, बच्चों की तरह मासूम होता है और इस के लिए बाल रचनाकार को उन की भाव भूमि पर उतर कर सर्जना करनी पड़ती है । बाल साहित्य जितना सरल होता है उस का सृजन उतना ही कठिन । इसी के साथ बाल साहित्य की अन्य विशेषताओं में उस का आकार में लघू होना भी है,चाहे गीत हो, कहानी हो, नाटक हो या दूसरी विधा । ये इसलिए कि बालकों को शीघ्र याद हो सके और हमेशा स्मृति में रहे । बाल साहित्य का सकारात्मक होना इस की विशेष विशेषता है ।

बालक सदैव वर्तमान में जीता है, या फिर कल्पनाओं में । अत बाल साहित्य वर्तमान के साथ भविष्य की संकल्पना को लेकर लिखा जाता है । बाल साहित्य, बच्चों के साथ – साथ बाल साहित्य प्रौढ , युवा, महिलाएं भी बड़ी रूचि से पढ़ते हैं और भरपूर आनंद लेता हैं अर्थात बाल रचनाएँ हर वर्ग को बहुत पसंद आती हैं बाल रचनाओं की भाषा – शैली अन्त्यानुप्रास (तुकबन्दी) आदि बाल रचनाओं की प्रमुख विशिष्टताएँ हैं ।

संदर्भ———————————————————

1. डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ. 12
2. डॉ नागेश पाण्डेय 'संजय', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ. 15
3. अखिलेश श्रीवास्तव चमन, ऐसा हो बच्चों का साहित्य, आजकल, पृ. 12
4. हिंदी बाल पत्रकारिता य उद्भव और विकास, डॉ सुरेन्द्र विक्रम, पृ. 11
5. श्री नाथ सहाय,बाल साहित्य का संसार, आजकल, पृ. 15
6. डॉ नागेश पाण्डेय 'संजय', 'बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ. 16
7. डॉ राष्ट्रबंधु, आधुनिक भारत की अपेक्षाएं और बाल साहित्य, बाल वाटिका, पृ. 8
8. डॉ नागेश पाण्डेय 'संजय', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ. 13
9. डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', बाल साहित्य के प्रतिमान, पृ. 17